HINDI-GUJARĀTI DHĀTUKOŚA

A COMPARATIVE STUDY OF HINDI-GUJARATI VERBAL ROOTS

L. D. SERIES 87

GENERAL EDITORS
DALSUKH MALVANIA
NAGIN J. SHAH

BY
RAGHUVEER CHAUDHARI
DEP. OF HINDI
SCHOOL OF LANGUAGES
GUJARAT UNIVERSITY
AHMEDABAD-9

L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY AHMEDABAD-9.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

HINDĪ-GUJARĀTĪ DHĀTUKOṢA

A COMPARATIVE STUDY OF HINDI-GUJARATI VERBAL ROOTS

L. D. SERIES 87
GENERAL EDITORS
DALSUKH MALVANIA
NAGIN J. SHAH

BY
RAGHUVEER CHAUDHARI
Department of Hindi
School of Languages
Gujarat University
Ahmedabad-380 009.

L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY
AHMEDABAD-380 009.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Publisher :
Nagin J. Shah
Director, L. D. Institute of Indology,
Ahmedabad-380 009.

First Edition
March 1982

Price : Rs. 45-00

Printer :
Bhailal V. Patel,
Aakar Printers,
1105/3, Bhavanpura,
Shahpur, **Ahmedabad-1.**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिन्दी–गुजराती धातुकोश

[हिन्दी और गुजराती की क्रियावाचक धातुओं का तुलनात्मक अध्ययन]

रघुवीर चौधरी
हिन्दी विभाग,
भाषा–साहित्य भवन,
गुजरात युनिवर्सिटी,
अहमदाबाद–380 009

लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदाबाद–९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते

—भर्तृहरि

It has been my intention to err rather upon the side of Liberality of inclusion than the opposite.

—W. D. Whitney

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तावना

'हिन्दी–गुजराती धातुकोश' डा. रघुवीर चौधरी का शोधप्रबन्ध है । गुजराती भाषा में साहित्यसर्जन तथा समीक्षा के क्षेत्र में देढ़ दशक तक उल्लेखनीय योगदान देने के बाद प्रो. चौधरी ने यह शोधकार्य हाथ में लिया । और डा. हरिवल्लभ भायाणी जैसे समर्थ भाषाविद् का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ । फलतः यह शोधप्रबंध पीएच.डी. के लिए प्रस्तुत प्रबंधों की सीमाओं से मुक्त है । इसमें कहीं पिष्टपेषण या अनावश्यक विस्तार नहीं ।

डा. भायाणी ने गुजरात विश्वविद्यालय से स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण किया और श्री ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर में मानार्ह सेवाएँ देना शुरू किया इसके साथ गुजराती तथा अन्य भाषाओं के लेखक तथा प्राध्यापक डा. भायाणी से मिलने के निमित्त भी हमारे यहाँ आने लगे । प्रो. चौधरी प्रस्तुत शोधकार्य के मार्गदर्शन के लिए तो आते ही थे, हमारी व्याख्यानमालाओं तथा गोष्ठियों में इनकी सक्रिय उपस्थिति सदा सूचित करती रही कि वे इस संस्था के प्रति कैसा गहरा लगाव रखते हैं । अतः जब शोधप्रबंध के प्रकाशन का समय आया तो पंडित दलसुखभाई मालवणियाजी और मैंने इसमें रुचि दिखाई । प्रो. चौधरी की विद्याप्रीति और निष्ठा के हम गवाह हैं । इसलिए भी प्रस्तुत शोधप्रबंध के प्रकाशन के अवसर पर हमें नैसर्गिक आनंद का अनुभव हो रहा है ।

'हिन्दी–गुजराती धातुकोश' के प्रकाशन से तुलनात्मक भाषाविज्ञान तथा कोशविज्ञान के अध्येताओं को एक महत्त्वपूर्ण संदर्भग्रंथ सुलभ होगा । श्री. ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर ने ऐतिहासिक भाषाशास्त्र को भी अपना कार्यक्षेत्र माना है । प्राकृत–अपभ्रंश ग्रंथों के संपादन तथा प्रकाशन के क्षेत्र में संस्था ने विशिष्ट योगदान दिया है ।

मैं जानता हूँ कि प्रो. चौधरी ने कोशविज्ञान तथा ऐतिहासिक–तुलनात्मक भाषाविज्ञान की शोधपद्धतियों के अनुशासन में अपने आपको बाँध कर कुछ समय के लिए सर्जनात्मक लेखन छोड़ दिया था । इनके संनिष्ठ पुरुषार्थ को डा. भायाणीजी के द्वारा सुयोग्य दिशा प्राप्त हुई । हिन्दी–गुजराती धातुओं का यह पहला तुलनात्मक कोश है । शोधकर्ता ने पूर्वकार्य के अध्ययन के अंतर्गत पूर्वसूरियों के निष्कर्षों को समादर के साथ देखा है और युक्तिसंगत मूल्यांकन किया है । धातुकोश ग्रंथ का प्रमुख एवं समृद्ध अंग है । टिप्पणियों में भी परिश्रम लक्षित होगा ही । अंत में विश्लेषण और वर्गीकरण के अंतर्गत आधुनिक भाषाविज्ञान की मान्य शोधपद्धतियों का आलंबन लिया गया है । लेक्सिको स्टेटिस्टिक्स के द्वारा निकाले गए निष्कर्ष बहुत संक्षेप में हिन्दी–गुजराती धातुओं की तुलनात्मक झाँकी करवाते हैं । ग्रंथ के परिशिष्ट भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं । मुझे पूरा विश्वास है कि प्रो. चौधरी का प्रस्तुत शोधकार्य विषय के विद्वानों के लिए एक ध्यानार्ह संदर्भ सिद्ध होगा । एक मूल्यवान ग्रंथ हमारी ला. द. ग्रंथमाला के अंतर्गत प्रकाशित करने का अवसर देने के लिए मैं डा. रघुवीर चौधरी का अनुगृहीत हूँ ।

श्री. ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर,
अहमदाबाद–380 009.
२ मार्च 1982

नगीन जी. शाह
निदेशक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरोवचन

भारतीय भाषाओं के इतिहास, व्याकरण, कोश, तुलना जैसे विषयों में अर्वाचीन युग में जो सामग्रीमूलक शोधकार्य प्रायः एक शताब्दी से अच्छी तरह चल रहा था उसमें, भाषाविज्ञान की नई सैद्धान्तिक उद्भावनाओं के प्रभाव से १९५०–६० से रुकावट–सी आ गई। भाषाओं का इतिहास, तुलना, कोशरचना आदि अध्ययन–क्षेत्र से हट गये। भाषाओं का प्रवर्तमान स्वरूप, प्रादेशिक वैविध्य, संरचना आदि अध्ययन के केन्द्रवर्ती विषय बने। केवल भाषासिद्धान्त के प्रस्थापन, उत्थापन या परीक्षण के लिए ही भाषासामग्री की उपयुक्तता मानी जाने लगी। फलतः सामग्री–संचयन के कार्य का अवमूल्यन हुआ। इन नये प्रवर्तनों से भारतीय भाषाओं के अध्ययन को लाभ तो हुआ ही, हानि भी कम नहीं हुई। भारतीय भाषाओं के क्षेत्र में सामग्रीमूलक ठोस अध्ययन उतना ही मूल्य रखता है जितना सिद्धांत-मूलक अध्ययन।

डॉ. रघुवीर चौधरी के प्रस्तुत तुलनात्मक धातुकोश का मूल्य स्वयंस्पष्ट है। भारतीय आर्यभाषाओं के व्युत्पत्तिविज्ञान एवं कोशविज्ञान के विषय में टर्नर आदि के भगीरथ–कार्य की नींव पर हमें इस तरह कार्य आगे बढ़ाना है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राचीन भारतीय-आर्य से लेकर नव्य भारतीय- आर्य-भाषाओं तक क्रियावाचक धातुसमूह का कितना अंश बचा, कितना बदला, कितना नये स्रोतों से आया उसकी गवेषणा भारतीय-आर्य के इतिहास की तथा भाषा-परिवर्तन की कई समस्याओं पर मूल्यवान प्रकाश डाल सकती है। इस प्रकार का अध्ययन भारतीय भाषाओं के बीच जो साम्य है उसके प्रति ध्यान आकृष्ट करता है, जब कि वैयक्तिक विशिष्टताओं पर अब तक अधिकतर बल दिया गया।

हिन्दी, गुजराती आदि के उपलब्ध कोश कई दृष्टियों से अपूर्ण हैं। विभिन्न बोलियों की सामग्री की, प्राचीन साहित्य की सामग्री की तथा विभिन्न धात्वर्थों की स्पष्टता के बारे में और व्युत्पत्तियों की वैज्ञानिकता के बारे में अभी बहुत करना बाकी है। ऐतिहासिक-तुलनात्मक निष्कर्षों की प्रामाणिकता की मात्रा इन सब पर निर्भर करती है।

डॉ. चौधरी ने जो व्यवस्थित और चुस्त परिश्रम किया है इससे हमें विश्वास होता है कि वे इस दिशा में अपना मूल्यवान कार्य जारी रखेंगे। सृजन, समीक्षा आदि विविध क्षेत्रों में सतत कार्यशील रहते हुए भी उन्होंने इस शोधकार्य को सम्पन्न किया है इससे भी हमारा यह विश्वास साधार प्रतीत होगा।

दिनांक १५-३-'८२

हरिवल्लभ भायाणी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1. पूर्वभूमिका

गुजरात विद्यापीठ से स्थानान्तर करने पर 1965 में मैं डा. हरिवल्लभ भायाणी का पड़ौसी बना। इससे पहले डा. प्रबोध पंडित की आज्ञा से ब्लूमफिल्ड पढ़ चुका था। गोलोकबिहारी धल तथा पंडितसाहब के लेखों की सहायता से विद्यापीठ में हिन्दी बी. एड्. के विद्यार्थियों को ध्वनिविज्ञान एवं अन्य शाखाएँ पढ़ाता था। भाषाविज्ञान के एक अच्छे विद्यार्थी तथा गुजरात के संदर्भ में बोलीविज्ञान के क्षेत्र में सविशेष कार्य करनेवाले डा. शान्तिभाई आचार्य मेरे मित्र रहे। उनके कारण भी भाषाविज्ञान की कुछ गतिविधियों से मैं अवगत रहता था। परन्तु 1973 तक तो सोचा भी नहीं था कि इस विषय से सम्बन्धित शोधकार्य करूँगा। खयाल था साहित्य–सर्जन और समीक्षा के क्षेत्र में ही कार्य करना होगा।

शोधकार्य के प्रति आदर था अवश्य। पुरानी पीढ़ी के गुजराती आलोचक स्व. विश्वनाथ भट्ट के 1930 में प्रकाशित 'पारिभाषिक कोश' के द्वितीय शोधित–वर्धित संस्करण की जिम्मेदारी उठाई थी, विद्यापीठ छोड़ने के कारण। यह 1966 की बात है। गुजराती भाषा के आलोचनात्मक तथा चिन्तनात्मक ग्रंथों के लेखकों ने जहाँ कहीं अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के लिए गुजराती पर्यायों का प्रयोग किया हो, पहुँच जाना था। मैंने सम्बन्धित वाक्य चुने, कार्ड बनाये और विविध पर्यायों का तुलनात्मक अध्ययन किया। यह कोई बड़ा शोधकार्य नहीं था परन्तु इसमें प्राप्त होनेवाला आनंद बड़ा था।

1970 में भायाणीसाहब बम्बई युनिवर्सिटी के लिए शैलीविज्ञान–विषयक व्याख्यान तैयार कर रहे थे। आधुनिक भाषाविज्ञान साहित्य–समीक्षा के निकट पहुँच चुका है इसका पता चला और प्रतीत हुआ कि साहित्य–समीक्षा के क्षेत्र में कार्य करने के लिए भी भाषाविज्ञान का प्रशिक्षण पाना होगा। इस अवबोध ने जिम्मेदारी बढ़ाई।

बाद में हिन्दी विद्वानों के साथ 'गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल' के लिए हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का संपादन करने की जिम्मेदारियाँ आईं। साहित्य को एक भाषिक संरचना के रूप में देखना अनिवार्य था। व्याकरण की दिशा से मैं हिन्दी–गुजराती क्रियाओं के बारे में सोचने लगा। लगा कि ऐसे किसी विषय में कुछ ठोस कार्य हो सके तो कितना अच्छा।

शोधकार्य के संदर्भ में एक बार डा. अम्बाशंकर नागर ने बताया कि गुजरात युनिवर्सिटी के नियम 0–68 के अंतर्गत अनुस्नातक अध्यापन का पाँच वर्ष या इससे अधिक अनुभव रखनेवाला अध्यापक बिना किसी मार्गदर्शक के, स्वयं शोधकार्य कर सकता है। 'अनुभव' का 'मूल्य' पहली बार सामने आया, परन्तु दूसरे ही क्षण मैं सोच में पड़ गया : भाषाविज्ञान से सम्बन्धित शोधकार्य स्वयं करने का अर्थ होगा मौलिक गलतियाँ करना। भायाणीसाहब से मिला। वे सभी नये लेखकों के अनधिकृत किन्तु वास्तविक मार्गदर्शक तो हैं ही। सच्चे उपनिषदवादी। साथ बैठकर दूसरे ही दिन उन्होंने कार्य की रूपरेखा तैयार करवाई। दो जुलाई 1973 को मैं गुजरात युनिवर्सिटी में प्रस्तुत विषय का शोधछात्र बना!

2. शोधपद्धति

हिन्दी–गुजराती कोशों से क्रियाओं के कार्ड बनाना शुरू किया। प्रत्येक क्रिया की सभी अर्थच्छायाएँ कार्ड पर लिखता था। हिन्दी के 2364 तथा गुजराती के 2404 कार्ड बनाने में काफ़ी समय गया। इस विषय के लिए समय देने का संतोष तो आरंभिक दो वर्षों में ही हो गया था परन्तु बौद्धिक जिज्ञासा संतुष्ट नहीं होती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थी। विषय से सम्बन्धित कोई पुस्तक मिल जाती तो पढ़ लेता। भायाणीसाहब मेरी इस पढ़ने की प्रवृत्ति की प्रशंसा नहीं करते थे, कहते थे वर्गीकरण करो। शुरू किया। तत्सम, तद्भव, देशज आदि वर्गों के कार्ड अलग करने लगा। तब तक मैं विषय को थोड़ा बहुत समझने लगा था इसलिए यह भी समझ गया कि जो कुछ कर रहा हूँ वह सब सही नहीं है। भायाणीसाहब से समय माँगना पड़ा। वर्गीकरण का सही तरीका बताने के साथ-साथ उन्होंने प्रेरणार्थक आदि क्रियारूपों के कार्ड एक और रख देने को कहा। वर्गीकृत मूल धातुओं को लिख लेने के बाद सभी धातुओं का संमिलित तुलनात्मक एवं व्युत्पत्तिदर्शक धातुकोश तैयार किया।

हिन्दी क्रियाओं के चयन के लिए ज्ञानमंडल के 'बृहत हिन्दी कोश' के तृतीय संस्करण का तथा गुजराती क्रियाओं के चयन के लिए गुजरात विद्यापीठ के 'सार्थ जोडणी कोश' के पाँचवे संस्करण का आधार लिया था। कोई प्रचलित क्रिया छूट न जाए इस दृष्टि से 'शब्दसागर' के दो खण्ड देखे और कुछ सोचकर विकल्प के रूप में 'मानक हिन्दी कोश' को सादृयंत देख गया। धातुकोश में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। जहाँ किसी क्रिया के सकर्मक-अकर्मक दोनों रूप अस्तित्व में हों, वहाँ इनमें से एक को ही पसंद करने का प्रयत्न रहा है परन्तु ध्वन्यात्मक वैविध्यवाले सभी रूप संगृहीत किए हैं। टर्नर के कोश से व्युत्पत्तियाँ खोजते समय भी कुछ कालग्रस्त धातुएँ संगृहीत करने योग्य लगीं। धातुकोश में सभी सुलभ धातुओं का समावेश करने की आकांक्षा से बोली-विषयक शोधकार्यों से तथा अन्य पुस्तकों से भी धातुएँ ली हैं। धातुरूपों की संख्या चार हजार से भी बढ़ गई (4270); इसका रहस्य यही है। एक ही धातुरूप के अंतर्गत समाविष्ट तथापि व्युत्पत्ति तथा अर्थ की दृष्टि से भिन्नता रखनेवाली 185 धातुओं की अलग से गणना करने पर संख्या बढ़कर 4455 होगी! रूपवैविध्य से मुक्त होकर वर्गीकरण के लिए तृतीय खण्ड में 2981 धातुएँ पसंद की हैं।

प्रस्तुत अध्ययन-विषय का सम्बन्ध व्याकरण से भी स्थापित किया जा सकता था। इसको ऐतिहासिक भाषाविज्ञान की दिशा प्राप्त हुई इसका श्रेय भायाणीसाहब को है। अब तो ऐसी चाह जगी है कि बंगाली-मराठी को साथ लेकर चार भाषाओं का तुलनात्मक धातुकोश तैयार करूँ। धातु के निकट परिचय के बिना भाषा के भीतर पहुँचना संभव नहीं। और एक चुनौती भी दे रखी है कुछ विदेशी विद्वानों ने! टर्नरसाहब ने 'नेपाली डिक्शनरी' तथा 'कम्पेरेटिव डिक्शनरी आफ इण्डो-आर्यन लैंग्वेजिज' के संपादन में अर्धशताब्दी का जो भव्य पुरुषार्थ किया है वह हमारे लिए उद्दीपन विभाव क्यों न बने?

कोशविज्ञान के क्षेत्र में गुजराती की अपेक्षा हिन्दी में विशेष कार्य हुआ है। हिन्दी में 110 से अधिक उल्लेखनीय कोश प्रकाशित हुए हैं। गुजराती में भी शब्दकोश-ज्ञानकोश की परंपरा शतायु हो चुकी है। 'भगवद्गोमंडल कोश' 'शब्दसागर' जैसा ही विराट प्रयत्न था। इन दिनों श्री के. का. शास्त्री द्वारा संपादित 'बृहत गुजराती कोश' भी सुलभ हो चुका है। गुजराती के उल्लेखनीय कोशों की संख्या 60 के आसपास है।

इस पुरुषार्थ के बावजूद आधुनिक भाषाविज्ञान तथा व्युत्पत्तिशास्त्र के पर्याप्त ज्ञान के अभाव में हिन्दी या गुजराती में पूर्णरूप से वैज्ञानिक कोश सुलभ नहीं हैं। हिन्दी कोशविज्ञान के विद्यार्थी डा. युगेश्वर ने ठीक ही कहा है कि अब कोश-कार्य किसी एक व्यक्ति के द्वारा संभव नहीं।

संस्कृत में 'धातुपाठ' की एक समृद्ध परंपरा है। हिन्दी कवि रत्नजित ने सन् 1713 में भाषा-व्याकरण के अंतर्गत धातुमाला दी है। 1969 में डॉ मुरलीधर श्रीवास्तव ने 1028 धातुओं का समावेश करनेवाला 'हिन्दी धातुकोश' प्रकाशित किया है। गुजराती में हरिदास हीराचंद ने सन् 1865 में 'धातुमंजरी' तथा टेलर ने 1870 में 'धातुसंग्रह' का प्रकाशन किया था। 'गुर्जर-शब्दानुशासन' नामक व्याकरण में स्वामी भगवदाचार्यजी ने गुजराती धातुपाठ दिया है। इसमें सकर्मक, प्रेरक आदि रूपों समेत 1972 धातुएँ संगृहीत हुई हैं। मैंने परिशिष्ट में 2136

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुजराती धातुएँ दी हैं। हिन्दी–गुजराती का कोई तुलनात्मक धातुकोश नहीं है। इस क्षेत्र में मेरा यह प्रयास प्रथम होगा जो विद्वानों की सहायता से भविष्य में अधिकाधिक निर्दोष भी हो सकता है।

आधुनिक भाषाविज्ञान का आरंभ तुलनात्मक भाषाशास्त्र से हुआ। हिन्दी और गुजराती दोनों परस्पर प्रभावित आधुनिक भारतीय आर्य–भाषाएँ हैं। एक के गहरे अध्ययन के लिए दूसरी भाषा का ज्ञान उपयोगी हो सकता है। जब राष्ट्रीय और शैक्षणिक दृष्टि से हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन का प्रचार और प्रसार आवश्यक हो तब ऐसे प्रयत्नों की उपयोगिता स्वयं स्पष्ट है, परन्तु शोधकर्ता का प्रथम लक्ष्य तो वह संतोष है जो अज्ञात के ज्ञात होने से प्राप्त होता है।

दो भाषाओं की धातुओं के बीच साम्य–वैषम्य की सैद्धान्तिक भूमिकाएँ स्पष्ट करने के साथ–साथ उम्मीद है कि यह प्रयत्न शब्दकोशीय सामग्री–संरक्षणशास्त्र – 'लेक्सिको–स्टेटिस्टिक्स' की दृष्टि से भी कुछ उल्लेखनीय निष्कर्ष तक पहुंचेगा।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध के प्रकाशन के लिए डा. नगीनभाई जी. शाह, पंडित दलसुखभाई मालवणिया तथा एल. डी. इन्स्टीट्युट आफ इण्डालोजी का अनुगृहीत हूँ। और भायाणीसाहब ! इस युग में भी होते हैं ऐसे दाता, निर्हेतुक विद्यादान के लिए सदा उत्सुक और प्रसन्न !

रघुवीर चौधरी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिन्दी और गुजराती की क्रियावाचक
धातुओं का तुलनात्मक अध्ययन

प्रथम खण्ड

पूर्वकार्य का अध्ययन

द्वितीय खण्ड

व्युत्पत्तिदर्शक तुलनात्मक धातुकोश
धातुकोश–टिप्पणी

तृतीय खण्ड

ऐतिहासिक वर्गीकरण
विश्लेषण तथा निष्कर्ष

परिशिष्ट

गुजराती धातुसूची
महत्त्वपूर्ण शब्दकोश
संदर्भसूची

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खण्ड प्रथम

अ. पूर्वकार्य का अध्ययन :

1. संस्कृत–धातुचर्चा
2. पाश्चात्य धातुचर्चा
3. हिन्दी–धातुचर्चा
4. गुजराती–धातुचर्चा
5. धातु–संख्या
6. धातुओं के मूल रूप
7. धातु : स्वरान्त या व्यंजनान्त ?
8. धातुओं का वर्गीकरण
9. धातुओं की व्युत्पत्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्वकार्य का अध्ययन

१ संस्कृत-धातुचर्चा :

ईसा पूर्व ८वीं सदी में यास्क ने शब्दों को चार पद-विभागों में बाँटा है :

'चत्वारि पदजातानि नामाख्यात चोपसर्ग-निपाताश्च' (निरुक्त १. १.)—पद चार प्रकार के होते हैं : नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात.

वेंकटमाधव ने आख्यात और नाम को स्व-अर्थदर्शी बताया है और कहा है कि उपसर्ग तथा निपात स्वतन्त्र नहीं हैं.

यहाँ 'आख्यात' शब्द क्रिया का निर्देश करता है :

'क्रियावाचकम् आख्यातम् ।'

पाणिनि ने ईसा पूर्व ५वीं शताब्दी में इसे 'तिङन्त' कहा है और नाम, उपसर्ग, निपात का समावेश सुबन्त के अंतर्गत किया है. अव्यय को भी वे इससे अलग नहीं रखते.

यास्क ने प्रधानता की दृष्टि से ही आख्यात और नाम में भेद किया था : आख्यात में क्रिया की प्रधानता है और नाम में द्रव्य की. नाम का भी धातु के समान प्रयोग किया जाता था. पाणिनि ने अधिकांश शब्दों को धातुज माना है.

संस्कृत वैयाकरणों की दृष्टि से धातु शब्द, बड़ा ही व्यापक था. नाम, आख्यात और अव्ययों में – सभी प्रकार के पदों में धातु मूल रूप में विद्यमान मानी जाती थी. इस संदर्भ में डा. युधिष्ठिर मीमांसक ने लिखा है :

'दधाति शब्दरूपं यः स धातुः' सर्वथा सत्य है, परन्तु इसका वास्तविक तात्पर्य 'विभिन्न प्रकार के शब्दरूपों को धारण करनेवाला जो मूल शब्द है वह धातु कहलाता है' है. अर्थात् जो शब्द आवश्यकतानुसार नाम-विभक्तियों से युक्त होकर नाम बन गए, आख्यात-विभक्तियों से युक्त होकर क्रिया का द्योतन करने लगे और उभयविध विभक्तियों से रहित रहकर स्वार्थमात्र का द्योतक हुए, वह (तीनों रूपों में परिणत होनेवाला) मूल शब्द ही धातु-पद-वाच्य कहलाता है.'[1]

धातु एक संकल्पना है. 'वाक्य' और 'पद' से भिन्न 'शब्द' भी संस्कृत वैयाकरणों की एक संकल्पना है.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

" भर्तृहरि ने कहा भी है कि प्रकृति, प्रत्यय आदि की सारी व्यवस्था कल्पना ही है. शब्दों की इस प्रकार से क्रमबद्ध रचना नहीं होती. "[२]

व्यवहार में पाए जाते हैं पद, जो प्रत्ययान्त होते हैं. शब्द 'अव्युत्पन्न' हो सकते हैं. प्रत्यय-रहित तथा एकशब्दात्मक होने के कारण वे 'मूल' (रूट) कहे जाते हैं. ये 'मूल' ही 'धातु' हैं, शेष प्रातिपदिक.

" पाणिनि ने धातु और प्रत्यय को छोड़कर बाकी सब सार्थक शब्दों को प्रातिपदिक (नामिनल स्टेम) की कोटि में रखा है. हम कह सकते हैं कि पाणिनि के अनुसार शब्दभेद (पार्ट्स आफ स्पीच) सिर्फ दो ही हैं : (*1*) प्रातिपदिक (*2*) धातु. "[३]

डा० राजगोपाल बताते हैं कि धातुबोधित 'व्यापार' के लिए प्रयुक्त होनेवाला प्राचीन पारिभाषिक शब्द है 'भाव' जिसे नैयायिकों ने 'कृति' नाम दिया और मीमांसकों ने इसके लिए 'कृति' ऐवं 'भावना' शब्द का प्रयोग किया :

" धातु से दो अंशों का बोध होता है – एक 'फल', दूसरा व्यापार, अर्थात् 'फलानुकूल व्यापार.' प्रत्येक धातु से किसी फलविशेष के अनुकूल व्यापार-विशेष का बोध होता है. "[४]

कुछ पाश्चात्य विद्वानों को यह धातु-लक्षण चिन्त्य लगता है. बेयर ने कहा है कि व्यापार की सूचना क्रिया देती है, धातु नहीं. प्रत्ययों से युक्त होकर क्रिया का रूप धारण करने के बाद ही धातु व्यापारसूचक हो सकती है.

यह तो स्वयं स्पष्ट है कि व्यवहार में हमारे सामने क्रियाएँ आती हैं, धातुएँ नहीं.

इसलिए धातुओं से व्यापार के बोध होने का प्रश्न ही खड़ा नहीं होता. परन्तु क्रिया और धातु के बीच विरोध है ही कहाँ ? 'क्रिया' प्रयुक्त रूप है. 'धातु' इसकी संकल्पना है, मूल है. अतः व्यापार क्रिया-मूल की संकल्पना में निहित नहीं है ऐसा कैसे कहा जा सकता है ?

पाणिनि ने धातुओं के वर्गीकरण में ध्वनि और संचरना को ही आधार बनाया हो और अर्थ को विश्लेषण का आधार माना ही न हो ऐसा नहीं है. 'पाणिनीय विश्लेषण-पद्धति के आधार' नामक लेख में डा. विद्यानिवास मिश्र लिखते हैं :

" इसका यह अर्थ नहीं कि बीसवीं सदी के प्रारम्भिक संघटनावादी भाषा-शास्त्रियों की तरह वे अर्थ को विश्लेषण की परिधि से बाहर रखना चाहते थे, बल्कि ठीक उलटे, शब्दों के जिन अर्थों में प्रयोग वर्गीकृत किये जा सकते हैं, उन्होंने उनको वर्गीकृत करने का भी यत्न किया है, जैसे गत्यर्थक धातु, बुध्यर्थक धातु आदि का उल्लेख करके उन्होंने अर्थ की समानक्षेत्रता के आधार पर शब्दों का राशीकरण जगह-जगह किया है. "[५]

शाकटायन ने कुछ शब्दों के एक से अधिक मूलों या प्रकृतियों का निर्देश किया है. यास्क ने शाकटायन के दो मत व्यक्त किये हैं : 'पदों में इतर पदार्थों का संस्कार' तथा 'पदों का द्विप्रकृति होना' 'द्विप्रकृति' के दो अर्थ हैं : दो धातुओं से बननेवाले शब्द तथा मूलतः एक किन्तु दो भिन्न मूलार्थों को वहन करनेवाली धातु.

संस्कृत व्याकरण में धातुचर्चा केवल वर्गीकरण और विश्लेषण के रूप में ही नहीं मिलती, एक तात्त्विक भूमिका के साथ भी प्रस्तुत होती है. 'शब्द' संज्ञा के अंतर्गत जो चिन्तन है

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वह व्याकरण और दर्शन दोनों क्षेत्रों की उपलब्धि के रूप में हमें प्रभावित करता है. क्योंकि 'शब्द'की सीमा के अंतर्गत प्रातिपदिक, धातु आदि संकल्पनात्मक संज्ञाओं का भी समावेश है. भारतीय चिन्तन के वाक्केन्द्रित होने का रहस्य स्पष्ट करते हुए मिश्रजी ने भर्तृहरि की यह उक्ति उद्धृत की है : 'अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते' – प्रत्येक ज्ञान शब्दविद्ध होकर ही ग्राह्य बनता है.' 'शब्दविचार – भारतीय दृष्टिकोण' नामक लेख में डा. मा. गो. चतुर्वेदी ने कहा है :

"संस्कृत वैयाकरणों ने जिस प्रकार दार्शनिक स्तर पर शब्दों को ब्रह्म आदि माना है, उसी प्रकार भाषा-वैज्ञानिक स्तर पर भी शब्द को मूलतः एक आंतर यथार्थ ही माना है, जो मानवीय बुद्धि, मन और प्राण में प्रतिष्ठित रहता है तथा वक्ता में विवक्षा के होने पर, वही वर्णात्मक ध्वनियों के रूप में व्यक्त होता है. पतंजलि ने अपने महाभाष्य में शब्द की जो परिभाषाएँ स्थान-स्थान पर दी हैं, उनसे भी यही सिद्ध होता है कि 'शब्द' के दो पक्ष हैं, एक आंतरिक और दूसरा बाह्य. शब्द के आंतरिक पक्ष को उन्होंने भी स्फोट कहा है और बाह्य पक्ष को ध्वनि."[6]

'शब्द' के ये दोनों पक्ष धातु-विचार के संदर्भ में भी प्रस्तुत हो सकते हैं. परन्तु हमें यहाँ तो केवल भारतीय व्याकरण-शास्त्र की सीमा में रहकर ही कहना है कि क्रियावाचक रूप का मूल है धातु.

संस्कृत धातुपाठ पर उल्लेखनीय शोधकार्य करनेवाले डा० गजानन पलसुले कहते हैं :

By the term dhatv, then, the grammarians vnderstood that souud–unit which characterized by a certain meaning (action), was found to be a kernal of a group of related words. [7]

—वैयाकरणों की दृष्टि से सम्बन्धित शब्दों के वर्ग में समान रूप से व्याप्त किसी अर्थ-विशेष (क्रिया) करनेवाली ध्वनि-इकाई ही धातु है.

भाष्यकार ने इसे 'क्रियावचनो धातु :' और यहाँ तक कि 'भाववचनो धातुः' भी कहा है:

(1) a root; the basic word of a verbal form, defined by the Bhasyakara as क्रियावचनो धातु : *or even as* भाववचनो धातु : *a word denoting a verbal activity, Panini has not defined the term as such, but he has given a long list of roots under ten groups, named dasagani, which includes about 2200 roots which can be called primary roots, as contrasted with secondary roots. The secondary roots can be divided into two main groups (1) roots derived from roots* (धातुजधातवः) *and (2) roots derived from nouns* (नामधातवः) *The roots derived from roots can further be classified into three main subdivisions : (a) causative roots, or* णिजन्त, *(b) desiderative roots or* सन्नन्त, *(c) intensive roots or* यङन्त *and* यङगन्त *while roots derived from nouns or denominative roots can further be divided into* क्यजन्त, काम्यजन्त, क्यङन्त, क्यबन्त, णिङन्त, क्विबन्त, *and the miscellaneous ones* (प्रकीर्ण) *by the application of the affix* यक् *or from nouns like* सत्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेद, पाश, मुण्ड, मिश्र, *etc. by the application of the affix* णिच्. *Besides these, there are a few roots formed by the application of the affix* आय *and* ईय (ईयङ्).

"भाष्यकार ने क्रियावाचक रूप के मूल शब्द धातु को 'क्रियावचनो धातुः' कहा है, यहाँ तक कि 'भाववचनो धातुः' भी कहा है. 'धातु' क्रियात्मक गतिविधि का निर्देश करनेवाला शब्द है. पाणिनि ने कहीं स्पष्ट रूप से इस शब्द की परिभाषा नहीं दी है परन्तु दस विभागों के अंतर्गत उन्होंने दशगणी नाम से धातुओं की विस्तृत सूची दी है, जिसमें लगभग *2200* मूल धातुओं का समावेश हुआ है, जो साधित धातुओं से भिन्न हैं. साधित धातुओं को दो मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है (*1*) धातुओं से निष्पन्न धातुएँ — 'धातुज धातवः' तथा (2) संज्ञाओं से निष्पन्न धातुएँ — 'नाम-धातवः.' धातुज धातुओं को तीन मुख्य उपविभागों में बाँटा जा सकता है: (अ) प्रेरक धातुएँ अथवा णिजन्त, (आ) इच्छावाचक धातुएँ अथवा सन्नन्त, (इ) पौनः पुन्यवाचक धातुएँ अथवा यङन्त और यङ्गन्त; जब कि 'यक्' प्रत्यय अथवा 'णिच्' प्रत्यय लगाकर सत्य, वेद, पाश, मुण्ड, मिश्र आदि संज्ञाओं से बनी धातुओं को क्यजन्त एवं प्रकीर्ण के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है. इसके अतिरिक्त आय तथा ईय (ईयङ्) प्रत्ययों से बनी कुछ धातुएँ भी मिलती हैं."[8]

संस्कृत वैयाकणों ने इन सभी धातुओं को परस्मैपदिन्, आत्मनेपदिन् तथा उभयपदिन् के रूप में विभाजित किया है. स्वर-व्यंजन ध्वनियों के प्रत्ययान्त भेदोपभेद के साथ जो वर्गीकरण किया गया है, उस वर्गीकरण में जो विश्लेषण-प्रद्धतियाँ प्रयुक्त हुई हैं उनकी वैज्ञानिकता से आधुनिक भाषाविज्ञानी प्रभावित हुए हैं.

पाणिनि ने 'धातु' शब्द अपने पुरोगामी वैयाकरणों से प्राप्त किया. 'निरुक्त' और 'प्रातिशाख्य' कृतियों में इसकी चर्चा हुई है, जिसका निर्देश पहले हो चुका है. निरुक्तकार तथा शाकटायन तो सभी संज्ञाओं को भी धातुज मानते हैं.

कुछ विद्वानों ने धातुओं को छः श्रेणियों में वर्गीकृत किया है:

(*1*) परिपठिताः भूवादयः

(*2*) अपरिपठिताः आन्दोलयत्यादयः

(*3*) परिपठितापरिपठिताः (सूत्रपठिताः): स्फुल्कम्भस्तम्भेत्यादयः

(*4*) प्रपयधातवः सनाद्यन्ताः

(*5*) नामधातवः कण्ड्वादयः

(*6*) प्रत्ययनामधातवः होडगलभक्लीबप्रभृतयः

अंग्रेजी संज्ञा 'रूट' तथा संस्कृत संज्ञा 'धातु' को कुछ विद्वान समानार्थी मानकर चलते हैं. डा. सत्यकाम वर्मा ने भेद की रेखाएँ स्पष्ट की हैं. 'रूट' का अर्थ 'मूल शब्दमात्र' है, 'धातुमात्र' नहीं. गणित की दृष्टि से इस इकाई को 'महत्तम समापवर्तक' और वैज्ञानिक दृष्टि से 'लघुतम योजक' (स्मालेस्ट कांस्टीट्रयुएण्ट) कहना चाहिए. डा. वर्मा कहते हैं कि 'धातु' वह छोटी से छोटी इकाई है, जिसका पुनः विभाजन किसी भी रूप में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संभव नहीं हो सकता. फिर यह भी आवश्यक नहीं कि प्रत्येक प्रातिपदिक को धातुमूलक सिद्ध किया ही जा सकता है.[9]

डा. वर्मा का 'व्याकरण की दार्शनिक भूमिका' ग्रंथ भर्तृहरि पर आधारित है. इन्होंने धातु को अव्यावहारिक बताकर इस ख्याल की शास्त्रीय चर्चा की है. कुछ उदाहरण देकर वे इस निष्कर्ष तक पहुँचे हैं :

"अतः यह स्पष्ट है कि शुद्ध 'धातु' का प्रयोग, भाषातत्त्व की दृष्टि से, सम्भव नहीं है. रूपात्मक दृष्टि से ऐसा सम्भव दीखने पर भी अर्थात्मक दृष्टि से ऐसा असम्भव है. इस बात को समझकर हम उन भाषाओं में भी 'धातु' और 'क्रिया' के भेद को पहचानने में समर्थ हो सकेंगे, जिनमें या तो प्रत्यय नहीं होते, या जिनमें प्रत्ययसंयोग मूल शब्दरूप को प्रभावित नहीं करता."[10]

संस्कृत धातुचर्चा व्यवहृत भाषिक स्वरूपों के संदर्भ में होती थी या केवल शास्त्रचर्चा हुआ करती थी यह प्रश्न कुछ अन्य विद्वानों ने भी उठाया है. व्हिटनी का कहना है कि पाणिनि के धातुपाठ में जिन दो हजार धातुओं का समावेश हुआ है वे सभी व्यवहृत नहीं होती थीं. इस धारणा का बुचर तथा एडग्रेन ने विरोध किया है. इन्होंने परिवर्तित भाषिक रूपों से भी संस्कृत धातुओं का संबंध बताया है. कई प्राकृत, पालि तथा देशज धातुओं के मूल रूप संस्कृत धातुओं में मिलते हैं.

सतत परिवर्तनशील भाषा में कुछ धातुओं का किसी न किसी रूप में बना रहना अध्ययन का एक रसप्रद विषय है. डा. सुनीतिकुमार चेटर्जी ने तो सामान्य भाषक के धातु-विषयक अवबोध के बारे में भी एक उल्लेखनीय बात कही है :

"एक भाषा के शब्द जब कि धातु और प्रत्ययों के संयोग से बने होते हैं, तब उसका प्रत्येक जन्मजात बोलनेवाला व्यक्ति साधारणतया स्पष्ट रूप से यह जानता है कि किसी एक शब्द का धातुभाग कौनसा है, और प्रत्यय भाग कौनसा. हाँ, यदि चिन्तन तथा अभिव्यक्ति, आलस्यादि अन्य प्रभावों से आच्छादित हो गई हो तो बात दूसरी है. उदाहरणार्थ — एक जन्मजात आर्य-भाषी 'धर्म' शब्द में धातुभाग 'धर्' तथा प्रत्ययभाग 'म' है, इतना तो कम-से-कम जानता होगा ही. 'धर्म' शब्द का उच्चारण करते समय स्वभावतः उसके मन में इस शब्द का 'धर्/म' इस प्रकार विश्लेषण हो जाता होगा"[11]

सुशिक्षित एवं भाषा का सजग प्रयोग करनेवाले भाषकों तक ही चेटर्जी महोदय के कथन की व्याप्ति हो सकती है, इसे व्यापक नियम मानकर चलना तर्कसंगत नहीं है. केवल धातुरूप में तो धातु भाषा में नहीं चलती.

समान अर्थवाली तथा कुछ ध्वनिसाम्य रखनेवाली धातुओं के दो रूप मिलते हैं तो क्यों मिलते हैं, तथा इनके बीच सम्बध है तो किस प्रकार का इस प्रश्न का उत्तर सुलभ नहीं हुआ. डा. गजानन पलसुले ने कहा है कि चेतति, चेतयति, चित्त, चेतना आदि रूपों में 'चित्' तथा चिन्तयति, चिन्तयामास, चिन्तन आदि में 'चिन्त्' धातु खोज निकाली परन्तु 'चित्' और 'चिन्त्' के बीच कोई सम्बन्ध है या नहीं यह नहीं बताया. विद्वानों ने इस विषय में अभी उल्लेखनीय कार्य नहीं किया.[12]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऐसे कुछ निरुत्तर प्रश्नों के साथ भी संस्कृत वैयाकरणों ने जो 'शब्द-चिन्तन' किया है उसकी सराहना जितनी की जाय, कम है. धातुपाठ पर सतत शास्त्रार्थ करते हुए संपादन करने की संस्कृत में जो परंपरा बनी रही वह विरल है.

'ए डिक्शनरी आफ संस्कृत ग्रामर' के लेखकों ने धनंजय, वरदराज, पाणिनि, शाकटायन, नागेश, धर्मकीर्ति, काशीनाथ, चोक्कनाथ आदि वैयाकरणों द्वारा रचित धातुपाठ के चौदह ग्रंथों के नाम दिए हैं. इससे पता चलता है कि संस्कृत व्याकरणशास्त्र ने इस विषय के अध्ययन का महत्त्व सतत बनाए रखा है. ईसा पूर्व 8वीं सदी से लेकर ईसा की ७वीं सदी तक प्राप्त होते इन संस्कृत ग्रंथों में धातुचर्चा होती रही और शास्त्रीय पद्धति से धातुओं के संचय किये गए. इस संदर्भ में संस्कृत-प्राकृत के कुछ वैयाकरणों का विशेष उल्लेख किया जा सकता है : कच्चान, स्थविर संघरक्खित, भिक्षु अग्गवंस, मैत्रेयरक्षित, हेमचन्द्र, त्रिविक्रम, जुमरनन्दिन, नारायण, चोक्कनाथ, मोग्गल्लायन महाथेर आदि. इन विद्वानों ने व्याकरण के साथ धातुपाठ देने की परंपरा अक्षुण्ण रखी. इस शताब्दी में पाश्चात्य भाषाविज्ञान के संदर्भ में संस्कृत व्याकरणशास्त्र का अध्ययन शुरू हुआ है और भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने संस्कृत वैयाकरणों की वैज्ञानिक उपलब्धियों को बड़े गौरव के साथ हमारे सामने प्रस्तुत किया है.

२ पाश्चात्य धातु-चर्चा :

एम० बी० एमेनो ने लिखा है कि भारतीय व्यकरणशास्त्र के गहन अध्ययन का प्रभाव ब्लूमफिल्ड की विश्लेषण-पद्धतियों पर पड़ा है. स्वयं ब्लूमफिल्ड ने भी कहा है कि 'पाणिनि का व्याकरण' उनकी उन पुस्तकों में था जिन्हें वे विश्राम के क्षणों में सदैव पढ़ा करते थे.[13]

पाश्चात्य परंपरा में शब्द शब्द-रूप में ही वाक्य में प्रयुक्त होता है. ब्लूमफिल्ड 'मिनिमन फ्री फार्म' – लघुतम मुक्त रूप को शब्द कहते हैं. संस्कृत व्याकरण के अनुसार वाक्य के घटक के रूप में प्रयुक्त होने से पहले ही शब्द का रूपान्तर पद के रूप में हो जाता है. पश्चिम में शब्दों के वर्गीकरण की परंपरा ग्रीक-लेटिन काल से है परन्तु इसकी वैज्ञानिकता से विद्वान संतुष्ट नहीं हैं. एम. बी. एमेनो लिखते हैं :

"लेटिन के चार प्रकार के क्रिया-रूपों (कन्जुगेशन्स) के विवेचन को लिया जा सकता है जिसमें क्रियाओं के धातुरूपों (रूट्स), मूल प्रत्ययों (स्टेम सफिक्सिस) तथा विकारी प्रत्ययों (इन्फ्लेक्शनल सफिक्सिस) के अन्वेषण का कोई विशेष प्रयास नहीं किया गया है तथा विविध क्रियारूपों में प्राप्त सादृश्य की ओर भी कम ही ध्यान दिया गया है." [14]

पाश्चात्य वैयाकरणों द्वारा किया गया अन्वेषण एवं विश्लेषण भले ही प्रभावक न हो परन्तु वे ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी से लेकर प्रस्तुत विषय की चर्चा करते रहे हैं. प्लेटो (ईसा पूर्व 429 से 347) प्रथम विद्वान हैं जिन्होने संज्ञा तदा क्रिया के बीच स्पष्ट रूप से भेद किया तथा वाक्य में उनके कार्य को भी समझाया :

As defined by Plato. 'nouns' were terms that could function in sentences as the subjects of a predication and 'verbs' were terms which could express the action or quality predicated [15]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रियाएँ कार्य अथवा निर्धारित लक्षण व्यक्त करती हैं—प्लेटो की यह स्थापना उनके समय की दृष्टि से उल्लेखनीय लगती है. अरस्तू ने प्लेटो का वर्गीकरण मान्य करते हुए उन दो वर्गों में जिनका समावेश नहीं होता ऐसे उभयान्वयी का एक नया वर्ग सूचित किया. मध्यकाल तक पहुँचने के बाद ही पाश्चात्य व्याकरण संज्ञा, क्रिया और विशेषण के भेद करता है.

जोन लायन्स कहते हैं कि भारतीय व्याकरणशास्त्र की परंपरा स्वतंत्र होने के साथ-साथ पाश्चात्य ग्रीक-रोमन परंपरा से अधिक वैज्ञानिक भी थी. ध्वनिविज्ञान तथा शब्दों की आंतरिक संचरना की दृष्टि से तो भारतीय विद्वानों का कार्य अनेक विद्वानों ने सराहा है.[16]

रोबर्ट ए. होल बताते हैं कि लेटिन और रोमन भाषाओं में क्रियाओं के 'स्टेम' हुआ करते थे जिनके साथ विविध एण्डिंग्स-प्रत्यय लगते थे.[17]

अब हम पश्चिम के कुछ भाषाविदों द्वारा दी गई 'क्रिया' तथा 'धातु' की कुछ परिभाषाएँ देखें. डायोनिसियस थ्रेक्स के अनुसार :

The verb is a part of speech without case-inflextion, admitting inflextions of tense, person and nvmber, signifying an activity or a being acted upon.'[18]

—क्रिया एक ऐसा पदप्रकार है जिसे नामिक विभक्तिप्रत्यय लगते हैं और जिसका अर्थ क्रिया या तो क्रिया-विषयक कोई व्यक्ति होता है.

पाश्चात्य विद्वानों ने स्टेटिक वर्ब—अवस्थावाचक क्रियापद तथा वर्ब्स आफ एक्शन—व्यापारवाचक क्रियापद के बीच भेद किया है.

सम्बन्धित रूपों के साथ धातु के लक्षण स्पष्ट करते हुए होल धातु के प्रति भाषक की सर्तकता तथा भाषिक संरचना को लक्ष करते हुए लिखते हैं :

When we speak of "roots" and "stems" we are of course referring to elements which are to be abstracted from sets af related forms (nouns, verbs, etc.) by the process of observing and standing partial similarities. We do not imply, in setting up roots or stems that they are noun or must necessarily have been separate entities or free forms. Speakers of different languages vary greatly in their awarness of the existence and interplay of roots; in the English speech community, Such awareness seems relatively uncommon, where as it is said that speakers of Russian are very much aware of the role of roots and stems in their language. Nor are 'roots' or 'stems' determinable by any aprioristic principles; the analyst can define them as best suits his convenience in describidg the structure of the language. Our criteria will cften differ from one language to another.[19]

धातु तथा स्टेम अंग के विषय में बात करते समय हम आंशिक साम्य का ध्यान रखते हुए (संज्ञा, क्रिया आदि) सम्बद्ध रूपों के वर्गों से निकाले हुए मूल तत्त्वों को लक्ष करते हैं, धातु या अंग का वर्गीकरण करते समय उनको अलग और स्वतंत्र इकाइयाँ सूचित करना हमें अभिप्रेत नहीं होता. धातुओं के अस्तित्व एवं आंतर-विनियोग के बारे में सभी भाषाओं के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाषक समान रूप से सतर्क नहीं होते, बल्कि उनके अवबोध में बड़ा अंतर होता है. अंग्रेजी-भाषी समुदाय में यह अवबोध कुछ असामान्य-सा लगेगा, जब कि कहा जाता है कि रशियन भाषाभाषी अपनी भाषा में धातु तथा अंग के कार्य के बारे में बड़े सतर्क होते हैं. किसी पूर्वनिर्धारित सिद्धान्त के आधार से धातु तथा अंग के लक्षण निश्चित नहीं किए जा सकते. भाषा-विशेष की संरचना के संदर्भ में ही सर्वाधिक सफलता से इनका विश्लेषण किया जा सकता है. हमारे मानदंड भाषा-विशेष के अनुसार बदलते रहेंगे.

अब हम 'डिक्शनरी ऑफ लिंग्विस्टिक्स' में दी गई क्रिया और धातु की परिभाषाएँ देखें :

Verb is that part of speech which expresses an action, a process, a state or condition or mode of being.[20]

—क्रियापद वाणी का वह अंश है जो क्रिया, व्यापार, सत्ता की अवस्था, स्वरूप या प्रकार को व्यक्त करे.

धातु की पाश्चात्य परिभाषा भारतीय दृष्टि से मिलती-जुलती है. केवल क्रियारूप की नहीं परन्तु किसी भी शब्दरूप की मूल इकाई को लक्ष्य किया गया है :

The ultimate constituent element common to all cognate words, that is the element of a word which remains after the removal of all flexional endings formatives etc The root is usually present in all members of a group of words relating to the same idea, and is thus capable of being considered as the ultimate semantic vehicle of a given idea or concept in a given language.[21]

इसका तात्पर्य है :

— 'शब्दों की वह अन्तिम इकाई ही धातु है जो प्रत्यय आदि को निकालने पर समान अर्थों के शब्दों में रहती है. निष्कर्ष यह है कि धातु वह ध्वनि-समुदाय है जिसके खण्ड नहीं हो सकते और जिसके साथ प्रत्यय जोड़कर 'पद' निष्पन्न किया जाता है.[22]

आधुनिक पाश्चात्य भाषाविज्ञान ने भाषा-परिवर्तन के संदर्भ में भी क्रियावाचक धातुओं की चर्चा की है, और शास्त्रीय सूक्ष्मताएँ सिद्ध की हैं. उनका निर्देश करना भी एक बहुत बड़े क्षेत्र में प्रवेश करना होगा. यहाँ इतना कहना पर्याप्त होगा कि प्राचीन भारतीय वैयाकरणों की उपलब्धियों को आत्मसात् करने के साथ हम गौरव भी ले सकते हैं और आधुनिक पाश्चात्य भाषाविज्ञान से हमें अभी बहुत कुछ सीखना है.

३ हिन्दी-धातुचर्चा

डा. धीरेन्द्र वर्मा ने कहा है कि धातु की धारणा वैयाकरणों के मस्तिष्क की उपज है, भाषा का स्वाभाविक अंग नहीं है. डा. वर्मा सभी शब्दरूपों के मूल अंश को नहीं, केवल क्रिया के उस अंश को 'धातु' कहते हैं जो उसके सभी रूपान्तरों में पाया जाता है.

"जैसे चलना, चला, चलेगा, चलता आदि समस्त रूपों में 'चल्' अंश समान रूप से मिलता है, अतः 'चल्' धातु मानी जायगी."[23]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डा. भोलानाथ तिवारी भी इसी प्रकार के उदाहरण देते हुए 'धातु' को वैयाकरणों की कल्पना बताते हुए लिखते हैं :

"हाँ, धातु की कल्पना या उसे खोज लिए जाने के बाद उसके आधार पर उपसर्ग, प्रत्यय आदि की सहायता से अवश्य शब्द एवं रूप बनाए जा सकते हैं, और बनाए गए हैं."[24]

व्रजेश्वर वर्मा द्वारा संपादित 'भारतीय भाषाओं का भाषाशास्त्रीय अध्ययन' नामक पुस्तक में कु. श्री. रा. रंगमणि ने 'कन्नड क्रियारूपों की संरचना' नामक लेख में हिन्दी व्याकरणों से धातु की कुछ परिभाषाएँ दी हैं, जिनमें से कामताप्रसाद गुरु, किशोरीलाल वाजपेयी और दुनीचंद द्वारा दी गई परिभाषाएँ इस प्रकार हैं :

"जिस मूल शब्द में विकार होने से क्रिया बनती है, वह धातु है."

"क्रियाओं के मूल रूप धातु हैं — विविध क्रियापदों में जो चीज़ व्यापक दिखाई देती है, जो उपादान रूप से सर्वत्र विद्यमान है, वह धातु कही जाएगी."

"क्रिया का वह अंश जो उसके प्रायः सभी रूपों में पाया जाएगा; धातु कहलाता है."[25]

इन तीनों परिभाषाओं में सभी प्रकार के शब्दों के मूल रूपों को धातु नहीं परन्तु केवल क्रिया के मूल रूप को धातु कहा गया है.

चक्रवर्ती कृत 'दि लिंग्विस्टिक स्पेक्युलेशन्स आफ हिन्दुस' का संदर्भ देते हुए 'अवधी की साधित धातुएँ' नामक (अप्रकाशित) शोधकार्य में श्रीमती मालतीदेवी दुबे ने उन मूल रूपों को धातु कहा है जो सभी शब्दों के उद्गम हैं. संस्कृत-परंपरा के निकट रहकर वे लिखती हैं :

"प्रकृति को समझने के लिए हमें केवल धातु की ओर ध्यान देना चाहिए, दूसरे शब्दों की ओर नहीं. शब्दों की एक प्रकृति होती है और वह धातु के अतिरिक्त दूसरी नहीं है।"[26]

सभी शब्दों को धातुज मानना अधिकांश हिन्दी विद्वानों को स्वीकार्य नहीं है. 'बुन्देली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन' के लेखक डा. रामेश्वर अग्रवाल ने कई शब्दों को अधातुज मानकर चलने का सुझाव दिया है :

"संस्कृत के लिए कहा गया है कि उसके सभी शब्द किसी-न-किसी धातु पर आधारित हैं. वस्तुतः यह बात सर्वांशतः संस्कृत पर भी लागू नहीं होती और हिन्दी के लिए जिसमें न जाने कितने विदेशी शब्द भी आ गये हैं, किस प्रकार धातु निर्धारित की जा सकती है? संस्कृत के शब्द 'कर्म' को ही लीजिए. संस्कृत में कृ धातु स्पष्ट है पर काम, चाम, धाम, हिन्दी शब्दों का विश्लेषण करके क्या 'का', 'चा', 'धा' धातु निकाली जा सकती हैं? वस्तुतः ऐसे तथा अन्यान्य विदेशी शब्दों को हम हिन्दी व्याकरण की दृष्टि से 'अधातुज' मानकर ही चलेंगे."[27]

संस्कृत वैयाकरणों को भी इस बात का अवबोध था कि अनेक शब्दों को धातु-प्रत्यय की विश्लेषण-पद्धति के अनुसार समझाया नहीं जा सकता. डा. अनन्त चौधरी पाणिनि की शब्द-निर्वचन-पद्धति तथा धातुपाठ की विशेषताएँ बताते हुए लिखते हैं:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

" उनके (पाणिनि के) पूर्व शाकटायन ने भी यह स्वीकार किया था कि शब्द धातुओं से बनते हैं, किन्तु उन्होंने अपने मत को आग्रह का रूप दे डाला था और व्युत्पन्न एवं अव्युत्पन्न सभी प्रकार के शब्दों को धातु-प्रत्ययों से सिद्ध करने का क्लिष्ट प्रयत्न किया था, जिसके कुछ उदाहरण यास्क ने अपने निरुक्त में उद्धृत किये हैं. पाणिनि दुराग्रही नहीं, समन्वयवादी थे... लोक में शब्दों का भण्डार बहुत बड़ा है, जिसमें अनेक शब्द ऐसे भी हैं, जिनमें धातु-प्रत्यय की दाल नहीं गलती."[२८]

डा. अनन्त चौधरी ने हिन्दी के प्रमुख व्याकरणों का विस्तृत परिचय देते हुए क्रिया-धातु से सम्बन्धित चर्चा का भी जिक्र किया है. हिन्दी वैयाकरणों ने धातुओं का वर्गीकरण अलग-अलग ढंग से किया है परन्तु सभीने क्रिया-मूल को ही धातु मानना उचित समझा है. प्रमुख व्याकरणकारों द्वारा दी गई धातु की कुछ और परिभाषाएँ देखना रसप्रद होगा :

'वाक्य अर्थात् बात क्रिया से पूरी होती है और क्रिया धातु से बनती है. धातु उसे कहते हैं, जिसके अर्थ से देह वा मन का कुछ व्यापार अर्थात् हिलना-चलना आदि पाया जाय.'[२९]

'क्रिया से मूल को धातु कहते हैं और उसके अर्थ से व्यापार का बोध होता है.'[३०]

पं. श्रीलाल, विलियम एथरिंगरन के ये उद्धरण पं. कामताप्रसाद गुरु, पं. किशोरीलाल वाजपेयी और दुनीचन्द के उन उद्धरणों की तरह प्रायः एक ही विचार को दोहराते हैं. इन समर्थनों से इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि और शब्द अधातुज हो सकते हैं परन्तु क्रियाएँ तो धातुज ही हैं.

४. गुजराती - धातु-चर्चा

गुजराती व्याकरणों में परिभाषाएँ देने की अपेक्षा विश्लेषण-वर्गीकरण करने की परंपरा अधिक विकसित हुई है. *1921* में प्रकाशित नरसिंहराव दिवेटिया कृत 'गुजराती लेंग्वेज एण्ड लिटरेचर' में 'द कोर्पस आफ गुजराती वर्बल रूट्-इट्स फोर्मेशन' नामक एक उत्सर्ग दिया गया गया है जिसमें धातुओं का ऐतिहासिक तथा स्वरूपगत वर्गीकरण सोदाहरण किया गया है. डा. टी. एन. दवे की पुस्तक 'द लेंग्वेज आफ गुजरात' में गुजराती क्रिया तथा उसके रूपों की भाषाविज्ञान तथा व्याकरण की दृष्टि से चर्चा की गई है. टेलर, क. प्रा. त्रिवेदी, म. झवेरी, के. का. शास्त्री, ह. भायाणी, ज्योर्ज कार्डोना, जयंत कोठारी, योगेन्द्र व्यास आदि के गुजराती व्याकरण विशेष उल्लेखनीय हैं. इनमें से कुछ विद्वानों ने नई स्थापनाएँ की हैं तो कुछ ने सुलभ सामग्री का शास्त्रीय विनियोग किया है.

श्री के. का. शास्त्री अन्य विद्वानों की तरह धातु को वैयाकरण की कल्पना बताकर कहते हैं कि यास्क और पाणिनि ने स्तोत्र धातुएँ दी हैं. वे लिखते हैं :

" वस्तुस्थितिए भाषाना बधा ज शब्द कंई क्रियावाचक धातुओमांथी न होई शके; डित्थ डपित्थ वगेरे यदृच्छा शब्दोनुं अस्तित्व व्याकरणकारो स्वीकारे छे अने पारकी भाषाओना शब्द पण उछीना लेवाया होय छे ... आपणने आ रीते जे क्रियापदो मळ्यां छे तेओने ते ते क्रिया-पदना मूळ धातु कहिये छिये."[३१]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिन्दी व्याकरणकार जिसे 'धातु' कहते हैं उसे यहाँ 'क्रियावाचक धातु' कहा गया है. संस्कृत परंपरा के अनुसार किसी भी शब्द के मूल रूप को 'धातु' की संज्ञा दी है. डा. ऊर्मि देसाई लिखती हैं कि शब्द की प्रमुख इकाई के लघुतम अंश को धातु कहा जा सकता है. इस परिभाषा को इन्होंने इस प्रकार स्पष्ट किया है :

" धातु ए शब्दना मध्यवर्ती अंश माटेनी संज्ञा छे. एटले के बधा ज शब्दोना मध्यवर्ती अंश धातुना बनेला होय छे. अने आ धातुओ ज घणुंखरुं अर्थना मुख्य वाहक होय छे.

धातुओ एटले संस्कृतमां जेने आपणे क्रियावाचक अंग कहीए छीए ते नहीं. परंतु अर्थनी दृष्टिए गुजराती भाषानी कक्षाए जेनुं आगळ पृथक्करण न करी शकीए अने जेनो अर्थ अधातुओनी तुलनाए कंइक वधु 'स्थूल' होय ते. आम धातुओ ते भाषानो पायानो आधार छे. उदा. " हाथ, पग, टेबल, बोल, शाल, जीव, गाय, धन, फूल " वगेरे.

एक शब्दमां एक ज धातु आवे एवुं कंई नथी. एक करतां वधु धातु पण आवी शके. " [81]

यहां कहा गया कि (1) सभी शब्दों के मध्यवर्ती अंश धातुओं से बने होते हैं, (2) ये धातुएँ प्रमुख अर्थवाहक होती हैं, (3) धातु पृथक्करण के बाद की स्थिति है, धातु तक पहुँचने के बाद पृथक्करण संभव नहीं, (4) कुछ शब्दों में — समासादि में एक से अधिक धातुएँ हो सकती हैं.

लेखिका ने इस प्रतिपादन के लिए इ. ए. नायूडा के ग्रंथ 'मार्फोलोजी — द दीस्क्रिप्टिव एनालिसिस आफ वर्ड्स' का आधार लिया है. लेखिका की स्थापनाएँ नई हैं फिर भी गुजराती व्याकरणशास्त्र की परंपरा में आगंतुक नहीं लगतीं. रूपरचना को (1) धातु और (2) अधातु में बांटकर, धातु को शब्द का मध्यवर्ती अंश मानने में औचित्य है. हिन्दी व्याकरणकारों ने क्रियावाचक धातु को ही धातु कहा है जब कि गुजराती व्याकरण के अनुसार धातुएँ दो प्रकार की हैं : (1) संज्ञावाचक धातुएँ और (2) क्रियावाचक धातुएँ.

अभी गत वर्ष (1977 में) प्रकाशित डा. योगेन्द्र व्यास के व्याकरण में 'नामपद में प्रविष्ट होते रूप', 'क्रियापद में प्रविष्ट होते अन्य रूप' तथा 'द्वैतीयिक रचनाएँ' जैसे प्रकरण भी इसी वर्गीकरण का समर्थन करते हैं. डा. व्यास के अनुसार 'क्रियापद जैसी रचना में प्रविष्ट होते रूपों में जो प्रमुख या केन्द्रित रूप होते हैं उन्हें धातु अथवा क्रियापद के मूल रूप (– वर्ब बेस) कहते हैं.'

'क्रियापद के मूल रूप' को 'क्रियावाचक धातु' कहना अधिक युक्तिसंगत है. आख्यातिक रूपों के पदसाधक प्रत्ययों को अलग करने पर जो सरल मूल अंग अर्थात् प्रकृति शेष रहती है इसे डा. भायाणी ने क्रियावाचक धातु बताकर प्रस्तुत प्रबंध में हिन्दी–गुजराती 'धातुओं' का नहीं परन्तु 'क्रियावाचक धातुओं' का तुलनात्मक अध्ययन करने का सुझाव दिया था.

५. धातु–संख्या

संस्कृत 'धातुपाठ' में कुल 1880 धातुओं की गणना है. यह उल्लेख श्री बाबूराम सक्सेना ने किया है. श्री भोलानाथ तिवारी के हिसाब से संस्कृत धातुओं की संख्या 800 है. वे लिखते हैं :

'हिटनी की गणना के अनुसार इनमें 800 से कुछ ही अधिक का साहित्य (विशेषत : वैदिक तथा प्राचीन लौकिक) में प्रयोग मिलता है. इन 800 के तीन वर्ग हैं. प्रथम वर्ग लगभग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

200 धातुओं का है जो केवल वैदिक संस्कृत तक सीमित है, दूसरा वर्ग 150 से कुछ कम धातुओं का है जो केवल लौकिक साहित्य में मिलती हैं. तीसरे वर्ग में लगभग 500 धातुएँ आती हैं जो वैदिक तथा लौकिक दोनों ही साहित्य में प्रयुक्त हुई हैं." [३३]

डा. भोलानाथ तिवारी के निर्देशन में डा. कृष्णगोपाल रस्तोगी ने 'हिन्दी क्रियाओं का अर्थपरक अध्ययन' किया है, जिसमें 772 धातुओं के क्रियारूप पसंद किये गए हैं.

गुजराती के विद्वान श्री के. का. शास्त्री ने इनमें से कुछ बातों को दोहराते हुए कुछ नई जानकारी दी है :

"संस्कृत भाषामां बधा मळी 2200 थीये वधु धातु पाणिनिना धातुपाठमां जोवा मळे छे. आमांना एकना एक धातुना जुदा जुदा गण थता होई एवडी संख्या थई छे; पण सामान्य रीते 1700 जेटला धातु आवी रहे छे. ए 1700 धातुस्वरूप टूंकामां टूकां छे अने एनाथी टूंकां रूप न मळी शके. परंतु आ धातुओमां पण एकबीजामांथी विकसेला धातुओ तारववामां आव्या छे. ह्विटनीए लगभग 800 धातुओ ज होवानुं बताव्युं छे. एनाथी आगळ वधी, भारत-युरोपीय भाषाकुळना मूळ धातुओनी संख्या कदाच 50 मौलिक धातुओथी वधु नहि होय एवुं पण भाषा-शास्त्रीओ कहे छे." [३४]

शास्त्री जी का संस्कृत धातुकोश को केवल 50 की संख्या में सीमित कर देना यादृच्छिक लगता है. ऐसा माननेवाले अन्य भाषाशास्त्रियों के इन्होंने संदर्भ दिये होते तो इस धारणा का शास्त्रीय आधार परखा जा सकता. इसके अभाव में ह्विटनी की गणना अधिक प्रतीतिजनक लगती है.

संख्या की अनिश्चितता हिन्दी-गुजराती धातुओं के बारे में भी है. भाषाविदों की धारणाएँ एवं गणनाएँ अलग-अलग हैं. स्वामी श्रीभगवदाचार्यजी ने 'गुर्जर-शब्दानुशासन' के अंत में धातुपाठ दिया है. इसमें 1972 धातुओं का समावेश है. स्वामीजी ने सकर्मक, प्रेरक आदि रूपों को भी स्वतंत्र धातु माना है. इसी कारण संख्या लगभग द्विगुणित हो गई है. कई धातुएँ उनसे छूट भी गई हैं. इस प्रबंध के परिशिष्ट में 2136 गुजराती धातुओंका समावेश हुआ है.

डा. हार्नले के अनुसार संस्कृत से हिन्दी में आई हुई मूल धातुएँ 393 तथा यौगिक धातुएँ 189 हैं. डा. भोलानाथ तिवारी हिन्दी धातुओं की पूरी संख्या 2000 बताते हैं. लगता है कि इस संख्या में आपने मूल धातुओं का ही नहीं, क्रिया के सकर्मक, अकर्मक तथा प्रेरक रूपों का भी समावेश कर लिया है.

डा. श्रीराम शर्मा ने 'दक्खिनी हिन्दी का उद्भव और विकास' में परिशिष्ट के रूप में दक्खिनी का धातुपाठ दिया है, जिसमें 459 धातुओं का समावेश है. लेखक ने यहाँ स्पष्टता की है कि यह सूची पूर्ण नहीं है. इसकी संख्या में वृद्धि हो सकती है तो दूसरी ओर दक्खिनी की सभी धातुएँ हिन्दी में व्यापक रूप से प्रचलित नहीं है. 'कचवाना' (असंतुष्ट होना) जैसी गुजराती में विशेष प्रचलित धातुएँ भी इस सूची में समाविष्ट हैं.

प्रस्तुत प्रबंध में बोली-विषयक शोधकार्यों से प्राप्त धातुओं का भी समावेश किया है. सकर्मक, अकर्मक तथा प्रेरक जैसे रूपों में से एक ही रूप देने का प्रयत्न किया है किन्तु विविध ध्वन्यात्मक रूपों को बिना छाँटे एक साथ देने में औचित्य समझा है. तुलनात्मक धातु-कोश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को अध्ययन-सामग्री के रूप में तैयार किया है. इन सब कारणों से यहाँ दी गई धातुओं की संख्या चार हजार से आधिक (4269) हुई है. बोलियों का विशेष अध्ययन होने पर इस संख्या में वृद्धि हो सकती है. डा. श्रीराम शर्मा ने ठीक ही कहा है :

"आजकल की साहित्यिक हिन्दी की अपेक्षा उससे संबंधित बोलियां और उपभाषाएँ 'धातु' की दृष्टि से बहुत समृद्ध हैं. पुरानी हिन्दी में सीधे धातु से बने क्रियापदों का प्रयोग अधिक होता था. धीरे-धीरे क्रियापदों में कृदन्त शब्दों के साथ सहायक क्रियाओं का उपयोग बढ़ा. इन दिनों साहित्यिक भाषा में संज्ञाओं से अधिक कार्य लिया जाता है. क्रिया के द्योतन के लिए नामधातु अथवा क्रियार्थक संज्ञा के स्थान पर संज्ञा के योग की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है, बोलियों में आज भी इस प्रकार के प्रयोग मिलते हैं." [34]

डा. शर्मा ने अपने समर्थन में 'पिडाना', 'दूहना', 'बतियाना', जैसी धातुओं के उदाहरण दिए हैं, साहित्यिक हिन्दी में इनके स्थान पर 'पीडा होना', 'दूध निकालना', 'बात करना' जैसे प्रयोग होंगे. वैसे, यहाँ कहना चाहिए कि नये लेखक नामधातुओं का सविशेष प्रयोग करने लगे हैं और साहित्यिक भाषा तथा बोली के बीच की दूरी कम करने के साथ साहित्यिक भाषा की धातु-समृद्धि बढ़ा रहे हैं.

बोलियों में देशज धातुओं का आधिक्य हो और तत्सम-अर्धतत्सम धातुएँ न हों ऐसा भी नहीं है. कुछ धातुओं के उदाहारण देकर डा. शुकदेव सिंह ने कहा है कि भोजपुरी में कुछ ऐसी भी अर्ध-तत्सम धातुओं का प्रचलन है, जो संस्कृत की मूल धातुओं से प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध हैं, जिनमें तत्सम चिह्न अधिकांश सुरक्षित हैं. [35]

धातुओं के अध्ययन की सुलभ सामग्री के आधार से यहाँ संचय-संकलन किया है और विश्लेषण-वर्गीकरण के बाद धातु-संख्या (2981) तय की है.

६. धातुओं के मूल रूप :

कुछ धातुएँ अकर्मक होती हैं, कुछ सकर्मक होती हैं, कुछ धातुएँ बिना रूप-परिवर्तन के एकसाथ अकर्मक तथा सकर्मक होती हैं. परन्तु जिनके अकर्मक रूप अलग अलग होते हैं उनमें से एक को ही पसंद करना हो तब किसे पसंद किया जाय ऐसा प्रश्न यहाँ बार-बार खड़ा हुआ. एक पद्धति के रूप में अकर्मक क्रियाओं को ही प्रस्तुत प्रबंध के धातु-कोश में अध्ययन-विषय बनाने में औचित्य था परन्तु जिन धातुओं के सकर्मक रूप ही मूल रूप लगते हों और अकर्मक रूप उनके आधार से बने दिखाई देते हों उनका क्या ? और कुछ धातुएँ तो केवल सकर्मक ही हैं.

'अकर्मक', 'सकर्मक' तथा 'प्रेरणार्थक' व्याकरणशास्त्र के पारिभाषिक शब्द हैं और वे क्रियाओं के लक्षण सूचित करते हैं. क्रियाओं के मूल रूपों — धातुओं तक पहुँचने पर भी ये लक्षण क्या अक्षुण्ण रहते हैं ?

व्याकरण के अनुशासन से 'धातु' मुक्त है, 'क्रिया' नहीं, और ये दोनों एक ही तत्त्व के दो रूप हैं. 'क्रियापद' व्यवहार में दिखाई देते हैं, धातुएँ संकल्पनाएँ हैं. यदि धातुओं की ही सतत बात होती रहे तो चर्चा में बड़ी अमूर्तता आ जाएगी इसलिए धातुओं के कुछ वर्गीकरण क्रियाओं के वर्गीकरण की भूमिका का निर्वाह करते हैं. इस प्रक्रिया में विद्वानों ने कहीं-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहीं तो 'धातु' तथा 'क्रिया' का एकदूसरे के विकल्प के रूप में भी प्रयोग किया है. सकर्मक-अकर्मक की चर्चा करते समय इस प्रकार की अशास्त्रीयता से बचना कुछ मुश्किल भी लगता है. हिन्दी-गुजराती दोनों भाषाओं के विद्वानों के इस विषय के गंभीर लेख भी ऐसा ही सूचित करते हैं. रूपतत्त्व तथा रचनातत्त्व में से किस आधार से वर्गीकरण हो रहा है इसकी स्पष्टता सतत बनी रहती तो यह संकरदोष न होता.

दोनों भाषाओं में कुछ क्रियाओं के द्वितीय प्रेरणार्थक रूप भी बनते हैं. प्रस्तुत अध्ययन में प्रेरणार्थक क्रियाओं को नहीं लिया. फिर भी प्रेरणार्थक क्रिया के क्षेत्र से मुक्ति नहीं मिल सकती. क्योंकि कुछ क्रियाओं के विषय में सकर्मक तथा प्रेरमार्थक की भेदरेखा स्पष्ट नहीं है. डा. उदयनारायण तिवारी ने कहा है कि संस्कृत की कुछ णिजन्त धातुएँ हिन्दी में सिद्ध धातुओं के रूप में चली आई हैं. इनमें से 'प्रेरणा' का अर्थ लुप्त हो गया है और ये अन्य सकर्मक क्रियाओं के समान व्यवहृत होती हैं. [56]

धातुओं की रूपरचना को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने पर मूल संस्कृत अकर्मक रूप उत्पन्न होने के कई उदाहरण मिलेंगे. संस्कृत के आत्मनेपदी और परस्मैपदी भेदों की रक्षा भी नहीं हुई. हिन्दी की कुछ प्रेरणार्थक धातुएँ कुछ प्रयोगों में सकर्मक के रूप में काम करती नज़र आती हैं. डा. मुरलीधर श्रीवास्तव लिखते हैं :

"कई वैयाकरण बताते हैं कि चलना क्रिया का चलाना और चलवाना दोनों रूप ही प्रेरणार्थक हैं. हमें यह बात जँचती नहीं. 'वह दुकान चलाता है', इस वाक्य में 'चलाना' क्रिया प्रेरणार्थक नहीं है. 'वह' किसीको प्रेरित नहीं करता, स्वयं चलाने की क्रिया करता है. पर, चलाना की धातु 'चला' को मूल धातु नहीं कह सकते हैं. 'चला' धातु तो अवश्य है, पर 'चल' ही मूल धातु है. अतः मूल धातुशब्द का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए. हिन्दी में एक धातु से दूसरी धातु बनती देखी जाती है." [57]

कुछ अकर्मक धातुओं से सकर्मक धातुएँ निकली हैं तो सकर्मक से अकर्मक निकलने के उदाहरण भी बहुत बड़ी संख्या में हैं. जहाँ अग्रताक्रम निश्चित नहीं हो पाया तथा जहाँ अकर्मक-सकर्मक में विशेष अर्थभिन्नता है वहाँ दोनों रूप देने में ही औचित्य समझा है. 'जाँचना' सकर्मक है, इससे निकला है 'जँचना'. अर्थभिन्नता के लिए ये वाक्यप्रयोग देखिए : आप इस लेख को जाँचिए; मुझे आपकी बात जँचती है.

डा. उदयनारायण तिवारी का यह कथन सही है कि कुछ संस्कृत धातुओं के प्रेरणार्थक रूप हिन्दी में सकर्मक के रूप में प्रयुक्त होने लगे. इस प्रक्रिया में 'अ' के स्थान पर 'आ', 'वा' या 'ओ' से नया प्रेरणार्थक रूप बना.

हिन्दी क्रियाओं के कुछ उदाहरण ऐसे भी मिलते हैं जो सकर्मक होने के साथ-साथ प्रेरणार्थक भी हैं. इस स्थिति में इन्हें केवल प्रेरणार्थक या केवल सकर्मक कहने में व्याप्तिदोष होगा. बैठाना, भिगोना, हँसाना, चलाना में 'बैठा', 'भिगो', 'हँसा' और 'चला' सकर्मक भी हैं, प्रेरणार्थक भी. डा. भायाणी ने 'थोडोक व्याकरण-विचार' में रूपरचना की दृष्टि से गुजराती भाषा के प्रेरक आख्यातिक अंगों की क्रिया के प्रथम एवम् द्वितीय प्रेरणार्थक रूपों की विस्तृत चर्चा की है. इसमें इन्होंने सकर्मक-प्रेरक की भेदरेखा स्पष्ट करना आवश्यक नहीं समझा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह भेद अर्थगत अधिक है और सविशेष तो वाक्यरचना पर अवलम्बित है. केवल इन धातुओं के शब्दरूप को देखकर यही कहा जा सकता है कि सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती हैं परन्तु सभी सकर्मक क्रियाएँ प्रेरणार्थक हों ही ऐसा नहीं है.

गुजराती में 'कापवुं' सकर्मक रूप है और 'कपावु' इसका कर्माणि रूप. हिन्दी में उनके लिए क्रमशः 'काटना' और 'कटना' रूप हैं. अर्थ को ध्यान में रखते हुए वर्गीकरण करें तो गुजराती 'काप' तथा हिन्दी 'काट' धातुओं को अग्रता देनी चाहिए. परंतु हिन्दी 'कट' को प्राथमिकता न देने का शास्त्रीय आधार क्या है ? कहीं-कहीं अनिर्णय की स्थिति में या कहिए कि गलती से बचने के लिए एकाधिक धातु-रूप दिए हैं और जैसा कि अभी बताया, जहाँ ध्वनिगत अंतर है वहाँ संदर्भ के लिए विभिन्न रूप दिए हैं.

७. धातु : स्वरान्त या व्यंजनान्त ?

डा. धीरेन्द्र वर्मा लिखते हैं :

" क्रिया के 'ना' युक्त साधारण रूप से—'ना' हटा देने पर हिन्दी धातु निकल आती है, जैसे खाना, चलना, देखना आदि में खा, देख, चल धातु हैं. "[38]

इसके अनुसार गुजराती क्रिया के 'वुं' युक्त साधारण रूप से—'वुं' हटा देने पर गुजराती धातु निकल आएगी. उपर्युक्त क्रियाएँ गुजराती में भी समान रूप से प्राप्त होती हैं : खावुं, देखवुं, चालवुं. इनसे—'वुं' हटा देने से या इनका द्वितीय पुरुष एकवचन आज्ञार्थ रूप पसंद करने से खा, देख, चल रूप प्राप्त होंगे. इनमें 'खा' तो आकारान्त होने के कारण स्पष्ट रूप से स्वरान्त है परन्तु 'देख' या 'चल'-'चाल' को स्वरान्त मानें या व्यंजनान्त ?

उच्चारण की दृष्टि से तो 'करना' या 'करवुं' रूप ही सही हैं. 'कर' लिखने पर भी हम पढ़ते हैं 'कर्'. नियमों की दृष्टि से भी धातुरूपों को हलन्त लिखने में ही शास्त्रीयता का निर्वाह होगा. परन्तु कामताप्रसाद गुरु ने धातुओं को हलन्त नहीं माना. शायद इन्होंने हिन्दी धातुओं के ध्वनि-रूपों के बारे में नहीं सोचा. जैसा कि डा. मुरलीधर श्रीवास्तव कहते हैं : हिन्दी में जब ध्वन्यात्मक पाठ के लिए फोनेटिक रीडर बनेंगे, तो पढ़ना और चलना लिखना आवश्यक होगा.[39]

सन 1885 में प्रकाशित 'भाषा प्रभाकर' के लेखक बाबू रामचरण सिंह ने तो धातुओं को 'ना' प्रत्यय-सहित लिखना आवश्यक समझा था :

'हाँ, केवल जा, आ, गिर आदि धातु हैं पर उनकी धातुता का चिह्नरूप एक दूसरा 'ना' प्रत्यय (संस्कृत के इक् स्तिप् की भाँति) लगायें तो किसी भाँति उनका लिखना ठीक हो सकता है. "[40]

बाबू साहब ने व्याकरणिक आवश्यकताओं के अनुसार धातु को देखा है इसलिए उनके सारे तर्क दूसरी दिशा में आगे बढ़ जाते हैं. वे 'ना' जैसा प्रत्यय जोड़ने की चिन्ता में 'गिर' धातु स्वरान्त है या व्यंजनान्त—इसकी चर्चा नहीं कर पाते. पं. किशोरीदास वाजपेयी हिन्दी की सभी धातुओं को स्वरान्त मानते हैं :

" संस्कृत की सभी धातुएँ प्राकृत-पद्धति से हिन्दी में आकर स्वरान्त हो गई हैं. हिन्दी में एक भी धातु व्यंजनान्त नहीं है. "[41]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाजपेयी के अनुसार सभी धातुओं को स्वरान्त मान लेने पर धातुओं से क्रियारूप बनते समय संधि–नियमों का पालन होता दिखाई नहीं देता. डा. श्रीवास्तव 'चल्', 'पद्' आदि धातुओं को व्यंजनान्त मानने के पक्ष में हैं. वे अपने समर्थन में संस्कृत की हलन्त धातुओं की याद दिलाते हैं और इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि हिन्दी धातुएँ दो प्रकार की है : स्वरान्त और व्यंजनान्त.

प्रश्न यह उठता है कि क्या हम हिन्दी भाषा को उच्चारण के अनुसार लिपिबद्ध करते हैं? क्या शत–प्रतिशत ऐसा करना संभव भी है? पद, चल, कर, गिर आदि धातुओं को व्यंजनान्त मानने पर भी लिपि की सुविधा के लिए तथा प्रणालि के अनुसार इनको हलन्त न लिखकर स्वरान्त लिखा जाता है ऐसा समाधान कर लेने पर धातुओं को इनके मूल ध्वन्यात्मक रूपों में स्वरान्त–व्यंजनान्त मानना–मनवाना सरल हो जाएगा.

८. धातुओं का वर्गीकरण

व्युत्पत्ति के आधार पर विद्वानों ने धातुओं के दो भेद किए हैं : (1) मूल (*Primary*) (2) यौगिक (*secondary*)

कामताप्रसाद गुरु के अनुसार इनकी परिभाषाएँ इस प्रकार हैं :

" मूल धातु वे हैं जो किसी दूसरे शब्द से न बने हैं; जैसे करना, बैठना, चलना, लेना. (2) जो धातु किसी दूसरे शब्द से बनाए जाते हैं वे यौगिक धातु कहलाते हैं; जैसे 'चलना' से 'चलाना', 'रंग' से रंगना', 'चिकना' से 'चिकनाना'.

'धातु' शब्द को पुल्लिंग माननेवाले गुरुजी की एक स्पष्टता द्रष्टव्य है :

" संस्कृत अथवा प्राकृत के धातु चाहे यौगिक हों चाहे मूल, परन्तु उनसे निकले हुए हिंदी धातु मूल ही माने जाते हैं. "

—यह दृष्टि व्याकरणकार की है. डा. धीरेन्द्र वर्मा यौगिक के अंतर्गत उन धातुओं की गणना करते हैं जो संस्कृत धातुओं से नहीं आई हैं किन्तु जिनका सम्बन्ध या तो संस्कृत रूपों से है या तो वे आधुनिक काल में गढ़ी गई हैं. जैसे संस्कृत 'जन्म' से नामधातु 'जनम(ना)', संस्कृत 'च्युत+क्' से हिन्दी संयुक्त धातु चुक(ना)और 'फड़फड़ना' आदि अनुकरणात्मक धातुएँ.

हिन्दी की 'सुन' धातु मूल मानी जाएगी, परन्तु संस्कृत की मूल धातु 'श्रु' है और इसके साथ 'णु' गणचिह्न लगता है. हिन्दी धातु 'पसीजना' मूल मानी जाएगी, परन्तु संस्कृत में वह उपसर्गयुक्त है : प्र+स्विद्. पालि–प्राकृत–अपभ्रंश के तुलनात्मक व्याकरण में डा. सुकुमार सेन ने लिखा है :

"म.भा.आ. में व्यंजनों में जो वर्ण–विकार हुये, उनके फलस्वरूप धातु–प्रत्यय–विभाग का प्रा.भा.आ.कालीन स्पष्ट ज्ञान धुंधला पड़ गया. अ–तथा–अय–विकरणवाली ऐसी धातुएँ, जिनमें संयुक्त व्यंजन नहीं थे तथा आकारान्त एकाक्षरीय धातुओं को छोड़, अन्य धातुओं में धातु का अन्तिम व्यंजन विकरण (अथवा प्रत्यय) के साथ समीकृत हो गया, जिसके कारण धातु, विकरण तथा प्रत्यय का स्पष्ट विभाग कर पाना संभव न रह गया. इस प्रकार यह समीकृत अंग (अर्थात् धातु+विकरण) म.भा.आ. में नयी धातु अथवा अंग समझा जाने लगा."[42]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—इस प्रकार के शास्त्रीय निष्कर्षों को लक्ष्य में रखते हुए हिन्दी धातुओं का मूलतथा यौगिक की श्रेणियों में वर्गीकरण करना होगा. डा. ना. नागप्पा ने यौगिक धातु के तीन प्रकार बताये हैं: (क) मूल धातु से व्युत्पन्न धातु, (ख) संयुक्त धातु—जो दो या अधिक धातुओं के संयोग से बनती है, तथा (ग) नामधातु जो क्रियेतर शब्द से बनती है.[45]

डा. उदयनारायण तिवारी गुरु जी द्वारा प्रयुक्त 'मूल' तथा 'यौगिक' शब्दों के विकल्प में 'सिद्ध' तथा 'साधित' शब्दों का प्रयोग करते हैं. इनके अनुसार मूल रूप में सुरक्षित धातुएँ सिद्ध, तथा मूल में किसी प्रत्यय के योग से बनी धातुएँ साधित हैं.

डा. वर्मा, डा. तिवारी आदि विद्वान डा. सुनीतिकुमार चटर्जी द्वारा किये गए धातु-वर्गीकरण को अधिकृत मानकर चले हैं, जो इस प्रकार है:

- क मूल
  - १ तद्भव (१) साधारण (२) उपसर्गयुक्त
  - २ प्रेरणार्थक तद्भव
  - ३ संस्कृत से गृहीत (तत्सम, अर्धतत्सम)
  - ४ संदिग्ध व्युत्पत्तिवाली (देशज)
- ख यौगिक
  - १ आकारान्त प्रेरणार्थक
  - २ नामधातु* (क्रिया के अतिरिक्त, किसी अन्य व्याकरणिक रूप से बनाई गई.)
    - *तद्भव
      - प्राचीन
      - मध्ययुगीन
      - नवीन
    - *तत्सम, अर्धतत्सम
    - *विदेशी
  - ३ संयुक्त एवं प्रत्ययुक्त
  - ४ ध्वन्यात्मक
  - ५ संदिग्ध

मूल (क) के अंतर्गत जिन्हें प्रेरणार्थक तद्भव कहा है वे धातुएँ हिन्दी में आकर सकर्मक बनकर रह गई हैं. अन्यथा इनका समावेश यौगिक के अंतर्गत करना पड़ता.

डा. उदयनारायण तिवारी ने उपर्युक्त वर्गीकरण को ही साधारण शाब्दिक स्पष्टता के साथ माना है इसलिए उसको दोहराना आवश्यक नहीं.

धातुओं के वर्गीकरण का प्रयत्न शताब्दि से अधिक पुराने व्याकरणों में भी पाया जाता है. 'भाषा-चन्द्रोदय' (1855) के लेखक पं. श्रीलाल ने हिन्दी धातु को (1) सिद्ध धातु और (2) अनुकरण धातु – इन दो वर्गों में बाँटा था. सिद्ध धातु के अंतर्गत 'करना' तथा अनुकरण धातु के अंतर्गत हिनहिनाना, चिग्घारना आदि को स्थान दिया था. राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वभाविक और कृत्रिम तथा अकर्मक और सकर्मक जैसे भेद किए थे. फिर, सकर्मक के एककर्मक, द्विकर्मक और त्रिकर्मक – ऐसे तीन प्रकार माने थे. पं. कालीप्रसाद त्रिपाठी ने अपने 'भाषा–व्याकरण–दर्पण (1880) में कृत्रिम और स्वाभाविक के भेदों को मान्यता दी थी.

पं किशोरीदास वाजपेयी ने 'हिन्दी शब्दानुशासन' (1958) में एक शब्दप्रयोग किया है : 'उपधातु.' वे लिखते हैं :

"मूल धातुओं से कुछ उपधातुएँ बन जाती हैं और फिर उन 'उपधातुओं' के प्रयोग उसी तरह होते हैं, जैसे कि मूल धातुओं के....जो कुछ उन धातुओं से बनता चलता है, वही सब इन उपधातुओं से. परन्तु स्वरूपभेद तो है ही. इस भेद के ही कारण तो 'उपधातु' इन्हें हम कहते हैं. इन उपधातुओं की दो श्रेणियाँ हैं. एक श्रेणी को तो हम मूल धातुओं का विकसित रूप कह सकते हैं और दूसरी को संकुचित रूप. 'उपधातु' से बनी क्रियाएँ प्रेरणा–प्रक्रिया में आती हैं और संकुचित–रूप 'उपधातु' से बनी क्रियाएँ 'कर्मकर्तृक क्रियाएँ' कहलाती हैं.[44]

पंडितजी ने संयुक्त क्रिया, नामधातु, क्रिया की द्विरक्ति आदि की चर्चा भी की है. उनकी चर्चा वाक्यगत विशेष है. चटर्जी की तरह शास्त्रीय पद्धति से धातुओं का ऐतिहासिक वर्गीकरण वाजपेयी ने नहीं किया. 'उपधातु' शब्दप्रयोग भी स्वीकार्य नहीं लगता. एक वाक्य में लगता है कि वे यौगिक धातु को उपधातु कहते हैं परन्तु दूसरे वाक्य में इसकी दो श्रेणियाँ बताते हैं : (1) मूल धातुओं का विकसित रूप और (2) मूल धातुओं का संकुचित रूप. ये विकसित–संकुचित शब्दप्रयोग भी साधु नहीं हैं. दोनों श्रेणियों में परिवर्तन लक्षित होता है यही मूल बात थी और इसीलिए दोनों की श्रेणी एक ही थी.

आधुनिक हिन्दी का प्रारम्भिक व्याकरण—'ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी' (1958) में आर्येन्द्र शर्मा ने प्रेरणार्थक क्रिया, संयुक्त क्रिया और नामधातु के विषय में कुछ उल्लेखनीय चर्चा की है. वाजपेयी जी और शर्माजी के बीच हुए व्याकरणिक विवाद ने इस विषय के छात्रों में बड़ी दिलचस्पी जगाई थी परन्तु प्रस्तुत विषय इससे लाभान्वित नहीं हुआ था.

1966 में प्रकाशित डा. ज. म. दीमशित्स की पुस्तक 'हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा' में स्वतंत्र मूल धातुओं को अव्युत्पन्न बताया गया है. यह वर्गीकरण मूल–यौगिक तथा सिद्ध–साधित की परंपरा का ही है.

धातुओं के वर्गीकरण को भाषाविज्ञानियों ने वैयाकरणों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण समझा. पूर्वचर्चित चटर्जी महोदय के वर्गीकरण को अधिकांश भाषाविज्ञानियों ने ज्यों–का–त्यों स्वीकार कर लिया है परन्तु डा. भोलानाथ तिवारी ने उस वर्गीकरण में कुछ सीमाएँ देखी हैं. वे कहते हैं कि अनेक ध्वन्यात्मक धातुएँ आधुनिक काल में अनुकरण (धड़धड़) से बनी हैं किन्तु कुछ परंपरागत रूप में संस्कृत से भी (खटखट) चली आ रही हैं. इन दोनों को ऐतिहासिक दृष्टि से एक साथ नहीं रखा जा सकता. इन धातुओं को ध्वन्यात्मक कहने में भी भोलानाथ जी को आपत्ति है क्योंकि 'जगमगाना' जैसी धातुएँ, ध्वन्यात्मक नहीं हैं. गुजराती में 'ध्वन्यात्मक' के लिए 'रवानुकारी' शब्द प्रचलित था, आधुनिक भाषाविज्ञान के विद्वान अब 'अनुकरणात्मक' शब्द का प्रयोग करते हैं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोलानाथ जी की एक आपत्ति यह है कि जिन धातुओं को प्राकृत काल तक ही खोजा जा सकता है उनको प्रस्तुत वर्गीकरण में कैसे रखा जा सकता है? जैसे हिन्दी 'ऊँघ', प्रा. 'उँघ' मूल तद्‌भव में सामान्य के अतिरिक्त कर्मवाच्यवाली धातुएँ (उत्+पद्, उत्पद्यते, प्रा. उपज्जइ, उपजना) भी हैं. इन्हें ऐतिहासिक दृष्टि से अलग रखना चाहिए.

भोलानाथ जी को यह भी अखरता है कि यौगिक के अंतर्गत सादृश्य के आधार से बनी धातुओं के साथ न्याय नहीं हुआ है. वे मानते हैं कि आधुनिक भाषाओं के प्रामाणिक व्युत्पत्ति-मूलक कोशों का निर्माण होने से पहले धातुओं को सर्वमान्य रूप से वर्गीकृत करना सम्भव नहीं है, फिर भी वर्तमान ज्ञान की परिधि में उनकी दृष्टि से निम्नांकित वर्गीकरण अधिक निर्दोष है :

- परंपरागत
  - संस्कृत
    - तद्‌भव
    - परवर्ती तद्‌भव
    - तत्सम
      - क. मूल
      - ख. उपसर्गयुक्त
      - ग. प्रत्यययुक्त
      - घ. संयुक्त
        - अ. कर्तृवाच्य
        - आ. कर्तृवाच्येतर
        - इ. प्रेरणार्थक
  - प्राकृत (पालि, प्राकृत, अपभ्रंश)
- निर्मित
  - धातु से (अकर्मक, सकर्मक, प्रेरणार्थक)
  - अन्य (नाम) से —
    - संज्ञा
    - विशेषण
    - सर्वनाम
    - क्रियाविशेषण
      - क. तद्‌भव
      - ख. परवर्ती तद्‌भव
      - ग. तत्सम
      - घ. विदेशी
      - ङ. संदिग्ध व्युत्पत्तिवाली
  - अनुकरणात्मक (ध्वनि, दृश्य आदि)
- संदिग्ध व्युत्पत्ति की

इस वर्गीकरण में भी व्याप्तिदोष तो होता ही है. प्रथम विभाग परंपरागत के अंतर्गत संस्कृत उपविभाग में ऐतिहासिक, रूपगत तथा रचनागत आधार एक साथ लिए गए हैं.

संदिग्ध व्युत्पत्ति की धातुएँ स्वतंत्र वर्ग के अंतर्गत कैसे रखी जा सकती हैं? व्युत्पत्ति ज्ञात होने पर तो उनका वर्ग निश्चित होकर बदल जाएगा. तब तक उनको अवर्गीकृत धातुओं के रूप में ही देखना चाहिए.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डा. मुरलीधर श्रीवास्तव ने स्वर-व्यंजन के भेद के आधार पर (१) स्वरान्त धातुएँ और (२) व्यंजनान्त धातुएँ - ऐसे दो वर्ग सूचित किये हैं. अक्षर-संख्या के आधार पर (१) एकाक्षरी, (२) द्वयक्षरी और (३) त्र्यक्षरी वर्ग बताए हैं. मूल और यौगिक से स्वतंत्र रूप से (1) उत्पाद्य, (2) अनुत्पाद्य और (3) अल्पोत्पाद्य - ऐसे भेद भी सोदाहरण बताए हैं और कुछ सोचकर आखिर कहा है कि इन्हें एक ही धातु के रूपान्तर कहना चाहिए. डा. श्रीवास्तव 'संयुक्त धातु' को भी स्वतंत्र वर्ग मानते हैं; वास्तव में वे बात करते हैं संयुक्त क्रियाओं की.

गुजराती के भाषाविद् नरसिंहराव दिवेटिया ने सन् 1921 में गुजराती धातुओं को तीन वर्गों में बाँटा था : (क) तत्सम, अर्धतत्सम (ख) उपसर्गयुक्त धातुएँ तथा तद्भव के रूप में संक्षिप्त. ये दोनों वर्ग साधित धातुओं के अंतर्गत आ सकते हैं. (ग) नामधातुएँ. यह वर्गीकरण पर्याप्त नहीं है परन्तु लेखक के समय-संदर्भ को खयाल में रखने पर आदर जगाता है. नरसिंहराव जी ने व्युत्पत्ति के बारे में विस्तार से विचार किया है.

श्री के. का. शास्त्री ने ऐतिहासिक संदर्भ में रूप-रचना विषयक परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए गुजराती धातुओं को सात भागों में बाँटा है :

(1) विभिन्न विकरण-प्रत्ययों के निकल जाने के बाद अकारांत अंग के रूप में.
(२) विकरण-प्रत्यय निकल गया न हो और धातु अकारांत हो.
(3) मूल संस्कृत धातुओं के प्रेरक रूपों से जो 'आप' है उसके 'अव' होने पर प्राप्त होते रूप.
(4) कुछ भूतकृदंत से बने गुजराती भूतकृदंतों के द्वारा प्राप्त रूप.
(5) जिनमें अकारांत अंग नहीं हैं ऐसी मूल धातुएँ.
(6) कुछ नाम-विशेषण के आधार से केवल क्रियावाचक अंग के रूप में प्राप्त तथा
(7) अनुकरणवाचक स्वतंत्र धातुएँ.[45]

शास्त्रीजी ने साधित धातुओं के वर्ग के विषय में भी अलग से लिखा है. इन्होंने नरसिंहराव के वर्गीकरण से कुछ आगे बढ़ने का प्रयत्न अवश्य किया है परन्तु वे चटर्जी के वर्गीकरण को लक्ष्य करके गुजराती धातुओं के बारे में सोचते तो निश्चित भूमिकाओं पर और भी व्यापक वर्गीकरण कर सकते.

९ धातुओं का व्युत्पत्ति :

डा. सुनीतिकुमार चटर्जी ने बंगला भाषा का इतिहास लिखा है वैसा कोई व्युत्पन्न ग्रंथ हिन्दी या गुजराती भाषा में उपलब्ध नहीं है. डा. उदयनारायण तिवारी, डा. धीरेन्द्र वर्मा तथा डा. भोलानाथ तिवारी आदि विद्वानों ने हिन्दी भाषा के इतिहास लिखे हैं जो अनुस्नातक विद्यार्थियों के लिए सविशेष उपयोगी हैं. प्राचीन, मध्ययुगीन तथा नव्य भारतीय आर्यभाषाओं के विकास का निर्देश करती सामग्री के लिए इन विद्वानों को कुछ पाश्चात्य भाषाविदों तथा चटर्जी महोदय आदि का सहारा लेना पड़ा है. हिन्दी क्षेत्र में संस्कृत के पंडित बहुत हैं और उनमें से कुछ तो चोटि के हैं परन्तु प्राकृत-अपभ्रंश-पुरानी हिन्दी में से किसी एक को अपना अध्ययनक्षेत्र बनानेवाले विद्वान् (उस कोटि के) नहीं हैं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुजराती के पास पंडित बेचरदासजी तथा डा. भायाणी जैसे प्राकृत-अपभ्रंश के विशेषज्ञ आज भी हैं परन्तु उन्होंने भी गुजराती भाषा के उद्भव और विकास का क्रमिक इतिहास नहीं लिखा. डा. प्रबोध पंडित ने गुजराती का ध्वनि-संरचनागत अध्ययन सविशेष किया. भाषा का इतिहास वे भी दे सकते, पर हमारे दुर्भाग्य से वे रहे नहीं.

गुजराती के ऐतिहासिक अध्ययन के लिए प्राथमिक सामग्री की स्थिति हिन्दी की अपेक्षा बेहतर है. महान जैनाचार्य हेमचन्द्राचार्य ने (1088 – 1172 ई.) प्राचीन गुजराती के आरंभिक काल की सारी सामग्री ग्रंथस्थ की है. उनके प्राकृत व्याकरण में पश्चिमी अपभ्रंश के उदाहरण भी सुलभ हैं. हाँ, ये उदाहरण भाषा के साहित्यिक रूपों के हैं, उस युग में उच्चरित भाषा के नहीं. कुछ उदाहरणों के लिपिबद्ध होने और उनके रचनाकाल के बीच भी अंतर है. इससे भी कालनिर्णय में और भाषा का क्रमिक विकास समझने में कठिनाइयाँ पैदा होती हैं. डा. प्रबोध पंडित तथा डा. भायाणी ने इस संदर्भ में अध्येताओं को सावधान किया है.

जहाँ तक प्राप्त सामग्री के आधार पर व्युत्पत्ति-विषयक निकर्ष तक पहुँचने का प्रश्न है, टर्नर आदि प्राश्चात्य विद्वानों ने तथा नरसिंहराव, के. ह. ध्रुव, के. का. शास्त्री, दी. एस. दवे, भोगीलाल सांडेसरा, प्रबोध पंडित, मधुसूदन मोदी आदी गुजराती विद्वानों ने उल्लेखनीय कार्य किया है. डा. भायाणी प्रस्तुत विषय के विरल विद्वान हैं. 1975 में 'व्युत्पत्तिशास्त्र' नामक इननी बहुमूल्य पुस्तक भी प्रकाशित हुई है. वे व्युत्पत्ति को केवल शब्दों का इतिहास नहीं मानते. वे कहते हैं कि उच्चारण, संचरण, अर्थ, व्याकरणगत स्थान या वर्ग, प्रचलन, सामाजिक दरजा आदि शब्द-अध्ययन के तमाम पहलुओं के क्रमिक विकास का इतिहास देखना आवश्यक है. डा. भायाणी ने पुस्तक के चतुर्थ खंड में भाषाविज्ञान के संदर्भ में भी व्युत्पत्तिशास्त्र पर विचार किया है, जिसमें सोशुर आदि पाश्चात्य विद्वानों की मान्यताओं की चर्चा बड़ी रसप्रद है. निष्कर्ष के रूप में याकोव मेलकोल के समर्थन में वे कहते हैं :

"आधुनिक काल के प्रवाहों से सुपरिचित जिन भाषाविज्ञानियों ने व्युत्पत्ति के क्षेत्र में गंभीर कार्य किया है उनका अनुसरण करते हुए हम ऐतिहासिक भाषाविज्ञान की एक शाखा के रूप में ऐतिहासिक कोशविज्ञान को स्वीकार करेंगे और ऐतिहासिक कोशविज्ञान की एक शाखा के रूप में शब्दों के मूल की खोज से सम्बद्ध व्युत्पत्तिविज्ञान को स्वीकार करेंगे." [46]

प्रस्तुत शोधकार्य में धातुओं की सुलभ और संभव व्युत्पत्तियों का समावेश करने की भूमिका यह थी.

संदर्भ

1. पृ. 15, सं. व्या. इ. भाग – २. 2. पृ. 43, भा. भा. चि. 3. पृ. 48, भा. भा. चि. 4. पृ. 156, भा. भा. चि. ५. पृ. 133, भा.भा. चि. 6. पृ. 37, भा. भा. चि. 7. पृ. 165, दि. सं ग्रा. 8. दि. डि. आ. सं. ग्रा. पृ. 207 9. दे. पृ. 144, व्या. दा. भू. 10. पृ. 145, व्या. दा. भू. 207. 11. पृ. 96. भा. आ. औ. हि. 12. दे. पृ. 166, दि. सं. धा. 13. पृ. 21, भा. भा. चि. 14. पृ. 17, भा. भा. चि. 15. पृ. 11, इ. टु थी. लिं. 16. दे. पृ. १९-२०, इ. टु थी. लिं. 17. दे. पृ. 151, इ. लिं. 18. पृ. 85, भा. भा. तु. अ. 19. पृ. 151, इ लिं. 20. पृ. 227, डि. आ. लिं. 21. पृ. 177 डि. आ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लि. 22. पृ. 88, भा. भा. भा. अ. 23. पृ. 290, हि. भा. इ. 24. पृ. 611, हि. भा. 25. पृ. 177, भा. भा. भा. अ. 26. अ. सा. धा. अप्रकाशित 27. पृ. 160. बु. का. भा. अ. 28. पृ. 47, 48 हि. व्या. का. इ. 29. पृ. 94 भा. च. 30. पृ. 42 भा. भा. 31. पृ. 107. गु. भा. 2. 31. पृ. 12, गु. भा. अं. प्र. 32. पृ. 612, हि. भा. 33. पृ. 106 गु. भा. २. 34. पृ. 230, द. हि. का. उ. औ. वि. 35. पृ. 69, भो. औ. हि. का. तु. अ. 36. पृ. 472, हि. भा. उ. औ. वि. 37. पृ. 15, हि. धा. को. 38. पृ. 290, हि. भा. इ. 39. 13, हि. धा. को. 40. पृ. 51, भा. प्र. 41. पृ. 38, हि. श. 42. पृ. 163, तु. व्या. 43. दे. पृ. 197–8, अ. हि. व्या. 44. पृ. 456, हि. श. पू. 45. पृ 107 से 114, गु. भा. २–३. 46. पृ. 250, व्यु. वि.

पूरी विस्तृत संदर्भ-सूची के लिए देखिए परिशिष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्युत्पत्तिदर्शक तुलनात्मक धातुकोश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकेत – सूची

अं. – अंग्रेजी
अ. – अकर्मक धातु
अ. व्यु. – अज्ञातव्युत्पत्तिक
अनु. – अनुकरणात्मक
अर. – अरबी
अर्धसम – अर्धतत्सम
अव्य – अव्यय
कृ. – कृदंत
गुज. – गुजराती
छ. का. उ. – छत्तीसगढ़ी का उद्‌विकास
तु. – तुर्की
तुल. – तुलनीय
दे. – देखिए
देश. – देशज
दे. श. को – देशज शब्द-कोश
ना. – नामधातु
पा. – पालि
पु. – पुरानी
प्रा. – प्राकृत
फा. – फारसी
भव – तद्‌भव
वि. – विदेशी
विशे. – विशेषण
सं. – संस्कृत
स. – सकर्मक धातु
सम – तत्सम
इआलें – ए कम्पेरेटिव डिक्शनरी आफ इण्डो-आर्यन लेंग्वेज़िज
पा. स. म. – पाइअ–सद्‌द–महण्णवो
मा. हि. को. – मानक हिन्दी कोश
सा. जो. को. – सार्थ गुजराती जोडणीकोश
ह. भा. – हरिवल्लभ भायाणी
हि. दे. श. – हिन्दी में देशज शब्द
हि. त. श – हिन्दी की तद्भव शब्दावली
हि. श. – हिन्दी शब्दसागर
* धातु के साथ यह चिह्न कालग्रस्त रूप का निर्देश करता है, कोष्टक में होने पर कल्पित रूप का.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अँक अ. दे. 'आँक' 1.

अँकवार स. ना. भव (अँकवार संज्ञा; सं. अङ्कपालिका; प्रा. अँकवारिया; दे. पृ. २; मा. हि. को.) गले लगाना; आलिंगन करना 2

अंकुर अ. ना. भव (अंकुर संज्ञा; सं. अङ्कुर; प्रा. अंकुर; दे. इआलें 109) अँकुर उगना; अँखुआ फूटना. गुज. अंकुर 3

अंकुरा अ. दे. 'अंकुर' 4

अंकूला अ. दे. 'अंकुर' 5

अँकोर स. दे. 'अँकवार' 6

अँखुआ अ. ना. भव (आँख संज्ञा; सं. अक्षि; प्रा. अक्खि; दे. इआलें 43) अँखुआ फेंकना. तुल. गुज. आँख संज्ञा 7

अंग स. ना. सम (अंग संज्ञा; सं. अङ्ग) अपने ऊपर लेना; अंगीकृत करना. तुल. गुज. अंग संज्ञा 8

अँगडा अ. देश. अँगडाई लेना; आलस्य, शिथिलता आदि के कारण शरीर के अंगों को तानने या फैलाने की क्रिया करना 9

अँगरा अ. दे. 'अँगड़ा' 10

अँगव स. दे. 'अंग' 11

अँगा स. दे. 'अंग' 12

अँगिरा अ. दे. 'अँगड़ा' 13

अँगुरिया स. ना. भव (अँगुरी संज्ञा; सं. अङ्गुलि; प्रा. अंगुली; दे. इआलें 135) हैरान करना. तुल. गुज. आँगळी संज्ञा 14

अँगुसा अ. ना. देश. (अँगुसा संज्ञा; दे. पृ. 4, मा. हि. को.) अंकुरित होना 15

अँगुछ स. दे. 'अँगोछ' 16

अँगूठ स. दे. 'अगूठ' 17

अँगेज स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 4 मा. हि. को.) सहना; अंगीकार करना 18

अँगेर स. दे. 'अँगेज' 19

अँगोछ स. भव (अँगोछा संज्ञा; सं. अङगोञ्छ; प्रा. अंग+उंछ; 'उंछ' का मूल सं. प्रोञ्छ; दे. इआलें 139) गीले गमछे से बदन पोंछना. तुल. गुज.अंगोछो संज्ञा 20

अँगोज स. दे. 'अँगेज' 21

अँघ अ. दे. 'अघा' 22

अँच स. दे. 'अचा' 23

अँचव स. दे. 'अचा' 24

अँज स. दे. 'आँज' 25

अँजोर स. दे. 'अजोर' 26

अँट अ. दे. 'अट' 27

अँटक अ. दे. 'अटक' 28

अँटिया स. ना. देश. (अंटी संज्ञा; दे. पृ. 10, मा. हि. को.) उंगलियों के बीच से छिपा लेना; तागे की पिंडी बनाना. तुल. गुज. अटवा 'उलझना'; आंटी संज्ञा 29

अँड अ. दे. 'अड' 30

अँडर अ. देश. (दे. पृ. 10; दे. श. को.) (धान का) रेंडना, गरभाना 31

अँडस अ. देश. चारों ओर के दबाव में फँसना 32

अँडा स. दे. 'अडा' 33

अँडुआ स. ना. भव (अंड संज्ञा; सं. अण्ड; प्रा. अंड; दे. इआलें 111) बधिया करना; बैल के अंडकोश को कुचलना जिससे वह नटखटी न करे और ठीक चले 34

अँतरा स. ना. भव (अंतर संज्ञा; सं. अन्तर + इ; प्रा. अंतर; दे. इआलें 370) भीतर करना; अलग करना. गुज. आंतर 'अलग करना; घेरना' 35

अँथय अ. दे. 'अथा' 36

अँदा. स. देश. बचाना, संपर्क न होने देना 37

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अँधेर स. ना. भव (अँधेरा संज्ञा; सं. अन्धिकार संज्ञा; दे इआलें 386) अंधेर करना; अँधेरा करना. तुल. गुज. अंधारुं संज्ञा 38

अँसुआ अ. ना. भव (आंसू संज्ञा; सं. अश्रु; प्रा. अस्सु; दे. इआलें 919) आंसू बहाना, रोना तुल. गुज. आंसु संज्ञा 39

अउलग अ. भव (सं उल्+लङ्घ; प्रा. उल्लंघ) उल्लंघन करना; प्रवास करना. गुज. ओळंग 40

अउहेर अ. भव (सं. अव+हेल; प्रा. अवहेल्) अवज्ञा या अवहेलना करना. गुज. अवहेल 41

अऊल अ. देश. तप्त होना, जलना; स. गरम करना 42

अएर स. भव (सं. अंगीकर्; प्रा. अंगिअ ; दे. पृ. 24 मा. हि. को) अँगीकार करना, ग्रहण करना 43

अक अ. देश. (दे. पृ. 10, दे. श. को.) घबड़ाना; उकताना 44

अकचका अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 95 हि. दे. श.) चकित होना; इक्का-बक्का होना 45

अकड़ अ. ना. देश. (अकड़ संज्ञा; दे. इआलें 1013) सूखकर कडा होना; घमंड करना. गुज. अकडा 46

अकन अ. भव (सं. आ+कर्ण; प्रा. आ-अण्ण , आकण्ण ; दे. इआलें 1001) सुनना, ध्यान देना 47

अकबका अ. ना. अनु. (अकबक संज्ञा) चकित होना; घबराना; अकबक या व्यर्थ की बातें करना 48

अकरख स. देश. आकृष्ट करना; तानना 49

अकस अ. देश. बराबरी बरना, बैर करना वि. अर. अक्स संज्ञा 'बैर' 50

अकाज स. ना. भव (अकाज संज्ञा; सं. अकार्य; प्रा. अकज्ज; ह. भा.) हानि करना; अ. नष्ट करना 51

अकुता अ. दे. 'उकता' 52

अकुला अ. ना. भव (आकला विशे; सं. आकुल; दे. इआलें 1012) घबड़ाना, विह्वल होना. गुज. अकळा 53

अकोस स. देश. कोसना, भला–बुरा कहना 54

अखर अ. देश. खलना, बुरा लगना 55

अखाँग स. देश. प्रहार करना, मारना 56

अखार स. भव (सं. आ + क्षल्; अक्खाल्; 'पखार' के आधार से द्विरुक्त प्रयोग – ह. भा.) पखारना 57

अखुट अ. ना. देश. (प्रा. अखुट्ट, अखुट्टिअ विशे; दे. पृ. 16 पा. स. म.) समाप्त न होना 58

अगट अ. देश. एकत्र होना 59

अगम अ. ना. अर्धसम (आगमन संज्ञा; सं. आगमन) आगमन होना, आना 60

*अगर अ. भव (सं. अग्र + ल्; प्रा. अग्गल विशे; ह. भा.) आगे बढ़ना; आगे आगे चलना 61

*अगरा स. दे. 'अगर'. मन बढ़ाना; अ. प्यार से धृष्टता करना 62

अगव (1) अ. ना. भव (अगुआ विशे; सं. अग्र; प्रा. अग्ग; ह. भा.) कोई काम करने के लिए आगे बढ़ना; अगवानी करना (2) सहना, अंगेजना, दे. 'अँगव' 63

अगसर अ. ना. अर्धसम (अगसर क्रि. वि.; सं. अग्रसर दे. पृ. 37 मा. हि. को. प्रा. अग्गसर; ह.भा.) अग्रसर होना, आगे बढना 64

अगिया अ. ना. भव (आग संज्ञा; सं. अग्नि प्रा. अग्गि, दे. इआलें 55) गरम होना; उत्तेजित होना; स. बरतन को आग में डालकर शुद्ध करना. गुज. तुल. आग संज्ञा 65

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगुआ स. ना. भव (आगे अन्य; सं. अग्र; प्रा. अग्ग; दे. इआलें 68) अगुआ बनना; अ. आगे जाना तुल. गुज. आगेवानी संज्ञा 'अगुआनी' 66

अगुता अ. देश. उकताना 67

अगुसर अ. ना. अर्धसम (अगसर क्रि. वि; सं. अग्रसर प्रा. अग्गसर; दे. पृ. 39, मा. हि. को.) दे. 'अगसर' आगे बढना 68

अगूठ स. देश. चारों ओर से घेरना, घेरा डालना 69

अगोट (1) स. देश. आड़ करना; चारों ओर से घेरना; अ. ठहरना; फँसना
(2) स. देश. अंगीकार करना; चुनना 70

अगोर स. ना. (आगल संज्ञा; अगला विशे. सं. अग्र अव्य; प्रा. अग्गल, दे. इआलें 68) रखवाली करना, बाट जोहना 71

अघा अ. भव (सं. आ+घ्रा; प्रा. अग्घाइज्जु; अग्घाइ; दें. इआलें 1062) भरपेट भोजन करना; तृप्त होना; छकना 72

अघ्रान स. ना. सम (सं. आघ्राण) गंध लेना, सूंघना 73

अच स. दे. 'अचा' 74

अचकचा अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 96, हि. दे. श.) भौचक्का होना, चौंक उठना 75

अचय स. दे. 'अचा' 76

अचव स. दे. 'अचा' 77

अचा स. भव (सं. आ+चम्; प्रा. आयाम्; दे. इआलें 1069) आचमन करना. गुज. आचम 78

अछक अ. ना. देश (अछक विशे.) तृप्त न होना, न छकना 79

अछता-पछता अ. अनु. बार बार पछताना या खेद करना 80

अछवा स. भव (अच्छा विशे; सं. अच्छ, प्रा. अच्छ; ह. भा.) साफ करना; सँवारना 81

अजमा स. दे. 'आजमा' 82

अजोर (1) स. ना. भव (अँजोरा संज्ञा; सं. उज्ज्वल; दे. पृ. 10 मा. हि. को.) प्रकाशित करना
(2) स. ना. भव (अँजुरी संज्ञा; सं. अंजलि; दे. पृ. 10, मा. हि. को.) बटोरना; अंजुली में भरना या लेना 83

अट (1) अ. देश. (अट्टट; दे. इआलें 178) समाना; जुडना
(2) अ. भव (सं. अट्ट; प्रा. अट्ट, अट्टट; दे. पृ. 25, पा. स. म. तथा पृ. 83 हि. त. श.) भ्रमण करना. गुज. अट 84

अटक अ. ना. देश (अटक संज्ञा;*अट्टट; दे. इआलें 182) रुकना; उलझना. गुज. अटक 85

अटकर स. दे. 'अटकल' 86

अटकल स. ना. देश. (अटकल संज्ञा;*अट्टटकला; दे. इआलें 183) अनुमान करना. गुज. अटकळ 87

अटपटा अ. ना. अनु. (अटपटा विशे.; पृ. 53 दे. मा. को.) अटकना; हिचकना 88

अटा अ. दे. 'अट' 89

अटेर स. देश. (आँटी;*अट्टट; दे. इआलें 181 तथा 1414) सूत की आँटी बनाना; लपेटना गुज. अटेर 90

अठला अ. दे. 'इठला' 91

अठव अ. देश. जमना, ठनना 92

अठा (1) अ. ना. भव (आठ विशे. सं. अष्ट; प्रा. अट्ठ; दे. इआलें 941) आठ (प्रथाओं) से युक्त होना
(2) स. दे. 'अठव' 93

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अठिला अ. दे. 'इठला' 94

अड़ अ. देश. (*अड; दे. इआलें 187; प्रा. अड्ड विशे; पा. स. म.) अटकना. गुज. अड स. 'छूना'; अडक 95

अड़का स. दे. 'अड़ 96

अडप स. देश. डाँटना–डपटना 97

अड़रा अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 96, हि. दे. श.) जहाँ–तहाँ बातें करते फिरना; अभिमान दिखाना 98

अड़ा स. ना. देश. (आड़ संज्ञा, पृ. 57, दे. मा. हि. को.) आड से मार्ग रोकना; उलझाना 99

*अड़ार स. देश. डालना; देना 100

*अडूल स. देश. (दे. पृ. 12, दे. श. को.) ढालना, उड़ेलना 101

अढ़ अ. देश. लगना 102

अढव स. देश. आज्ञा देना 103

अढुक अ. देश. ठोकर खाना; सहारा लेना 104

अतीत अ. ना. सम (अतीत विशे; सं. अतीत) बीतना; गुजरना 105

*अतुरा अ. ना. सम (आतुर विशे.; सं. आतुर) आतुर होना, जल्दी मचाना गुज. तुल. आतुर विशे. 106

*अथ अ. दे. 'अथा' 107

अथय अ. दे. 'अथा' 108

अथव अ. दे. 'अथा' 109

अथा (1) अ. भव (सं. अस्त, एति; प्रा. अत्थम् ; दे. इआलें 976) अस्त होना गुज. आथम (2) स. देश. थाह लेना; ढूँढना 110

अदरा अ. ना. सम (आदर संज्ञा; सं. आदर) आदर–मनुहार से गर्ववृद्धि होना गुज. आदर 'शुरू करना' 111

अदबदा अ. ना. देश (अ. व्यु. दे. पृ. 97, हि. दे. श.) हठ करना 112

अद्धय स. न. अर्धसम (सं. अध्ययन; पृ. 70 मा. हि. को.) अध्ययन करना; पढ़ना 113

*अधिका स. ना. सम (अधिक विशे; सं. अधिक) अधिक होना. गुज. तुल. अदकुं विशे. 'अधिक' 114

अधिया स. ना. भव (आधा विशे; सं. अर्ध; प्रा. अद्ध; दे. इआळे 644) आधे आध बाँट लेना. गुज. तुल. अधुसार 115

अधीज अ. ना. भव (अधीज संज्ञा; सं. अधैर्य; अर्धज्ज; —ह. भा.) अधीर होना 116

*अधीन अ. ना. सम (सं. अधीन विशे. दे. पृ. 80, मा. हि. को.) अधीन होना; स. अपने अधीन करना 117

*अनंग अ. ना. सम (सं. अनंग विशे.) बेसुध होना, विदेह होना 118

अनंद अ. ना. सम (सं. आनंद संज्ञा) आनंदित होना गुज. आनंद 119

*अनक स. भव (सं. आ + कर्ण; प्रा. आकण्णन; दे. 85 मा. हि. को.) सुनना, चुपचाप सुनना 120

अनख अ. दे. 'अनखा' 121

अनखा अ. देश. (प्रा. अणक्ख) दुष्ट होना, खीझना; स. रुष्ट करना, खिझाना. गुज. अणख 122

अनग अ. देश. जानबूझकर देर लगाना; टूटे या टपकते हुए खपरैल की मरम्मत करना 123

अनगव अ. दे. 'अनग' 124

अनगा अ. दे. 'अनग' स. (केश आदि) सुलझाना 125

*अन स. दे. 'आन' 126

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनभव अ. दे. 'अनुभव' 127

*अनमोल स. अर्धसम (सं. उद् + मिल् से. दे. पृ. 91, मा. हि. को.) आँखें खोलना, खिलना 128

*अनर स. ना. देश. अनादर करना 129

*अनरस अ. देश. उदास होना, खिन्न होना 130

अनवाँस स. देश. नये बरतन आदि को प्रथम बार काम में लाना 131

*अनसा अ. देश. झुंझलाना; क्रुद्ध होना 132

अनुकूल अ. ना. सम (सं. अनुकूल विशे.) प्रसन्न होना; मुआफिक होना 133

*अनुभव स. ना. सम (अनुभव संज्ञा; सं. अनुभव) अनुभव करना; बोध करना. गुज. अनुभव 134

*अनुमान स. ना. सम (अनुमान संज्ञा; सं. अनुमान) अनुमान करना, सोचना. गुज. तुल. अनुमान संज्ञा 135

अनुमाप स. ना. सम. (अनुमापन संज्ञा; सं. अनुमापन) अनुमान या कल्पना करना; समझना 136

*अनुराग स. ना. सम (अनुराग संज्ञा; सं. अनुराग) प्रेम करना; अ. अनुरागयुक्त होना. गुज. तुल. अनुराग संज्ञा 137

*अनुराध स. ना. सम (अनुराध संज्ञा; सं. अनुराध) बिनती करना 138

अनुरूप स. ना. सम (अनुरूप विशे; सं. अनुरूप) सदृश बनाना. गुज. तुल. अनुरूप विशे. 139

अनुसंधान स. ना. सम (अनुसंधान संज्ञा; सं. अनुसन्धान) ढूँढ़ना; विचारना. गुज. तुल. अनुसंधान संज्ञा 'संधान' 140

अनुसर स. भव (सं. अनु + सृ; प्रा. अणुसर; दे. इआलें 338) अनुसरण करना. गुज. अनुसर 141

अनुसार स. दे. 'अनुसर' 142

*अनुहर स. भव (सं. अनु + हृ; प्रा. अणुहर; दे. इआलें 341) – के समान दीखना; नकल करना 143

अनुहार स. दे. 'अनुहर' 144

अनैस अ. ना. देश. (अनेस विशे.) रूठना, अप्रसन्न होना 145

अन्हा अ. भव (सं. स्ना, प्रा, ण्हा; ह. भा.) नहाना. गुज. नहा 146

अपड अ. देश. पहुँचना 147

अपडर अ. ना. भव (अपडर संज्ञा; स. दर; प्रा. डर; ह. भा.) डरना, शंकित होना 148

अपड़ा अ. देश. खींचातानी करना, झगड़ना; स. पहुँचाना 149

अपना स. ना. भव (अपना सर्व, सं. आत्मनः प्रा. अप्पणो; दे. इआलें 1135) स्वीकार कर लेना; अपना बना लेना. गुज. अपनाव 150

*अपमान स. ना. सम (अपमान संज्ञा; सं. अपमान) अपमान करना. गुज. तुल. अपमान संज्ञा 151

अपस अ. देश. भागना; चुपके से चल देना 152

*अपसव अ. दे. 'अपस' 153

अपसोस अ. ना. वि. भव (अपसोस संज्ञा; फा. अफसोस) अफसोस करना. गुज. तुल. अफसोस संज्ञा 154

अपसौ अ. देश. जाना; प्राप्त होना 155

अपहर स. ना. सम (अपहरण संज्ञा, सं. अप हृ +) अपहरण करना गुज. अपहर 156

अपुट्ठ अ. देश. पीछे लौटना, वापस आना 157

अपूठ स. देश. नष्ट करना, चीरना – फाड़ना 158

अपूर स. भव (सं. आ + पृ, प्रा. आपूर, दे. इलालें 1231) भरना 159

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्प स. ना. भव (सं. ऋ, प्रा. अप्पू) अर्पण करना, देना. गुज. आप 160

अफना अ. दे. 'उफुना' 161

अफर अ. भव (सं. आ + स्फ , दे. इआलें 1527) जी भर खाना, पेट फूलना. तुल. गुज. आफर, आफरो संज्ञा 162

अफरा अ. दे. 'अफर' 163

अफ्फ स. दे. 'अप्प' अर्पित करना. देना 164

अबुहा अ. दे. 'अभुआ' 165

अभिनंद अ. ना. सम (अभिनंदन संज्ञा, सं. अभि + नंद्) अभिनंदन करना. गुज. अभिनंद 166

अभिर अ. दे. 'अभेर' भिड़ना, सहारा लेना 167

अभिलाख अ. ना. अर्धसम (अभिलाख संज्ञा, सं. अभिलाष) इच्छा करना. गुज. अभिलाख 168

अभिसर अ. ना. सम (अभिसरण संज्ञा, सं. अभि + सृ) जाना, संकेत स्थल पर प्रिय से मिलने के लिए जाना. गुज. अभिसर 169

अभिसार अ. दे. 'अभिसर' 170

अभुआ अ. अनु. ('अभू अभू' से अनु. दे. पृ. 157, मा. हि. को.) सिर हिलाना और हाथ-पैर पटकना, जिससे सिर पर भूत का आना समझा जाता है. तुल. गुज. आभुं विशे. 'चकित, स्तब्ध' 171

अभेर स. देश. (प्रा. अभिड) संयुक्त करना, मिलाना तुल. गुज. भेलव 172

अमा अ. भव (सं. उन् + मा; दे. इआलें 2124) समाना, अँटना 173

अमात स. भव (सं. आ + मन् ; प्रा. आमंत्) आमंत्रित करना, न्योतना गुज. आमंत्र 174

अमाव अ. दे. 'अमा' 175

अमेज स. ना. वि. (आमेज विशे. फा. आमेजन) मिलाना; अ. मिलना. गुज. तुल. आमेज विशे. 176

अमेठ स. देश. उमेठना 177

अमैठ स. दे. 'अमेठ' 178

अरंभ अ. ना. सम (आरंभ संज्ञा; सं. आ + रम्भ्) बोलना, आरंभ करना; स. आरंभ करना. गुज. आरंभ 'आरंभ करना' 179

अर (1) अ. दे. 'अड़'
(2) अ. देश. (दे. पृ. 13, दे. श. को.) शीघ्रता करना 180

अरक अ. अनु. (दे. पृ. 172, मा. हि. को.) टकराना; दरकना. तुल. गुज. अड 181

अरगा अ. दे. 'अलगा' अलग होना; चुप्पी साधना 182

अरच स. ना अर्धसम (अर्चन संज्ञा; सं. अर्च्) अर्चन करना. गुज. अर्च 183

अरज (1) स. ना. अर्धसम (अर्जन संज्ञा; सं. अर्ज्) अर्जन करना
(2) स. ना. वि. (अर्ज संज्ञा; का अर्ज) अरज करना 184

अरझ अ. दे. 'अरुझ' 185

अरड़ अ. भव (सं. आ + रट्, प्रा. आरड्, दे. इआलें 1302) चीखना, चिल्लाना. गुज. आरड़, अराड 186

अरथा स. ना. अर्धसम (अरथ संज्ञा, सं. अर्थ) समझाकर कहना, व्याख्या करते हुए कहना 187

*अरद स. ना. अर्धसम. मसलना, मसल-कुचल-कर मार डालना 188

अरप (1) स. अर्धसम (सं. अर्प्) अर्पण करना गुज. अर्प
(2) अ. देश. अ. व्यु. दे. पृ. 98, हि. दे. श.) आरूढ़ होना, चढ़ना 189

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरबर अ. दे. 'अरबरा' 190

अरबरा अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 98, हि. दे. श. अनु. दे. पृ. 174, मा. हि. को.) गड़बड़ाना, लड़खड़ाना, घबड़ाना. गुज. तुल. अडवड 'लड़खड़ाना' 191

अरर स. अनु. (दे. पृ. 174, मा. हि. को.) कुचलना, पीसना, बुरी तरह से नष्ट करना 192

अरर-दरर स. अनु. पीसना, दलना 193

अररा अ. ना. अनु. (अरर अव्य, दे. पृ. 174, मा. हि. को.) अरर शब्द करते हुए सहसा गिरना या टूटना 194

*अरस अ. देश. ढीला या सुस्त लगना 195

*अरस-परस स. ना. भव (सं. परस्पर अव्य. से सम्बद्ध, ह. भा.) छूना, आलिंगन करना. तुल. गुज. अरस-परस अव्य. 196

*अरसा अ. दे. 'अरस' 197

*अरह स. ना. अर्धसम (अर्हण संज्ञा, सं. अर्ह) आराधना करना, पूजा करना 198

अराड़ अ. देश. (अ. व्यु. पृ. 98, हि. दे. श. तथा पृ. 13, द. श. को.) पशुओं का गर्भ-स्राव होना 199

*अराध स. ना. सम (आराधना संज्ञा; सं. आ + राध्) आराधना करना; मन में किसी का ध्यान करके कुछ मनाना गुज. आराध 200

*अरिया स. ना. अनु. भव (अरे अव्य. सं. अरे; प्रा. अरे) 'अरे' कहकर, तिरस्कारपूर्वक बातें करना. तुल. गुज. अरे अव्य. 201

अरुगा अ. देश. अच्छी तरह समझाकर कोई बात कहना 202

अरुझ अ. दे. 'उलझ' 203

*अरुना अ. ना. भव (अरुन विशे. सं. प्रा. अरुण) अरुण या लाल होना, स. अरुण या लाल करना. तुल. गुज. अरुण विशे. 204

*अरुर अ. देश, (अ. व्यु. दे. पृ. 48, हि. दे. श.) सिकुड़ना, बल खाना 205

*अरुरा अ. दे. 'अरुर' 206

*अरूझ अ. देश. उलझना 207

*अरूर (1) अ. देश. व्यथित होना (2) अ. दे. 'अरुर' 208

*अरूल अ. देश. छिलना, छिदना 209

अरेर स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 48, हि. दे. श.) रगड़ना 210

अरेह स. देश. रगड़ना, दे. 'रेह' 211

अरोंध स. दे. 'आरोध' 212

अरोग अ. दे. 'आरोग' 213

अरोह अ. भव (सं. आ + रुह्, प्रा. आरोह्, दे. इआलें 1335) सवार होना, चढ़ना गुज. आरोह 214

अर्थ स. सम (सं. अर्थ्) याचना करना, माँगना. गुज. तुल. अर्थे अव्य. 'के लिए' 215

अर्था स. दे. 'अरथा' 216

अर्द अ. ना. सम (सं. यर्द्) कष्ट देना, स. दूर करना 217

अर्प स. सम दे. 'अरप' 218

अर्रा अ. अनु. (दे. पृ. 185, मा. हि. को.) चिल्लाना, व्यर्थ की बातें करना 219

अलगा स. ना. भव (अलग विशे. सं. अलग्न, प्रा. अलग्ग, दे. इआलें 10893) अलग करना, छाँटना, अ. अलग होना. गुज. तुल. अलग विशे. 220

अलबला अ. दे. 'अरबरा' 221

अलला अ. अनु. (ह. भा.) बहुत जोर से. चिल्लाना 222

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अलस अ. ना. सम (अलस विशे. सं. अलस) थकावट या सुस्ती मालूम होना. गुज. आळस 223

अलसा अ. दे. 'अलस' 224

अलाप अ. ना. सम (आलाप संज्ञा, सं. आलाप) गाने के समय लंबा स्वर खींचना, बात करना. गुज. आलाप 225

अलुझ अ. दे. 'उलझ' 226

अलुट अ. देश. (*आ + लोर्तृ, दे. इआलें 1407) लोटना, लड़खड़ाना गुज. आळोट 'लोटना' 227

अलोक (1) स. ना. सम (आलोक संज्ञा, सं. आलोक) प्रकाशित या प्रकाश से युक्त करना, अ. आलोक से युक्त होना. गुज. आलोक (2) स. अर्धसम (सं. अव + लोक्) अवलोकन करना, देखना. गुज. आलोक 228

अलोप अ. देश. लुप्त होना. तुल. गुज. अलोप विशे. 229

अल्ला अ. दे. 'अलला' 230

*अव अ. देश. 230 A

अवकल अ. ना. सम (अवकलन संज्ञा, सं. अव + कल्) ज्ञान होना, समझ में आना 231

अवगत स. ना. सम (अवगत विशे. सं. अव+गम्) सोचना. गुज. तुल. अवगत विशे. 232

*अवगाध स. दे. 'अवगाह' 233

अवगार स. दे. जतलाना, समझाना, बुरा-भला कहना 234

अवगाह (1) ना. सम (अवगाहन संज्ञा, सं. अव + गाह्) थहाना, अ. डुबकी लगाना. तुल. गुज. अवगाहन संज्ञा (2) बिलोड़ना, हलचल मचाना 235

अवज्ज स. देश. पुकारना, अ. जोर का शब्द करना 236

अवट अ. ना. भव (सं. आवर्तन, प्रा.आवट्टन, दे. पृ. 196, मा. हि. को.) व्यर्थ घूमना या मारे-मारे फिरना दे. औट. 237

अवडेर स. देश. किसी का डेरा इस प्रकार उजाड़ना कि उसे भागकर दूर जाना पडे, झंझट में डालना 238

अवतर अ. ना. सम (अवतार संज्ञा, सं. अव + तृ) अवतार लेना, प्रकट होना, उतरना. गुज. अवतर 239

अवधार स. ना. सम (अवधारणा संज्ञा; सं. अव + धृ) ग्रहण करना, धारण करना; मानना. गुज. तुल. अवधारणा संज्ञा 240

*अव अ. देश. आना, आस्तित्व में आना 241

अवमान अ. सम (अवमान संज्ञा; सं. अव + मन्) अवमान करना. गुज. अवमान 242

*अवराध स. ना. (अवराधन संज्ञा; सं. अव + राध्) पूजा करना 243

अवरेख स. अर्धसम (सं. अवलेखन) उरेहना; तसवीर खींचना; देखना 244

अवरोध सं. ना. सम (अवरोध संज्ञा; सं. अव + रुध्) रोकना; बाधा डालना. गुज. अवरोध 245

अवरोह अ. ना. सम (अवरोह संज्ञा; सं. अव + रुह्) उतरना; चढ़ना स. रोकना, अंकित करना. गुज. तुल अवरोह संज्ञा 246

अवलंघ स. ना सम (अवलंघन संज्ञा; सं. अव + लङ्घ) लाँघना 247

*अवलंब स. ना. सम (अवलंब संज्ञा; सं. अव+लम्ब्) आश्रय लेना, गुज. अवलंब 248

अवलच्छ स. अर्धसम (सं. उप + लक्ष्) देखना 249

अवलेख स. ना. सम (अवलेखन संज्ञा; सं. अव + लिख्) खुरचना; चिह्न करना 250

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवलेप अ. ना. सम (अवलेप संज्ञा; सं. अव + लिप् अपने आपको दूसरों से बहुत बढ़ाचढ़ा समझना; किसी पर दोष लगाना. गुज. तुल. अवलेप संज्ञा 251

अवलोक स. ना. सम (अवलोकन संज्ञा; सं. अव + लोक्) देखना. गुज. अवलोक 252

*अवलोच स. ना. अर्धसम (सं. आलोचन संज्ञा) निवारण करना; दूर करना 253

*अवसाद अ. ना. सम (अवसाद संज्ञा; सं. अव + सद्) अवसाद से युक्त होना; स. किसी को अवसाद से युक्त करना 254

*अवाँग स. ना. अर्धसम (अवाँग विशे. सं. अवाङ्) नीचे की ओर मोड़ना या झुकाना 255

अवसेर स. ना. अर्धसम (अवसेर संज्ञा; सं. अवसेर विशे.) उलझाना; बेचैन करना; अ. विलंब करना 256

अवांस स. दे. 'अनवाँस' 257

अवार स. ना. अर्धसम (अवार संज्ञा; सं. वृ.) रोकना, वारण करना; स. वारना – निछावर करना 258

अविलोक स. दे. 'अवलोक' 259

असंध स. ना. अर्धसम (सं. संधि संज्ञा) अलग करना 260

असकता अ. ना. अर्धसम (सं. अशक्त विशे.) आलस्य अनुभव करना 261

असीस स. ना. भव (असीस संज्ञा; सं. आशिष; प्रा. आसिसा, असीसा; दे. इआलें 1457) आशिष देना 262

अस्वीकार स. ना. सम (अस्वीकार संज्ञा; सं. अस्वीकार) स्वीकार न करना. गुज. अस्वीकार संज्ञा 263

*अह अ. देश. वर्तमान रहना, होना 264

*अहक स. ना. अर्धसम (अहक संज्ञा; सं. ईहा संज्ञा) कामना करना 265

अहट अ. दे. 'अहुट' 266

अहटा (1) अ. ना. देश (आहट संज्ञा) आहट लेना (2) अ. देश. दुखना 267

अहर स. देश. लकड़ी को छीलकर सुडौल करना 268

अहल अ. देश (*हल्ल; प्रा. आहल्ल; दे. इआलें 1542) हिलना, काँपना 269

अहार (1) स. दे. 'अहर'
(2) स. ना. भव (अहार संज्ञा; सं. आहार; प्रा. आहार) आहार करना; लेई लगाकर लसना. गुज. आहार 'आहार करना' 270

*अहिघुट्ट स. ना. अर्धसम (सं. अभिघट्टनम् दे. पृ. 236, मा. हि. को.) अभिघटित करना 271

*अहुट अ. देश. हटना, अलग होना 272

आंक स. ना. भव (अंक संज्ञा; सं. अङ्क संज्ञा दे. इआलें 140) निशाना लगाना; अनुमान करना. गुज. आंक 273

आँच स. ना. भव (आँच संज्ञा; सं. अर्चि; प्रा. अच्चि संज्ञा) जलाना, तपाना. गुज. आंच संज्ञा 274

आंज अ. भव (सं. अञ्जू; प्रा. अंज; दे. इआलें 169) अंजन लगाना. गुज. आंज 275

आँट अ. दे. 'अँट' स. देश. (दे. पृ. 278, छ. का. उ.) कसना 276

आंदोल स. सम. (सं. आ + दुल; प्रा. आंदोल; दे. इआलें 384) झूलना. गुज. आंदोलन संज्ञा 277

आँध अ. ना. देश. (आँधी संज्ञा) हल्ला बोलना, टूट पड़ना 278

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आँवड़ अ. देश. उमड़ना, बह निकलना 279

आँस अ. ना. देश. (आँस संज्ञा) खटकना, चुभना 280

आ अ. भव (सं. आ + या; प्रा. आव; दे. पा. स. म.; तुल. इआलें 1045, 1288, 2534) एक जगह से चलकर दूसरी जगह पहुँचना; लौटना. गुज. आव 281

*आकरख स. ना. अर्धसम (सं. आकर्षण) आकृष्ट करना, खींचना. गुज. आकर्ष 282

*आकरस स. ना. अर्धसम (सं. आकर्षण) आकृष्ट करना. गुज. आकर्ष 283

आकर्ष स. सम (सं. आ + कृष्) खींचना. गुज. आकर्ष 284

आख स. भव (सं. आ + ख्या; प्रा. अक्ख; दे. इआलें 1041) कहना. गुज. आख 'बोलना' 285

आगम अ. ना. अर्धसम (आगमन संज्ञा; सं. आ + गम्) आना 286

आघ अ. दे. 'अघा' 287

आछ अ. भव (सं. आ + क्षि; प्रा. अच्छ; दे. इआलें 1031) होना, मौजूद होना. तुल. गुज. छे क्र. 'है' 288

आज स. देश. बिछाना 289

आज़मा स. ना. वि. (आजमाइश संज्ञा; फा. आजमूदन) जाँच करना; परीक्षा के लिए प्रयोग करना. गुज. अजमाव 290

आट स. दे. 'अट' 291

आड़ स. ना. देश. (आड़ संज्ञा * अड्ड? दे. इआलें 189)

(1) सेकना; बाँधना

(2) स्त्रियों का शोभा के लिए आपने मुख पर विशेष ढंग से बिंदियाँ लगाना; आड चितरना. तुल. गुज. आडुं विशे. आड संज्ञा 292

आण स. दे. 'आन' 293

आतुरा अ. दे. 'अतुरा' 294

आथ अ. भव (सं. अस्; प्रा. अत्थि; दे. पृ. 262; मा. हि. को.) होना 295

आदर अ. ना. भव (आदर संज्ञा; सं. आ + दृ; प्रा. तुल. आअर; दे. इआलें 1161) आदर होना. गुज. आदर 'शुरू करना'; आदर संज्ञा 296

आनंद अ. दे. 'अनंद' 297

आन स. भव (सं. आ + नी; प्रा. आण; दे. इआलें 1174) लाना. गुज. आण 298

आपूर अ. दे. 'अपूर' 299

आम अ. देश. आना 300

आमरख अ. ना. अर्धसम (आमरख संज्ञा; सं. आ + मृष्) क्रोध करना 301

आमेज स. दे. 'अमेज' 302

आरंभ स. भव (सं. आ + रभ्; प्रा. आरभ संज्ञा; दे. इआलें 1305) आरंभ करना अ. आरंभ होना. गुज. आरंभ 303

*आराध स. सम. (सं. आ + राध्) आराधना करना. गुज. आराध 304

आरूंध स. अर्धसम (स. आ + रुध्; दे. इआलें 1325) गला दबाना 305

आरोग स. देश. (आरोग संज्ञा; सं. अरोग्य; प्रा. आरोग्ग; दे. पृ. 118 पा. स. म.) भोजन करना. गुज. आरोग 306

*आरोध स. ना. अर्धसम (आरोध संज्ञा; सं. आ + रुध्) बाधा या रुकावट खड़ी करना, काँटों की बाढ़ लगाना. गुज. तुल. अवरोध 307

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*आरोप स. ना. सम (आरोपण संज्ञा; आ + रुह् आरोपण करना, लगाना. गुज. आरोप 308

आरोह अ. ना. सम (आरोहण संज्ञा; सं. आ + रुह्) ऊपर चढ़ना. गुज. आरोह 309

आलाप अ. दे. 'अलाप' 310

आलिंग स. ना. सम (आलिंगन संज्ञा; सं. आ + लिंग्) गले लगाना, भेंटना. गुज. आलिंग 311

आलुझ अ. देश. उलझना 312

आलोड़ स. भव (सं. आ + लुड्; प्रा. आलोड्; दे. इआलें 1393) मथना गुज. आलोडन संज्ञा 313

आवट (1) स. दे. 'औट'

2) स. ना. भव (सं. आवर्त्त; प्रा. आवट्ट; दे. पृ. 287, मा. हि. को.) उलटना–पलटना; उहापोह या संकल्प–विकल्प करना 314

आवर स. ना. अर्धसम (आवरण संज्ञा; सं. आ + वृ; प्रा. आवर्; दे. इआलें 1414) आवरण से युक्त करना; अ. आवृत्त होना. गुज. आवर 315

आवाह स. ना. भव (आवाहन संज्ञा; सं. अ + वह्; प्रा. आवाह् दे. इआलें 1435) आमंत्रित करना. गुज. आवाह 316

*आष स. देश. आखना 317

आस अ. देश. होना 318

*आसर स. अर्धसम (सं. आ + शर्; दे. इआलें 1445) आश्रय लेना. गुज. आसरो संज्ञा 319

आहूला अ. भव (सं. आ + हूलाद्; प्रा. तुल. आहूलाय संज्ञा; दे. इआलें 1549) आहूलाद होना. गुज. आहूलाद 320

इँच अ. दे. 'एच' 321

इँछ स. देश. इच्छा करना. गुज. इच्छ 322

इखर अ. अनु. (बिखरना का अनु. दे. पृ. 305, मा. हि. को.) इखरना–बिखरना 323

इचक अ. देश. (दे. पृ. 15, दे. श. को.) क्रोध से दाँत या खीस निकालना 324

*इच्छ स. सम. (सं. इच्छ्) इच्छा करना, गुज. इच्छ 325

इछ स. दे. 'इच्छ' 326

इठला अ. ना. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 101, हि. दे. श.) ऐंठ या बड़प्पन दिखाना, इतराना गुज. तुल. एंट 'गर्व करना' 327

इतरा अ. ना. भव (सं. इत्वर संज्ञा; प्रा. इत्तर; दे. इआलें 1566) गर्व से ऐंठना, इठलाना 328

ईंच स. दे. ऐंच 329

*ईख स. भव (सं. ईक्षण, प्रा. इक्खन; दे. पृ. 313, मा. हि. को.) देखना 330

*ईछ स. दे. 'इछ' 331

ईठ स. देश. चाहना; अ. इष्ट या वांछित होना 332

उँगला स. ना. भव (उँगल संज्ञा; सं. अङ्गुल; प्रा. अंगुल; दे. इआलें 134) तंग करना 333

उंच (1) स. भव (सं. उद् + अञ्चू; प्रा. उदंचू; दे. इआलें 1924) अदवान कसना

(2) अ. दे. 'उच' 334

उझ अ. देश. उलझना 335

उँडेर स. दे. 'उडेल' 336

उँडेल स. दे. 'उडेल' 337

उँदल स. दे. 'उडेल' 338

उँदाल स. दे. 'उडेल' 339

उअ अ. देश. उगना 340

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*उकच अ. देश. उखड़ना; हट जाना 341

उकट स. भव (सं. उत्+कृत्; प्रा. उक्कत्त्; दे. इआलें 1712) उघाटना; कोसना 342

उकठ अ. देश. सूखकर ऐंठ जाना 343

उकढ़ अ. भव (सं. उत्+कृष्ट; प्रा. उक्कड्ढ; ह. भा.) कढ़ना – बाहर निकलना 344

उकता अ. देश. ऊबना; अधीर होना 345

उकळ (1) अ. देश (* उत्कळ्; दे. इआलें 1716) उबलना. गुज. ऊकळ
(2) दे. 'उकेल' 346

उकस अ. भव (सं. उत्+कृष्; प्रा. उक्करिस्; दे. इआलें 1715 तथा 1718) उभरना; अंकुरित होना. गुज. उकांस 347

उकिल अ. दे. 'उकळ् (2)'

उकेल स. भव (सं. उत्+ किळ्; प्रा. उक्केल्ला-विय विशे; दे. इआलें 1734) खोलना, उधेड़ना. गुज. उकेल 349

उकीर स. देश. खोदकर निकालना; उभाड़ना 350

*उकुस स. दे. 'उकस' 351

उखट स. देश; खोंटना; कुतरना; अ. लड़खड़ाना 352

उखड अ. दे. 'उखाड' 353

उखर अ. दे. 'उखड़' 354

उखाड स. भव (सं. उत्+कृष्ट; दे. पृ. 139 हि. वि. अ. यो.) गड़ी, जमी, बैठायी हुई चीज को अपनी जगह से हटा देना, नष्ट करना. गुज. उखाड 355

उखाल अ. भव (सं. उत्+क्षल्; दे. इआलें 1748) कै करना 356

उखेल ख. दे. 'उरेह' 357

उग अ. भव (सं. उद्+गा; प्रा. उग्ग्; दे. इआलें 1954) उदय होना; उपजना. गुज. उग 348

उगच अ. देश. बढ़ना 359

*उगट स. दे. 'उघट' 360

उगद अ. देश. कहना 361

*उगर अ. दे. 'उगार' 362

उगल स. भव (सं. उद्+गृ; प्रा. उग्गिल्; दे. इआलें 1957, 1960) मुँह में ली हुई चीज को थूक देना. गुज. तुल. उगर 'बचना' 363

उगव स. दे. 'उग' 364

उगसा स. दे. 'उकसा' 365

उगसार स. देश. कहना; प्रकट करना 366

उगह अ. दे. 'उगाह' 367

उगार स. अर्धसम (सं. उद्+गळ्; दे. इआलें 1953) कुएँ की मिट्टी आदि निकालकर सफाई करना 368

उगाल स. दे. 'उगार' 369

उगाह स. भव (सं. उद्+ग्राह्; प्रा. उग्गाह्; दे. इआलें 1967) बहुत से लोगों से लेकर इकट्ठा करना, वसूल करना. गुज. उघराव तुल. उघराणी 370

उगिल स. दे. 'उगल' 371

उग्रह स. ना. सम (सं. उग्रह संज्ञा) छांड़ना, उगलना 372

उघट स. देश. किसी पर अपने उपकारों या उसके अपकारों की उद्धरणी करना; कोसना 373

उघड़ अ. दे. 'उघाड़' 374

उघर अ. दे. 'उघाड़' 375

उघाड़ स. भव (उद्+घाट्; प्रा. उग्घाड; दें. इआलें 1968) खोलना, अनावृत करना. गुज. उघाड 376

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उघेड़ स. दे. 'उघाड़' 377

उघेल स. देश. उघाड़ना 378

उच अ. ना. भव (सं. उच्च; प्रा. उच्च; दे. इआले 1634) उचकना, ऊपर उठना; स. उपर उठाना 379

उचक अ. भव (सं. उच्च विशे. प्रा. उच्च; दे. इआले 1634) एडी के बल खड़ा होना; उछलना; स. उठा लेना. गुज. ऊँचक स. 380

उचट अ. भव (सं. उच्चट्; प्रा. उच्चड्; दे. इआले 1635) अलग होना; भड़कना. गुज. उचेड़ 'छिलना'; तुल. उचाट संज्ञा 381

उचड़ अ. दे. 'उचट' गुज. उचड 382

उचर (1) स. दे. 'उचार'
(2) स. भव (सं. उत् + चर्; प्रा. उच्चर् दे. इआले 1641) (फोडे) उठना. गुज. ऊचर 'बोलना' 383

उचल (1) अ. भव (सं. उत् + चल्; प्रा. उच्चल्ल्; दे. इआले 1642) अलग होना (2) अ. देश. उचकना, उचटना. गुज. ऊचल 'ऊँचा होना' 384

उचा स. देश. ऊँचा करना, उठाना 385

उचार स. भव (सं. उत् + चर्; प्रा. उच्चार्; दे. इआलें 1641) उच्चारण करना, बोलना. गुज. उचार 386

उचेड़ स. दे. 'उचड़' 387

*उच्चर स. सम (सं. उत् + चर्) उच्चारण करना. गुज. उच्चार 388

*उच्छर अ. देश. उछलना 389

*उच्छल अ. सम. (सं. उद् + शल्) उछलना 390

*उछक अ. देश. चौंकना; होश में आना 391

उछट अ. देश. उचटना 392

*उछर अ. देश. उछलना गुज. ऊछळ 393

उछल अ. भव (सं. उत् + शल्; प्रा. उच्छल्; दे. इआले 1843) तेजी के साथ नीचे से ऊपर उठना, गुज. ऊछळ 394

उछाँट स. दे. 'उचाट' 395

*उछीन स. ना. भव (उच्छिन्न विशे. सं. उत् + छिद्; प्रा. उच्छिण्ण; दे. इआलें 1955) जड़ से उखाड़ना; नष्ट-भ्रष्ट करना 396

उजड़ स. देश. (*उज्जट; प्रा. तुल. उज्जाडिय विशे; दे. इआले 1661) वीरान होना; बर्बाद होना गुज. उजड 397

उजर (1) अ. ना. वि. (उम्र संज्ञा अर. दे. पृ. 325, मा. हि. को.) उजड़ना
(2) दे. उजड़ 398

उजरा स. देश. उजला करना; अ. उजला होना गुज. तुल. उजाळ 399

उजल अ. ना. भव (सं. उत् + ज्वल्; प्रा. उज्जल्; दे. इआलें 1671) (गहने आदि का) मैल साफ होना, निखरना. गुज. तुल. उजाळ स; अजवाळ 'दिया जलाना; निखारना' 400

उजार स. दे. 'उजड' 401

उजास अ. देश. प्रकाशित होना. गुज. उजास संज्ञा 402

उजिया अ. देश. उत्पन्न करना; प्रकट करना 403

*उजियार स. देश. रोशन करना; बालना 404

उजेर स. देश. उजालना 405

उज्जार स. देश. उजारना 406

उझक अ. देश. उचकना; चौंकना 407

उझप अ. देश. खुलना 408

उझर अ. देश. हटना; ऊपर की ओर खिसकना; स. उड़ेलना 409

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उझल अ. देश. (*उज्झर; प्रा. उज्झलिअ; दे. इआलें. 1676) एक बर्तन से दूसरे बर्तन में पहुँचना 410

उझाँक अ. दे. 'उझक' 411

उझिल अ. दे. 'उझल' 412

उटक स. देश. अटकल से पता लगाना; अ. अटकना 413

* उट्ठ अ. दे. 'उठ'

उठंग अ. देश. (* उपट्ठंग; दे. इआलें 2172) किसी ऊँची वस्तु का सहारा लेना; टेक लगाना. गुज. उठंग; तुल. ओठिंगण संज्ञा 415

उठ अ. भव (सं. उत् + स्था; प्रा. उट्ठ; दे. इआलें 1900) नीचे के तल या स्तर से ऊपर के तल या स्तर की ओर चलना या बढ़ना. ऊँचाई की ओर या ऊपर जाना अथवा बढ़ना गुज. ऊठ 416

उठक अ. दे. 'उठंग' 417

उड़ अ. भव (सं. उत् + डी; प्रा. उड्ड; दे. इआलें 1697) पंख के सहारे हवा में चलना-फिरना; फैलना. गुज. ऊड 418

उड़का स. देश. (दे. पृ. 16, दे. श. को.) लगाना, बन्द करना 419

उड़ास स. अर्धसम (सं. उत् + दंश; दे. इआलें 1984) (बिस्तरा आदि) समेटना 420

उडीक स. देश. प्रतीक्षा करना 421

उडेर स. दे. 'उडेल' 422

उडेल स. भव (सं. उत् + लण्ड्; प्रा. उल्लंडिअ विशे. दे. इआलें 2369) किसी तरल पदार्थ को एक पात्र से दूसरे पात्र में गिराना या डालना गुज. तुल. उलांट संज्ञा 'कलाबाजी, कूद' 423

उढ़क अ. ना. देश. ' प्रा. उड्ढंक संज्ञा; दे. पृ. 153 पा. स. म.) ठोकर खाना; सहारा लेना 424

उढ़र क. दे. 'उढ़ार' 425

उढ़ार (1) स. भव (सं. उत् + ह्वल्; दे. इआलें 2032) किसी विवाहिता को निकाल या भगा जाना

(2) स. देश. उद्धार करना 426

उदुक अ. दे. 'उहक' 427

उतपन अ. ना. अर्धसम (उत्पन्न विशे. सं. उत्पन्न दे. पृ. 125, ह. भा.) उत्पन्न होना. गुज. तुल. उतपत संज्ञा 428

उतपाट स. सम (सं. उत् + पाट्) उखाड़ना; नष्ट-भ्रष्ट करना 429

उतपात स. दे. 'उतपाद' 430

उतपाद स. अर्धसम (सं उत् + पाद्) उत्पन्न करना 431

उतपा स. दे. 'उतपन' 432

उतर अ. भव (सं. उत् + तृ; प्रा. उत्तर; दे. इआलें 1770) ऊपर से या किसी सपाटी से नीचे आना गुज. ऊतर 433

उतरा अ. देश. पानी में पड़ी हुई चीज़ का ऊपर तैरना, पानी के ऊपर आना; विपत्ति से उद्धार पाना. गुज. तुल. तर 'तैरना' 434

*उतला अ. देश. आतुर होना; उतावल करना 435

*उत्तार स. सम (सं. उत् + तृ) पार उतारना, दूर करना 436

*उत्थव स. देश. आरंभ करना; ऊपर उठना 437

*उत्साह अ. ना. सम (सं. उत्साह संज्ञा). उत्साहित होना. गुज. उत्साह संज्ञा 438

उथप स. अर्धसम (सं. उत् + स्थापू) ऊपर उठना या खड़ा करना; उखड़ना; अ. उठना गुज. उथाप 439

उथरा अ. भव (सं. उत् + स्तृ ? प्रा. उत्थर्) किंचित् उठना. उन्नत होना 440

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उथल अ. देश. डगमगाना; उलट जाना. गुज. ऊथल 441

उथाप स. दे. 'उथप' 442

उदंस स. देश. उखाड़ना; अ. उखडना 443

उदक अ. देश. उछलना–कूदना; छटकना 444

डदगर अ. ना. अर्धसम (उद्गार संज्ञा; सं. उद्गार) निकलना, उभड़ना, डकार लेना 445

उदगार स. दे. 'उदगर' 446

उदघट अ. सम. (सं उद् + घट्) प्रकट होना; उदित होना 447

उदवास स. भव (सं. उद् + वास्) किसी स्थान से हटा देना, उजाडना 448

*उदमद अ. देश. उन्मत्त होना, सुधबुध खो देना 449

*उदमान अ. देश, उन्मत्त होना 450

*उदय अ. ना. सम (उदय संज्ञा; सं. उत् + इ; प्रा. उदय; दे. इआलें 1931) उदय होना. गुज. उदय संज्ञा 451

*उदर अ. देश. विदिर्ण होना; (मेड़, दिवार आदि का) कटकर अलग हो जाना; अ. उतरना 452

*उदव अ. दे. 'उदय' 453

उदस अ. भव (सं, उद् + वस्; प्रा. *उद्दस ह. भा.) उजड़ना, उध्वस्त होना 454

*उदास (1) स. ना. सम (उदास विशे. सं. उदास) उदास होना.गुज. उदास विशे. (2) स. देश. उजाड़ना; (बस्ता) समेटना 455

उदिया अ. देश. उद्विग्न करना 456

*उद्ध अ. देश. ऊपर उठाना, उडना 457

*उद्धर स. दे. 'उद्धार' 458

उद्धार स. ना. सम (उद्धार संज्ञा; सं. उद्धार; दे. पृ. 198; ब्र. ख. तु. अ.) उद्धार करना. गुज. उद्धार 459

उधक अ. दे. 'उधड़' 460

उधड़ अ. भव (सं. उद् + धृ; प्रा. उद्धड विशे. दे. इआलें 2009 खुलना. बिखरना. गुज. उधेड स. 'चमडी उधेडना' 461

उधर अ. देश. संकट आदि से उद्धार पाना या मुक्त होना, स. उद्धार करना 462

उधरा अ. ना. देश. (उधर अव्य.) हवा के झोंके में पड़कर इधर–उधर छितराता या बिखराना; नष्ट–भ्रष्ट हो जाना 463

उधल अ. दे. 'उढ़र' 464

उधस स. देश. बिखरना; फैलना 465

उधिया अ. ना. देश. (ऊधम संज्ञा) ऊधम मचाना अ. उधड़ना गुज. ऊधम संज्ञा 466

उन स. देश. बुनना; अ. उनवना 467

उनच स. देश. चारपाई की बुनाहट को खींचकर कड़ा करना, ऐंचना 468

उनमा अ. अर्धसम (सं. उन् + मद्) उन्मत्त होना; विह्वल होना 469

उनमाथ स. अर्धसम (सं. उन्मथ) मथना 470

*उनमान अ. देश. अनुमान करना; सोचना 471

*उनमूल स. ना. सम (सं. उन् + मूल) उखाड़ना; नष्ट करना 472

उनमेख स. ना. अर्धसम (उनमेख संज्ञा; सं. उन्मेष) विकसित होना; आँख खुलना 473

*उनय अ. दे. 'उनव' झुकना; लटकना 474

*उनर अ. देश. ऊपर उठना या बढ़ना; छाना 475

उनव अ. भव (सं. अव + नम्; प्रा. ओणम्; दे. इआलें 788) झुकना; गिरना 476

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*उनै अ. दे. 'उनव' 478

उन्मील स. ना. सम (सं. उन्मीलन) विकसित करना, अ. खुलना, खिलना गुज. उन्मीलन संज्ञा 479

उप अ. दे. 'उपज' 480

*उपकर स. ना. अर्धसम (उपकार संज्ञा; सं. उपकार) उपकार करना. गुज. उपकार संज्ञा 481

*उपच अ. ना. अर्धसम (सं. उपचय संज्ञा) उन्नत होना; फूट पडना 482

उपचर स. दे. 'उपचार' 483

उपचार स. ना. सम (उपचार संज्ञा; सं. उपचार) व्यवहार करना, विधान करना. गुज. उपचार संज्ञा 484

उपज अ. भव (सं. उत् + पद्; प्रा. उपज्ज्; दे. इआलें 1814) उत्पन्न होना; मन में उठना गुज. ऊपज 485

उपट अ. भव (सं. उद् + वृत्; प्रा. उव्वत्; दे. इआलें 2071) उभरना; दाग या निशान पड़ जाना. गुज. ऊपट 486

उपहार स. दे. 'उपट' 487

उपड़ अ. देश. उखड़ना; दे. 'उपट' गुज. ऊपड़ 'उभरना, जाना' 488

*उपदेश स. ना. अर्धसम (उपदेश संज्ञा; सं. उपदेश) उपदेश, शिक्षा देना. गुज. उपदेश 489

*उपधर अ. सम (सं. उप + धृ) 490

*उपन (1) अ. दे. 'उपज'
(2) स. देश. उदाहरण देना; तुलना करना 491

*उपमा स. ना. सम (उपमा संज्ञा; सं. उपमा) तुलना करना. गुज. उपमा संज्ञा 492

उपर अ. दे. 'उपज' 493

उपर अ. दे. 'उपट' 494

उपरा अ. ना.भव (ऊपर अव्य; सं. उपरि; प्रा. उप्परिं, उप्पिअं; इआलें; 2333) ऊपर होना; सं. ऊपर करना. गुज. तुल. उपर अव्य 495

उपराज स. अर्धसम (सं. उपार्ज) उत्पन्न करना; उपार्जन करना 496

*उपराह स. देश. प्रशंसा करना 497

उपला स. दे. 'उपरा' 498

उपव अ. देश. उड़ जाना; उदय होना 499

उपस अ. दे. 'उबस' 500

उपसव अ. देश. कहीं से भाग या हटकर चले जाना 501

उपाट स. भव. (सं उत् + पद्; प्रा तुल. उप्पट्ट; दे इआलें 1809 'जड से नोचना, उजाडना. गुज. उपाट 502

उपाठ स. देश. दृढ या पक्का करना; पमाना 503

उपार स. ना. भव (उपाड़ संज्ञा; सं. उत्पाट; प्रा. उप्पाड; दे. इआलें 1819) उखाड़ना. गुज. उपाड 504

*उपेख स. देश. उपेक्षा करना 505

*उपै अ. देश. उड़ जाना 506

*उफड अ. देश. उफनना; उबलना 507

उफन अ. ना. अर्धसम (उफान संज्ञा; सं. उत् + फण्; दे. इआलें 1836) उबलना. गुज. तुल. उफाणो संज्ञा 508

उफना अ. दे. 'उफन' 509

उफाल अ. भव (सं. उत् + स्फल्; प्रा. उप्फाल्; दे. इआलें 1837) निर्मूल करना; उजाड़ना 510

उब (1) अ. अर्धसम (सं. उद् + वप्; दे. इआलें 2069) उकताना, घबराना. गुज. ऊब, उबा 'फफूदी जमना'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) स. देश. उगना; उन्नति करना 511

उबक अ. ना. देश. (उबक संज्ञा; * उब्बक्क; प्रा. उव्वक्क; दे. इआलें 2337) कै करना. गुज. तुल. उबक, उबको संज्ञा 'उबकाई' 512

उबछ स. ना. भव (सं. उत्प्रेक्षण; प्रा. उप्पोक्खन्; दे. पृ. 373, मा. हि. को.) कपड़ा पछाड़कर धोना; सिंचाई के लिए पानी खींचना 513

उबाक अ. दे. 'उबक' 514

उबट अ. भव (सं. उद् + वृत्; प्रा. उब्बत्त, उब्बट्ट; दे. इआलें 2071) मालिश करना. गुज. ऊटवा 515

उबर अ. दे. 'उबार' 516

उबल अ. देश (* उब्बल; प्रा. उव्वर; दे. इआलें 2339) खौलना, उफनना. गुज. तुल. उबाळो संज्ञा 517

उबस अ. भव (सं. उद् + वास्; दे. इआलें 2084) सड़ना, सडौंध पेदा होना 518

उबह अ. भव (सं. उद् + वह्; प्रा. उव्वह्; दे. इआलें 2076) उभरना; तलवार आदि ऊपर उठाना 519

उबार स. भव (सं. उद् + वृ; प्रा. उव्वार्; दे. इआलें 2082 तथा 2356) बचाना. गुज. तुल. उगार 520

उबिठ स. भव (सं. अव + इष्ट; प्रा. ओइट्ठ; दे. पृ. 374 मा. हि. को.) अरुचि पैदा करना; उबाना. अ. ऊबना 521

उबीठ स. दे. 'उबिठ' 522

उबीध अ. भव (सं. उद् + व्यध्; प्रा. उव्विद्ध; ह. भा.) फँसना; चुभना 523

उभ अ. ना. भव (सं. ऊर्ध्व विशे; प्रा. उब्भाह. भा.) उठना. गुज. ऊभुं विशे 'खडा' 524

उभट अ. अर्धसम (सं. उद्भट ?) अहंकार करना; उभरना 525

उभड अ. दे. 'उभर' 526

उभर अ. भव (सं. उद् + भृ; प्रा. उब्भलिअ; दे. इआलें 2038) ऊपर उठना, प्रकट होना. गुज. ऊभळ 527

उभा अ. दे. 'अभुआ' 528

उभाल स. देश. (प्रा. उब्भालण; दे. पा. स. म. तथा पृ. 102, हि. त. श.) सूप आदि से साफसुथरा करना 529

उभास अ. ना. भव (अवभास संज्ञा; सं. भास्; प्रा. ओभास्, अवहा संज्ञा; दे. इआलें 798 तथा पृ. 88 हि. त. श.) चमकना 530

उभिट अ. देश. हिचकना, अटकना 531

उमँग अ. दे. 'उमग' 532

उमग अ. भव (उन्मग्न विशे. सं. उन्मग्न; प्रा. उम्मग्ग; दे. इआलें 2110) उमंग में आना, जोश में आना. गुज. तुल. उमग 'स्फुरित होना, उत्पन्न होना' 533

उमच अ. देश. हुमचना; चौंकना 534

उमड़ अ. देश. (* उम्मड; दे. इआलें 2344) बढ़कर फैलना, जोश में आना. गुज. ऊमड, ऊमट 535

उमद अ. दे. 'उमग' 536

उमस अ. ना. देश. (उमस संज्ञा) उमस होना 537

उमह अ. दे. 'ऊमह' 538

उमाक स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 102, हि. दे. श.) उखाडकर फेंक देना 539

उमेठ स. भव (सं. उद् + वेष्ट, प्रा. उव्वेट्; दे. इआलें 2091) मरोड़ना, ऐंठना 540

उमेड स. दे. 'उमेठ' 541

*उमेल स. देश. प्रकट करना; वर्णन करना 542

उम्म अ. देश. उमड़ना 543

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उयबा अ. देश. जँभाई लेना 544

उर अ. दे. 'उड़' 545

उरक अ. देश. (* उद्रोक्क; प्रा. उल्लक्क, दे. इआलें 2068) रुकना, ठहरना 546

उरग स. देश. झेलना, अंगीकार करना 547

उरझ अ. भव (सं. उप + रुन्ध्; प्रा. उअरुज्झ; दे. इआलें 2221) उलझना, द्विधाग्रस्त होना. गुज. ऊरझ 'लटकना'; उरझा 'उलझाना' 548

उरधार स. देश. फैलाना; उधेड़ना 549

उरम अ. देश. लटकना, झूलना 550

उरर अ. अनु. (दे. पृ. 377, मा. हि. को.) उमंगित होना 551

उरस स. देश. उठाना-गिराना; ढाँकना 552

उरा अ. देश. खतम हो जाना, चुक जाना, ओराना; स. दे. 'उड्ढा' 553

उराह स. ना. उलाहना देना 554

*उरुज अ. दे. 'उरझ' 555

*उरेख स. दे. 'उरेह' 556

उरेह स. भव (सं. उद् + रिख्; प्रा. उल्लिह्;) दे. इआलें 2060) तसवीर बनाना 557

उरेंड स. देश. उँडेलना, गिराना 558

*उलंग स. देश. लाँघना 559

*उलंघ स. ना. अर्धसम (सं. उल्लंघन संज्ञा) उल्लंघन करना गुज. उलंघ 560

उलंड स. दे. 'उड्डेल' 561

उलच स. दे. 'उलीच' 562

उलछ स. दे. 'उलीच' 563

उलझ अ. दे. 'उरझ' 564

उलट अ. देश. (* उल्लट्ट; प्रा. उल्लट्ट विशे. दे. इआलें 2368) सीधे का औंधा होना. गुज. ऊलट 565

उलट-पलट अ. दे. 'उलट' 566

*उलठ अ. दे. 'उलट' 567

*उलथ अ. देश. ऊपर-नीचे होना; उछलना. गुज. ऊथल 568

*उलद स. देश. उडेलना; ढालना; अ. खूब बरसना 569

*उलर (1) अ. भव (सं. उत् + लल्; प्रा. उल्लल्; दे. इआलें 2373) उछलना; झपटना. गुज. उलळ
(2) अ. दे. 'उलट' 570

*उलल अ. देश. ढरकना; उलट-पलट होना; स. उलट-पलट करना. गुज. ऊलळ 571

*उलस अ. भव (सं. उत् + लस्; प्रा. उल्लस्; दे. इआलें 2375) शोभित होना. गुज. ऊलस 'भव्य दीखना, प्रसन्न होना' 572

उलसा अ. दे. 'उलस' 573

उलह अ. देश. उमड़ना; उत्पन्न होना 574

उलाँघ स. भव (सं. उत् + लङ्घ्; प्रा. उल्लंघ्; दे. इआलें 2366) लाँघना, (आज्ञा का) उल्लंघन करना. गुज. उलंघ 575

उलार स. दे. 'उलर' 576

उलाल स. देश. पालन-पोषण करना 577

उलाह अ. भव (सं. उप + आ + लभ्; प्रा. उवालह्; दे. इआलें 2312) गिला करना, दोष देना. गुज. तुल. उपालंभ संज्ञा 578

उलीच स. देश. कोई तरल पदार्थ बाहर फेंकना 579

उलेंड स. दे. 'उडेल' 580

उलेट स. दे. 'उलट' 581

उलेड स. दे. 'उडेल' 582

उलेढ स. देश. कपड़े के छोर या सिरे को थोड़ा उलट या मोड़कर तथा अन्दर की ओर करके

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊपर से सीना 583

उलैंड़ स. दे. 'उडेल' 584

उल्लंघ स. सम (सं. उद् + लङ्घ्) उल्लंघन करना. गुज. उल्लंघ 585

उल्लास स. ना. सम (सं. उद् + लस्) उल्लसित होना. गुज. उल्लास संज्ञा 586

उव अ. दे. 'ऊअ' 587

उस स. दे. 'ओसा' 588

उसक अ. भव (सं. उत् + सुच्; प्रा. उस्सुक्क्; दे. इआलें 1886) उत्तेजित होना 589

उसन स. दे. 'उसिन' 590

उसर अ. दे. 'उसार' 591

*उसल अ. दे. 'उसार' 592

*उसस अ. देश. गहरी या ठंढी साँस लेना; अ. खिसकना 593

उसा स. दे. 'ओसा' 594

*उसार स. भव (सं. अव + सृ; प्रा. ओसारु; दे. इआलें 862) उखाड़ना; पूरा करना 595

उसाल स. देश. उखाड़ना; दूर करना 596

उसिन स. भव (सं. उत् + श्रा; दे. इआलें 1863 प्रा. उसिण विशे.) उबालना, पकाना. गुज. तुल. ओसामण संज्ञा 'माँड' 597

उसीज स. भव (सं. उत् + श्रा; दे. इआलें 1865) उबालकर पकाना 598

उसीझ स. भव (सं. उत् + सिध्; दे. इआलें 1834) धीमी आग से पकाना. तुल. गुज. सीझव 599

उसे स. देश. उबालना 600

उहट अ. देश. उघड़ना; हटना; स. उघाड़ना 601

उहर अ. दे. 'ओहर' 602

ऊँग स. दे. 'औंग' 603

ऊँघ अ. देश. (* उङ्घ् ; प्रा. उंघ् , उग्घ् ; दे. इआलें 1632) नींद लेना. गुज. ऊंघ् 604

ऊँछ स. भव (सं. उञ्छ् ; दे. इआलें 1680) कंघी करना 605

ऊ अ. देश. उअना, उगना 606

ऊअ अ. भव (सं. उद् + इ, प्रा. उइ, दे. इआलें 1944) उदित होना 607

ऊक अ. भव (सं. उत् + क्रम् , प्रा. उक्कम् : दे. इआलें 1737) चूकना, स. छोडना 609

ऊकट स. देश. उकठना 609

ऊकस अ. दे. 'उकस' 610

ऊग अ. दे. 'उग' 611

ऊगर स. दे. 'उगल' 612

ऊछज अ. देश. (अस्त्र आदि) ऊपर उठाकर अपने बचाव के लिए तैयार होना 613

*ऊट अ. दे. 'औट' 614

*ऊड़ स. दे. 'ऊढ (2)'

ऊढ (1) अ. ना. सम. (सं. ऊढ्) सोच-विचार करना

(2) अ. ना. सम. (सं. ऊढ्) विवाह करना 616

ऊथाप स. दे. 'उथप' 617

ऊधर अ. दे. 'उधर' 618

ऊन अ. ना. सम. (ऊन विशे.) कम करना. गुज. तुल. ऊणुं विशे. 'कम' 619

*ऊप अ. देश. उपजना 620

ऊब अ. भव (सं. उद् + विज् ; प्रा. उव्विय् , दे. इआलें 2087) उकताना, घबराना. गुज. तुल. ऊब, ऊबा 'उबसना' 621

ऊभ (1) अ. ना. देश. (ऊभ संज्ञा, *उब्ब,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रा. उव्व दे. इआलें 2340) गरमी से ऊबना पीडित होना,
(2) अ. दे. 'उभ' 622

ऊम अ. भव (सं. उन् + मद्; दे. इआलें 2115) विजय से आनंदित होना 623

ऊमट अ. दे. 'उमड़' 624

ऊमह अ. भव (सं. उन् + मथ्; प्रा. उम्मह; दे. इआलें 2115) उमंग में आना 625

*ऊल अ. देश. प्रसन्न होना; उछलना 625

ऊलह अ. दे. 'उलह' 627

ऊवड़ अ. दे. उमह 628

ऐंच स. दे. 'ऐंच' 629

ऐंच स. भव (सं. अति + अञ्च्; प्रा. ऐंचू; दे. इआलें 210) खींचना. गुज. एंच 630

ऐंछ स. देश. झाड़ना; (बालों में) कंघी करना 631

ऐंट स. दे. 'ऐंठ' 632

ऐंठ स. भव (सं. आ + वेष्ट्; प्रा. आवेढिम विशे. दे. इआलें 1448) मरोड, घुमाव देना. गुज. तुल. एंट 'गर्व करना' 633

ऐंड स. दे. 'ऐंठ' 634

ओंइछ स. देश. निछावर करना, औंछना 635

*ओंक (1) अ. दे. 'ओक'
(2) अ. भव (सं. अप + क्रम्; प्रा. अवक्कम्;—दे. पा. स. म. तथा पृ. 182, हि. दे. श.) हटना 636

ओंग स. अर्धसम (सं. उप + अम्ज्; दे. इआलें 2293) गाडी की धुरी में तेल लगाना. गुज. ऊंग, ऊंज 637

ओक अ. देश. (*ओक्क; दे. इआलें 2538; प्रा. ओक्किअ संज्ञा; दे. प्रा. स. म.) कै करना; भैंस की तरह चिल्लाना. गुज. ओक 638

ओगर अ. देश. टपकना, रसना; (कुएँ आदि का) साफ किया जाना. तुल. गुज. गाळ 639

ओछ स. दे. 'ऊँछ' 640

ओज स. अर्धसम (सं. अव + तुद्; दे. इआलें 778) रोकना, झेलना 641

ओट (1) स. देश (*ओट्ट; दे. इआलें 2544) कपास के बिनौले को अलग करना; किसी बात को बारबार कहना. गुज. ओट 'कोकना'
(2) स. भव (सं. अव + वृत्; प्रा. ओवत्त् दे. इआलें 840) वाद्य के तार छेड़ना 642

ओठँग अ. दे. 'उठँग' 643

ओड स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 103, हि. दे. श.) ऊपर लेना; (हाथ) पसारना 644

ओढ़ स. देश. (*ओड्ढ; प्रा. ओड्ढिगा—उड्ढिया संज्ञा; दे. इआलें 2547) किसी कपड़े, खाल आदि से बदन को ढकना; अपने जिम्मे लेना. गुज. ओढ 645

ओदर (1) अ. भव (सं. अव + दृ; प्रा. अवदाल् दे. इआणें 782 तथा 784) किसी सही चीज का उखड़ना; फटना
(2) अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 103, हि. दे. श.) उदास होना 646

ओध अ. भव (सं. अव + बन्ध्; प्रा. ओबद्ध विशे. दे. इआलें 795) फँसना, उलझाना; (काम में) लगाना 647

ओनच स. दे. 'उनच' 648

ओनव अ. दे. 'उनव' 649

ओना अ. किसी ओर उठना पा लगना; स. कान लगाकर सुनना; झुकाना 650

ओप अ. देश (*ओप्प: प्रा. ओप्प विशे. दे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इआलें 2556) चमकना; स. चमक लाने के लिए माँजना. गुज. ओप 651

ओपा अ. दे. 'ओप'. दूध की हँड़िया आदि गरम करते समय अधिक आँच लग जाने से उस में धुआँ-मिश्रित गंध का आने लगना 652

ओरम अ. दे. 'ओलम' 653

ओरव अ. दे. 'ओलम' 654

ओरा अ. देश. समाप्त होना, चुकना 655

ओल स. ना. देश. (ओल संज्ञा) परदा करना; ओढ़ना; रोकना 656

ओलग अ. दे. 'अलग' 657

ओलम अ. भव (सं. अव + लम्ब्; प्रा. ओलंब; दे. इआलें 827) लटकना; झुकना. गुज. तुल. ओळंबो संज्ञा 658

ओलर अ. दे. 'उलर' 659

ओलिया स. देश. गोद में भरना; घुसना 660

ओसन स. ना. भव (श्लक्ष्ण विशे. सं. उव + श्लक्ष्ण; दे. इआलें 657) आटा गूंधना 661

ओसर अ. देश. बरसना 662

ओसा स. अर्धसम (सं. अप + श्री; दे. इआलें 963) दाना-भूसा अलग करने के लिए अनाज को हवा में उड़ाना. गुज. ओसाव 'पसाना'; तुल. ओसामण संज्ञा 'माँड' 663

ओह स. देश. डंढलों आदि को ऊपर उठाकर हिलाते हुए नीचे गिराना 664

ओहर अ. भव (सं. अव + भृ; प्रा. ओहरिअ विशे. दे. इआलें 797) शमित होना; कमी पर होना. गुज. तुल. ओसर 665

औंग स. दे. 'ओंग' 666

औंघ अ. देश. (*अवोंघ्; दे. इआलें 901) ऊँघना 667

औंघा अ. दे. 'औंघ' 668

औंछ स. दे. 'ओंइछ' 669

औंज अ. देश. उबना, व्याकुल होना; स. उलझना 670

औंट स. दे. 'औट' 671

औंड़ अ. देश. उमड़ना 672

औंद अ. देश. उन्मत्त होना; व्याकुल होना 673

*औंध अ. ना. भव (औंधा विशे; सं. अवमूर्धन् प्रा. ओमुद्धण; दे. इआलें 804) औंधा होना; स. उलट देना. तुल. गुज. ऊंधुं विशे. 674

औंस अ. दे. 'औस' 675

औगाह अ. अर्धसम (सं. अव + गाह्) अवगाहना. गुज. अवगाह 676

औघूर अ. देश. घूमना, चक्कर खाना 677

औछा अ. देश. छाना 678

औट स. भव (सं. आ + वृत्; प्रा. आवद्दु; दे. इआलें 1420) दूध आदि को आँच देकर गाढ़ा करना. गुज. तुल. अवटवा 'चम्मच से हिलाये जाते हुए उबलना' 679

औतर अ. अर्धसम (सं. अव + तृ) अवतार ग्रहण करना, जन्म लेना. गुज. अवतर 680

*औदक अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 104, हि. दे. श.) चौंकना 681

औंधार (1) स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 104, हि. दे. श.) इधर-उधर हिलाना-डुलाना (2) स. अर्धसम (सं. अव + धृ) अवधारना; प्रारंभ करना 682

औन अ. दे. 'ऊन' 683

और अ. देश. आगे बढ़ना; सूझना 684

औरस अ. देश. रूठना, अनखाना 685

औल अ. दे. 'अऊल' 686

औस (1) अ. भव (सं. आ + वास्; प्रा. तुल.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवास संज्ञा; दे. इआलें 1433 तथा 458) ऊमस होना, फलादि का सूखकर पकना (2) अ. भव (सं. आ + तप्; दे. इआलें 1120) गरम होना 687

*कंख (1) अ. देश. किसी बात की इच्छा होना (2) अ. दे. 'काँख' 688

कँजिया अ. ना. देश. (कँजा संज्ञा) कंजई रंग का बनना, कुछ नीलापन लिए काला पड़ना; दहकते हुए कोयलों का बुझना; झँवाना 689

कँटिया अ. ना. भव (काँटा सं. कण्टक; प्रा. कंटिय; दे इआलें 2668) काँटों से युक्त होना; रोमांचित होना; स. कटि लगाना; रोमांचित करना गुज. कांटो संज्ञा 690

कंथ स. ना. सम (कंथा संज्ञा) कंथा पहनना. गुज. कंथा संज्ञा 691

कंप अ. दे. 'काँप' 692

कंष स. अर्धसम (सं. कांक्ष्) इच्छा करना; देखना 693

कउँध अ. दे. 'कौंध' 694

ककोर स. देश. (अ. व्यु. पृ. 104, हि. दे. श.) खरोंचना; मोडना; कुरेदना 695

कचक अ. दे. (*कच्च, दे. इआलें 2610) किसी अंग या वस्तु का दब जाना, कुचला जाना; स. दरार पड़ना; स. कुचलना. गुज. कचक 'कसकर बाँधना' 696

कचकचा अ. अनु. (*कच्च; दे. इआलें 2612) 'कचकच' की आवाज होना; दाँत धँसाना. गुज. कचकचाव; कचकच संज्ञा 697

कचर स. दे. पैरों से रगड़ना; कुचलना; बहुत अधिक भोजन करना. गुज. कचर 698

कचा अ. ना. देश. (कच्चा विशे.) डरकर पीछे हटना; कच्चा पडना; स. ऐसा काम करना जिससे कोई धैर्य छोड दे 699

कचार स. अनु. (दे. पृ. 428, मा. हि. को.) पछाडकर पानी से कपडे धोना 700

कचिया अ. ना. देश. (कच्चा विशे.) कच्चा पड़ना या होना; हिम्मत हारना; स. किसी को साहसरहित करना 701

कचो स. दे. 'कचोक' 702

कचोक स. अनु. (दे. पृ. 428, मा हि. को.) किसी को कोई नुकीली चीच चुभाना 703

कचोट अ. अनु. देश. (अ. व्यु. पृ. 104, हि. देश.) चुमना, गड़ना; किसी प्रिय जन को याद करके दुःखी होना; रह रहकर पीड़ा उठना 704

कजरिया स. ना. भव (काजर संज्ञा, काजल; सं. कज्जल, प्रा. कज्जल; दे. इआलें 2622) बच्चों को नजर से बचाने के लिए काजल की बिंदी लगाना; काला करना 705

कजला अ. दे. 'कजरिया' 706

कट अ. दे. 'काट' 707

कटकटा अ. ना. अनु. (दे. पृ. 432, मा. हि. को.) क्रुद्ध होने पर दाँत पीसना. गुज. तुल. कचकचाव 708

कटका स. दे. 'कटकटा' 709

कटमटा अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 105; हि. दे. श.) काटनी–सी नजर से देखना 710

*कटाष्प स. ना. अर्धसम (सं कटाक्ष) कटाक्ष करना 711

कटिया अ. दे. 'कँटिया' 712

कट्टर अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 105, हि. दे. श.) उपेक्षा या क्रोधपूर्वक देखना, घूरना 713

कट्ठ स. देश. काटना; काढना; अ. कटना 714

*कट्या अ. दे. 'कंटिया' 715

कठिया अ. ना. भव (काठ संज्ञा; सं. काष्ठ;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रा. कट्ठ; दे. इआलें 3120) सख्त हो जाना; सूखकर कड़ा हो जाना 716

कठुआ अ. दे. 'कठिया' 717

*कठ्ठ अ. देश. बाहर आना; निकलना; स. निकालना 718

कड़क अ. ना. अनु. (कड़कड़ संज्ञा) 'कड़कड़' शब्द करना; घी–तेल का गरम हो जाना; गुस्सा करना; स. बहुत गरम करना, गुज. ककळ 719

कड़कड़ा अ. दे. 'कड़क' 720

कडुआ अ. न्न भव (कडुआ विशे. सं. कटु; प्रा. कडु; दे. इआलें 2641) कडुआ लगना; बिगड़ना. गुज. तुल. कडवुं विशे. 721

कढ़ अ. दे. 'काढ़' 722

*कढरा स. देश. किसीको घसीटकर बाहर निकालना 723

*कढला स. दे. 'कढ़रा' 724

*कढ़िरा स. दे. 'कढ़रा' 725

*कढ़ोर स. दे. 'कढ़रा' 726

कतकता अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 105, हि. दे. श.) अतिशय क्षीण हो जाना. गुज. तुल. कंता 727

कतर स. भव (सं. कृत् ; तुल. प्रा. कत्तरी संज्ञा; दे. इआलें 2858) कैंची या सरौते से काटना. गुज. कातर 728

*कत्थ स. अर्धसम (सं. कथ्) कथन करना; कहना 729

कथ स. सम. (सं. कथ्) कहना; बुराई करना. गुज. कथ 730

कदबा स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 105; हि. दे. श.) (खेत का) जोतने योग्य होना 731

कदरा अ. ना. देश. (कादर विशे.) कायरता दिखलाना 732

कनकना (1) अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 105; हि. दे. श.) चौकन्ना होना; रोमांचित होना; स. चुनचुनी या सुरसुरी उत्पन्न करना (2) अ. अनु. भव. (सं. क्वण् ; प्रा. कणकण् ; दे. पृ. 183, हि. दे. श.) 'कनकन' की ध्वनि उत्पन्न करना 733

कनखिया स. ना. भव (कनखी संज्ञा; सं. काणाक्ष, प्रा. काणक्ख; ह. भा.) कनखी से देखना; इशारा करना 734

कनमना अ. अनु. (अ. व्यु. दे. पृ. 105; हि. दे. श.) सोने में आहट पाकर या बेचैनी से हाथ–पांव हिलाना, सिकोड़ना 735

कना अ. ना. देश. (कना संज्ञा) ऊख की फसल में कना नामक रोग होना 736

कनिया अ. ना. देश. (कन्ना संज्ञा) आँख बचाकर किसी ओर निकल जाना; गुड्डी या पतंग का किसी ओर झुकना 737

कपट स. ना. सम (सं. कपट) छल से किसी चीज में से कुछ अंश निकाल लेना; वस्तु को ऊपर से थोड़ा तोड़–नोच लेना. गुज. कपट संज्ञा 738

कफ़ना स. ना. वि. (कफ़न संज्ञा, अर.) मुर्दे को कफ़न में लपेटना; अ. कफ़न में ढक जाना तुल. गुज. 'कफन' 739

कबूल स. ना. वि. (कबूल संज्ञा, अर.) स्वीकार करना, मान लेना. गुज. कबूल 740

कम अ. ना. वि. (कम विशे. फा.) (किसी वस्तु का) कम पड़ना, थोड़ा होना 741

कमा स. भव (सं. क्रम् ; प्रा. कर्म; दे. इआलें 3579) उपार्जन करना; काम देने योग्य बनाना. गुज. कमा 742

कर स. भव (सं. कृ; प्रा. कर् ; दे. इआलें 2814) किसी काम में सक्रिय होना; बनाना गुज. कर 743

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करक अ. दे. 'कड़क' 744

करख अ. दे. 'करष' 745

करखा (1) अ. ना. भव. (सं. कालव्य संज्ञा; कालिख, कारिख; ह. भा.) कालिख से युक्त होना; काला पड़ना
(2) अ. देश. घूरना (दे. पृ. 278, छ. का. उ) 746

*करबर अ. अनु. पक्षियों आदि का कलरव करना; हो-हल्ला करना. गुज. कलबल 747

करबरा (1) अ. अनु. खड़बड़ाना
(2) अ. दे. 'करबर' 748

करबर अ. दे. 'करबर' 749

करज अ. अर्धसम (करब संज्ञा; सं. कृष्) अपनी ओर खींचना, खींचकर निकालना; सोखना 750

करस स. दे. 'करष' 751

करार अ. अनु. देश (अ. व्यु. दे. पृ. 106, हि. दे. श.) कर-कर अर्थात् कठोर शब्द करना 752

कराह अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 106, हि. दे. श.) आह-आह करना. पीड़ासूचक ध्वनि निकालना 753

करो स. दे. 'करोद' 754

करोद स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 106, हि. दे. श.) करेदना, खुरचना 755

कर्रा अ. ना. देश. कड़ा होना; सख्त होना; 'करकर' शब्द होना; 'करकर' शब्द करना. गुज. करडा; तुल. गुज. करडुं विशे. 756

कर्ष स. सम. (सं. कृष्) खींचना. गुज. करख, करष, करस 757

कलक (1) अ. दे. 'कलकला'
(2) चीत्कार करना. तुल. गुज. ककळ 758

ककलला स. अनु. कलकल शब्द करना; अ. कल कल शब्द होना; शरीर के किसी अंग में हलकी खुजली होना; सुरसुराहट होना; गुज. कलकल 'जी जलाना, चीत्कार करना.' तुल. कलकल संज्ञा 759

कलप अ. देश. कल्पना करना; विलाप करना; दुःख पाना. गुज. कळप 'विलाप करना' 760

कलप्प अ. दे. 'कलप' 761

कलम स. ना. देश. (कलप संज्ञा) कलम करना; काटना. तुल. गुज. कलम संज्ञा 762

कलमल अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 106, हि. दे. श.) कसमसाना; बेचैन होना. 763

कलमला अ. दे. 'कलमल' 764

कला स. अर्धसम (सं. कल्; दे. इआलें 2919; प्रा. कल्लविअ विशे; दे. पृ. 212, पा. स. म.) हिलाना, मिश्रित करना. गुज. कालव 765

कलिया अ. ना. भव (कली संज्ञा; सं. कलि, कली; प्रा. कलिआ; दे. इआलें 2934) कलियों से युक्त होना; पंखियों का नया पंख निकलना. तुल. गुज. कळी संज्ञा 766

कलोल अ. ना. भव (सं. कल्लोल संज्ञा; प्रा. कल्लोल; दे. इआलें 2955) क्रीड़ा करना. गुज. कल्लोल 767

कल्ला अ. देश. जलन के साथ दर्द होना 768

कल्हार स. ना. देश. (दे. पृ. 485, मा. हि. को; प्रा. काहल्ली; दे. पृ. 241. पा. स. म.) कहाड़ी में डालकर या तवे पर रखकर कोई चीज़ तलना, भूनना 769

कवर स. देश. कौरना, सेंकना 770

कविता स. ना. सम. (सं. कविता संज्ञा) काव्यात्मक लिखना, भावुकता से लिखना. तुल. गुज. कविता. कवेताई संज्ञा 771

कस (1) स. भव (सं. कृष्; प्रा. करिस्, कास्; दे. इआलें 2908) बंधन को खींचकर मजबूत करना. गुज. कस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) स. भव (सं. कष्; प्रा. कस्; दे. इआलें 2972) परीक्षा करना. गुज. कस 772

कसक अ. भव. (सं. कष्; प्रा. कस्; दे. इआलें 2972) पीडा होना; सालना. गुज. कसक 773

कसमसा अ. ना. अनु. (कसमस संज्ञा; अ. व्यु. दे. पृ. 106; हि. दे. श.) भीड के कारण आपस में रगड खाते हुए हिलना, बेचैन होना. तुल. गुज. कसमस संज्ञा 774

कसरिया अ. ना. वि. (कसर संज्ञा; अर.) घाटा सहना. तुल. गुज. कसर संज्ञा 775

कसा अ. ना. भव (कषाय विशे; सं. कषाय; प्रा. कसाय; दे. इआलें 2974) कसैले स्वाद से युक्त होना. तुल. गुज. कषाय विशे. 776

कसिया अ. दे. 'कसा' 777

*कसीट स. देश. कसना 778

कसीस स. ना. वि. भव (कसीस संज्ञा; फा. कशिश; दे. पृ. 492, मा. हि. को.) खींचना; चढ़ना 779

कहँर अ. दे. 'कराह' (वर्ण-विपर्यय) 780

कह स. भव (सं. कथ्; प्रा. कह्; दे. इआलें 2703) शब्द द्वारा भावप्रकाश करना; बताना गुज. कहे 781

कहर अ. दे. 'कराह' 782

कहल अ. देश. (दे. पृ. 493, मा. हि. को.) उमस के कारण बेचैन होना, अकुलाना 783

काँख अ. भव (सं. कांक्ष्; प्रा. काँख्; दे. इआलें 3002) मलत्याग में जोर लगाने या भारी बोझ उठाने आदि से गले से खाँसने की-सी आवाज निकलना; पीडित होना. तुल. गुज. कराँख 784

काँछ स. दे. 'काछ' 785

काँड़ स. भव (सं. काण्ड्; प्रा. कंड्; दे. इआलें 2686) कुचलना 786

काँद अ. भव (सं. क्रन्द्; प्रा. कंद्; इआलें 3574) रोना-चिल्लाना 787

काँध (1) स. ना. भव (काँध संज्ञा; सं. स्कन्ध्; प्रा. खंधा, कंधा; दे. इआलें 13627) उठाना, भार सहना. तुल. गुज. कांध संज्ञा (2) स. ना. भव (सं. स्कन्ध संज्ञा; दे. इआलें 13632) एकत्रित करना 788

काँप अ. भव (सं. कम्प्; प्रा. कंप्; दे. इआलें 2767) हिलाना; लरजना. गुज. कांप 789

काछ स. भव (काछ संज्ञा; सं. कक्ष्य; प्रा. कक्खा, कच्छा; दे. इआलें 2592) लाँग को पीछे ले जाकर खोंसना; सवारना. गुज. काछ, काछडो संज्ञा 790

काट स. भव (सं. कृत्; प्रा. कत्त्, कट्ट; दे. इआलें 2854) टुकड़े करना; दाँत धँसाना. गुज. काट; तुल. गुज. काप 791

काढ़ स. भव (सं. * कड्ढ्; प्रा. कड्ढ्; दे. इआलें 2660) निकालना; बेल-बूटे बनाना. गुज. काढ, काड 792

कात स. भव (सं. कृत्; प्रा. कत्त्; दे. इआलें 2855) चरखे या तकली पर रुई या ऊनसे धागा निकालना. गुज. कांत 793

किकिया अ. अनु. (दे. पृ. 528, मा. हि. को.) रोना, चिल्लाना; कीं कीं शब्द करना. तुल. गुज. किकियारी संज्ञा 794

किचकिचा अ. अनु. (दे. पृ. 528, मा. हि. को.) खिजलाकर दाँत पीसना, कोई काम करने के समय सारी शक्ति लगाने के लिए दाँत पर दाँत रखना. गुज. कचकचाव 795

किचड़ा अ. ना. देश. (कीचड़ संज्ञा) कीचड़ से युक्त होना; स. कीचड़ से युक्त करना 796

किटकिटा अ. अनु. भव (सं. किटकिट संज्ञा; प्रा. किडकिडिया; दे. पृ. 184, हि. दे. श.) दाँत का बजना; स. क्रोध से दाँत पीसना,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यर्थ की कहासुनी करना 797

किड़क अ. अनु. (दे. पृ. 528, मा. हि. को.) खिसक या हट जाना 798

किड़किड़ा अ. दे. 'किटकिटा' 799

किर अ. देश. किसी चीज में से उसके छोटे छोटे कण धीरे धीरे गिरना 800

किरकिरा अ. ना. अनु. (किरकिरा विशे.) किरकिरे खाद्य पदार्थ का मुँह में किरकिर शब्द करना; किरकिरी पड़ने की-सी पीड़ा करना. तुल. गुज. करकरुं विशे. 801

किररा अ. अनु. (दे. पृ. 531, मा. हि. को.) क्रोध आदि से दाँत पीसना; 'किर्किर्' शब्द करना. तुल. गुज. करड 'काटना' 802

किरिर अ. देश. किचकिचाना 803

किरोल स. देश. कुरेदना; खुरचना 804

किलक अ. देश. 'किलकिला' 805

किलकिला अ. ना. भव (किलकिल संज्ञा; सं. किलकिल; प्रा. किलकल्; दे. इआलें 3160) किलकिल ध्वनि करना 806

किलबिला अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 107; हि. दे. श.) चंचल होना; बहुत से कीड़ों आदि का छोटी-सी जगह में एक साथ हिलना-डोलना 807

किलस अ. भव (सं. क्लिश्; प्रा. किस्स्; दे. इआलें 3623) दर्द होना; बिलख-बिलख कर रोना गुज. कणस 808

कीक अ. अनु. 'की-की' आवाज के साथ चीखना 809

कीड अ. ना. अर्धसम (सं. क्रीड्) क्रीड़ा करना. तुल. गुज. क्रीडा 810

कीन स. भव (सं. क्री; प्रा. कीण्, दे. इआलें 3594) खरीदना 811

कील स. ना. भव (कील संज्ञा; सं. किल; प्रा. कीलिअ; दे. इआलें 3204) कील ठोंकना; वश में करना. गुज.खील 'सीना' 812

कुंचल स. दे. 'कुचल' 813

कुंदेर स. ना. भव (कुंदेरा संज्ञा; सं. कुन्दकार; दे. इआलें 3297) खरादना, छीलना 814

*कुंभिला अ. देश. कुम्हलाना 815

कुकड़ अ. ना. भव (कुकड़ संज्ञा; कुक्कुट; प्रा. कुक्कुड; दे. इआलें 3209) मुरगे की तरह दब या सिकुड़ जाना 816

*कुच अ. सम. (सं. कुच्; दे. इआलें 3221) सिकुड़ना; किसी वस्तु का कोचा जाना 817

कुचकुचा स. अनु. बारबार हलके हाथों कोंचना 818

कुचल स. दे. 'कुच' किसी भारी चीज से दबाना; रौंदना. तुल. गुज. कचर 819

कुटना स. ना. भव (कुटनी, कुटना संज्ञा; सं कुट्टणी; प्रा. कुट्टणी; दे. इआलें 3240) कुटने या कुटनी का स्त्रियों को भुलावा देकर कुमार्ग पर ले जाना. तुल. गुज. कुटणी संज्ञा 820

कुड़क अ. देश. मुरगी का अंडे देना बंद करना; कुड़बुड़ाना. गुज. कूड 'कुढ़ना' 821

कुड़कुड़ा अ. अनु. देश. (प्रा. कुरुकुरु; दे. पृ. 254, पा. स. म.) मन ही मन खीझकर अस्पष्ट रूप से बड़बड़ाना; कुड़-कुड़ शब्द करके पक्षियों आदि को खेतों से भगाना 822

कुड़प स. देश. कँगनी के खेत को उस समय जोतना जब फसल थोड़ी उग आये 823

कुड़बुड़ा अ. दे. 'कुड़कुड़ा' 824

कुड़मुड़ा अ. दे. 'कुड़कुड़ा' 825

कुड़ेर स. देश. (दे. पृ. 26, दे. श. को.) राब के बोरों को एकदूसरे पर इस प्रकार रखना कि उनकी जूसी बहकर निकल जाय 826

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुढ़ अ. भव (सं. क्रुध् * क्रूध्; दे. इआलें 3598) भीतर ही भीतर जलना 827

कुतकुता अ. देश (अ. ठ्यु. दे. पृ. 107, हि. दे. श.) सर्दी से सिहरना 828

कुतर स. देश. (* कोत्र; दे. इआलें 3512) दाँतों से किसी चीज़ का कुछ अंश काट लेना; किसी को मिलनेवाली रकम में से कुछ काट लेना. गुज. कोतर; तुल. खोतर 829

कुदक अ. दे. 'कूद' 830

कुन अ. देश. (कुन्द संज्ञा; दे. इआलें 3295) खरादना 831

कुनकुना अ. ना. देश. (कुनकुना विशे. अ. व्यु. दे. पृ. 107 हि. दे. श.) कनमनाना 832

*कुन्न अ. वि. (कीनः फा. दे. पृ. 552, मा. को.) क्रोध या रोष करना 833

कुप अ. दे. 'कोप' 834

कुप्प अ. दे. 'कोप' 835

कुम्हला अ. देश. (* कोम्हू; प्रा. कुम्मण विशे.; दे. इआलें 3524) मुरझाना; सूखने लगना. गुज. करमा 836

*कुर अ. ना. (कूरा संज्ञा) वस्तुओं को एक जगह एकत्र करना 837

कुरकुरा अ. दे. 'कुड़कुड़ा' 838

कुरकुरा अ. अनु. कुरकुर करना; गतिशील होना 839

*कुरल अ. अनु. पक्षियों का मधुर स्वर में बोलना 840

कुरला अ. देश. करुण स्वर में बोलना, आर्तनाद करना 841

कुरिआर स. देश. कोई चीज निकालने के लिए कुछ काटना या खोदना 842

कुरिया स. देश. कुरेदना, कुरैना 843

कुरेद स. देश. (*कुर्; दे. इआलें 3319) खुरचना, करोटना 844

कुरै स. ना. भव (कूरा संज्ञा; सं. कूट; प्रा. कूड; ह. भा.) ढेर लगाना; अ. ऊपर से ढेर के रूप में किसी चीज का नीचे आकर ढेर के रूप में गिरना 845

कुरोद स. दे. 'कुरेद' 846

कुर्र अ. दे. 'कुरल' 847

कुल अ. देश. (*कुल्ल; दे. इआलें 3334) दर्द करना, टीसना; स. चोट पहुँचाना 848

कुलक अ. अनु. किलकना 849

कुलकुला अ. ना. अनु. देश. (कुलकुल संज्ञा; प्रा. कुलकुल; दे. पृ. 255, पा. स, म.) कुल-कुल शब्द होना; विकल होना; स. कुल-कुल शब्द उत्पन्न करना. गुज. कळकळ 850

कुलबुला अ. ना. अनु. देश. (कलबुल संज्ञा; प्रा. कुरुकुरु; दे. पृ. 185, हि. दे. श.) कीड़ों, मछलियों आदि का एक साथ हिलना-डोलना; बेचैनी प्रकट करना 851

कुलाँच अ. ना. वि. (कुलाच संज्ञा तु. दे. पृ. 561, मा. हि. को.) चौकड़ी भरना; उछलना-कूदना 852

कुलेल अ. दे. 'कलोल' 853

कुसमिसा अ. दे. 'कसमसा' 854

कुहक अ. अनु. कोयल का कुहू-कुहू शब्द करना; पिहकना. तुल. गुज. कुहूकार 855

कुहा अ. ना. भव (सं. क्रोध संज्ञा, प्रा. कोह) क्रुद्ध होना; स. किसीको अप्रसन्न करना 856

कुहुक अ. दे. 'कुहक' 857

कूँच स. ना. देश. (कूँचा संज्ञा) कुचलना 858

कूँज अ. दे. 'कूज' 859

कूँथ स. अर्धसम (सं. कुन्थ्; दे. इआलें 3294)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पीडा से 'उँह' आवाज़ निकालना; कबूतरों का 'गुटुर गूँ' करना 860

कूँद अ. दे. 'कुन' 861

कूक अ. अनु. (कुक्क्; प्रा. कुक्क्; दे. इआलें 3390) कोयल, मोर आदि का कू-कू शब्द करना; सुरीली ध्वनि निकालना; स. चाबी देना 862

कूज अ. सम. (सं. कूज्) मधुर ध्वनि करना. गुज. कूज 863

कूट स. भव (सं. कुट्ट; प्रा. कुट्ट; दे. इआलें 3241) मूसल-मुँगरी से किसी चीज़ को लगातार पीटना; मारना-पीटना. गुज. कूट 864

कूत स. ना. देश (कूत संज्ञा) किसी वस्तु का मान, मूल्य या महत्त्व अटकल से आँकना 865

कूथ अ. दे. 'कूँथ' 866

कूद अ. अर्धसम (सं. कूर्द्; दे. इआलें 3412) किसी ऊँचे स्थान से नीचे स्थान की ओर एक बारगी तथा बिना किसी सहारे के उतरना; स. फाँदना. गुज. कूद 867

कूह स. देश. मारना-पीटना; बुरी तरह से हत्या करना 868

केंकिया अ. दे. 'किकिया' 869

केन स. दे. 'कीन' 870

केरा स. भव (सं. कृ; दे. इआलें 3467) सूप में अन्न रखकर उसे हिलाकर बड़े और छोटे दाने अलग करना 871

केवट स. ना. भव (केवट संज्ञा; सं. केवर्त्त; प्रा. केवट्ट; दे. पृ. 579, मा. हि. को.) नाव खेना; पार उतारना 872

कोंच स. दे. 'कोच' 873

कोंछ स. ना. देश. (काँछ संज्ञा) कोंछ भरकर आँचल के छोरों को कमर में पीछे की ओर खोंस लेना; फुबती चुनना 874

कोंछिया स. दे. 'कोंछ' 875

कोंप अ. ना. भव (कोंपल संज्ञा; सं. कुड्मल; प्रा. कुप्पल; दे. इआलें 3250) पौधों, वृक्षों आदि में नये अंकुर फूटना; कोंपल निकलना. तुल. गुज. कूंपळ, कोंपळ 876

कोक स. ना. वि. (कोक संज्ञा; फा. दे. पृ. 586. मा. हि. को.) कच्ची सिलाई करना, लंगर डालना 877

कोच स. देश. (* कोच्च; दे. इआलें 3489) कोई नुकीली चीज़ चुभौना. गुज. कोच 878

कोड़ स, भव (सं. कुद्; दे. इआलें 3495 तथा 3934) गोड़ना 879

कोप अ. ना. सम (सं. कोप संज्ञा) कोप करना 880

कोर (1) स. दे. 'कोड़'
(2) स. देश. (*कुर; दे. इआलें 3530) खुदाई करना; चित्रादि करना. गुज. कोर 881

कोल स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 108, हि. दे. श.) नुकीली चीज़ से खोदना; अ. विह्वल होना 882

कोलिया अ. ना. देश. (कोलिया संज्ञा) तंग गली से जाना 883

कोस स. भव. (सं. कुश्; दे. इआलें 3612) निंदा करना; गालियों के रूप में शाप देना 884

*कोहा अ. ना. भव (कोह संज्ञा; सं. कुध्; प्रा. कुहण विशे; दे. इआलें 3599) क्रोध करना; नाराज होना 885

कौंध अ. ना. देश. (कौंध संज्ञा; अ. व्यु. दे. पृ. 108, हि. दे. श.) बिजली का चमकना 886

कौआ अ. ना. भव (कौआ संज्ञा; सं. काक संज्ञा; प्रा. काय; दे. इआलें 2993) कौओं की तरह काँव-काँव करना; व्यर्थ शोर या हल्ला करना 887

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कौर स. ना. देश. (कौड़ा संज्ञा) थोड़ा गरम करना या भूनना; सेंकना 888

क्रम अ. ना. सम (क्रम संज्ञा, सं. क्रम्) क्रम लगाना, क्रम से चलना. तुल. गुज. क्रम संज्ञा 889

क्रम्य स. ना. सम. (क्रमण संज्ञा; सं. क्रम्) लाँघना; आक्रमण करना 890

*क्रीड अ. ना. सम (क्रीडा सं. क्रीड्) क्रीडा करना. तुल. गुज. क्रीडा संज्ञा 891

*क्रील अ. अर्धसम (सं. क्रीड्) क्रीडा करना 892

क्षम स. सम. (सं. क्षम्) क्षमा करना 893

खँगार स. दे. 'खँगाल' 894

खँगाल स. भव (खंखाल्; दे. इआलें 3762) मजे-धुले बरतन को पूरी सफाई के लिए फिर से धोना, खाली करना. गुज. खंगाळ, खंखोळ, खंखेर, खंगाळ 895

खंघार स. दे. 'खँगाल' 896

*खँड स. सम (सं. खण्ड्) खंड करना, जोड़ना गुज. खंड 897

*खँडर स. दे. (सं. खण्ड संज्ञा; प्रा. खंड; दे. इआलें 3792; अथवा सं. खण्डघर; प्रा. खंडहर; दे. इआलें 3794) खंड-खंड करना 898

खंद स. देश. खोदना 899

खँदा स. भव (सं. स्कन्द्; दे. इआलें 13626) खदेडना; खुदवाना 900

खाँधिया स. देश. (पदार्थ को) बाहर गिराना या निकालना; खाली करना 901

खँस अ. देश. खिसकना; गिरना 902

खकार अ. अनु. देश. (*खाट्कार; दे. इआलें 3259) गला साफ करना. तुल. गुज. खंखार 903

खखार अ. अनु. खरखराहट के साथ गले में चिपका हुआ कफ निकलना; संकेत के रूप में खाँसना. गुज. खंखार, खोंखार, खूँखार 904

खखेट स. देश. भगाना; घायल करना 905

खखोड स. दे. 'खखोर' 906

खखोर स. देश. (दे. पृ. 5, मा. हि. को. 2) किसी वस्तु को चारों ओर खोजते फिरना. गुज. खंखोळ 907

*खग अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 108, हि. दे. श.) गड़ना, चित्त में बैठना 908

खच अ. सम. (सं. खच्; दे. इआलें 3766) जड़ा जाना; अंकित होना. गुज. खच 909

खचेर स. देश. दबाकर वश में करना 910

खजबजा स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 108, हि. दे. श.) बेचैन करना; अस्तव्यस्त करना 911

खजुला स. दे. 'खुजला' 913

खट (1) स. भव (सं. खट्ट; दे. इआलें 3779)
कठोर श्रम करना, कमाना. गुज. खाट 'पाना, कमाना'
(2) अ. (अ. व्यु. दे. पृ. 108, हि. दे. श; दे. पृ. 32 दे. श. को.) 914

खटक (1) अ. अनु. भव (सं. खट्खट्; प्रा. खटखट्; दे. पृ. 186, हि. दे. श.) 'खटखट' की आवाज होना. गुज. खटक
(2) अ. अनु. देश. (प्रा. खुडुक्कंत; दे. पृ. 186, हि. दे. श.) चुभना; बुरा लगना. गुज. खटक 915

खटखटा स. दे. 'खडखडा' 916

खटा अ. ना. भव (खट्टा विशे. सं. खट्ट, प्रा. खट्ट; दे. इआलें 3777) खट्टा होना; परख में ठीक उतरना; स. किसीको विशेष परिश्रम करने में प्रवृत्त करना 917

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खड़क अ. दे. 'खटक (1)' 918

खड़खड़ा अ. अनु. भव (सं. खटखट्; तुल. प्रा. खडखड़ संज्ञा; दे. इआलें 3771) 'खड़-खड़' की आवाज़ होना; स. खड़खड़ आवाज़ पैदा करना. गुज. खखड 919

खड़बड़ा अ. अनु. (दे. पृ. 8, मा. हि. को.-2) घबराना; अस्तव्यस्त हो जाना; स. क्रम उलट-पुलट देना 920

खतिया स. ना. वि. (खत संज्ञा अर.) खाते में चढ़ाना; विभिन्न मदों को विभिन्न खातों में चढ़ाना. गुज. खतव 821

खदखदा अ. अनु. (*खदखद; दे. इआलें 3803) किसी चीज़ का उबलते समय 'खद-खद' शब्द करना. गुज. खदखद 922

खदबदा अ. दे. 'खदबदा' 923

खदेड स. देश. (*खद्दद; दे. इआलें 3807) भागना; पीछा करते हुए भागना. गुज. खदेड, खदड, खद 924

खदेर स. दे. 'खदेड' 925

खन स. सम (सं. खन्; प्रा. खण्; दे. इआलें 3811) खोदना. गुज. खण 'खरोंचना, खनना' 928

खनक अ. अनु. देश. (दे. पृ. 33, दे. श. को.) 'खनखन' करके बजना, खनखनाना. गुज. खणक 927

खनखना अ. दे. 'खनक' 928

*खनिया स. ना. भव (खान संज्ञा; सं. खानि; प्रा. खाणी; दे. इआलें 3873) खान खोदना; खाली करना. तुल. गुज. खाण संज्ञा 929

खप अ. भव (सं. क्षि; प्रा. खय; दे. इआलें 3666 तथा पृ. 272 प्रा. स. म.) नष्ट होना; बिकना. गुज. खप 930

खभड़ स. अनु. मिलाना; खलबली मचाना. गुज. खळभळ 931

खभर स. दे. 'खभड़' 932

खमक अ. अनु. (दे. पृ. 14, मा. हि. को-२) 'खम खम' शब्द होना. गुज. खमक 933

खमस अ. देश. किसी में मिल जाना; स. मिश्रित करना 934

खमा अ. भव (सं. क्षम्; प्रा. खाम्; दे. इआलें 3673) क्षमा-याचना करना. तुल. गुज. खम 'सहना' 935

खय अ. भव (सं. क्षि; प्रा. खय; दे. पृ. 272, पा. स. म.) क्षीण होना; खिसक कर नीचे आना 936

खर स. भव (सं. क्षल्; प्रा. खल्; दे. इआलें 3664) ऊनको गरम करके धोना; साफ करना 937

खरक अ. देश. (दे. पृ. 34, दे. श. को.) बजना, खड़कना 938

खरखरा अ. अनु. भव (सं. खरट; दे. पृ. 186, हि. दे. श.) 'खर-खर ध्वनि उत्पन्न होना. गुज. खरखर 939

खरच स. ना. वि. (खर्च संज्ञा फा.) खर्च करना; काम में लाना. गुज. खर्च, खरच 940

खरभर अ. अनु. ('खलबल' से; ह. भा.) खल-बलाना; घबराना; स. क्षुब्ध करना. गुज. खळ-भळ 941

खरभरा अ. दे. 'खरभर' 942

खरहर अ. ना. देश. खरहरे से बहारना; स. घोड़े के शरीर पर खरहरा करना 943

खराद स. ना. वि. (खराद संज्ञा, फा. अर. 'खर्रात' से फा. 'खर्राद' दे. पृ. 17, मा. हि. को -२) चरख पर चढ़ाकर लकड़ी या धातु को चिकना, सुडौल करना 944

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खरिया स. ना. देश. (खरिया संज्ञा) झोली में भरना; दे. 'खलिया' 945

खरीद स. ना. वि. (खरीद संज्ञा; फा.) मोल लेना, दाम देकर लेना. गुज. खरीद 846

खरोंच स. दे. 'खुरच' 957

खरोच स. दे. 'खुरच' 948

खरौंट स. देश. खरोंचना 949

खर्च स. दे. 'खरच' 950

खल अ. भव (सं. स्खल्; प्रा. खल्ल; दे. इआलें 13663) बुरा लगना; चुभना. गुज. खळ 'रुकना' 951

खलखला अ. ना. अनु. भव (खलखल संज्ञा, सं. खलखल्ल; प्रा. खलक्खल्ल; दे. इआलें 3836) 'खलखल' ध्वनि होना; उबलना. गुज. खळ-खळ 952

खलबला अ. अनु. भव (सं. खल्; * खलभल, प्रा. खलभलिय विशे; दे. इआलें 3837) खौलना; बेचैन होना; दे. 'खरभर' गुज. खळ-बळ; तुल. गुज. खळभळ संज्ञा 953

खलभला अ. दे. 'खलबला' 954

*खला स. ना. देश. खाली करना; बाहर निकालना 955

खलिया (1) स. दे. 'खला'
(2) स. ना. देश. (खाल संज्ञा; प्रा. दे. इआलें 3848) खाल उतारना 956

खस अ. देश. (प्रा. खस्, खसकस्; दे. इआलें 3856) सरकना, नीचे उतरना. गुज. खस 'दूर हटना' 957

खसक अ. दे. 'खस' 958

खसिया स. ना. वि. (खस्सी संज्ञा; अर.) खसी करना. तुल. गुज. खसी संज्ञा 959

खसोट स. देश. (* खस्स, दे. इआलें 3858) नोचना; छीन लेना 960

खाँग अ. ना. भव (सं. खड्ग; संज्ञा प्रा. खग्ग; दे. पृ. 22, मा. हि. को – 2) पैर में खाँग निकलने के कारण ठीक से चलने में असमर्थ होना 961

खाँच स. देश. अंकित करना; चिह्न बनाना; खींचना. गुज. खच 962

खाँड स. भव (सं. खण्ड्; प्रा. खंड् दे. इआलें 3795) कुचलना; टुकडे टुकडे करना. गुज. खांड 963

खाँद स. देश. दबाना; खोदना 964

*खाँध स. देश. (प्रा. खद्ध, दे. पृ. 271, पा. स. म.) खाना. तुल. गुज. खाधुं 'खाया' 965

खाँप स. देश. खोंसना; जड़ना 966

खाँभ स. ना. भव (सं. स्कम्भ, प्रा. खंभ, दे. पृ. 27, मा. हि. को – 2) लिफाफे में बंद करना; दे. 'खाम' 967

खाँस अ. ना. भव (सं. कास्; प्रा. कास संज्ञा; दे. इआलें 3138) गले से बलगम आदि निकालने या संकेत के लिए फेफडे से झटके और आवाज़ के साथ हवा का बाहर निकलना. गुज. खांस 968

खा स. भव (सं. खाद्; प्रा. खा; दे. इआलें 3856) ठोस आहार को चबाकर निगलना; हड़पना. गुज. खा 969

खाग अ. दे. 'खाँग' 970

खाम स. भव (सं. स्कम्भ्; प्रा. खंभ संज्ञा; दे. इआलें 13639) आटा, गिली मिट्टी आदि से किसी पात्र का मुंह बंद करना. तुल. गुज. खांभ संज्ञा 'स्तंभ' 971

खिंडा स. दे. 'खिण्ड'. दानेदार वस्तु को छितराना या बिखेरना 972

खिजला अ. दे. 'खीजना' 973

खिड़क अ. दे. 'खिसक' 974

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खिण्ड स. देश. (* खिण्ड् ; दे. इआलें 3882) बिखरना 975

खिप अ. भव (सं. क्षिप् ; प्रा. खिप्प् ; दे. इआलें 3687) खपना; तल्लीन होना; खो जाना 976

*खिभिर स. देश. खदेड़ना 977

खिया अ. भव (सं. क्षी; प्रा. खीय् ; दे. इआलें 3695) घिस जाना, क्षीण होना. तुल. गुज. ख वा 978

खिरिद स. देश. सूप में अनाज रखकर उसे इस प्रकार हिलाना कि खराब दाने नीचे गिर जाएँ; खुरचना 979

खिल अ. देश. (* खिल् ; दे. इआलें 3882) कली का विकसित होना; प्रसन्न होना; सुन्दर लगना. गुज. खील 980

खिलखिला अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 109, हि. दे. श.) आवाज के साथ खुलकर हँसना, कहकहा लगाना. तुल. गुज. खिलखिल संज्ञा 981

खिव (1) स. भव (सं. क्षिप् ; प्रा. खिव् ; दे. इआलें 3683) फेंकना, भेजना
(2) अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 109, हि. दे. श.) चमकना 982

खिस अ. दे. ' खस ' 983

खिसक अ. देश. (*खिस; प्रा. खिस् ; दे. इआलें 3888) हटना, सरकना. गुज. खस, खिस 984

खिसल अ. देश. फिसलना 985

*खिसा अ. दे. ' खिसिया ' 986

खिसिआ अ. दे. 'खिसिया' 987

खिसिया अ. ना. भव (खीस संज्ञा; * खिस्स; प्रा. खिस् ; दे. इआलें 3889) लज्जित होकर दाँत निकाल देना या सिर झुका लेना; किसी पर बिगड़ना 988

खिसिल अ. दे. 'खिसल' 990

खींच स. देश. (* खींच् ; दे, इआलें 3881) अपनी ओर आकृष्ट करना; चित्रित करना गुज. खिंच, खेंच 991

खींड स. दे. 'खिण्ड' 992

खीज अ. भव. (सं. क्षि; खीच् ; खिज्ज् ; दे. इआलें 3695 तथा 3884) झुंझलाना, क्रुद्ध होना. गुज. खीज 993

खीझ अ. दे. 'खीज' 994

खील स. ना. भव (खील संज्ञा; सं. खील; प्रा. खील; दे. पृ. 33, मा. हि. को. – 2) पत्रों में खील लगाकर दोना, पत्तल आदि बनाना 995

*खीस अ. देश. नष्ट होना; नष्ट करना 996

खुजला अ. ना. भव (खुजली संज्ञा; सं. खर्जु, खर्जू; प्रा. खज्ज् ; दे. इआलें 3827) खुजली मालूम होना; किसी काम के लिए बेचैन होना. गुज. खजवाळ; तुल. खुजली संज्ञा 997

खुजा अ. दे. 'खुजला' 998

खुट अ. देश. समाप्त होना; कम पड़ना. गुज. खूट 999

खुटक स. देश. किसी वस्तु का ऊपरी अंश दांत या नाखूनों से नोचना या तोड़ना 1000

खुदबुदा स. देश (दे. पृ. 37, दे. श. को.) गर्म पानी में उबलने की क्रिया होना 1001

खुनसा अ. ना. वि. (खुनस संज्ञा; फा.) नाराज होकर कुछ कहना, बिगड़ना. तुल. गुज. खुन्नस संज्ञा 1002

खुपखुपा स. देश. (* खुप्प् ; दे. इआलें 13656) बेधना, कुपित हो जाना 1003

खुब अ. दे 'खुभ' 1004

खुभ (1) अ. भव (सं. क्षुभ् ; प्रा. खुब्भ् ; दे. इआलें 3723)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) स. भव (सं. कष्; प्रा. कस्; दे. इआलें 2972) परीक्षा करना. गुज. कस 772

कसक अ. भव. (सं. कष्; प्रा. कस्; दे. इआलें 2972) पीडा होना; सालना. गुज. कसक 773

कसमसा अ. ना. अनु. (कसमस संज्ञा; अ. व्यु. दे. पृ. 106; हि. दे. श.) भीड के कारण आपस में रगड खाते हुए हिलना, बेचैन होना. तुल. गुज. कसमस संज्ञा 774

कसरिया अ. ना. वि. (कसर संज्ञा; अर.) घाटा सहना. तुल. गुज. कसर संज्ञा 775

कसा अ. ना. भव (कषाय विशे; सं. कषाय; प्रा. कसाय; दे. इआलें 2974) कसैले स्वाद से युक्त होना. तुल. गुज. कषाय विशे. 776

कसिया अ. दे. 'कसा' 777

*कसीट स. देश. कसना 778

कसीस स. ना. वि. भव (कसीस संज्ञा; फा. कशिश; दे. पृ. 492, मा. हि. को.) खींचना; चढ़ना 779

कहँर अ. दे. 'कराह' (वर्ण-विपर्यय) 780

कह स. भव (सं. कथ्; प्रा. कह्; दे. इआलें 2703) शब्द द्वारा भावप्रकाश करना; बताना गुज. कहे 781

कहर अ. दे. 'कराह' 782

कहल अ. देश. (दे. पृ. 493, मा. हि. को.) उमस के कारण बेचैन होना, अकुलाना 783

काँख अ. भव (सं. कांक्ष्; प्रा. काँख्; दे. इआलें 3002) मलत्याग में जोर लगाने या भारी बोझ उठाने आदि से गले से खाँसने की-सी आवाज़ निकलना; पीडित होना. तुल. गुज. कराँख 784

काँछ स. दे. 'काछ' 785

काँड़ स. भव (सं. काण्ड्; प्रा. कंड्; दे. इआलें 2686) कुचलना 786

काँद अ. भव (सं. क्रन्द्; प्रा. कंद्; इआलें 3574) रोना-चिल्लाना 787

काँध (1) स. ना. भव (काँध संज्ञा; सं. स्कन्ध्; प्रा. खंधा, कंधा; दे. इआलें 13627) उठाना, भार सहना. तुल. गुज. कांध संज्ञा (2)स. ना. भव (सं. स्कन्ध संज्ञा; दे. इआलें 13632) एकत्रित करना 788

काँप अ. भव (सं. कम्प्; प्रा. कंप्; दे. इआलें 2767) हिलाना; लरजना. गुज. कांप 789

काछ स. भव (काछ संज्ञा; सं. कक्ष्य; प्रा. कक्खा, कच्छा; दे. इआलें 2592) लाँग को पीछे ले जाकर खोंसना; सवारना. गुज. काछ, काछडो संज्ञा 790

काट स. भव (सं. कृत्; प्रा. कत्, कट्ट; दे. इआलें 2854) टुकड़े करना; दाँत धँसाना. गुज. काट; तुल. गुज. काप 791

काढ़ स. भव (सं. * कड्ढ्; प्रा. कड्ढ्; दे. इआलें 2660) निकालना; बेल-बूटे बनाना. गुज. काढ, काड 792

कात स. भव (सं. कृत्; प्रा. कत्; दे. इआलें 2855) चरखे या तकली पर रुई या ऊनसे धागा निकालना. गुज. कांत 793

किकिया अ. अनु. (दे. पृ. 528, मा. हि. को.) रोना, चिल्लाना; कीं कीं शब्द करना. तुल. गुज. किकियारी संज्ञा 794

किचकिचा अ. अनु. (दे. पृ. 528, मा. हि. को.) खिजलाकर दाँत पीसना, कोई काम करने के समय सारी शक्ति लगाने के लिए दाँत पर दाँत रखना. गुज. कचकचाव 795

किचड़ा अ. ना. देश. (कीचड़ संज्ञा) कीचड़ से युक्त होना; स. कीचड़ से युक्त करना 796

किटकिटा अ. अनु. भव (सं. किटकिट संज्ञा; प्रा. किडकिडिया; दे. पृ. 184, हि. दे. श.) दाँत का बजना; स. क्रोध से दाँत पीसना,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यर्थ की कहासुनी करना 797

किड़क अ. अनु. (दे. पृ. 528, मा. हि. को.) खिसक या हट जाना 798

किड़किड़ा अ. दे. 'किटकिटा' 799

किर अ. देश. किसी चीज़ में से उसके छोटे छोटे कण धीरे धीरे गिरना 800

किरकिरा अ. ना. अनु. (किरकिरा विशे.) किरकिरे खाद्य पदार्थ का मुँह में किरकिर शब्द करना; किरकिरी पड़ने की-सी पीड़ा करना. तुल. गुज. करकरुं विशे. 801

किररा अ. अनु. (दे. पृ. 531, मा. हि. को.) क्रोध आदि से दाँत पीसना; 'किर्रकिर्र' शब्द करना. तुल. गुज. करड 'काटना' 802

किरिर अ. देश. किचकिचाना 803

किरोल स. देश. कुरेदना; खुरचना 804

किलक अ. देश. 'किलकिला' 805

किलकिला अ. ना. भव (किलकिल संज्ञा; सं. किलकिल; प्रा. किलकल्; दे. इआलें 3160) किलकिल ध्वनि करना 806

किलबिला अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 107; हि. दे. श.) चंचल होना; बहुत से कीड़ों आदि का छोटी-सी जगह में एक साथ हिलना-डोलना 807

किलस अ. भव (सं. क्लिश्; प्रा. किस्स्; दे. इआलें 3623) दर्द होना; बिलख-बिलख कर रोना गुज. कणस 808

कीक अ. अनु. 'की-की' आवाज़ के साथ चीखना 809

कीड अ. ना. अर्धसम (सं. क्रीड्) क्रीड़ा करना. तुल. गुज. क्रीडा 810

कीन स. भव (सं. क्री; प्रा. कीण्, दे. इआलें 3594) खरीदना 811

कील स. ना. भव (कील संज्ञा; सं. किल; प्रा. कीलिअ; दे. इआलें 3204) कील ठोंकना; वश में करना. गुज.खील 'सीना' 812

कुंचल स. दे. 'कुचल' 813

कुंदेर स. ना. भव (कुंदेरा संज्ञा; सं. कुन्दकार; दे. इआलें 3297) खरादना, छीलना 814

*कुंभिला अ. देश. कुम्हलाना 815

कुकड़ अ. ना. भव (कुकड़ संज्ञा; कुक्कुट; प्रा. कुक्कुड; दे. इआलें 3209) मुरगे की तरह दब या सिकुड़ जाना 816

*कुच अ. सम. (सं. कुच्; दे. इआलें 3221) सिकुड़ना; किसी वस्तु का कोचा जाना 817

कुचकुचा स. अनु. बारबार हलके हाथों कोंचना 818

कुचल स. दे. 'कुच' किसी भारी चीज़ से दबाना; रौंदना. तुल. गुज. कचर 819

कुटना स. ना. भव (कुटनी, कुटना संज्ञा; सं कुट्टणी; प्रा. कुट्टणी; दे. इआलें 3240) कुटने या कुटनी का स्त्रियों को भुलावा देकर कुमार्ग पर ले जाना. तुल. गुज. कुटणी संज्ञा 820

कुड़क अ. देश. मुरगी का अंडे देना बंद करना; कुड़बुड़ाना. गुज. कूड 'कुढ़ना' 821

कुड़कुड़ा अ. अनु. देश. (प्रा. कुरुकुरु; दे. पृ. 254, पा. स. म.) मन ही मन खीझकर अस्पष्ट रूप से बड़बड़ाना; कुड़-कुड़ शब्द करके पक्षियों आदि को खेतों से भगाना 822

कुड़प स. देश. कँगनी के खेत को उस समय जोतना जब फसल थोड़ी उग आये 823

कुड़बुड़ा अ. दे. 'कुड़कुड़ा' 824

कुड़मुड़ा अ. दे. 'कुड़कुड़ा' 825

कुड़ेर स. देश. (दे. पृ. 26, दे. श. को.) राब के बोरों को एकदूसरे पर इस प्रकार रखना कि उनकी जूसी बहकर निकल जाय 826

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुढ़ अ. भव (सं. क्रुध् * क्रूध् ; दे. इआलें 3598) भीतर ही भीतर जलना 827

कुतकुता अ. देश (अ. व्यु. दे. पृ. 107, हि. दे. श.) सर्दी से सिहरना 828

कुतर स. देश. (* कोत्र; दे. इआलें 3512) दाँतों से किसी चीज़ का कुछ अंश काट लेना; किसी को मिलनेवाली रकम में से कुछ काट लेना. गुज. कोतर; तुल. खोतर 829

कुदक अ. दे. 'कूद' 830

कुन अ. देश. (कुन्द संज्ञा; दे. इआलें 3295) खरादना 831

कुनकुना अ. ना. देश. (कुनकुना विशे. अ. व्यु. दे. पृ. 107 हि. दे. श.) कनमनाना 832

*कुन्न अ. वि. (कीनः फा. दे. पृ. 552, मा. को.) क्रोध या रोष करना 833

कुप अ. दे. 'कोप' 834

कुप्प अ. दे. 'कोप' ;835

कुम्हला अ. देश. (* कोम्हू ; प्रा. कुम्मण विशे.; दे. इआलें 3524) मुरझाना; सूखने लगना. गुज. करमा 836

*कुर अ. ना. (कूरा संज्ञा) वस्तुओं को एक जगह एकत्र करना 837

कुरकुरा अ. दे. 'कुड़कुड़ा' 838

कुरकुरा अ. अनु. कुरकुर करना; गतिशील होना 839

*कुरल अ. अनु. पक्षियों का मधुर स्वर में बोलना 840

कुरला अ. देश. करुण स्वर में बोलना, आर्तनाद करना 841

कुरिआर स. देश. कोई चीज निकालने के लिए कुछ काटना या खोदना 842

कुरिया स. देश. कुरेदना, कुरैना 843

कुरेद स. देश. (*कुर् ; दे. इआलें 3319) खुरचना, करोटना 844

कुरै स. ना. भव (कूरा संज्ञा; सं. कूट; प्रा. कूड; ह. भा.) ढेर लगाना; अ. ऊपर से ढेर के रूप में किसी चीज़ का नीचे आकर ढेर के रूप में गिरना 845

कुरोद स. दे. 'कुरेद' 846

कुर्र अ. दे. 'कुरल' 847

कुल अ. देश. (*कुल्ल; दे. इआलें 3334) दर्द करना, टीसना; स. चोट पहुँचाना 848

कुलक अ. अनु. किलकना 849

कुलकुला अ. ना. अनु. देश. (कुलकुल संज्ञा; प्रा. कुलकुल; दे. पृ. 255, पा. स. म.) कुल-कुल शब्द होना; विकल होना; स. कुल-कुल शब्द उत्पन्न करना. गुज. कळकळ 850

कुलबुला अ. ना. अनु. देश. (कलबुल संज्ञा; प्रा. कुरुकुरु; दे. पृ. 185, हि. दे. श.) कीड़ें, मछलियों आदि का एक साथ हिलना-डोलना; बेचैनी प्रकट करना 851

कुलाँच अ. ना. वि. (कुलाच संज्ञा तु. दे. पृ. 561, मा. हि. को.) चौकड़ी भरना; उछलना-कूदना 852

कुलेल अ. दे. 'कलोल' 853

कुसमिसा अ. दे. 'कसमसा' 854

कुहक अ. अनु. कोयल का कुहू-कुहू शब्द करना; पिहकना. तुल. गुज. कुहूकार 855

कुहा अ. ना. भव (सं. क्रोध संज्ञा, प्रा. कोह) क्रुद्ध होना; स. किसीको अप्रसन्न करना 856

कुहुक अ. दे. 'कुहक' 857

कूँच स. ना. देश. (कूँचा संज्ञा) कुचलना 858

कूँज अ. दे. 'कूज' 859

कूँथ स. अर्धसम (सं. कुन्थ् ; दे. इआलें 3294)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पीडा से 'उँह' आवाज़ निकालना; कबूतरों का 'गुटुर गूँ' करना 860

कूँद अ. दे. 'कुन' 861

कूक अ. अनु. (कुक्क्; प्रा. कुक्क्; दे. इआलें 3390) कोयल, मोर आदि का कू-कू शब्द करना; सुरीली ध्वनि निकालना; स. चाबी देना 862

कूज अ. सम. (सं. कूज्) मधुर ध्वनि करना. गुज. कूज 863

कूट स. भव (सं. कुट्ट; प्रा. कुट्ट; दे. इआलें 3241) मूसल-मुँगरी से किसी चीज़ को लगातार पीटना; मारना-पीटना. गुज. कूट 864

कूत स. ना. देश (कूत संज्ञा) किसी वस्तु का मान, मूल्य या महत्त्व अटकल से आँकना 865

कूथ अ. दे. 'कूँथ' 866

कूद अ. अर्धसम (सं. कूर्द; दे. इआलें 3412) किसी ऊँचे स्थान से नीचे स्थान की ओर एक बारगी तथा बिना किसी सहारे के उतरना; स. फाँदना. गुज. कूद 867

कूह स. देश. मारना-पीटना; बुरी तरह से हत्या करना 868

केंकिया अ. दे. 'किकिया' 869

केन स. दे. 'कीन' 870

केरा स. भव (सं. कृ; दे. इआलें 3467) सूप में अन्न रखकर उसे हिलाकर बड़े और छोटे दाने अलग करना 871

केवट स. ना. भव (केवट संज्ञा; सं. केवर्त; प्रा. केवट्ट; दे. पृ. 579, मा. हि. को.) नाव खेना; पार उतारना 872

कोंच स. दे. 'कोच' 873

कोंछ स. ना. देश. (काँछ संज्ञा) कोंछ भरकर आँचल के छोरों को कमर में पीछे की ओर खोंस लेना; फुबती चुनना 874

कोंछिया स. दे. 'कोंछ' 875

कोंप अ. ना. भव (कोंपल संज्ञा; सं. कुड्मल; प्रा. कुप्पल; दे. इआलें 3250) पौधों, वृक्षों आदि में नये अंकुर फूटना; कोंपल निकलना. तुल. गुज. कूंपळ, कोंपळ 876

कोक स. ना. वि. (कोक संज्ञा; फा. दे. पृ. 586. मा. हि. को.) कच्ची सिलाई करना, लंगर डालना 877

कोच स. देश. (* कोच्च; दे. इआलें 3489) कोई नुकीली चीज़ चुभौना. गुज. कोच 878

कोड़ स, भव (सं. कुद्; दे. इआलें 3495 तथा 3934) गोड़ना 879

कोप अ. ना. सम (सं. कोप संज्ञा) कोप करना 880

कोर (1) स. दे. 'कोड़'
(2) स. देश. (*कुर; दे. इआलें 3530) खुदाई करना; चित्रादि करना. गुज. कोर 881

कोल स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 108, हि. दे. श.) नुकीली चीज़ से खोदना; अ. विह्वल होना 882

कोलिया अ. ना. देश. (कोलिया संज्ञा) तंग गली से जाना 883

कोस स. भव. (सं. कुश्; दे. इआलें 3612) निंदा करना; गालियों के रूप में शाप देना 884

*कोहा अ. ना. भव (कोह संज्ञा; सं. कुधू; प्रा. कुहण विशे; दे. इआलें 3599) क्रोध करना; नाराज होना 885

कौंध अ. ना. देश. (कौंध संज्ञा; अ. व्यु. दे. पृ. 108, हि. दे. श.) बिजली का चमकना 886

कौआ अ. ना. भव (कौआ संज्ञा; सं. काक संज्ञा; प्रा. काय; दे. इआलें 2993) कौओं की तरह काँव-काँव करना; व्यर्थ शोर या हल्ला करना 887

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कौर स. ना. देश. (कौड़ा संज्ञा) थोड़ा गरम करना या भूनना; सेंकना 888

क्रम अ. ना. सम (क्रम संज्ञा, सं. क्रम्) क्रम लगाना, क्रम से चलना. तुल. गुज. क्रम संज्ञा 889

क्रम्य स. ना. सम. (क्रमण संज्ञा; सं. क्रम्) लाँघना; आक्रमण करना 890

*क्रीड अ. ना. सम (क्रीडा सं. क्रीड्) क्रीडा करना. तुल. गुज. क्रीडा संज्ञा 891

*क्रील अ. अर्धसम (सं. क्रीड्) क्रीडा करना 892

क्षम स. सम. (सं. क्षम्) क्षमा करना 893

खँगार स. दे. 'खँगाल' 894

खँगाल स. भव (खंखाळ्; दे. इआलें 3762) मजे-धुले बरतन को पूरी सफाई के लिए फिर से धोना, खाली करना. गुज. खंगाळ, खंखोळ, खंखेर, खंगाळ 895

खंघार स. दे. 'खँगाल' 896

*खँड स. सम (सं. खण्ड्) खंड करना, जोड़ना गुज. खंड 897

*खँडर स. दे. (सं. खण्ड संज्ञा; प्रा. खंड; दे. इआलें 3792; अथवा सं. खण्डघर; प्रा. खंडहर; दे. इआलें 3794) खंड-खंड करना 898

खंद स. देश. खोदना 899

खँदा स. भव (सं. स्कन्द्; दे. इआलें 13626) खदेडना; खुदवाना 900

खाँधिया स. देश. (पदार्थ को) बाहर गिराना या निकालना; खाली करना 901

खँस अ. देश. खिसकना; गिरना 902

खकार अ. अनु. देश. (*खाट्कार; दे. इआलें 3259) गला साफ करना. तुल. गुज. खंखार 903

खखार अ. अनु. खरखराहट के साथ गले में चिपका हुआ कफ निकलना; संकेत के रूप में खाँसना. गुज. खंखार, खोंखार, खूँखार 904

खखेट स. देश. भगाना; घायल करना 905

खखोड स. दे. 'खखोर' 906

खखोर स. देश. (दे. पृ. 5, मा. हि. को. 2) किसी वस्तु को चारों ओर खोजते फिरना. गुज. खंखोळ 907

*खग अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 108, हि. दे. श.) गड़ना, चित्त में बैठना 908

खच अ. सम. (सं. खच्; दे. इआलें 3766) जड़ा जाना; अंकित होना. गुज. खच 909

खचेर स. देश. दबाकर वश में करना 910

खजबजा स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 108, हि. दे. श.) बेचैन करना; अस्तव्यस्त करना 911

खजुला स. दे. 'खुजला' 913

खट (1) स. भव (सं. खट्ट; दे. इआलें 3779)
कठोर श्रम करना, कमाना. गुज. खाट 'पीना, कमाना'
(2) अ. (अ. व्यु. दे. पृ. 108, हि. दे. श; दे. पृ. 32 दे. श. को.) 914

खटक (1) अ. अनु. भव (सं. खट्खट्; प्रा. खटखट्; दे. पृ. 186, हि. दे. श.) 'खटखट' की आवाज़ होना. गुज. खटक (2) अ. अनु. देश. (प्रा. खुडुक्कंत; दे. पृ. 186, हि. दे. श.) चुभना; बुरा लगना. गुज. खटक 915

खटखटा स. दे. 'खडखडा' 916

खटा अ. ना. भव (खट्टा विशे. सं. खट्ट, प्रा. खट्ट; दे. इआलें 3777) खट्टा होना; परख में ठीक उतरना; स. किसीको विशेष परिश्रम करने में प्रवृत्त करना 917

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खड़क अ. दे. 'खटक (1)' 918

खड़खड़ा अ. अनु. भव (सं. खटखट्; तुल. प्रा. खडखड़ संज्ञा; दे. इआलें 3771) 'खड़-खड़' की आवाज़ होना; स. खड़खड़ आवाज़ पैदा करना. गुज. खखड 919

खड़बड़ा अ. अनु. (दे. पृ. 8, मा. हि. को.-2) घबराना; अस्तव्यस्त हो जाना; स. क्रम उलट-पुलट देना 920

खतिया स. ना. वि. (खत संज्ञा अर.) खाते में चढ़ाना; विभिन्न मदों को विभिन्न खातों में चढ़ाना. गुज. खतव 821

खदखदा अ. अनु. (*खदखद; दे. इआलें 3803) किसी चीज़ का उबलते समय 'खद-खद' शब्द करना. गुज. खदखद 922

खदबदा अ. दे. 'खदबदा' 923

खदेड स. देश. (*खद्द; दे. इआलें 3807) भागना; पीछा करते हुए भागना. गुज. खदेड, खदड, खद 924

खदेर स. दे. 'खदेड' 925

खन स. सम (सं. खन्; प्रा. खण्; दे. इआलें 3811) खोदना. गुज. खण 'खरोंचना, खनना' 928

खनक अ. अनु. देश. (दे. पृ. 33, दे. श. को.) 'खनखन' करके बजना, खनखनाना. गुज. खणक 927

खनखना अ. दे. 'खनक' 928

*खनिया स. ना. भव (खान संज्ञा; सं. खानि; प्रा. खाणी; दे. इआलें 3873) खान खोदना; खाली करना. तुल. गुज. खाण संज्ञा 929

खप अ. भव (सं. क्षि; प्रा. खय; दे. इआलें 3666 तथा पृ. 272 प्रा. स. म.) नष्ट होना; बिकना. गुज. खप 930

खभड़ स. अनु. मिलाना; खलबली मचाना. गुज. खळभळ 931

खभर स. दे. 'खभड़' 932

खमक अ. अनु. (दे. पृ. 14, मा. हि. को-२) 'खम खम' शब्द होना. गुज. खमक 933

खमस अ. देश. किसी में मिल जाना; स. मिश्रित करना 934

खमा अ. भव (सं. क्षमू; प्रा. खामू; दे. इआलें 3673) क्षमा-याचना करना. तुल. गुज. खम 'सहना' 935

खय अ. भव (सं. क्षि; प्रा. खय; दे. पृ. 272, पा. स. म.) क्षीण होना; खिसक कर नीचे आना 936

खर स. भव (सं. क्षल्; प्रा. खल्; दे. इआलें 3664) ऊनको गरम करके धोना; साफ करना 937

खरक अ. देश. (दे. पृ. 34, दे. श. को.) बजना, खड़कना 938

खरखरा अ. अनु. भव (सं. खरट; दे. पृ. 186, हि. दे. श.) 'खर-खर ध्वनि उत्पन्न होना. गुज. खरखर 939

खरच स. ना. वि. (खर्च संज्ञा फा.) खर्च करना; काम में लाना. गुज. खर्च, खरच 940

खरभर अ. अनु. ('खलबल' से; ह. भा.) खल-बलाना; घबराना; स. क्षुब्ध करना. गुज. खळ-भळ 941

खरभरा अ. दे. 'खरभर' 942

खरहर अ. ना. देश. खरहरे से बहारना; स. घोड़े के शरीर पर खरहरा करना 943

खराद स. ना. वि. (खराद संज्ञा, फा. अर. 'खर्रात' से फा. 'खर्राद' दे. पृ. 17, मा. हि. को -२) चरख पर चढ़ाकर लकड़ी या धातु को चिकना, सुडौल करना 944

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खरिया स. ना. देश. (खरिया संज्ञा) झोली में भरना; दे. 'खलिया' 945

खरीद स. ना. वि. (खरीद संज्ञा; फा.) मोल लेना, दाम देकर लेना. गुज. खरीद 846

खरोंच स. दे. 'खुरच' 957

खरोच स. दे. 'खुरच' 948

खरौंट स. देश. खरोंचना 949

खर्च स. दे. 'खरच' 950

खल अ. भव (सं. स्खल्; प्रा. खल; दे. इआलें 13663) बुरा लगना; चुभना. गुज. खळ 'रुकना' 951

खलखला अ. ना. अनु. भव (खलखल संज्ञा, सं. खलखल्; प्रा. खलक्खल; दे. इआलें 3836) 'खलखल' ध्वनि होना; उबलना. गुज. खळखळ 952

खलबला अ. अनु. भव (सं. खल्; * खलभल, प्रा. खलभलिय विशे; दे. इआलें 3837) खौलना; बेचैन होना; दे. 'खरभर' गुज. खळबळ; तुल. गुज. खळभळ संज्ञा 953

खलभला अ. दे. 'खलबला' 954

*खला स. ना. देश. खाली करना; बाहर निकालना 955

खलिया (1) स. दे. 'खला'
(2) स. ना. देश. (खाल संज्ञा; प्रा. दे. इआलें 3848) खाल उतारना 956

खस अ. देश. (प्रा. खस्, खसकस्; दे. इआलें 3856) सरकना, नीचे उतरना. गुज. खस 'दूर हटना' 957

खसक अ. दे. 'खस' 958

खसिया स. ना. वि. (खस्सी संज्ञा; अर.) खसी करना. तुल. गुज. खसी संज्ञा 959

खसोट स. देश. (* खस्स, दे. इआलें 3858) नोचना; छीन लेना 960

खाँग अ. ना. भव (सं. खड्ग; संज्ञा प्रा. खग्ग; दे. पृ. 22, मा. हि. को – 2) पैर में खाँग निकलने के कारण ठीक से चलने में असमर्थ होना 961

खाँच स. देश. अंकित करना; चिह्न बनाना; खींचना. गुज. खच 962

खाँड स. भव (सं. खण्ड्; प्रा. खंड् दे. इआलें 3795) कुचलना; टुकडे टुकडे करना. गुज. खांड 963

खाँद स. देश. दबाना; खोदना 964

*खाँध स. देश. (प्रा. खद्ध, दे. पृ. 271, पा. स. म.) खाना. तुल. गुज. खाधुं 'खाया' 965

खाँप स. देश. खोंसना; जड़ना 966

खाँभ स. ना. भव (सं. स्कम्भ, प्रा. खंभ, दे. पृ. 27, मा. हि. को – 2) लिफाफे में बंद करना; दे. 'खाम' 967

खाँस अ. ना. भव (सं. कास्; प्रा. कास संज्ञा; दे. इआलें 3138) गले से बलगम आदि निकालने या संकेत के लिए फेफडे से झटके और आवाज़ के साथ हवा का बाहर निकलना. गुज. खांस 968

खा स. भव (सं. खाद्; प्रा. खा; दे. इआलें 3856) ठोस आहार को चबाकर निगलना; हड़पना. गुज. खा 969

खाग अ. दे. 'खाँग' 970

खाम स. भव (सं. स्कम्भ्; प्रा. खंभ संज्ञा; दे. इआलें 13639) आटा, गिली मिट्टी आदि से किसी पात्र का मुंह बंद करना. तुल. गुज. खांभ संज्ञा 'स्तंभ' 971

खिंडा स. दे. 'खिण्ड'. दानेदार वस्तु को छितराना या बिखेरना 972

खिजला अ. दे. 'खीजना' 973

खिड़क अ. दे. 'खिसक' 974

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खिण्ड स. देश. (* खिण्ड् ; दे. इआलें 3882) बिखरना 975

खिप अ. भव (सं. क्षिप् ; प्रा. खिप्प् ; दे. इआलें 3687) खपना; तल्लीन होना; खो जाना 976

*खिभिर स. देश. खदेड़ना 977

खिया अ. भव (सं. क्षी; प्रा. खीय् ; दे. इआलें 3695) घिस जाना, क्षीण होना. तुल. गुज. ख वा 978

खिरिद स. देश. सूप में अनाज रखकर उसे इस प्रकार हिलाना कि खराब दाने नीचे गिर जाएँ; सुरचना 979

खिल अ. देश. (* खिल् ; दे. इआलें 3882) कली का विकसित होना; प्रसन्न होना; सुन्दर लगना. गुज. खील 980

खिलखिल्ला अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 109, हि. दे. श.) आवाज के साथ खुलकर हँसना, कहकहा लगाना. तुल. गुज. खिलखिल संज्ञा 981

खिव (1) स. भव (सं. क्षिप् ; प्रा. खिव् ; दे. इआलें 3683) फेंकना, भेजना (2) अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 109, हि. दे. श.) चमकना 982

खिस अ. दे. ' खस ' 983

खिसक अ. देश. (*खिस; प्रा. खिस् ; दे. इआलें 3888) हटना, सरकना. गुज. खस, खिस 984

खिसल अ. देश. फिसलना 985

*खिसा अ. दे. ' खिसिया ' 986

खिसिआ अ. दे. 'खिसिया' 987

खिसिया अ. ना. भव (खीस संज्ञा; * खिस्स; प्रा. खिस् ; दे. इआलें 3889) लज्जित होकर दाँत निकाल देना या सिर झुका लेना; किसी पर बिगड़ना 988

खिसिल अ. दे. 'खिसल' 990

खींच स. देश. (* खींच् ; दे, इआलें 3881) अपनी ओर आकृष्ट करना; चित्रित करना गुज. खिंच, खेंच 991

खींड स. दे. 'खिण्ड' 992

खीज अ. भव. (सं. क्षि; खीच् ; खिज्ज् ; दे. इआलें 3695 तथा 3884) झुंझलाना, क्रुद्ध होना. गुज. खीज 993

खीझ अ. दे. 'खीज' 994

खील स. ना. भव (खील संज्ञा; सं. खील; प्रा. खील; दे. पृ. 33, मा. हि. को. – 2) पत्रों में खील लगाकर दोना, पत्तल आदि बनाना 995

*खीस अ. देश. नष्ट होना; नष्ट करना 996

खुजला अ. ना. भव (खुजली संज्ञा; सं. खर्जु, खर्जू ; प्रा. खज्ज ; दे. इआलें 3827) खुजली मालूम होना; किसी काम के लिए बेचैन होना. गुज. खजवाळ; तुल. खुजली संज्ञा 997

खुजा अ. दे. 'खुजला' 998

खुट अ. देश. समाप्त होना; कम पड़ना. गुज. खूट 999

खुटक स. देश. किसी वस्तु का ऊपरी अंश दांत या नाखूनों से नोचना या तोड़ना 1000

खुदबुदा स. देश (दे. पृ. 37, दे. श. को.) गर्म पानी में उबलने की क्रिया होना 1001

खुनसा अ. ना. वि. (खुनस संज्ञा; फा.) नाराज होकर कुछ कहना, बिगड़ना. तुल. गुज. खुन्नस संज्ञा 1002

खुपखुपा स. देश. (* खुप्प् ; दे. इआलें 13656) बेधना, कुपित हो जाना 1003

खुब अ. दे 'खुभ' 1004

खुभ (1) अ. भव (सं. क्षुभ् ; प्रा. खुब्भ् ; दे. इआलें 3723)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घुड़क स. अनु. भव (सं. घुर्; दे. इआलें 1487 तथा प्रा. घुडुक्क; दे. पृ. 304, पा. स. म.) धमकी के स्वर में डाँटना; डपटकर बोलना. गुज. घूरक, घरक 1243

घुडुक स. दे. 'घुड़क' 1244

घुन अ. ना. भव (* घुन संज्ञा; सं घुण; प्रा. घुण; दे. इआलें 4482) घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना; चिन्ता आदि के कारण मनुष्य का शरीर क्षीण होना. तुल. गुज. घुण, घण 1245

घुमँड़ अ. दे. 'घुमड़' 1246

घुमड़ अ. देश (अ. व्यु. दे. पृ. 113, हि. दे. श.) बादलों का इधर–उधर से आकर जमा होना, जाना. गुज. घूमड 'झुलाना; घुमाना' 1247

घुमर अ. दे. 'घूम' 1248

घुर अ. भव (सं. घुर्; तुल. प्रा. घोर्; दे. इआलें 4487) आवाज़ होना, घुर–घुर शब्द होना; स. घुर–घुर शब्द करना. गुज. घोर 1249

घुरक अ. दे. 'धोर' तथा 'इआलें 4496' 1250

घुरघुरा अ. अनु. (* गुरगुर; प्रा. घुरघुर्; दे. इआलें 4486) गले से 'घुर–घुर' आवाज़ निकालना 1251

*घुरम अ. दे. 'घूम' 1252

घुरा (1) अ. दे. 'घूर'
चारों ओर से आकर छा छाना, भर जाना; स. बजाना
(2) स. दे. 'घुला' 1253

घुर्रा अ. दे. 'गुर्रा' 1254

घुस अ. देश. (* घुस्स; दे. इआलें 4492) भीतर जाना; बलपूर्वक प्रवेश करना. गुज. घूस 1255

घूँट स. दे. 'घोट' घोटना. गुज. घूंट 1256

घूँब अ. दे. 'घूम' 1257

घूम अ. देश. (* घूर; प्रा. घुम्म्; दे. इआलें 4485) फिरना; लौटना. गुज. घूम 'चक्कर खाना, फिरना' 1258

घूर अ. देश. (* घूर, प्रा. घुल्ल; दे. इआलें 4488) आँखें गडाकर देखना; काम या क्रोध-भरी दृष्टि से देखना; लपेटना. गुज. घूर 1259

घूस अ. दे. 'घुस' 1260

घेप स. देश. (सं. * ग्रह्; प्रा. घट्ट; दे. इआलें 4509) उँगलियों से लेना, स्त्री के साथ सह-वास करना 1261

घेर स. देश. (* घेर; दे. इआलें 4474) आवेष्टित करना; रूँधना. गुज. घेर 1262

घोंट स. देश. (* घोट्ट; दे. इआलें 4417) घूँटना; गले को इस तरह दबाना कि सांस रुक जाए. गुज. घूंट 1263

घोंप स. अनु. (दे. पृ. 177, मा. हि. को – 2) भोंकना, चलती सिलाई करना. तुल. गुज. घोंच 'भोंकना' 1264

घोख स. अर्धसम (सं. घुष्) याद रखने के लिए बार–बार रटना. गुज. गोख 1266

घोट स. देश. (* घोट्ट; दे. इआलें 4417) रगड़कर बारीक करना; हल धरना 1266

*घोर अ. ना. सम (सं. घोर विशे.) जोर का शब्द करना; गरजना; स. घोलना. गुज. घोर अ. 1267

घोल स. देश. (प्रा. घोल्; दे. इआलें 4526) किसी चीज़ को पानी आदि में इस तरह मिलाना कि वह उसमें घुल जाय. गुज. घोळ 1268

*घोस स. ना. अर्धसम (सं. घोष संज्ञा) घोषणा करना 1260

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ध्यूँट स. दे. 'घूँट 1270

चंग स. ना. वि. (चंग संज्ञा; फा.) कसना, खींचना; परेशान करना 1271

चंचना अ. देश. चुनचुनाना 1272

चँचोर स. देश. दाँतों से दबाकर चुसना, चिचोड़ना 1273

चँदरा अ. देश. (दे. पृ. 54, दे. श. को.) जान-बूझकर अनजान की तरह पूछना; पागल होना 1274

चक अ. देश. (* चक्; दे. इआलें 4537) चकित होना; भयभीत होना 1275

चकचका अ. देश. (दे. पृ. 188; मा. हि. को – 2) रसना; गीला होना; अ. चकित होना 1276

चकचा अ. देश. (दे. पृ. 189, मा. हि. को – 2) अधिक प्रकाश में नेत्रों का चौंधियाना 1277

*चकचूर स. देश. बहुत महीन पीसना; चकनाचूर करना 1278

चकचौंध अ. ना. अनु. चकाचौंध होना; स. चकाचौंध उत्पन्न करना 1279

चकचौह अ. देश. (दे. पृ. 5, दे. श. को.) चाह से देखना; आशा लगाए देखना 1280

चकपका अ. अनु. भौंचक होना 1281

चकरा अ. ना. अर्धसम (सं. चक्र संज्ञा) सिर का घूमना; चकित होना. गुज. चकरा 1282

चकला स. ना. देश. (चकल संज्ञा) पौधे को दूसरे स्थान पर लगाने के लिए मिट्टी समेत उखाड़ना, चकल उठाना; चौडा करना 1283

चकवा अ. देश. (दे. पृ. 55, दे. श. को.) चकपकाना, हैरान होना 1284

*चका अ. दे. 'चकवा' 1285

*चकास अ. देश. चमकना 1286

चकोट स. ना. देश. (चिकोटी संज्ञा) चिकोटी काटना; चुटकी से मांस नोचना 1287

चख स. देश. (प्रा. चक्ख, दे. पृ. 316, प्रा. स. म.) स्वाद लेना. गुज. चाख 1288

चचोड़ स. दे. 'चंचोर' 1289

चटक अ. अनु. (दे. पृ. 196, मा. हि. को – 2) 'चट' शब्द करते हुए टूटना, हलकी आवाज के साथ टूटना. गुज. चटक; तुल. गुज. चटको संज्ञा 1290

चटख अ. दे. 'चटक' 1291

चटचटा अ. अनु. 'चट-चट' की आवाज के साथ टूटना; चिपकना 1292

चटपटा अ. ना. देश. (चटपटी संज्ञा) जल्दी मचाना; स. किसी को जल्दी करने में प्रवृत्त करना. तुल. गुज. चटपट अव्य. 1293

चढ़ अ. देश. (* चढ्; प्रा. चड्; दे. इआलें 4578) नीचे से ऊपर को जाना; उन्नति करना. गुज. चढ़, चड 1204

चतर स. देश. छितराना; अ. छितराया जाना 1295

चमक (1) अ. देश. चटकना
(2) अ. देश. चिटकना; नाराज़ होना 1296

चनख अ. देश. (देश. पृ. 56, दे. श. को.–2) चिढ़ना; चनकना 1297

चप अ. ना. देश. (चाप संज्ञा) नीचे की ओर धँसना; दबना. गुज. चंपा 1298

चपक अ. देश. सटना; लिपटना. गुज. चपक, चबक 1299

चपट अ. दे. 'चिपट' 1300

चपत स. दे. 'चौपत' 1301

चपतिया स. ना. देश. (चपत संज्ञा) किसीको चपत लगाना 1302

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चपर अ. देश. आपस में खूब अच्छी तरह मिलना 1304

चपरा अ ना. देश. बनाना, झुठलाना 1304

चपला अ. ना. सम (सं. चपल विशे.) चपलता दिखाना; धीरे-धीरे आगे बढ़ना; स. किसीको चपल बनाना. तुल. गुज. चपल विशे. 1305

चपेट स. ना. देश (चपेट संज्ञा) आक्रमण करना; दबोचना 1306

चपेर स. दे. 'चपेट' 1307

चबक अ. अनु. देश. (दे. पृ. 57, दे. श. को.) टीसना, दर्द करना 1308

चबा स. भव (सं. चर्व; तुल. प्रा. चव्विय विशे. दे. इआलें 4711) दांतों से कुचलना, चूर करना. गुज. चाव 1309

चभोर स. ना. देश. (चुभकी संज्ञा) तरल पदार्थ में कोई चीज अच्छी तरह डुबाना; गरदन से पकड़कर किसीको गहरे पानी में गोता देना. तुल. गुज. झबोळ 1310

चमक अ. दे. 'चमक' 1311

चमक अ. दे. (* चम्मक्क; तुल. सं. चमत्कार संज्ञा; दे. इआलें 4676) जगमगाना; प्रसिद्ध होना; चौंकना. गुज. चमक 1312

चमचमा अ. देश. (* चमक्क, तुल. सं. चमत्कार संज्ञा; दे. इआलें 4676) चमकना; स. चमकाना. तुल. गुज. चमचम 'जलन' 1313

चमट स. दे. 'चिमट' 1314

चय स. सम (सं. चि) चयन करना 1314

चर अ. भव (सं. चर्; प्रा. चर्; दे. इआलें 4686) पशुओं का मैदान या खेत में घास आदि खाना. गुज. चर 316

*चरक अ. दे. 'चिटक' 1317

चरच स. अर्धसम (सं. चर्च्) चंदन आदि का लेप करना; भाँपना. गुज. चर्च 1318

चरचरा अ. अनु. देश. (दे. पृ. 57, दे. श. को. 2) 'चर-चर' शब्द करके टूटना; जलना तुल. गुज. चरचर संज्ञा; चचळ 'जलन होना' 1319

चरज अ. देश. धोखा देना, बहकाना; अनुमान करना 1320

चरपरा अ. ना. देश. (चरपरा विशे.) चर्राना; घाव में खुश्की के कारण तनाव से पीड़ा होना, चटपटी वस्तु खाने पर मुँह में हलकी जलन होना. तुल. गुज. चटपटी संज्ञा 1321

चरमरा अ. ना. अनु. (चरमर संज्ञा) 'चरमर' शब्द होना; 'चरमर' शब्द उत्पन्न करना 1322

चर्रा अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 114, हि. दे. श.-2) खाल में खुश्की के कारण हल्का दर्द होना; चरचर करके टूटना 1323

चल अ. भव (सं. चल्; प्रा. चल; दे. इआलें 4716) एक से दूसरी जगह जाना; चलन होना. गुज. चळ; '-से दूर हटना' तुल. चाल 1324

चलक अ. दे. 'चिलक' 1325

चव अ. देश. चूना; चुआना 1326

चस (1) अ. देश. मरना; ठगा जाना
(2) अ. ना. देश. (चाशनी संज्ञा; दे. पृ. 223, मा. हि. को - 2) दो चीज़ों का आपस में चिपक जाना; कपड़े आदि का खिचने पर मसक जाना. गुज. चस; चसक 1327

चहक (1) अ. अनु. देश. (* चहक्क; दे. इआलें 4731) जलना
(2) अ. वि. (चहचह संज्ञा; फा. दे. पृ. 190, हि. दे. श.) चिड़ियों का चहचहाना गुज. चहेक 1328

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चहचहा अ. दे. 'चहक (2)' 1329

चहन स. दे. 'चहल' 1330

चहल स. देश. (दे. पृ. 224, मा. हि. को–२) पैरों से कुचलना; मस्ती से सैर करना 1331

चहुंक अ. दे. 'चिहुक' 1332

चहूँट अ. दे. 'चिमट' 1333

चहेट स. दे. 'चपेट' 1334

चहोड़ स. देश. चारों ओर से अच्छी तरह दबाते हुए पीटना; पौधों को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना. गुज. चोड 1335

चहोर स. दे. 'चहोड़' 1336

चाँक स. ना. देश. (चाँक संज्ञा) खलियान में अनाज की राशि के चारों ओर मिट्टी, राख आदि के निशान लगाना; चाकना; गोंठना. गुज. चोक 1337

चाँछ स. भव (सं. तक्ष्; प्रा. तक्ख; दे. इआलें 5620) पत्थर टाँकना. गुज. ताछ 1338

चाँड़ स. ना. भव (चाँड विशे. सं. चण्ड; प्रा. चंड; दे. इआलें 4584) रौंदना; खोद डालना. तुल. गुज. चांदरुं 'खिलंदरा' 1339

चाँप स. देश. (* चम्प; प्रा. चंप्; दे. इआलें 4674) दबाना, दाब पहुँचाना. गुज. चांप 1340

चाक स. ना. भव (संज्ञा; सं. चक्र; प्रा. चक्क; दे. इआलें 4538) रेखाएँ खींचकर किसी चीज़ की हद बनाना; पहचान के लिए चिह्न बनाना तुल. गुज. चाक संज्ञा 1341

चाख स. देश. (* चक्ष्; प्रा. चक्ख्; दे. इआलें 4557) चखना, स्वाद लेना; दे. 'चख' गुज. चाख 1342

चाट स. देश. (*चट्ट संज्ञा; प्रा. चट्ट; दे. इआलें 4573) चटनी जैसी चीज़को जीभ से उठाकर या पोंछकर खाना; जीभ फेरना. गुज. चाट 1343

चाड़ स. 'चाँड़' 1344

चाढ़ स. दे. 'चढ़' 1345

चाप स. दे. 'चाँप' 1346

चाब स. दे. 'चबा' 1347

चाभ स. दे. 'चाब' 1348

चाल स. भव (सं. चल्; प्रा. चाल्; दे. इआलें 4772) छानना; अ. दुलहिन का पहली बार ससुराल जाना; दे. 'चल'. गुल. चाळ 'छानना' 1349

चास अ. ना. देश. (चासा संज्ञा; * चर्ष्; दे. इआलें 4712) जोतना गुज. चास 1350

चाह स. देश. (* चाह; प्रा. चाह्; दे. इआलें 4775) इच्छा करना; प्रेम करना. गुज. चाह 1351

चिंगुड़ अ. देश. सुखने आदि के कारण ऊपरी तल में झुर्रियाँ पड़ना; सिकुड़ना; एक स्थिति में रहने से अंगविशेष की नसों का न फैलना 1552

चिंगुर अ. 'चिगुड़' 1353

चिंघाड़ अ. देश. (*चिंघाट; दे. इआलें 4787) चीखना; हाथी का जोर से बोलना 1354

चिंघा अ. दे. 'चिंघाड़' 1355

चिकट अ. ना. देश. (चिकट विशे; चिक्क; दे. इआलें 4780) मैल से ढककर चिपचिपा हो जाना. तुल. गुज. चिकट, चीकणुं विशे. 1356

चिकना स. ना. भव (चिकना विशे; सं. चिक्कण प्रा. चिक्कण; दे. इआलें 4782) चिकना करना; अ. मोटा होना. तुल. गुज. चीकणुं विशे. 1357

चिकर अ. दे. 'चिकार' 1358

चिकार अ. ना. भव (सं. चीत्कार संज्ञा; प्रा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिक्कार; दे. इआलें 4839) चिंघाड़ना, चित्कार करना. तुल. गुज. चिकारी संज्ञा 1359

चिक्कर अ. दे. 'चिकार' 1360

चिखुर स. देश. (दे. पृ. 60, दे. श. को.) जोतने के बाद या निराकर घास निकालना 1361

चिचाव अ. दे. 'चिचया' 1362

चिचया अ. ना. अनु. देश. (* चिच्च; प्रा. चिच्चि संज्ञा; दे. इआलें 4789) चीखना, चिल्लाना. गुज. चीच 1363

चिचोड स. दे. 'चचोड' 1364

चिटक (1) अ. अनु. भव (दे. पृ. 190, हि. दे. श.) सुखका फटना; चिढ़ना (2) अ. दे. 'चटक' 1365

चिटचिटा अ. दे. 'चिटक' 1366

चिड़चिड़ा अ. अनु. चिटकना, जलने में चिड़-चिड़ आवाज़ होना; चिढ़ना. तुल. गुज. चीडियुं विशे. 1367

चिढ़ अ. देश. (* चिढ़; दे. इआलें 4794) नाराज़ होना; बुरा मानना. गुज. चिडा 1368

चिढ़क अ. दे. 'चिढ़' 1369

चितर स. ना. दे. 'चितार' 1370

चितव स. दे. 'चीत' 1371

चितार (1) स. ना. भव (सं. चित्रकार संज्ञा; प्रा. चित्तआर; दे. इआलें 4807) चित्र बनाना (2) स. दे. 'चेत' 1372

चितौ अ. दे. 'चीत' 1373

चित्र स. ना. सम (सं. चित्र संज्ञा) चित्र आदि बनाना; चित्र में रंग भरना. तुल. गुज. चित्र संज्ञा 1374

चिथाड़ स. ना. देश. फाड़ना; जलील करना. तुल. गुज. चीथडुं संज्ञा 1375

*चिन स. भव (सं. चि; प्रा. चिण्; दे. इआलें 4814) दीवार उठाना. गुज. चण 1376

चिन्हार स. ना. सम (सं. चह्न संज्ञा) चिह्नित करना. तुल. गुज. चींधवुं 1377

चिपक अ. दे. 'चपक' 1378

चिपचिपा अ. ना. अनु. (चिपचिप संज्ञा) लसीली वस्तु का चिपचिप् शब्द करना, – चिपक जाना 1379

चिपट अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 115, हि. दे. श.) चिपकना, सटना 1380

चिबला स. दे. 'चबा' 1381

चिमट अ. देश. (* चिम्ब; दे. इआलें 4822) चिपकना, लिचटना. चिंबोळ 1382

चियार अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 115, हि. दे. श.) चकित रह जाना 1383

चिरक अ. देश. थोड़ा–सा पाखाना करना. गुज. चरक 1384

चिरच अ. देश. चिड़चिड़ाना 1385

चिलक अ. देश. (* चिल्ल; प्रा. चिल्लअ संज्ञा; दे. इआलें 4827) चमकाना; चीखना. गुज. चळक 1386

चिलचिला अ. दे. 'चिलक' 1387

चिलबिला अ. देश. (दे. पृ. 61, दे. श. को.) धूप का लगना, तेज धूप का आभास होना 1388

चिल्ला अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 115, हि. दे. श.) जोर से बोलना; चीखना 1389

चिहुँक अ. देश. चौंकना 1390

चिहुँट स. देश. चिकोटी काटना; चिपटना. तुल. गुज. चीमटी, चूंटी संज्ञा 1391

चींच स. दे. 'सींच' 1392

चीक अ. ना. देश. पीड़ा के कारण चिल्लाना 1393

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चीख (1) स. भव (* चक्ष्; प्रा. चक्खं; दे. इआलें 4557) स्वाद जानने के लिए किसी चीज़ को थोड़ी मात्रा में खाना. गुज. चाख
(2) अ. दे. 'चीक' 1394

चीत (1) अ. भव (सं. चित्; प्रा. चित्त संज्ञा; दे. इआलें 4799) सोचना. गुज. चीत
(2) स. भव (सं. चित्र संज्ञा; प्रा. चित्; दे. इआलें 4810) चित्र बनाना. गुज. चीतर 1395

चीथ स. देश. (* चित्थ; दे. इआलें 4802) फाड़ना, क्षत-विक्षत कर देना. तुल. गुज. चीथडुं, चीथरुं संज्ञा 1396

चीन स. दे. 'चीन्ह' 1397

चीन्ह स. ना. भव (सं. चिह्न संज्ञा; प्रा. चिंधिय विशे; दे. इआलें 4836) पहचानना. गुज. चीन 1398

चीर स. ना. भव (सं. चीर संज्ञा; दे. इआलें 4844) फाड़ना; राह निकालना. गुज. चीर 1399

चीस अ. देश. चीखना. तुल. गुज. चीस संज्ञा 1400

चुंब स. सम (सं. चुम्ब्) गुज. चुंबन संज्ञा 1401

चुँभ स. दे. 'चुंब' 1402

चुअ अ. दे. 'चू' 1403

चुक अ. दे. 'चूक' 1404

चुकचुका अ. अनु. रिसकर बाहर आना; पसीजना 1405

चुकट अ. देख. (अ. व्यु. दे. पृ. 115, हि. दे. श.) चिमटना; सूखकर चिपक जाना 1406

चुखा स. दे. 'चोख' 1407

चुग स. देश. (* चुग्; दे. इआलें 4852) चिड़ियों का चोंच से चुनचुनकर दाना खाना. गुज. चुग 1408

चुचक अ. देश. इस प्रकार सुखना कि ऊपरी तल पर झुर्रियाँ पड़ जाएँ; सुखकर सिकुड़ना 1409

चुचकार अ. अनु. 'चुच'कर प्यार करना; चुमकारना. गुज. बुचकार 1410

चुचा अ. देश. चूना, रिसना 1411

चुचुआ अ. दे. 'चुकचुका' 1412

चुचुक अ. दे. 'चुचक' 1413

चुटक स. देश. चाबुक मारना; चुटकी से तोड़ना 1414

चुटा अ. ना. देश. (चोट संज्ञा; * चोट्ट; दे. इआलें 4857) चोट खाना, घायल होना; स. चुटिया. तुल. गुज. चोट संज्ञा 1415

चुट्ट स. दे. 'चुन' 1416

चुन स. भव (सं. चि; प्रा. चिण्; दे. इआलें 4814) छोटी चीज़ों को एक-एक करके इकट्ठा करना, पसंद करना, चुगना. गुज. चुण, चण 1417

चुनचुना अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 115, हि. दे. श.) जलन के साथ खुजली पैदा होना; ठिनकना. गुज. चणचण, चचर 1418

चुनिया स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 116, हि. दे. श.) चिढ़ना 1419

चुपड़ स. ना. देश. (* चुप्प; प्रा. चुप्प विशे. दे. इआलें 4865) तेल आदि चिकनी चीज़ लगाना, चापलूसी की बातें करना. गुज. चोपड 1420

चुपर स. दे. 'चुपड़' 1421

चुपा अ. ना. देश. (चुप विशे.) चुप हो जाना; न बोलना; स. चुप करना. तुल. गुज. चुप विशे. 1422

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुबक स. देश. (* चुब्ब; दे. इआलें 4866) धँसाना, चुभोना 1423

चुबला स. दे. 'चबा' 1424

चुभ अ. देश. (चुभ् ; दे. इआलें 4867) धँसना, नुकीली चीज़ का भीतर घुसना 1425

चुभक अ. अनु. (दे. पृ. 266, मा. हि. को – 2) बार-बार गोता खाना, डूबना-उतराना 1426

चुभला स. दे. 'चुबला' 1427

चुमकार स. अनु. बच्चों को प्यार करने, पशुओं को बुलाने के लिए मुँह से चूमने जैसी आवाज़ निकालना, पुचकारना 1428

चुर अ. देश. पानी में पकना, सीझना; गुप्त मंत्रणा होना; अ. चुराया जाना. तुल. गुज. चड़ 'पकना' 1429

चुरक अ. अनु. (दे. पृ. 266, मा. हि. को – 2) चूर-चूर होना; फटना 1430

चुरग अ. अनु. (दे. पृ. 266, मा. हि. को – 2) प्रसन्न होकर मुँह से शब्द निकालना 1431

चुरचुरा अ. अनु. (दे. पृ. 266, मा. हि. को – 2) चुरचुर शब्द उत्पन्न होना 1432

चुरा स. दे. 'चोर' 1433

चुलचुला अ. अनु. देश. (* चुल; प्रा. चुलचुल् ; दे. इआलें 4874) चुल उठना. संभोग की प्रबल कामना होना. तुल. गुज. चळ संज्ञा 1434

चुलबुला (1) अ. दे. 'चुलचुला' बार-बार हिलना, चंचलता दिखाना
(2) अ. ना. वि. (चुलबुल संज्ञा; फा. दे. पृ. 191, हि. दे. श.) 1435

चुलचुला अ. दे. 'चुलचुला' 1436

चुहचुहा (1) अ. अनु. (दे. पृ. 269, मा. हि. को – 2) इतना भरा होना कि रस टपकता हुआ जान पड़े
(2) अ. दे. 'चहचह' 1437

चुह स. देश. चूस 1438

चुहट स. दे. 'चिहुँट' 1439

चुहुँट स. दे. 'चिहुँट' 1440

चुहुक स. अनु. बछड़े आदि का भैंस, गाय आदि का स्तन-पान करना; चूसना 1441

चुहट स. दे. 'चुहुँट' 1442

चूँग स. देश. (* चुग् ; दे. इआलें 4853) धीरे धीरे खाना. तुल. गुज. चगळ 1443

चूँट अ. भव (सं. चुण्ट् ; प्रा. चुंट् ; दे. इआलें 4857) चींटी की तरह चिपक जाना, नोचना; चुटकी से पकड़ना. गुज. चूंट 1444

चूंठ स. अर्धसम (सं. चुण्ट् ; दे. इआलें 4857) दबाना, नोचना, तोड़ना 1445

चू अ. भव (सं. च्युत् ; प्रा. चु; दे. इआलें 4948) टपकना; पके या सूखे फल का झड़ पड़ना. गुज. चू 1446

चूक अ. देश. (* चुक्क; प्रा. चुक्क् ; दे. इआलें 4848) भूल करना; विफल होना; समाप्त होना. गुज. चूक 1447

चूम स. भव (सं. चुम्ब् ; प्रा. चुंब् ; दे. इआलें 4870) स्नेह-प्रकाश के लिए होठों से किसीके होठों, गालों आदि का स्पर्श करना; चुंबन करना. गुज. चूम, चुम्ब 1448

चूर स. देश (* चूर; प्रा. चूर; दे. इआलें 4888) चूर करना. गुज. चूर 1449

चूस स. भव (सं. चूष् ; दे. इआलें 4898) होठों और जीभ के योग से रसपान करना: शोषण करना. गुज. चूस 1450

चेत स. सम (सं. चित्) सोचना; अ. होश में आना; सावधान होना. गुज. चेत 'सावधान होना' 1451

चेप स. ना. देश. (चेप संज्ञा) किसी वस्तु पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेप लगाना; चिपकाना. तुल. गुज. चेप संज्ञा 1452

चेहा अ. देश. चकित होना 1453

चोंक स. ना. देश. (चोका संज्ञा) स्तन से मुँह लगाकर दूध पीना; पानी पीना 1454

चोंख स. दे. 'चोख' 1455

चोंथ स. अनु. (दे. पृ. 218, मा. हि. को – 2) खोंटना; नोचना. गुज. चूंथ 1456

चोख स. देश. थन से मुँह लगाकर पीना, चूसना 1457

*चोट–पोट स. ना. देश. (चोटी–पोटी संज्ञा) रूठे हुए को मनाना; फुसलाना; अ. चापलुसी की बातें करना 1458

चोटा स. दे. 'चोटिया' 1459

चोटिया स. ना. देश. चोट पहुंचाना; चोटी गूँथना 1460

चोथ स. दे. 'चोंथ' 1461

चोद अ. देश. (* चोद्द; दे. इआलें 4929) संभोग करना. गुज. चोद 1462

*चोर स. भव (चोर संज्ञा; सं. चोर संज्ञा; प्रा. चोरिअ विशे; दे. इआलें 4933) चुराना. गुज. चोर 1463

*चोष स. दे. 'चूस' 1464

चौंक अ. देश. (* चमक्क संज्ञा; प्रा. चमक्क; दे. इआलें 4676) भय, विस्मय या पीड़ा की अचानक अनुभूति से चंचल हो जाना; भड़कना. गुज. चोंक 1465

*चौंट स. दे. 'चोंट' 1466

*चौंध अ. ना. देश. (चौंध संज्ञा) बिजली का चमकना, कौंधना 1467

चौंधिया अ. दे. 'चौंध' 1468

चौंरा स. देश. किसीके ऊपर या चारों ओर चँवर डुलाना; जमीन पर झाड़ देना 1469

चौआ अ. देश. चकित होना; सतर्क होना 1470

चौड़ा स. ना. देश. (चौड़ा विशे.) चौड़ा करना; व्यर्थ का विस्तार करना 1471

चौपत स. ना. देश. (चौपत विशे.) चार तहों में लपेटना; लपेटकर तह लगाना 1472

चौपता स. दे. 'चौपत' 1473

चौरसा स. ना. भव (चोरस विशे; सं. चतुरू + अश्रि; प्रा. चतुरस्स; दे. इआलें 4598) चौरस करना; बराबर करना. तुल. गुज. चोरस विशे. 1474

छंद अ. ना. सम. (छंद संज्ञा) छंद बनाना; कविता करना. तुल. गुज. छंद संज्ञा 1475

छँदर स. ना. अर्धसम (छंद संज्ञा) धोखा देना 1476

छक अ. देश. (* छक्क; दे. इआलें 4956) तृप्त होना; चकराना. गुज. छक; छाक 'पगलाना' 1477

छटक अ. देश. (* छट्ट; प्रा. छट्टा; दे. इआलें 4968) तेजी के साथ पकड़ से निकल जाना; काबू से निकल जाना. गुज. छटक 1478

छटपटा अ. ना. अनु. देश. (छटपटी संज्ञा; *छट्ट; दे. इआलें 4969) व्याकुल होना; आतुर होना 1479)

छड़ स. देश. (* छट; प्रा. छडा संज्ञा; दे. इआलें 4965) चावल आदि छाँटना; खूब पीटना. गुज. छडक, छड 1480

छत स. ना. भव (छात संज्ञा; सं. छद्; दे. इआलें 4971) छत डालना; घर छाना; अ. घाव होना. तुल. गुज. छत संज्ञा 1481

छतरा अ. ना. भव (सं. छद्; प्रा. छत्त संज्ञा; दे. इआलें 4972) छत्रक की तरह चारों ओर फैलना; अधिक विस्तार से युक्त होना. तुल. गुज. छतरी संज्ञा 1482

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छतिया अ. ना देश. (छाती संज्ञा) छाती से लगाना. तुल. गुज. छाती संज्ञा 1483

छनक स. अनु. (दे. पृ. 298, मा. हि. को – 2) 'छन छन' शब्द होना; भड़कना 1484

छनछना अ. अनु. तपी हुई धातु पर जलकण छोड़ने से 'छन छन' शब्द होना; क्रुद्ध होना; 'छन छन' शब्द उत्पन्न करना. गुज. छछण, छणछण 1485

छपक अ. अनु. (दे. पृ. 298, मा. हि. को – 2) किसी चीज से आघात करना; थोड़े पानी में हाथ–पैर मारना 1486

छपछपा अ. दे. 'छपक' 1487

छपट अ. देश. चिपकना; आलिंगित होना 1488

छपरिहा अ. ना. देश. (छप्पर संज्ञा) छप्पर का गिरना; छप्पर से गिरना या टूटना 1489

*छब अ. ना. देश. (छबि संज्ञा) छवि से युक्त होना, सुशोभित होना 1490

छम स. देश. क्षमा करना 1491

छमक अ. अनु. (दे. पृ. 300, मा. हि. को – 2) घुँघरुओं आदि के बजने का शब्द होना; स. छौंकना. गुज. छमक 1492

छमछमा अ. अनु. (* छम्म; दे. इआलें 49-97) 'छम–छम' शब्द करना, 'छम–छम' करते हुए चलना. गुज. छमक; तुल. छमछम 1493

छय अ. ना. देश. (छय संज्ञा) क्षय होना; स. क्षय करना 1494

छर स. भव (सं. क्षर्; प्रा. खर्; दे. इआलें 3663 तथा 4965) चूना; छँटना 1495

छरक अ. अनु. (दे. पृ. 300, मा. हि. को – 2) किसी पदार्थ का कभी तल या धरातल को स्पर्श करते हुए और वेग से उछलते हुए आगे बढ़ना. गुज. छरक 1496

छरछरा अ. अनु. घाव पर क्षार लगने से पीड़ा होना; कणों आदि का 'छर–छर' करते हुए गिरना; स. जलन उत्पन्न करना. तुल. गुज. चचर 1497

छल स. भव (सं. छल्; प्रा. छल्; दे. इआलें 5003) धोखा देना; ठगना. गुज. छळ 1498

छलक अ. अनु. देश. (* छलक; दे. इआलें 5002) मुंह तक भरे हुए जल या दूसरे तरल पदार्थ का हिलने के कारण बरतन के बाहर गिरना; उछलना. गुज. छलका; तुल. गुज. छलक, छालक संज्ञा 1499

छलछला अ. अनु. आँखों का भर आना, आर्द्र हो जाना 1500

छलमल अ. दे. 'छलक' 1501

छहक अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 117, हि. दे. श.) चमकते हुए लहराना: बिखरना 1502

छहर अ. देश. छितराना, बिखरना 1503

छहरा अ. दे. 'छहर' 1504

छाँग स. देश. छिन्न करना; कुल्हाडी आदि से पेड़ आदि की शाखा काटना 1505

छाँट स. देश. (*छण्ट्; प्रा. छाँट संज्ञा; दे. इआलें 4970) काटना; चुनना. गुज. छांट 'छिटकना' 1506

छाँड़ स. दे. 'छाड़' 1507

छाँद स. देश. (*छन्द्; दे. इआलें 4984) बाँधना; हाथों से पैर पकड़कर बैठ जाना; चौपायों के पिछले दोनों पैरों को सटाकर रस्सी से बांधना जिससे वह दूर जाने न पाये 1508

छाँध स. दे. 'छाँद' 1509

छा अ. भव (सं. छद्; प्रा. छाय्; दे. इआलें 5018) ऊपर फैलना, बसना; स. ढकना; मकान पर छप्पर या खपरैल डालना. गुज. छा 1510

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छाक अ. दे. 'छक' 1511

छाज अ. भव (सं. छद्; प्रा. छज्ज् ; दे. इआलें 4982 तथा 5025) फबना; सुशोभित होना; स. छाजन तैयार करना. गुज. छाज 1512

छाड़ स. भव (सं. छृद्; प्रा. छड्डइ; दे. इआलें 4998) छोड़ना. गुज. छाँड 1513

छान स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 117, हि. दे. श.)आटे आदि का मोटा अंश छलनी से निकालना; खोजना. गुज. छण 1514

छाप स. देश (* छप्प; दे. इआलें 4994) ठप्पा, मुहर, अक्षर आदि का चिह्न स्याही या रंग के योग से कागज आदि पर उतारना; छापकर प्रकाशित करना. गुज. छाप; तुल. गुज. छापो संज्ञा; 'छापनेवाला' 1515

*छार स. ना. भव (सं. क्षार संज्ञा; प्रा. खार दे. इआलें 3674) पूरी तरह से जलाकर राख करना. तुल. गुज. खार संज्ञा 1516

छाल स. ना. देश. छानना; साफ करना 1517

छाव स. दे. 'छा' 1518

छिछ स. देश. चाहना; इच्छा करना 1519

छिंडा स. देश. छीन लेना 1520

छिछकार स. अनु. छिड़कना 1521

छिछया स. ना. अनु. घृणा करना; निंदा करना. तुल. गुज. छि छि संज्ञा 1522

छिटक अ. देश. बिखरना; चाँदनी आदि का फैलना. तुल. गुज. छिटकोर स. 1523

छिड़क स. देश. (* छिट; दे. इआलें 5035) जल या दूसरे द्रव द्रव्य के छींटें फेंकना; न्योछावर करना. तुल. गुज. छाँट 1524

छितर अ. देश. (दे. पृ. 68, दे. श. को.) बिखरना, फैलना. गुज. छीत 'छिदरे जल में जहाज का जमीन से चिपकना' 1525

छित्तरा अ. दे. 'छितर' 1526

छिनक स. देश (* छिन; दे. इआलें 5044) छिड़कना; साँस के साथ नाक का मल बाहर निकालना. गुज. छीण 'छीलना' 1527

छिप अ. देश. (* छिप्प; दे. इआलें 4994) आड़ या परदे में होना; दृश्य न होना. गुज. छूप; छीप 'शमित होना' 1528

छींक अ. ना. अनु. भव (सं; छिक्का संज्ञा; प्रा. छिक्का; छिक्क् ; दे. इआलें 5032) नथुनों में से भीतर की वायु का वेग आवाज के साथ बाहर आना. गुज. छींक; तुल. गुज. छींकणी 'सुँघनी' 1529

छींट स. देश. (* छिट्टट; दे. इआलें 5035) छितराना, बिखेरना. 1530

छी स. भव (सं. छिद्; दे. इआलें 5041) फटना, थकना 1531

*छीअ स. दे. 'छू' 1532

छीछ अ. देश. क्षीण होना 1533

छीज अ. भव (सं. छिद् ; प्रा. छिज्ज् ; दे. इआलें 5042) उपयोग आदि के कारण क्षीण होना; हानि होना 1534

छीत स. भव (सं. छिद् ; प्रा. छित्ति संज्ञा; दे. इआलें 5037) बिच्छू, भिड़ आदि का डंक मारना; चोट पहुँचाना 1535

छीन स. ना. भव (सं. छिन्न विशे. छिद्; प्रा. छिण्ण; दे. इआलें 5047) छिन्न करना; किसीके हाथ से कोई वस्तु बलात् ले लेना. गुज. छीन 'छेदना', छीनव 1536

*छीव स. दे. 'छू' 1537

छुछुआ अ. ना. अनु. छछूंदर की तरह 'छू-छू' करते फिरना; बेकार भटकना. तुल. गुज. छु छु संज्ञा 1538

छुनछुना अ. अनु. 'छुन-छुन' आवाज पैदा करना 1539

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छुप अ. देश. (* छुप्प; दे. इआलें 5058) छिपना. गुज. छूप, छिपा 1540

छुलक अ. अनु. थोड़ा थोड़ा करके पेशाब करना 1541

छुलछुला अ. दे. 'छुलक' 1542

छुहा अ. दे. 'छोह' स्नेहयुक्त होना; रंगा जाना; स. रंगवाना 1543

छू स. भव (सं. छुप्; प्रा. छुव्; दे. इआलें 5055) स्पर्श करना; चीज़ से सट जाना; किसीके पास पहुँचना. गुज. छू 1544

छूट अ. भव (* क्षुद्; प्रा. छुट्ट विशे; दे. इआलें 3707) बंधन दूर होना; रवाना होना. गुज. छूट 1545

छेंक स. ना. भव (छेद संज्ञा; सं. छिद्; प्रा. छेअ संज्ञा; दे. इआलें 5064) घेरना; अक्षर आदि काटना, रोकना. गुज. छेक; तुल. गुज. छेको 'छेंकने के लिए खींची हुई लकीर' 1546

छेक स. दे. 'छेंक' 1547

छेड़ स. देश. (* छेड; दे. इआलें 4794) हँसाने, चिढाने के लिए उँगली आदि से छूना; आरंभ करना. गुज. छेड 1548

छेत स. भव (सं. छिद्; प्रा. छेत्ता विशे; दे. इआलें 5063) तोड़ना, कुचलना 1549

छेद स. ना. भव (छेद संज्ञा; सं छिद्; प्रा. छिद्दिदय विशे; दे. इआलें 5043) छेद करना; घाव करना. गुज. छेद 1550

छेर अ. देश. (* छकर; दे. इआलें 4955) अपच होना. गुज. छेर 'पतला दस्त होना' 1551

छेव स. भव (सं. छिद्; प्रा. छे; दे. इआलें 5067) चीरा करना, काटना 1552

*छैल अ. दे. 'छैला' 1553

छैला अ. ना. देश. (छैल संज्ञा; प्रा. छइल्ल; दे. पृ. 333, पा. स. म.) लड़कों का कोई काम करने के लिए मचलना; स. किसीको छैलाने में प्रवृत्त करना 1554

छोप स. देश (* छोप्प; दे. इआलें 5058) किसी चीज़ की लुगरी का लेप करना; ढकना 1555

*छोप अ. भव (सं. क्षुभ्; छुभ् ; दे. इआलें 3721) क्षुब्ध होना. तुल. गुज. छोभ संज्ञा 1556

छोर (1) स. भव (सं. क्षुर् ; दे. इआलें 3753) काटना. अपहरण करना, गुज. खोर 'हिलाना, ऊपर-नीचे करना.' छोर 'खोदना' (2) स. भव (सं. छुर् ; दे. इआलें 5066) मुक्त करना. छोडना 1557

छोल स. देश. (* छोल्ल; प्रा. छोल्लू ; दे. इआलें 5073) छीलना, खुरचना. गुज. छोल 1558

छोह अ. देश. प्रेम करना; विचलित होना 1559

छोहा अ. दे. 'छोह' 1560

छौंक स. अनु. (दे. पृ. 316, मा. हि. को – 2; प्रा. छमक्क; ह. भा.) दाल, तरकारी को सुगंधित या सौंधा करने के लिए उसमें जीरे, मिर्च, हींग आदि से मिला हुआ कड़कड़ाता घी या तेल छोड़ना; बघारना; हिंसक प्राणी का शिकार के प्रति बढ़ना 1561

जँता अ. ना. भव (जाँता संज्ञा; सं. यंत्र संज्ञा; प्रा. जंत; दे. इआलें 10412) जाँते आदि से दबकर पीसा जाना; कुचला जाना. तुल. गुज. जंतरडुं, जंतरडो संज्ञा 1562

जंत्र स. ना. अर्धसम (सं. यंत्र) जंत्र – ताला लगना; बाँध रखना; स. यंत्रणा देना. तुल. गुज. जंतर संज्ञा 'तांत्रिक आकृति' 1563

*जंप स. भव (सं. जल्प्; प्रा. जप्प्; दे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इआलें 5163) कहना, बोलना. गुज. जंप 'शान्त होना' 1564

जँभा अ. दे. 'जम्हा' 1565

*जंष अ. दे. 'झंख' 1566

जँहड़ अ. दे. 'जहँड़' 1567

जकंद अ. ना. वि. (जकंद संज्ञा; फा.) उछाल भरना; टूट पड़ना 1568

*जक अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 118, हि. दे. श.) स्तंभित होना; भौचक्का होना 1569

जकड़ स. ना. भव (सं. यत्; जयू; दे. इआलें 10400) कसकर बाँधना; अ. (किसी अंग का) अकड़ना. गुज. जकड 1570

जग अ. दे. 'जाग' 1571

जगजगा अ. देश. (* जग; दे. इआलें 5076) चमकना. गुज. जगमग 1572

जगमगा अ. दे. 'जगजगा' 1573

जट स. देश. (दे. पृ. 69, दे. श. को.) ठगना 1574

जड स. भव (* जड; प्रा. जडिअ विशे; दे. इआलें 5091) एक वस्तु को दूसरी में बैठाना; ठोंकना. गुज. जड 'जड़ना; खोई हुई चीज़ का मिलना' 1575

जड़क अ. ना. भव (जड़ विशे; सं. जड विशे; प्रा. जड; दे. इआलें 5090) जड़ के समान हो जाना. तुल. गुज. जड विशे. 1576

जड़ा अ. ना. भव (जाड़ा संज्ञा; सं. जड विशे; प्रा. जड्; दे. इआलें 5090) सरदी से ठिठुरना 1577

जढ़ा अ. दे. 'जड़ा' 1578

जतला स. दे. 'जता' 1579

जता (1) स. भव (सं. ज्ञा; ज्ञप्त विशे; दे. इआलें 5273) बताना; आग्रह करना

(2) स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 118, हि. दें. श.) चाँपना, दबाना 1580

जन स. भव (सं. जन्; दे. इआलें 5102) बच्चे को जन्म देना. गुज. जण 1581

जनम अ. ना. अर्धसम (सं. जन्म संज्ञा) जन्म लेना, स. उत्पन्न करना. गुज. जनम अ. 1582

जन्म अ. ना. सम (सं. जन्म संज्ञा) जन्म होना; स. जन्म देना. गुज. जन्म अ. 1583

जप स. सम. (सं. जप्) जप करना; यज्ञ करना. गुज. जप 1584

जफील अ. ना. वि. (जफील संज्ञा; फा. जफीरी) सीटी बजाना, सीटी देना 1585

जम अ. ना. वि. (जमा विशे; अर. जमऽ) पतली चीज़ का गाढ़ी या ठोस होना; बना रहना. गुज. जाम 1586

जमक अ. देश. (* जम्म दे. इआलें 5140) चमकना 1587

जमुक अ. देश. (दे. पृ. 69, दे. श. को.) आगे बढ़कर किसीके साथ लगना; सहना. तुल. गुज. जामुक विशे. 'संलग्न' 1588

*जमुहा अ. दे. 'जम्हा' 1589

जमोग स. देश. हिसाब की जाँच करना; किसीकी बात की पुष्टि करना 1590

जम्हा अ. भव (सं. जृम्भ्; प्रा. जंभ्, जम्हा; दे. इआलें 5265) जम्हाई लेना 1591

*जय स. भव (सं. जि; प्रा. जय्; दे. इआलें 5143) जोतना. तुल. गुज. जय संज्ञा 1592

*जर अ. भव (सं. ज्वर्; दे. इआलें 5304) ज्वर आना; जलना; स. दे. 'जड़' 1593

जरजर अ. ना. अर्धसम (सं. जर्जर विशे.) जर्जर होना. तुल. गुज. जर्जर, जर्जरित, जरजरियुं विशे. 1594

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जल अ. भव (सं. ज्वल् ; प्रा. जल् 5306) किसी चीज़ का आग पकड़ना; संतप्त होना. गुज. जळ; तुल. गुज. बळ 1595

जलप अ. ना. अर्धसम (सं. जल्प संज्ञा) निरर्थक बातें करना, बकना. ड़ींग मारना. गुज. जल्प 1596

जल्प अ. ना. सम (सं. जल्प्) दे. 'जलप' गुज. जल्प 1597

जहँड़ अ. देश. घाटा उठाना, धोखे में आना; स. धोखा देना 1598

जहक अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 118, हि. दे. श.) चिढ़ना; बहकना 1599

जहद अ. ना. देश. (जहदा संज्ञा) कीचड़ होना, थक जाना 1600

जाँच स. भव (सं. याच् ; दे. इआलें 10449) किसी बात के सही-गलत होने का पता लगाना; परख करना 1601

जाँप स. देश. चाँपना, दबाना 1602

जा अ. भव (सं. या; प्रा. जा; दे. इआलें 10-452) गमन करना; बीतना. गुज. जा, ज 1603

जाग अ. भव (सं. जागृ; प्रा. जग्गू ; दे. इआलें 5175) नींद का त्याग करना; फलदायक होना. गुज. जाग 1604

जाच स. भव (सं. याच् ; दे. इआलें 10149) माँगना; परख करना. गुज. जाच 1605

जान स. भव (सं. ज्ञा; प्रा. जाण् ; दे. इआलें 5193) किसी वस्तु, व्यक्ति, घटना का अभिज्ञ होना. गुज. जाण 1606

जाय अ. देश. जान पड़ना; स. जपना 1607

जाम (1) अ. दे. 'जम'
(2) अ. भव (सं. यम् ; तुल. प्रा. जम् ; दे. इआलें 10428) जमना. गुज. जाम 1608

जार स. भव (सं. ज्वाल् ; प्रा. जाल् ; दे. इआलें 5314) जलाना 1609

जाल स. दे. 'जार' 1610

जिअ अ. भव (सं. जीव् ; प्रा. जीअ; दे. इआलें 5241) जीना. गुज. जीव 1611

*जितव स. दे. 'जताना' जतलाना; परिचित करना 1612

जी अ. भव (सं. जीव् ; प्रा. जीव् ; दे. इआलें 5241) देह में प्राण का बना रहना; जीवन-यात्रा करना. गुज. जीव 1613

जीत स. भव (सं. जी; प्रा. जित्त विशे; दे. इआलें 5224) युद्ध आदि में शत्रु या विपक्षी को हराना, वश में लाना. गुज. जीत 1614

जीप स. दे. 'जीत' 1615

जीभ स. भव (* जिम् ; प्रा. जेम् ; दे. इआलें 5267) भोजन करना. गुज. जम 1616

जीर अ. भव (सं. जृ; प्रा. जीर् ; दे. इआलें 5235) जीर्ण होना; कुम्हलाना. गुज. जेरव 'पचाना' 1617

जुअ स. दे. 'जोव' 1618

जुआठ स. ना. भव (जुआर संज्ञा; सं. युग + धार संज्ञा; दे. इआलें 10486) बैल आदि को जुए में जोतना, बाँधना 1619

जुगजुगा अ. अनु. झिलमिलाना; बढ़ना 1620

जुगा स. दे. 'जोगौ' 1621

जुगव स. दे. 'जोगौ' 1622

जुगा स. दे. 'जोगौ' 1623

जुगाल अ. देश. जुगाली करना 1624

जुट अ. देश. (* युट् ; प्रा. जुडिअ विशे; दे. इआलें 10496) जुड़ना; पहुँचना 1625

जुठार स. ना. देश (जूठा विशे; * झुट्ठ; प्रा. झुट्ठ; दे. इआलें 5407) जूठा कर देना;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जूठा करके छोड़ देना. तुल. गुज. जूठुं विशे. 1626

जुड अ. देश. (* युद्; प्रा. जुडिअ विशे; दे. इआलें 10496) संयुक्त होना; संभोग करना. गुज. जोडा 1627

जुतिया स. ना. भव (सं. युज् ; प्रा. जुत्त विशे. दे. इआलें 10479) जूते लगाना; बुरी तरह अपमानित करना. तुल. गुज. जूतुं संज्ञा 1628

जूझ अ. भव (सं. युध् ; प्रा. जुझ्, झुज्झ्; दे. इआलें 10502) लड़ना, लड़ते हुए मर जाना. गुज. झूझ 1629

जूम अ. ना. वि. (जमा विशे; अर.) इकट्ठा होना; जुटना; इकट्ठा करना 1630

*जें स. दे. 'जेंव' 1631

जेंव स. भव (सं. जेम् ; प्रा. जेम् ; दे. इआलें 5267) भोजन करना, जीमना. गुज. जम 1632

जेव स. दे. 'जेंव' 1633

*जेर स. ना. वि. (जेर विशे: प्रा.) पराजित करना; तंग करना. तुल. गुज. जेर विशे. 1634

जो स. दे. 'जोव' 1635

जोअ स. दे. 'जोव' 1636

जोख स. देश. (* जोक्ष् ; दे. इआलें 10523) तौलना; गुज. जोख 1937

जेागव स. ना. दे. 'जेागौ' 1638

जोगौ स. ना. भव (सं. युज् ; प्रा. जेग्गा; दे. इआलें 10529) हिफाजत से रखना; इकट्ठा करना; योगाभ्यास करना. गुज. जोगव 'ठीक से काम में लेना, व्यवस्थित करना' 1639

जोड़ स. देश. (* युट्ट ; प्रा. जोड्ड ; दे. इआलें 10496) दो चीजों; टुकड़ों को एक-दूसरे के साथ चिपकाना, जोतना. गुज. जोड 1640

जोत स. ना. भव (सं. योक्त्र संज्ञा; प्रा. जोत्त; दे. इआलें 10524) घोड़ों, बैलों आदि को गाड़ी, हल आदि से इस तरह बाँधना कि वे उसे खींच सकें; हल से जमीन को चीरना. गुज. जोतर 1641

जोव स. दे. 'जोव' 1642

जोय स. ना. देश. आग, दीया आदि जलना 1643

जोर स. दे. 'जोड़' 1644

जोव स. भव (सं. द्युत् ; प्रा. जोय्, जोव्; दे. इआलें 6612) ध्यानपूर्वक देखना. ढूँढ़ना; प्रतीक्षा करना. गुज. जो 1645

जोह स. दे. 'जोव' 1646

जौंक स. अनु. (दे. पृ. 319, मा. हि को-2) रोष जतलाते हुए ऊँचे स्वर में बोलना 1647

ज्वै स. दे. 'जोव' 1648

झंकार स. भव (सं. झंकार संज्ञा; दे. इआलें 5324) 'झन झन' आवाज होना. गुज. झणकार 1649

झंकोर स. दे. 'झकोर' 1650

झँकोल स. दे. 'झकोर' 1651

झँख अ. देश. दुःखी होना; दुखड़ा रोना. गुज. झंख 'तीव्रता से कामना करना' 1652

झंझना अ. अनु. (दे. पृ. 397, मा. हि. को - 2) 'झन झन' शब्द उत्पन्न करना; स. झन झन शब्द उत्पन्न करना. गुज. झण झण 1653

झँझोड़ स. देश. (* झोट् ; प्रा. झोड्; दे. इआलें 5414; 'झोड' का द्विरुक्त रूप) पककड़र झटके देना, नोचना. गुज. झंझेड, झंझोड 1654

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झंप अ. देश. (* झप्प; इआलें 5336) छलाँग मारना; झेंपना. गुज. झंपाव, झंपलाव 'साहस करना' 1655

झँवरा अ. ना. देश. (झाँवरा संज्ञा; * झामल; प्रा. झामल विशे; दे. इआलें 5369) काला पड़ना; मुरझाना; स. झाँवला या कुछ काला करना 1656

झँवा अ. ना. देश. (झाँवा संज्ञा; सं. झामक संज्ञा; प्रा. झाम ; दे. इआलें 5366) दे. 'झँवरा' गुज. झाम 'गरम पत्थर पानी में चभोरना' 1657

झँस स. अनु. (दे. पृ. 399, मा. हि. को – 2) शरीर के किसी अंग में तेल आदि लगाना; झाँसा देकर कुछ धन वसूल करना 1658

झक अ. अनु. (बकना का अनु; दे. पृ. 399, मा. हि. को – 2) बकना 1659

झकझूर स. दे. 'झकझोर' 1660

झकझोर स. अनु. (दे. पृ. 399, मा. हि. को – 2) पकड़कर जोर से हिलाना, झटका देना. गुज. झकझोळ 1661

झकझोल स. दे. 'झकझोर' 1662

झकुर अ. देश. उदास होना 1663

झकेल स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 119, हि. दे. श.) झुलाना; झकोरना 1664

झकोर अ. देश. (* झक्कोल; दे. इआलें 5316) झोंके के साथ पेड़ों को झकझोरते हुए हवा का बहना; झकोरा मारना, स. झकझोरना. गुज. झकोळ 1665

झकोल स. दे. 'झकोर' डालना, मिलाना 1666

*झक्ख अ. दे. 'झीख' 1667

*झख अ. दे. 'झीख' 1668

झगड़ अ. देश. (* झग्गड; दे. इआलें 5321) झगड़ा करना; लड़ना. गुज. झघड़ 1669

झगर अ. दे. 'झगड़' 1670

झझक अ. देश. (अ. व्यु. पृ. 120, हि. दे. श.) यकायक क्रुद्ध होकर बड़बड़ाने लगना; भड़क उठना 1671

झटक स. देश. (झटका संज्ञा; * झट्टू; प्रा. झड्; दे. इआलें 5327) चीज को इस तरह हिलाना कि वह खुल जाय, झटका देना. गुज. झटक; तुल. गुज. झटको संज्ञा 1672

झटकार स. दे. 'झटक' 1673

झड़ अ. देश. (* झट्; प्रा. झड्; दे. इआलें 5328) टूटकर गिरना; बरसना; साफ होना 1674

झड़क स. देश. (* झट्; प्रा. झड्; दे. इआलें 5328) हिलाना; दे. 'झिड़क' गुज. झाडक 1675

झड़झड़ा स. अनु. (दे. पृ. 400, मा हि. को – 2) 'झड़ झड़' शब्द करना; झटकारना. तुल. गुज. झाडक, झाटक 'झटकारना' 1676

झड़प अ. देश. (* झट; प्रा. झडत्ति अव्य; दे. इआलें 5327) हमला करना; उलझना; सं. झटकना. गुज. झडप 'यकायक पकड़ लेना' 1677

झनक अ. अनु. देश. (* झणत्क; दे. इआलें 5331) झनक होना; पैर को झटका देते हुए चलना. गुज. झणक; तुल. गुज. झणको संज्ञा 1678

झनकार अ. अनु. भव (सं. झणत्कार संज्ञा; दे. इआलें 5332) 'झनझन' की आवाज़ निकलना; स. 'झनझन' की आवाज़ पैदा करना. गुज. झणकार; तुल. गुज. झणकारो संज्ञा 1679

झनझना अ. ना. भव (झनझन संज्ञा; सं. झण्; प्रा. झणझण् ; दे. इआलें 5330) झनकार होना; स. झनकार करना. गुज. झणझण 1680

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झन्ना अ. दे. 'झनझना' 1681

झप अ. देश. (दे. पृ. 73, दे. श. को.) छिपना, झुकना. गुज. जंप 1682

झपक अ. देश. (* झप्प; दे. इआलें 5336) पलक गिरना; झेंपना. गुज. झप, शांत होना. 1683

झपट अ. देश. (* झप्प; दे. इआलें 5336) किसी चीज़ को लेने उसकी ओर बढ़ना; लपकना; स. झपटकर छीन लेना. गुज. झपेट 'मारना, पीटना'; तुल. गुज. झापट, झपट संज्ञा 1684

झपडिया अ. ना. देश. (झापड़ संज्ञा) लगातार कई झापड़ लगाना. गुज. झापट 'कपडे को झापड़ से साफ करना; फटकारना' 1685

झपस अ. देश. पेड़पौधों, लताओं आदि का चारों ओर फैलना 1686

झपेट स. दे. 'झपट' 1687

झबूँक अ. देश. चमकना; चौंकना 1688

झमंक अ. दे. 'झमक' 1689

झम अ. अनु. (दे. पृ. 403, मा. हि. को – 2) पलकों आदि का गिरना; नम्रतापूर्वक झुकना. गुज. झम 'रीसना' 1690

झमक अ. अनु. देश (* झम्म; दे. इआलें 5341 तथा 5342) चमकना; पाँवों के गहनों की झनकार करते चलना; सहसा सामने आना. गुज. झमक 1691

झमझमा अ. दे. 'झनकार' 1692

झमा अ. दे. 'झम' 1693

झर अ. भव (सं. झर्; प्रा. झर्; दे. इआलें 5346) झड़ना, बजना; स. बजाना. गुज. झर 'रीसना, टपकना' 1694

झरक अ. देश. झलकना, स. डपटना. झिड़कना 1695

झरझरा अ. ना. अनु. (झरझर संज्ञा; दे. पृ. 403, मा. हि. को – 2) 'झर-झर' करते हुए बहना; जलना; स. 'झरझर' की आवाज़ के साथ गिराना 1696

झरप अ. दे. 'झड़प' 1697

*झरस अ. अनु. (दे. पा. 404, मा. हि. को. – 2) झुलसना; मुरझाना 1698

झरहर अ. अनु. आवाज़ के साथ पत्तों का नीचे आना, खड़खड़ाना; स. डाल हिलाकर पत्तों आदि को गिराना 1699

झरहरा अ. दे. 'झरहर' 1700

झल स. देश. (* झल; दे. इआलें 5351) (पंखा आदि) हिलाकर हवा करना; अ. हिलना गुज. झाल 'पकड़ना' 1701

झलक अ. देश. (* झल; दे. इआलें 5352) चमकना. गुज. जळक 1702

झलझला अ. अनु. (दे. पृ. 405, मा. हि. को – 2) खूब चमकना; झल्लाना; स. चमकाना. गुज. झळ 'जलना' 1703

झलमल अ. ना. अनु. (झलमल संज्ञा, दे. पृ. 405, मा. हि. को – 2) रह-रह कर कभी तेज, कभी धुंधली रोशनी देना. गुज. झलमल 1704

झल्ला अ. देश. (* झल्ल; दे. इआलें 5352) बहुत बिगड़ जाना, झुँझला उठना; स. चिढ़ानेवाला काम करना. गुज. झल्ला 'जलना' 1705

झष अ. ना. देश. (झख संज्ञा) झख मारना 1706

झस स. दे. 'झँस' 1707

झहन अ. अनु. (दे. पृ. 406, मा. हि. को – 2) 'झन-झन' शब्द होना; झल्लाना 1708

झहर अ. अनु. (दे. पृ. 406, मा. हि. को – 2) 'झर-झर' शब्द होना; हिलते-डुलते रहना; झल्लाना 1709

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झहरा अ. दे. 'झहर' 1710

झाँक अ. देश. (दे. पृ. 74, दे. श. को.) आड़ से, झरोखे से बाहर की वस्तु को देखना. गुज. स. झाँख 'देखना' 1711

झाँख अ. देश. (* झंख; दे. इआलें 5325) दे. 'झाँक' 1712

झाँप स. देश. (* झप्प; दे. इआलें 5337) ढँकना; छोप लेना; अ. झेंपना 1713

झाँव स. ना. देश. (झाँवा संज्ञा) झाँवे से रगड़कर धोना 1714

झाँस स. दे. 'झँस' 1715

झाग अ. ना. देश. (झाग संज्ञा; * झग्गा; दे. इआलें 5322) झाग निकलना; स. फेन उत्पन्न करना 1716

झाल स. देश. (* झाल्; दे. इआलें 5382) धातु की बनी चीज़ को टाँके से जोड़ना; किसी चीज़ को ठंडा करने के लिए बरफ़ या शोरे में रखना. गुज. झाळ 1717

झिंगर अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 120, दे. श. को.) झगड़ना 1718

झिंगार अ. दे. 'झिंगर' 1719

झिंझोड स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 120, हि. दे. श.) हिलाना-उछालना 1720

झिकझोर स. दे. 'झकझोर' 1721

*झिगड़ अ. दे. 'झिंगर' 1722

झिंगर अ. दे. 'झिंगर' 1723

झिझक अ. देश. (दे. पृ. 75, दे. श. को.) भय या लज्जा के कारण कोई बात करने में हिचकना; भड़कना 1724

झिझकार स. दे. 'झिझक' 1725

झिटक स. दे. 'झटक' 1726

झिटकार स. दे. 'झिटक' 1727

झिड़क स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 120, हि. दे. श.) डाँटना; तिरस्कार के साथ फेंक देना 1728

झिड़झिड़ा अ. दे. 'झिड़क' 1729

झिंप अ. दे. 'झेंप' 1730

झिमक अ. दे. 'झमक' 1731

झिमिट अ. अनु. (दे. पृ. 411, मा. हि. को. – 2) एकत्र होना 1732

झिर अ. दे. 'झर' 1733

झिरक स. दे. 'झिड़क' 1734

झिरझिरा अ. दे. 'झिड़झिड़ा;' 'झिर-झिर' करते हुए बहना 1735

झिलमिला अ. ना. देश. (झिलमिल संज्ञा; * झिल; दे. इआलें 5391) झलमलाना 1736

झींक स. देश (* झिक्क; दे. इआलें 5384) फेंकना, पटकना; नाक-भौं चढ़ाना. गुज. झीक 1737

झींख अ. ना. देश. (प्रा. झिंखण संज्ञा; दे. पृ. 367, पा. स. म.) कुढ़ना, दुःखी होना 1738

झींझ अ. दे. 'झीझ (2) 1739

झींट अ. दे. 'झीख' 1740

झींप अ. दे. 'झेंप' 1741

झीख अ. दे. 'झींख' 1742

झीझ (1) अ. देश. (* झि; प्रा. झिज्झ्; दे. इआलें 5396) क्षीण होना
(2) अ. अनु. (दे. पृ. 412, मा. हि. को. – 2) झुंझलाना 1743

*झीड़ अ. अनु. (दे. पृ. 413, मा. हि. को. – 2) बलपूर्वक प्रविष्ट होना; धँसना 1744

झीम अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 121, हि. दे. श.) झूमना 1745

झील स. दे. 'झेल' 1746

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झुँझला अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 121, हि. दे. श.) खीझना 1747

झुक (1) अ. देश. (* झुक्क्; दे. इआलें 5399) टेढ़ा होना; दबना. गुज. झूक 'नीचा होना'

(2) अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 121, हि. दे. श.) झुँझलाना; क्रुद्ध होना 1748

झुकर अ. दे. 'झुक (2)' 1749

झुकझोर स. दे. 'झकझोर' 1750

झुख स. देश. (दे. पृ. 76; दे. श. को.) सोचना, याद करना 1751

झुटला स. दे. 'झुठला' 1752

झुठका अ. ना. देश. (झुठा विशे; * झूट्ठ; प्रा. झुट्ठ; दे. इआलें 5407) झूठ-मूठ कोई बात कहकर किसी को धोखे में डालना 1753

झुठला स. दे. 'झुठका'. किसी को झुठा ठहराना; धोखे में डालना. तुल. गुज. जूठु विशे. 1754

झुठा स. दे. 'झुठला' 1755

झुठाल स. दे. 'झुठला' 1756

झुनक अ. अनु. (दे. पृ. 414, मा. हि. को - 2) 'झुनझुन' शब्द निकलना; स. 'झुन-झुन' शब्द उत्पन्न करना 1757

झुनझुना अ. अनु. भव (सं. झण्; प्रा. झण-झण्, दे. पृ. १९२, हि. दे. श.) दे. 'झुनक' 1758

झुना अ. दे. 'झुनक' 1759

झुमा अ. दे. 'झूम' 1760

झुमिर अ. दे. 'झूम' 1761

झुर स. देश. (* झू; दे. इआलें 5405) दुःख या चिन्ता से क्षीण होना, सूखना, गुज. झूर 1762

झुरझुरा अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 121, हि. दे. श.) झुराना, सूखना 1763

झुरस अ. दे. 'झुलस' 1764

झुलस अ. देश. इतना जलना कि सतह स्याह हो जाय; मुरझाना 1765

झुहा स. दे. 'झुठला' 1766

झुहिर अ. देश. (दे. पृ. 77, दे. श. को.) लदना 1767

झूँक अ. दे. 'झींख' 1768

झूँख अ. दे. 'झींख' 1769

झूँब अ. दे. झूम 1770

झूँस स. दे. 'झँस'; अ. दे. 'झुलस' 1771

झूब अ. दे. 'झूम' 1772

झूम अ. भव (सं. झुभ्; प्रा. खुंभण संज्ञा; दे. इआलें 3726) इधर-उधर हिलना; लहराना. गुज. झूम; झझूम 'जोर लगाते रहना' तुल. गुज. झूमखुं संज्ञा 1773

झूर अ. दे. 'झुर' 1774

झूल अ. देश. (* झुल्; प्रा. झुल्ल्; दे. इआलें 5406) लटककर आगे-पीछे होना; समाप्त हो जाना. गुज. झूल 1775

झेंप अ. देश. लजाना 1776

झेक अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 122, हि. दे. श.) ऊँट को बैठाने के लिए 'झेक-झेक' ध्वनि करना, तुल. गुज. झेह-झेह संज्ञा 1777

झेर स. देश. छेड़ना, आरंभ करना; दे. 'झेल' गुज. झेर 'मथना' 1778

झेल (1) अ. देश. (* झेल्; दे. इआलें 5413; प्रा. झिलिअ विशे. दे. पृ. 367, पा. स. म.) सहना, ठेलना; हजम करना 1779

झोंक स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 122, हि. दे. श.) आगे की ओर फेंकना, बुरी तरह डालना;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुज. झोंक 1780

जोक स. दे. 'झोंक' 1781

झोड़ स. देश. (* झोट्; दे. इआलें 5414). पीटना, झोर से हिलाना. गुज. झूड 'पीटना' 1782

झोर स. दे. 'झोड़' 1783

झोल स. देश. तपाना, जलाना; संतप्त करना; अ. दे. 'झुस' 1784

झौंर स. दे. 'झौर' अ. गूँजना 1785

झौंस स. दे. 'झुलस' 1786

झौर (1) स. देश. (प्रा. झोड; दे. पृ. 368, पा. स. म.) दबाने के लिए झपटकर पकड़ना; छोप लेना

(2) स. देश. झुँड बनाना 1787

झौह अ. दे. 'झौहा' 1788

झौहा अ. अनु. (दे. पृ. 421, मा. हि. को– 2) क्रुद्ध होकर झल्लाते हुए बोलना 1789

टंकार स. ना. अनु. (टंकार संज्ञा) धनुष का रोदा तानकर आवाज़ पैदा करना. तुल. गुज. टंकार, टंकारव संज्ञा 1790

टंकोर स. दे. 'टंकार' 1791

टकटका अ. अनु. 'टक-टक' शब्द उत्पन्न होना; टकटका लगाकर देखना, स. 'टक-टक' शब्द उत्पन्न करना 1792

टकटो स. देश. (अ. व्यु. दें. पृ. 122, हि. दे. श.) उंगलियों से छूकर किसी वस्तु का पता लगाना, टटोलना. तुल. गुज. टटोळ 1793

टकटोर स. दे. 'टकटो' 1794

टकटोल दे. 'टकटो' 1795

टकटोह स. दे. 'टकटो' 1796

टकरा अ. ना. देश. (टक्कर संज्ञा; सं. टक्करा संज्ञा; प्रा. टक्कर; दे. इआलें 5424) दो वस्तुओं का एक दूसरे से भिड़ जाना; ठोकर लग जाना; स. दो वस्तुओं को आपस में लड़ा देना. गुज. टकरा; स. टकराव 1797

टकूच स. देश. (दे. पृ. 78, दे. श. को.) खाना 1798

टकोर स. ना. देश. (दे. पृ. 78, दे. श. को.) धीरे से आवाज़ करना, बजाना. गुज. टकोर 1799

टगटगा स. दे. 'टकटका' 1800

टगर अ. दे. 'टघर' 1801

टघर अ. देश. (दे. पृ. 78, दे. श. को.) टिघलना; द्रवीभूत होना 1802

टटा अ. देश. (* टट्ट; दे. इआलें 5438) सूखना; शरीर या उसके अंगों में पीड़ा होना 1803

टटिया अ. दे. 'टटा' 1804

टटो स. दे. 'टटोल' 1805

टटोर स. दे. 'टटोल' 1806

टटोल स. दे. 'टकटो' 1807

*टटोह स. दे. 'टटोल' 1808

टनक अ. अनु. टन-टन बजना; गरमी, धूप आदि के कारण सिर में धमक या पीडा होना 1809

टनटना अ. दे. 'टनक' 1810

टप अ. देश. बिना खाये-पीये पड़ा रहना; कूदना गुज. टप 'कूद जाना' 1811

टपक अ. अनु. देश. (* टप्प; दे. इआलें 5444) बूँद-बूँद गिरना; पके फल का आप से आप गिरना. गुज. टपक; तुल. गुज. टपकुं, टीपुं संज्ञा 1812

टपर स. अनु. (दे. पृ. 417, मा. हि. को – 2) दीवार में मसाला भरने से पहले उसके फ़र्श की दरज़ों को कुछ खोदकर चौड़ी या

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बड़ी करना जिससे उनमें मसाला अच्छी तरह से भरा जा सके 1813

टपरिया अ. दे. 'टपर' 1814

टर अ. दे. 'टल' 1815

टरक अ. अनु. 'टर-टर' शब्द होना; खिसक जाना; दे. 'टल' कर्कश स्वर में बोलना; 'टर-टर' शब्द करना. गुज. टरक अ. 'ललचाना' 1816

टरटरा अ. अनु. 'टर-टर' शब्द होना; अंड-बंड बकना 1817

टर्रा अ. ना. अनु. (टर संज्ञा; दे. पृ. 417, मा. हि. को – 2) गर्व के साथ बात करना; सीधे न बोलना. गुज. टरडा 1818

टल अ. भव (सं. टल्; दे. इआलें 5450) विचलित होना; अलग होना. गुज. टळ 181

टस अ. अनु. (दे. पृ. 428, मा हि. को – 2 खींच पड़ने के कारण कपड़े आदि का फटना, मसकना 1820

टसक अ. देश. (दे. पृ. 79, दे. श. को.) किसी भारी चीज़ का अपनी जगह से हटना; प्रभावित होना. गुज. टसमस 'भीतर से उभर-कर फटने को होना' 1821

टहक अ. अनु. (दे. पृ. 428, मा. हि. को-2) टिघलना; रह-रह कर दर्द करना 1822

टहर अ. दे. 'टहल' 1823

टहल अ. देश. (टहल्ल; दे. इआलें 5433) मनोविनोद या स्वास्थ्य की दृष्टि से धीरे धीरे चलना; मंद गति से भ्रमण करना. गुज. टहेल, टेल 1824

टाँक स. भव (सं भव (सं. टङ्क्; दे. इआलें 5432) सिलाई जोड़ना; हलकी सिलाई करना. गुज. टाँक; तुल. टाँको संज्ञा 1825

टाँग स. देश. (* टंग; दे. इआलें 5436) खूँटी या अलगनी जैसे ऊँचे आधार से अट-काना, फाँसी देना. गुज. टाँग 1826

टाँच स. देश. टाँकना; काट-छाँट करना. गुज. टांच 1827

टाँस स. देश. किसी का हाथ या पैर मरोड़कर उसमें तनाव उत्पन्न करना; टाँकना; राँगे से बरतन का छेद बंद करना 1828

टान स. दे. 'तान' 1829

टाप अ. ना. देश. (टाप संज्ञा; * टप्प; दे. इआलें 5445) घोड़ों का इस प्रकार पैर पटकना जिससे 'टप-टग' शब्द हो. तुल. गुज. टपलो संज्ञा 1830

टिक अ. देश. (* टिक्क; दे. इआलें 5420) ठहरना; स्थिर रहना. तुल. गुज. टक 1831

टिघल अ. दे. 'टघर' 1832

टिटकार स. अनु. 'टिक-टिक' शब्द करते हुए घोड़ों आदि को हाँकना 1833

टिन्ना अ. देश. क्रुद्ध होना; (शिश्न का) उत्ते-जित होना 1834

टिपक अ. दे. 'टपक' 1835

टिमटिम अ. अनु. देश. (अ. व्यु. पृ. 123, हि. दे. श.) क्षीण प्रकाश के साथ जलना; मरने के करीब होना. गुज. टमक, टमटम 1836

टिरकार स. दे. 'टिटकार' 1837

टिर्रा अ. दे. 'टर्रा' 1838

टिलटिला अ. अनु. (दे. पृ. 435, मा. हि. को – 2) पतला दस्त करना 1839

टिहुक अ. देश. ठिनकना; चौंकना 1840

टिहूक अ. दे. 'टिहुक' 1841

टीक स. ना. देश. (टीका संज्ञा; * टिक्क; प्रा. टिक्क संज्ञा; दे. इआलें 5458) टीका लगाना; उंगली से रंग लगाकर निशान बनाना. तुल. गुज. टीको संज्ञा 1842

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टीप स. देज. (* टिप्प; दे. इआलें 5464) हाथ या उंगली से दबाना; हलका आघात करना. गुज. टीप 1843

टीस अ. ना. देश (दे. पृ. 436, मा. हि. को – 2) शरीर के किसी अंग में रह-रह कर पीड़ा होना 1844

टुँग स. देश. (टुँगा संज्ञा; * टुग्ग; दे. इआलें 5467) (चौपायों का) टहनी के पत्तों को ऊपर से काटना; थोड़ा-थोड़ा काटकर खाना 1845

टुघला स. देश. (दे. पृ. 82, दे. श. को.) चुभलाना 1846

टुपक स. देश. (दे. पृ. 83, दे. श. को.) धीरे से ऊपरी भाग काटना; डंक मारना; झगड़ा लगानेवाली बात धीरे से कह देना 1847

टुलक अ. दे. 'टुलक' 1848

टुसक अ. दे. 'टसक' 1849

टूँग स. दे. 'टुँग' 1850

टूट अ. अनु. भव (सं. त्रुट्; प्रा. तुट्टइ, टुट्टइ; दे. इआलें 6065 तथा 6079) भग्न होना सहसा आक्रमण करना. गुज तूट 1851

टूठ अ. दे. 'तूठ' 1852

टूम (1) स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 123, हि. दे. श.) शोभित होना
(2) स. अनु. (दे. पृ. 440, मा. हि. को – 2) झटका देना; ताना देना 1853

टे स. देश. (दे. पृ. 441, मा. हि. को – 2) धार तेज़ करने के निमित्त अस्त्र आदि को पत्थर पर रगड़ना; मूंछों के बालों में बल डालकर उन्हें खड़ा रखने के लिए उमेठना 1854

टेक स. देश. (* टेक्क; दे. इआलें 5420) थाम लेना; सहारा लेना. गुज. टेक; तुल. गुज. टेक संज्ञा 1855

टेर स. ना. देश. (टेर संज्ञा; * टेर; दे. इआलें 5473) तार-स्वर में गाना; पुकारना. गुज. टेर 'हराना' 1856

टेव स. भव (सं. तिज्; प्रा. ते; दे. इआलें 5945) दे. 'टे' 1857

टोंच स. देश. गड़ाना; सिलाई करना. गुज. टोंच 1858

टो स. देश. (* टोह; दे. इआलें 5486) उँगलियों से दबाकर या छूकर मालूम करना; टटोलना. गुज. टो 'चिल्लाकर पक्षियों को खेत से भगाना; बूँद बूँद पानी पाना' 1859

टोक स. देश. (* टोक्क; दे. इआलें 5476) रोकना, चलते समय यात्रा के विषय में पूछ-ताछ करना. गुज. टोक 'दोष बताना, रोकना' 1860

टोप अ. देश. (* टोप्प; दे. इआलें 5481) ढाँकना 1861

टोर स. देश. (दे. पृ. 85, दे. श. को.) भली-बुरी बात की जाँच करना; थाह लेना. दे. 'टो' 1862

टोह स. दे. 'टो' 1863

टोहिया स. दे. 'टोह' 1864

टौर स. दे. 'टोर' 1865

ठंठना अ. अनु. 'ठंठ' ध्वनि निकलना; स. 'ठंठ' ध्वनि निकालना 1866

ठंडा स. ना. देश. ठंडा करना. तुल. गुज. ठंडुं विशे. 'ठंडा' 1867

ठक अ. अनु. (दे. पृ. 447, मा. हि. को – 2) सहारा लगाकर बैठना 1868

ठकठका स. अनु. 'ठक-ठक' ध्वनि उत्पन्न करना; खूब पीटना; अ. 'ठक-ठक' ध्वनि होना; भौचक्का हो जाना 1869

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठग स. देश. (* ठग्ग; प्रा. ठगिय विशे.; दे. इआलें 5489) धोखा देकर लूटना; छलना. गुज. ठग. 1870

ठट अ. दे. 'ठठ' 1871

ठठ अ. ना. देश (ठाठ संज्ञा) खड़ा रहना; ठाठ से युक्त होना. गुज. ठठा. 1872

ठठक अ. दे. 'ठिठक' 1873

ठठा स. अनु. देश. (* ठट्ठ; दे. इआलें 5490) आघात करना; जोर से पीटना; अ. अट्टहास करना. गुज. ठठाड 'छू लेना, ठठाना'; ठठार 'बहुत सजाना' 1874

ठठिया स. दे. 'ठठ' 1875

ठड़क अ. दे. 'ठिठक' 1876

ठढ़ा अ. ना. देश. (ठढ़ा विशे.) खड़ा होना 1877

ठढ़िया स. दे. 'ठढ़ा' 1878

ठनक अ. अनु. देश. (दे. पृ. 195, – हि. दे. श.) 'ठन–ठन' करके बजाना; शंका उत्पन्न करना 1879

ठनग अ. अनु. ठनगन करना 1880

ठनठना स. ना. अनु. देश. (ठनठन संज्ञा; * ठन्; दे. इआलें 5494) 'ठन-ठन' ध्वनि उत्पन्न करना; अ. 'ठन–ठन' करके बजना. गुज. ठणठण, ठणक 1881

ठप स. ना. अनु. देश. (ठप्पा संज्ञा; * ठप्प; दे. इआलें 5495) कोई चीज़ इस प्रकार बन्द करना कि ठप शब्द हो, कोई कार्य बन्द करना. गुज. ठपक, तुल. गुज. ठपको 'उलाहना' 1882

ठमक अ. अनु. देश. (* ठम्म; दे. इआलें 5496) भय, आश्चर्य आदि से चलते चलते रुक जाना, हावभाव के साथ चलना. गुज. ठमक; तुल. गुज. ठम-ठम, ठमको संज्ञा 1883

ठमुक स. दे. 'ठुमक' 1884

ठय स. देश. स्थापित करना; अ. स्थापित होना 1885

ठर अ. ना. भव (सं. स्थिर विशे.; प्रा. थिर; दे. इआलें 13771) सरदी से ठिठुरना; अत्यंत शीत पड़ना. गुज. ठर 'जमना' 1886

* ठला स. देश. गिराना; निकलवाना. गुज. ठालव 1887

ठव स. दे. 'ठय' 1888

ठह अ. अनु. (दे. पृ. 451, मा. हि. को – 2) घोड़े का हिनहिनाना; घंटे आदि का शब्द होना; अ. सँवारना, बचाना 1889

ठहर अ. अर्धसम (सं. स्तम्भ्; दे. इआलें 13680) रुकना; बना रहना. गुज. ठेर 'तय होना, ठहरना' 1890

ठाँस स. देश. (* ठस्स; दे. इआलें 5494) ठूँसना, अ. 'ठन–ठन' शब्द करते हुए खाँसना. गुज. ठांस, ठेंस 1891

ठा स. दे. 'ठान' 1892

ठाक स. देश. मना करना 1893

ठाठ स. ना. देश (ठाठ संज्ञा) ठाठ खड़ा करना; अ. सजना 1894

ठान स. देश. कोई काम करने के लिए संकल्प करना; कोई काम तत्परता से आरंभ अरना. गुज. ठाण 1895

ठाव स. दे. 'ठान' 1896

ठास स. दे. 'ठाँस' 1897

ठाहर अ. दे. 'ठहर' 1898

ठिक अ. दे. 'टिक' 1899

ठिकिया स. ना. देश. (ठीक विशे.) ठीक करना 1900

ठिठक अ. वेश. (दे. पृ. 87, दे. श. को.) चलते–चलते सहसा रुक जाना; स्तब्ध होना 1901

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठिठर अ. दे. 'ठिठुर' 1902

ठिठुर अ. देश. (दे. पृ. 87, दे. श. को.) सर्दी से सिकुड़ जाना. गुज. ठूठवा 1903

ठिनक अ. अनु. (दे. पृ. 454, मा. हि. को – 2) बच्चों का रह-रह कर रोने का-सा शब्द निकालना; नखरा दिखाते हुए मचलना 1904

ठिर अ. दे. 'ठर' 1905

ठिलठिला अ. अनु. जोर से हँसना 1906

ठील स. दे. 'ठेल' 1907

ठुकरा स. ना. देश. (ठोकर संज्ञा; * ठोक्क; दे. इआलें 5513) ठोकर मारना; तिरस्कार करना. गुज. ठोक; तुल. गुज. ठोकर संज्ञा 1908

ठुनक (1) अ. देश. (दे. पृ. 88, दे. श. को.) गुस्सा होना, रुठना

(2) स. अनु. (दे. पृ. 456, मा. हि. को – 2) 'ठुन' शब्द उत्पन्न करना; ठोकना 1909

ठुमक अ. अनु. देश. (दे. पृ. 195, हि. दे. श.) नाचते समय ताल के अनुसार रह-रह कर पैर पटकना. तुल. गुज. ठूमको संज्ञा 1910

ठुमकार स. ना. अनु. देश. (ठुमका संज्ञा; दे. पृ. 88, दे. श. को.) पतंग की दोरी को ठुमका देना 1911

ठुरिया अ. दे. 'ठिठुर' 1912

ठुसक अ. अनु. देश. (* ठुस्स; दे. इआलें 5508) सिसकियाँ भरते हुए रोना; 'ठुस' शब्द करते हुए पादना. तुल. गुज. ठूसकुं संज्ञा; 'सिसकी' 1913

ठूँग स. दे. 'टूँग' 1914

ठूँस स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 114, हि. दे. श.) दबा-दबाकर भरना; जबरदस्ती कोई चीज भरना. गुज. ठाँस 1915

ठूस स. दे. 'ठूँस' 1916

ठेक (1) स. ना. देश. (ठेक संज्ञा) सहारा लेना; किसी चीज़ को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे टेक लगाना; गुज. ठेक 'कूद जाना'

(2) स. अनु. (दे. पृ. 457, मा. हि. को – 2) ठप्पे से अंकित करना 1917

ठेग स. दे. 'ठेक' 1918

ठेघ स. दे. 'ठेग' 1919

ठेल स. देश. (* ठेल्ल; दे. इआलें 5512 ढकेल कर आगे बढ़ाना, खिसकाना. गुज. ठेल 1920

ठेस (1) स. देश. (* ठेस्स; दे. इआलें 5511) ठूसना

(2) अ. ना. देश (ठेस संज्ञा) आश्रय लेना, ठेस लगाकर बैठना. तुल. गुज. ठेसणियुं 'सिटकिणी'; ठेस 'ठोकर' 1921

ठैर अ. दे. 'ठहर' 1922

ठोंक स. दे. 'ठोक' 1923

ठोंग स. ना. देश. (ठोंग संज्ञा; * ठोंग; दे. इआलें 5478) चोंच मारना; मुडी हुई उँगली से ठोकर मारना 1924

ठोक स. ना. अनु. देश. (* ठोक; दे, इआलें 5513) भारी वस्तु से आघात करना; पीटना. गुज. ठोक 1925

ठोस स. देश. (* ठोस्स; दे. इआलें 5511) दबा देना; प्रहार करना. गुज. ठोंस; तुल. गुज. ठोसो संज्ञा 'ठोसा' 1926

डंक स. ना. देश. (डंका संज्ञा) डंका बजाना; अ. गरजना. तुल. गुज. डंको 'डंका' 1927

डंकिया स. ना. देश. (डंक संज्ञा) डंक मारना. अ. दे. 'डाँक' 1928

डंड स. ना. देश. (डंड संज्ञा) दंडित करना. गुज. दंड 1929

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डँडिया स. ना. देश. (डाँडी संज्ञा) दो कपड़ों को लंबाई की ओर से मिलाकर सीना 1930

डंडूर अ. देश. हवा का धूल से भर जाना 1931

डंडोर स. देश. ढूँढना 1932

डंफ अ. देश. जोर से चिल्लाना या रोना 1933

डंस स. भव (सं. दंश्; प्रा. दंसू; दे. इआलें 6110 तथा 6130) साँप आदि ज़हरीले जंतुओं का दांत से काटना; डंक मारना. गुज. डस 1934

डकर आ. देश. साँड, बैल या भैंसे का जोर से बोलना 1935

डकरा अ. दे. 'डकर' 1936

डकार अ. ना. अनु. देश. (डकार संज्ञा; * डकार; दे, इआलें 5521) डकार लेना; खाकर तृप्त होना 1937

डकाव स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 125, हि. दे. श.) आगे बढ़ाना; छलांग लगवाना 1938

डगडगा अ. अनु. देश. (* डग; प्रा. डगमग्; दे. इआलें 5522) अस्थिर होना; काँपना; लड़खड़ाना. गुज. डग, डगडग, डगमग 1939

डगडोल अ. दे. 'डोल' 1940

डगमग अ. दे. 'डगडगा' 1941

डगमगा अ. दे. 'डगडगा' 1942

डगर अ. ना. देश. (डगर संज्ञा) रास्ता चलना 1943

डगरा अ. दे. 'डगर' 1944

डट अ. ना. देश (डाट संज्ञा) अड़ना; (कार्य में) प्रवृत्त होना. गुज. डटा 1945

डडक अ. अनु. (दे. पृ. 463, मा. हि. को - 2) जोर से शब्द उत्पन्न होना, बजना; स. जोर से शब्द उत्पन्न करना; बजाना 1946

डढ़ अ. दे. 'दाध' 1847

डपट स. ना. देश. (डपट संज्ञा; दे. पृ. 90, दे. श. को.) झिड़कना; डाँटना, अ. सरपट दौडना. गुज. डपट 'छिपाना, हथिया लेना' 1948

डबक स. ना. देश. (डब संज्ञा) दबाकर कटोरे की तरह गहरा करना 1949

डबडबा अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 125, हि. दे. श.) आँखों में आँसू आ जाना. तुल. गुज. डबडब संज्ञा 'डूबने की आवाज़' 1950

डबिर स. देश. (दे. पृ. 90, दे. श. को.) खेत में से भेड़ों को निकाल देना 1951

डभक अ. अनु. देश. (प्रा. डिंफिअ; दे. पृ. 373, पा. स. म; अ. व्यु. दे पृ. 125, हि. दे. श.) जल में इस प्रकार बार-बार डूबना-उतराना कि डभ-डभ शब्द हो; छलकना 1952

डर अ. ना. भव (सं. दृ.; प्रा. डर्; दे. इआलें 6190) भय खाना, सशंक होना. गुज. डर 1953

डरप अ. दे. 'डर' 1954

डस स. दे. 'डँस' 1955

डह अ. भव (सं दह्; प्रा. दहू; दे. इआलें 6245) जलना; स. जलाना. गुज. दह 1956

डहक अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 125. हि. दे. श.)
(1) वंचना करना, अ. धोखा खाना
(2) दे. 'डहडहा' 1957

डहडहा अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 125, हि. दे. श.) हरा-भरा होना; प्रसन्न होना 1958

डहर अ. दे. 'डगर' 1959

डाँक स. देश. (* ड़क्क; दे. इआलें 5516) फाँदना; पुकारना; अ. वमन करना 1960

डाँट स. ना. देश. (डाँट संज्ञा) क्रोध में आकर किसी दोषी को कोई कड़ी बात ऊँचे स्वर में कहना 1961

डाँड स. दे. 'दाँड' 1962

डाक स. दे. 'डाँक' 1963

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डाड़ स. दे. 'डाँड' 1964

डाढ़ स. दे. 'डह' 1965

डार स. दे. 'डाल' 1966

डाल स. दे. (* डाल; दे. इआलें 5545) गिराना; मिलाना; रखना 1967

डास (1) स. भव. (सं. ध्वंस्; दे. इआलें 6896) बिछाना

(2) स. दे. 'डस' 1968

डाह स. दे. 'डह' 1969

डिकर अ. देश. (दे. पृ. 92, दे. श. को.) चिल्लाना, कराहना 1970

डिग अ. ना. देश. (डग संगा; * डिग; दे. इआलें 5522) हिलना; वचनभंग होना. गुज. डग 1971

डिगमिगा अ. दे. 'डगमगा' 1972

डिगर अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 125, हि. दे. श.) दे. 'डगर' जाना, प्रस्थान करना 1973

*डिढ़ा स. ना. भव (डिढ़ विशे; सं. दृढ विशे; दृम्ह; प्रा. दिढ; दे. इआलें 6508) दृढ करना; ठानना; अ. दृढ होना. तुल. गुज. दृढ विशे. 1974

डिभग स. दे. (दे. पृ. 93, दे. श. को.) मोहित करना 1975

डीठ अ. ना. भव (डीठ संज्ञा; सं. दृष्ट भू. कृ. प्रा. दट्ठ; दे. इआलें 6518) दृष्टिगोचर होना; स. देखना. तुल. गुज. दीठुं भू. कृ. 'देखा' 1976

डुकिया स. ना. अनु. (दे. पृ. 472, मा. हि. को – 2) घूँसे मारना 1977

डुगडुगा स. ना. अनु. देश. (डुगडुगी संज्ञा; दे. पृ. 472, मा. हि. को – 2; * डोट्ठ; दे. इआलें 5569) चमड़ा मढ़े बाजे को लकडी से बजाकर 'डुगडुग' शब्द उत्पन्न करना; अ. 'डुगडुग' शब्द उत्पन्न होना. तुल. गुज. डुगडुग संज्ञा 1978

डुगर अ. देश. (दे. पृ. 93, दे. श. को.) लुढ़कना, ढरकना 1979

डुपट स. ना. देश. चुनियाना, तह लगाना 1980

डुल (1) अ. भव. (सं. दुल; प्रा. डुल्; दे. इआलें 6453) हिलना, हटना. गुज. डूल 'डूबना, मिट जाना'

(2) अ. दे. 'डोल' 1981

डूक अ. देश. (दे. पृ. 93, दे. श. को.) घुसना, चूकना. गुज. डूक 1982

डूब अ. अनु. देश. (* डुब्ब; दे. इआलें 5561) पानी या अन्य तरल पदार्थ की सतह से नीचे चला जाना. गुज. डूब 1983

डेरा अ. दे. 'डर' 1984

डेवढ़ अ. ना. भव (डेवढ संज्ञा; सं. ध्यर्ध विशे; प्रा. दिवड्ढ; दे. इआलें 6698) डेढ गुना होना; रोटी का फूलकर डेढ़ परतों में होना, स. कपड़े, कागज़ आदि को कई परतों में मोड़ना 1985

डोर अ. ना. भव (डोर संज्ञा) दे. 'डोरिया' किसीकी डोर पर उसके पीछे चलना. गुज. दोर स. 1986

डोरिया स. ना. भव (डोरी संज्ञा; सं. दवर संज्ञा; प्रा. दवर; दे. इआलें 6225) डोरी से युक्त करना; बाँधकर साथ ले चलना; अनुयायी बनाना. गुज. दोर 1987

डोल अ. ना. भव (सं. दुल; प्रा. डोलाअंत विशे., दे. इआलें 6585) हिलना, दोलित होना. गुज. डोल 1988

डोलिया स. ना. भव (डोली संज्ञा; सं. दोल विशे.; दुल्; प्रा. डोल संज्ञा; दे. इआलें 6582) किसीको डोली में बैठाकर कहीं ले जाना; कोई चीज़ चुपके से लेकर चल देना; अ. चंपत होना 1989

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डोंडा अ. देश. डाँवाडोल रहना; घबराना, स. विकल करना 1990

डौल स. ना. देश. सुडौल बनाना; अ. युक्ति निकालना 1991

ढँक स. दे. 'ढक' 1992

ढंकिल स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 126, हि. दे. श.) ढकेलना 1993

ढंढोर स. ना. देश. (ढंढोरा संज्ञा; दे. पृ. 96, दे. श. को.) ढंढोरा पीटना; ढूँढना. गुज. ढंढोळ; तुल. गुज. ढंढेळो संज्ञा 1994

ढंढोल स. दे. 'ढंढोर' 1995

ढक स. दे. 'ढाँक' 1996

ढकेल स. देश. धक्का देकर आगे बढ़ाना; ठेलकर गिराना. गुज. धकेल 1997

ढकोर स. दे. 'ढकेल' 1998

ढकोस स. अनु. (दे. पृ. 480, मा. हि. को – 2) अत्यधिक मात्रा में खाना या पीना, जल्दी जल्दी खाना या पीना 1999

ढनमन अ. अनु. (दे. पृ. 481, मा. हि. को – 2) लुढकना; चक्कर खाकर गिरना 2000

ढमक अ. अनु. (दे. पृ. 481, मा. हि. को – 2) 'ढमढम' शब्द उत्पन्न होना. गुज. ढमक 2001

ढमला अ. दे. 'ढनमना' 2002

ढय अ. दे. 'ढह' 2003

ढर स. दे. 'ढल' 2004

ढरक अ. दे. 'ढर' 2005

ढरहर अ. दे. 'ढर' 2006

ढल अ. देश. (* ढल्ल; प्रा. ढल्ल; दे. इआलें 5581) ढरकना; बीतना. गुज. ढळ 2007

ढलक अ. दे. 'ढल' 2008

ढह अ. देश. (दे. पृ. 97, दे. श. को.) इमारत आदि का टूट-फूट कर ज़मीन पर गिरना; ध्वस्त होना. गुज. ढस 2009

ढहर अ. दे. 'ढह' 2010

ढाँक स. देश. (* ढंक्; दे. इआलें 5574) छिपाना; आच्छादित करना; अ. छिपना; आच्छादित होना. गुज. ढाँक 2011

ढाँप स. 'ढाप' 2012

ढाँस अ. ना. अनु. (ढाँस संज्ञा; दे. पृ 482, मा. हि. को – 2) सूखी खाँसी खाँसना. गुज. ध्राँस 2013

ढा स. दे. 'ढह' 2014

ढाप स. देश. (* ढप्प; दे. इआलें 5579) ढाँकना 2015

ढिसर अ. देश. फिसल पड़ना; प्रवृत्त होना 2016

ढील स. ना. देश. (ढीला विशे.; * ढिल; प्रा. ढिल्ल; दे. इआलें 5590) ढीला करना; सरकने देना. तुल. गुज. ढीलुं विशे. 'ढीला' 2017

ढुक अ. दे. 'ढूँक' 2018

ढुर अ. दे. 'ढर' 2019

ढुरक अ. दे. 'ढरक' 2020

ढुल अ. देश. (* ढुल्; दे. इआलें 5593) ढरकना; ढोया जाना. गुज. ढळ 2021

ढुलक अ. दे. 'ढुल' 2022

ढूँक अ. भव (सं. ढौक्; प्रा. ढुक्क्; दे. इआलें 5592) घुसना; ताक में बैठना. गुज. ढूंक 'पास जाना' 2023

ढूँढ स. देश. (* ढूण्ढ; प्रा. ढंढल्, ढंढोल्ल; दे. दे. इआलें 6839) गुज. ढूंढ, ढूंड 2024

ढाँक स. दे. 'ढकोस' 2025

ढो स. भव (सं. ढौक्; प्रा. ढोइय विशे. दे. इआलें 5610) बोझ को एक स्थान से दूसरे स्थान पहुँचाना 2026

ढोक अ. अर्धसम (सं. ढौक्; दे. इआलें 5611) झुकना 2027

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढेार अ. देश. (दे. पृ. 99, दे. श. को.) ज़मीन पर लोटना; अनुयायी बनना; स. ढालना 2028

ढेाव स. दे. 'ढेा' 2029

*ढेाह् स. दे. 'ढेा' 2030

ढौंस अ. अनु. आनंद-ध्वनि करना 2031

ढौक स. दे. 'ढकोस' 2032

तँबिया अ. ना. भव (ताँबा संज्ञा; सं. ताम्र विशे. प्रा. तंब; दे. इआलें 5779) किसी पदार्थ का तांबे के रंग का हो जाना; खाद्य पदार्थ का तांबे की गंध से युक्त होना. तुल. गुज. तांबुं, तांबड संज्ञा 2033

*तक स. दे. 'ताक' 2034

तगिया स. दे. 'ताग' 2035

तच अ. देश. तप्त होना; संतप्त होना 2036

तच्छ स. भव (सं. तक्ष्; प्रा. तक्ख्, तच्छ्; दे. इआलें 5620) विदीर्ण करना, फाडना. गु. ताछ 2037

तज स. अर्धसम (सं. त्यज्) छोडना गुज. तज, त्यज 2038

तडक अ. ना. अनु. भव (सं. त्रट संज्ञा; प्रा. तडतडम्त विशे.; तडतडा संज्ञा; दे. इआलें 5988) आँच पाकर 'तड्' की आवाज़ के साथ फटना या टूटना, कर्कश स्वर में बोलना. गुज. तड़क, तडतड 2039

तड़तड़ा (1) अ. अनु. भव. दे. 'तड़क'
(2) अ. अनु. वि. (तराक अर. दे. पृ. 108, हि. दे. श.) 2040

तड़प अ. देश. अत्यंत दुःखी होना, छटपटाना. गुज. तड़प, तलप 2041

तड़फ अ. दे. 'तड़प' 2042

तड़फड़ा अ. अनु. देश. (* तडप्फड़; प्रा. तडप्फड्; दे. इआलें 5634) बेचैन होना; सं. व्याकुल होना, कष्ट पहुँचाना. गुज. तडफड, तरफड 2043

*तड़ाग अ. अनु. (दे. पृ. 498, मा. हि. को - 2) डींग मारना; उछल-कूद मचाना. तुल. गुज. तडाको 'तडाका' 2044

*तड़िपा अ. दे. 'तड़प' 2045

तणक्क अ. अनु. (दे. पृ. 499, मा. हि. को - 2) तणतण शब्द होना; स. तणतण शब्द उत्पन्न करना 2046

तता स. ना. भव (तप्त विशे; सं. तप्; प्रा. तत्त; दे. इआलें 5679) गरम करना. तुल. गुज. तातुं विशे. 'तप्त' 2047

ततार स. ना. भव (ततार संज्ञा; स. तप्त + कारि; दे. इआलें 5680) गरम जल से धोना 2048

*तनक अ. दे. 'तिनक' 2049

तनग अ. दे. 'तिनक' 2050

तनतना अ. भव ('तन्' का द्विरुक्त ? - ह. भा.) बहुत तनकर अपनी शान दिखाने के लिए क्रोध प्रकट करना; झुँझलाना 2051

तन्ना अ. दे. 'तनक' 2052

तप अ. सम (सं. तप्) धूप, आँच आदि से गरम होना; किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए कष्ट सहना. गुज. तप 2053

तपक अ. अनु. देश. (तप्प; दे. इआलें 5444) धड़कना; टपकना 2054

तम अ. दे. 'तमक' 2055

तमक अ. ना. भव (ताम्राक्ष संज्ञा; दे. इआलें 5781) तथा प्रा. तम दे. पृ. 197, हि. दे. श.) आवेश में आना; रुष्ट होना 2056

तमतमा अ. दे. 'तमक' 2057

तर अ. भव सं. तृ; प्रा. तर्; दे. इआलें 5702) पार होना; तैरना; स. पार करना. गुज. तर 2058

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरक (1) अ. अर्धसम (सं. तर्क्) तर्क करना; सोच-विचार करना
(2) अ. दे. 'तड़क' 2059

*तरछा अ. ना. भव (तिरछा विशे.; सं. तिरश्च विशे.; प्रा. तिरिच्छ; दे. इआलें 5822) तिरछी नज़र से किसी की ओर देखना तुल. गुज. तिरछुं, त्रांसुं विशे. 2060

तरज अ. अर्धसम (सं. तर्ज़) डाँटकर बोलना; धमकी देते हुए कहना. तुल. गुज. तरज संज्ञा 'त्रास, भय' 2061

तरफरा अ. दे. 'तड़फड़ा' 2062

तरमा अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 127, हि. दे. श.) नाराज़ होना, किसी पर बिगड़ना 2063

तररा अ. अनु. (दे. पृ. 155 मा. हि. को. २) पेंठ दिखाना, स. मरोडना 2064

तरस अ. अर्धसम (सं. तृष्) किसी वस्तु के लिए व्याकुल होना. गुज. तरस, तलस 2065

तराश स. ना. वि. (तराश संज्ञा; फा.) काटना, फाँक-फाँक करना 2066

तरास (1) स. दे. 'ताँस'
(2) स. दे. 'तराश' 2067

तरिया (1) स. ना. भव (तरे अव्य; तरा संज्ञा; सं. तल संज्ञा; प्रा. तल; दे. इआलें 5731) नीचे करना; ढाँकना; अ. तले बैठना. तुल. गुज. तळ, तळियुं संज्ञा 'तल'
(2) स. ना. वि. (तर विशे. फा.) पानी आदि के छींटे देकर तर करना 2068

तरेर स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 127, हि. दे. श.) तिरछे देखना; थपेडा देना. तुल. गुज. तरेराट संज्ञा 'चीख, क्रोध का आवेग' 2069

तर्क अ. दे. 'तरक' 2070

*तर्ज अ. दे. 'तरज' 2071

तल स. भव (सं. तल्; प्रा. तल्; दे. इआलें 5736) घी या तेल में पकाना. गुज. तळ 2072

तलफ अ. देश. (दे. पृ. 101, दे. श. को.) पीड़ा से व्याकुल होना, छटपटाना. गुज. तलफ, तलप 2073

*तलमला अ. दे. 'तिलमिला' 2074

तलवास अ. दे. 'तलासि' 2074 (अ)

तलाश स. ना. वि. (तलाश संज्ञा; फा.) तलाश करना; किसि बात या विषय का अनुसंधान करना. तुल. गुज. तलाश संज्ञा 2075

तलासि स. ना. देश. (तलवाँसा संज्ञा; * तलपादघर्ष; दे. इआलें 5739) पाँवपच्ची करना, दबाना. गुज. तळांस 2076

तव अ. भव (सं. तप्; प्रा. तव्; दे. इआलें 5671) बहुत गरम होना. गुज. तव 2077

तह अ. ना. देश. (तेह संज्ञा) क्रुद्ध होना; तेहा दिखाना 2078

तहसील स. ना. वि. (तहसील संज्ञा; अर.) मालगुज़ारी, चंदा आदि वसूल करना 2079

तहा स. ना. वि. (तह संज्ञा; फा.) तह लगाना, लपेटना 2080

तहिया स. दे. 'तहा' 2081

ताँक अ. दे. 'ताक' 2082

ताँवर अ. ना. (ताँवर संज्ञा) ताप से युक्त होना; बुखार होना. तुल. गुज. तावड संज्ञा 2083

ताँस स. भव (सं. त्रस्; प्रा. तास्; दे. इआलें 6014) धमकाना; डराना 2084

ता स. भव. (सं. तप्; प्रा. ताव्; दे. इआलें 5771) तपाना. गुज. ताव 2085

ताउ स. दे. 'ता' 2086

ताक स. भव (सं. तर्क्; प्रा. तक्क्; दे. इआलें 5716) देखना, स्थिर दृष्टि से देखना. गुज. ताक 2087

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताग स. ना. देश. (तागा संज्ञा; * त्रागा; प्रा. तग्ग संज्ञा; दे. इआलें 6010) रजाई आदि में दूर दूर पर सिलाई करना. तुल. गुज. त्रागो, तागडो संज्ञा 'धागा' ताग 'गहराई नापना' 2088

*ताछ अ. ना. देश. (ताछन संज्ञा) वार बचाने के लिए शत्रु के बगल से होकर आगे बढ़ना 2089

ताड़ स. भव (सं. तड्; प्रा. ताड्; दे. इआलें 5633 तथा 5752) भाँपना, मारना. गुज. ताड 'मारना' 2090

तान स. भव (सं. तन्; प्रा. तानिअ विशे.; दे. इआलें 5669 तथा 5762) खींचकर कड़ा करना; खड़ा करना. गुज. ताण 2091

ताप स. दे. 'तप'. ताप से अपना शरीर या अंग गरम करना. गुज. ताप 2092

ताम स. देश. (दे. पृ. 102, दे. श. को.) खेत जोतने के पूर्व खेत की घास उखाड़ना 2093

तिग स. देश. (दे. पृ. 102, दे. श. को.) देखना, भाँपना 2094

तिडल स. देश. खींचना 2095

तिनक अ. ना. भव (तृण्ण विशे.; सं. तृद्; दे. इआलें 5908) झल्लाना; रूठना; धडकना 2096

तिनग अ. दे. 'तिनक' 2097

तिनख अ. दे. 'तिनक' 2098

तिनतिना अ. दे. 'तिनक' 2099

तिमा स. देश. (दे. पृ. 548, मा. हि. को – 2) भिगोना 2100

तिर अ. दे. 'तर' 2101

तिरछा अ. दे. 'तरछा' 2102

तिरतिरा अ. अनु. (दे. पृ. 549, मा. हि. को – 2) द्रव पदार्थ का बूँद बूँद करके टपकना 2103

तिरमिरा (1) अ. ना. देश. (तिरमिरा संज्ञा; * तिरमिरि; दे. इआलें 5824) (तिरमिरा के रोगी की) अधिक प्रकाश के कारण आँखें चौंधियाना

(2) अ. दे. 'तिलमिला' 2104

तिरवरा अ. दे. 'तिरमिरा' 2105

तिरास अ. ना. अर्धसम (सं. त्रास) भयभीत या त्रस्त होना; स. भयभीत करना. तुल. गुज. त्रास संज्ञा 2106

तिलक (1) अ. देश. गीली मिट्टी या ज़मीन का सूखकर फटना

(2) अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 128, हि. दे. श.) फिसलना 2107

तिलछ अ. देश. (प्रा. तल्लिच्छ; दे. पृ. 430; पा. स. म.) व्याकुल होना, छटपटाना 2108

तिलमिला अ. दे. 'तिरमिरा' 2103

तिलौंछ स. भव (सं. तैल + प्रोक्ष; दे. इआलें 5958 तथा 9007) किसी चीज़ पर तेल लगाना या रगड़ना; चिकना करना 2110

तिष्ठ अ. सम. (सं. तिष्ठ्) स्थिर रहना 2111

तिसा अ. ना. भव (तृषा; सं. तृष्; प्रा. तिसा संज्ञा; दे. इआलें 5936) प्यासा होना. तुल. गुज. तरस 'प्यास' 2112

तुँदिया अ. ना. भव (तुंद, तोंद, संज्ञा; सं. तुण्ड संज्ञा; प्रा. तुंद; दे. इआलें 5858) तोंद बढ़ना; स. तोंद बढ़ाना. तुल. गुज. दुड, दुन्द संज्ञा 2113

तुअ अ. देश. चुना; गर्भपात होना 2114

तुक अ. दे. 'तक' 2115

*तुट्ठ स. ना. भव (सं. तुष्ट, तुष्; प्रा. तुट्ठ विशे; दे. इआलें 5895) संतुष्ट होना. गुज. तूठ, टूंठ 2116

तुतरा अ. दे. 'तुतला' 2117

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुतला अ. अनु. शब्दों तथा वर्णों का अस्फुट और कुछ का कुछ उच्चारण करते हुए बोलना. गुज. तोतळा 2118

तुन स. दे. 'धुन' 2119

तुनक (1) अ. ना. वि. (तुनक विशे.; फा.) छोटी सी बात से अप्रसन्न होना
(2) अ. देश. उँगली से डोर को झटका देना 2120

तुभ अ. देश. स्तब्ध होना 2121

तुरप स. भव (सं. त्रुप्; दे. इआलें 6068) बखिया करने के लिए लंबाई के बल सीधे सीना. गुज. टूप 2122

*तुरा अ. देश. आतुर होना; स. तुडाना 2123

तुरुप स. दे. 'तुरप' 2124

तुर्शा अ. ना. वि. (तुर्श विशे; फा.) खट्टा हो जाना; स. खट्टा करना 2125

तूँब स. दे. 'तूम' 2126

तू अ. भव (सं. त्रुप्; दे. इआलें 6067) चूना गिरना. गुज. तरवा 'प्राणियों का गर्भपात हो जाना' 2127

तूख अ. देश. तुष्ट होना; स. तुष्ट करना 2128

तूट अ. दे. 'टूट' 2129

तूठ अ. ना. भव (तुष्ट विशे.; सं. तुष्; प्रा. तुट्ठ विशे.; दे. इआलें 5895) गुज. तूठ, टूँठ 2130

तूठा अ. दे. 'तूठ' 2131

तूम स. भव. (सं. तुब्; दे. इआलें 5870) उँगलियों से नोच-नोच कर रुई के रेशों को अलग करना; पीटना 2132

तूल (1) स. देश. गाड़ी के पहिए निकालकर उनके भीतरी छेद में तेल डालना; औंगना
(2) अ. देश. तुलना करना 2133

*तूस अ. भव (सं. तुष्; प्रा. तुस्स्; दे. इआलें 5897) संतुष्ट होना; सं. संतुष्ट करना 2134

*तृपिता अ. देश. तृप्त होना; स. तृप्त करना. तुल. गुज. तृप्त विशे. 2135

तृप्ता अ. ना. सम. (सं. तृप्त विशे.) तृप्त होना; तृप्त करना 2136

*तेज स. दे. 'तज' 2137

तेड़ स. दे 'टेर' 2138

तेहरा स. ना. भव (तेहरा विशे; * त्रिधार; प्रा तिहा; दे. इआलें 6027) तीन तहों में करना; तीसरी वार करना 2139

तै अ. देश. तप्त होना; दुःखी होना; स. ताना 2140

तैर अ. भव (सं. तृ; प्रा. तर; दे. पृ.428, पा. स. म.) किसी जीव का हाथ-पाँव आदि चलाते हुए पानी पर चलना; उतराना. गुज. तर 2141

*तोट अ. दे. 'टूट' 2142

तोतरा अ. दे. 'तुतला' 2143

तोप स. भव (सं. तुप्; दे. इआलें 5971) गाड़ना, छिपाना 2144

तोल (1) स. भव (सं. तुल्; प्रा. तोल्; दे. इआलें 5970) किसी पदार्थ का परिमाण या भारीपन जानने के लिए उसे तराजू या काँटे पर रखना: गुज. तोळ, तोल
(2) स. देश. गाड़ी की धुरी में तेल लगाना 2145

*तोष स. सम. (सं. तुष्) तृप्त करना; अ. तृप्त होना. गुज. तोष 2146

तौंक अ. दे. 'तौस' 2147

तौंस अ. भव (सं. तपस्यू; दे. इआलें 5675) तप जाना; गरमी से झुलस जाना 2148

तौल स. दे. 'तोल' 2149

तौस स. दे. 'तौंस' 2150

त्याग स. ना. सम (त्याग संज्ञा; सं. त्यज्) त्याग करना 2151

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*त्याज स. दे. 'त्याग' 2152

त्यौस अ. ना. सिर घूमना 2153

*त्रस अ. सम (सं. त्रस्) त्रस्त होना; स. भयभीत करना 2154

*त्रिपिता अ. दे. 'तृपिता' 2155

त्रिय अ. देश. तरना 2156

ूट अ. सम. (स. त्रुट्) टूटना 2157

त्वचक अ. ना. देश. (त्वचा संज्ञा) वृद्धावस्था के कारण शरीर का चमड़ा झूलना, पुराना पड़ना 2158

थँभ अ. दे. 'थम' 2159

थक अ. देश. (* स्थक्क; प्रा. थक्क विशे.; दे. इआलें 13737) श्रम के कारण शिथिल होना; तंग आना. गुज. थाक 2160

थप स. भव (सं. स्था; प्रा. थप्पिअ; दे. इआलें 13750) स्थापित करना; बैठाना; अ. स्थापित होना. गुज. थाप 2161

थपक स. अनु देश. प्यार या लाड़-चाव से किसी की पीठ आदि पर हथेली से हलका करना. गुज. थपकाव 2162

थपथपा स. दे. 'थपक' 2163

थपेड़ स. ना. देश. (थपेड़ा संज्ञा) थपेड़ा लगाना; आघात करना. तुल. गुज. थपाड़, थपाट संज्ञा 2164

थर स. अर्धसम (सं. स्तृ; दे. इआले 13687) हथौड़ी से धातु को टीपना. गुज. थर 'थर चढाना, अनाज की सुरक्षा के लिए घास बिछाना' 2165

थरक स. अनु. देश. (* थर; दे. इआलें 6092) भय से काँपना. गुज. थरक 2166

थरथरा अ. दे. 'थरहरा' 2 67

थरहरा अ. देश. (* थर; प्रा. थरहर् दे. इआलें 6092) काँपना. गुज. थरथर, थथर 2168

थर्रा अ. दे. 'थरहरा' 2169

थलक अ. देश (अ. व्यु. दे. पृ. 92, तथा 128, हि. दे. श.) मोटाई या ढीलेपन के कारण चलने आदि में हिलना; काँपना 2.70

थलथला अ. दे. 'थलक' 2171

थलरा अ. दे. 'थलक' 2172

थसक अ. देश. नीचे की ओर दबना या बैठना 2173

थसर अ. देश (अ. व्यु. दे. पृ. 128, हि. दे. श.) शिथिल होना 2174

*थह स. दे. 'थाह' 2175

थहर अ. दे. 'थर्रा' 2176

थहरा अ. दे. 'थर्रा' 2177

थाँब स. दे. थाँभ 2178

थाँभ स. दे. थाम 2179

थाक अ. दे. 'थक' 2180

थान स. भव (सं. स्था; प्रा. थाण, ठाण संज्ञा; दे. इआलें 13753) तय करना 2118

थाप (1) स. ना. देश. (थाप संज्ञा; थप्प; दे. इआलें 6091) स्थापित करना

(2) स. भव (सं. स्था; प्रा. थप्पिअ विशे. दे. इआलें 13759) दे. 'थप' गुज. थाप 2182

थाम स. भव (सं. स्तम्भ्; प्रा. थंभ्, ठंभ्; दे. इआलें 13683) अवरुद्ध करना; सँभालना. गुज. थाम 2183

थाम्ह स. दे. 'थाम' 2184

थाह स. ना. देश. (थाह लेना; गहराई का पता लगाना 2185

थिर अ. ना. भव (थिर विशे.; सं. स्थिर विशे.; प्रा. थिर; दे. इआलें 13771) किसी द्रव पदार्थ का हिलना-डोलना बंद होना; दे. 'निथर' तुल. गुज. थीर विशे.; ठर 'जमना'; ठेर 'तय करना' 2186

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थिरक अ. अनु. देश. (दे. पृ. 107, दे. श. को.) चंचलता के साथ पैरों को उठाते या हिलाते हुए नाचना; आगे-पीछे डोलना. गुज. थरक 2187

थुड अ. ना. भव (थोड़ा विशे; सं. स्तोक संज्ञा; प्रा. थोग; दे. इआलें 13720) कम पड़ना. तुल. गुज. थोडुं विशे. 2188

थुतकार स. दे. 'थुथकारा' 2189

थुथकार स. ना. अनु. भव (थुथकार संज्ञा; सं. थुत्कार संज्ञा; प्रा. थुत्कार; दे. इआलें 6103) थू थू करते हुए किसी को निंद्य बतलाना. तुल. गुज. थू थू संज्ञा 2190

थुथला अ. ना. अनु. भव (सं. थू थू; दे. इआलें 6104) दे. 'थुथकार' 2191

थुथा अ. ना. देश. (थूथन संज्ञा * थुत्थ; दे. इआलें 5853) थूथन फुलाना, नाराज होकर मुँह फुलाना 2192

थुपर स. देश. महुए की बालों का ढेर इस उद्देश्य से लगाना कि उनमें गर्मी आवे और वे कुछ पक जायँ 2193

थुर (1) अ. दे. 'थुड़'
(2) स. देश. कूटना, पीटना 2194

थुरथुरा अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 128, हि. दे. श.) कंपित होना 2195

थूँक स. दे. 'थूँक' 2196

थूक अ. ना. देश. (थूक संज्ञा; *थुक्क; प्रा. थुक्क संज्ञा; दे. इआलें 6097) मुँह से थूक बाहर निकालना या फेंकना; धिक्कारना; स. उगलना; निंदा करना. गुज. थूंक 2197

थूर स. दे. 'थुर' 2198

थेप स. दे. (* स्तुप्; दे. इआलें 13723) मिट्टी आदि के लोंदे को किसी वस्तु पर इस प्रकार रखना कि वह उस पर चिपक जाय; आरोपित करना. गुज. थोप 2199

दंड स. दे. 'दाँड' 2200

दंदा अ. देश. गरमी के प्रभाव में आना; स. सरदी से बचने के लिए आग के पास बैठकर कंबल, रजाई आदि ओढकर अपना शरीर गरम करना 2201

दंश स. सम (सं. दंश्) दाँत से काटना; डंक मारना. गुज. दंश 2202

दगदगा अ. अनु. चमकना; स. चमकाना 2203

दगध स. ना. अर्धसम (सं. दग्ध विशे.) दग्ध करना; अ. जलना; दुःखी होना 2204

दगल अ. ना. वि. (दगल संज्ञा; अर.) छल करना. तुल. गुज. दगल संज्ञा 2205

दच अ. देश. (दे. पृ. 108, दे. श. को.) गिरना 2206

दचक अ. अनु. (दे. पृ. 18, मा. हि. को – 3) ठोकर या धक्का खाना; स. धक्का लगाना 2207

दज्झ अ. भव (सं. दह, प्रा. दज्झ; दे. पृ. 439, सा. गु. को. तथा दे. इआलें 6248) दहन होना; जलना. गुज. दाझ 2208

दड़ोक अ. अनु. दहाड़ना 2209

*दढ़ अ. ना. भव (सं. दग्ध विशे; प्रा. दद्ध; दे. इआलें जलना) गुज. दाध 2210

दत (1) अ. देश. किसी काम में दत्तचित्त होकर लगना.
(2) अ. दे. 'डट' 2211

दध अ. दे. 'दढ़' 2212

दधक स. दे. 'दाध' 2213

दनदना स. अनु. देश (दे. पृ. 109, दे. श. को) 'दन-दन' शब्द होना; स. 'दन-दन' शब्द करना; खुशी मनाना 2214

दपट स. दे. 'डपट' 2215

दफना स. ना. वि (दफ़न संज्ञा अर) मुरदे को जमीन में गाड़ना; किसी चीज़ को जमीन में गाड़ना. गुज. दफनाव 2216

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दफरा स. देश. (दे. पृ. 109, दे. श. को.) किसी नाव को दूसरी नाव के साथ टक्कर लगने से बचाना 2217

दब अ. ना. देश. (दाब संज्ञा; *दब्ब; दे. इआलें 6173) भार के नीचे आकर ऐसी स्थिति में होना कि इधर-उधर न हो सके; दाब में आना. गुज. दबा 2218

दबक अ. देश. भय के मारे सिमटकर तंग जगह में छिपना; स. पीटकर लंबा करना 2219

दबोच स. देश. झपटकर दबा बैठना; छिपाना 2220

*दम (1) अ. ना. वि. (दम संज्ञा; फा.) साँस फूलने लगना, थक जाना. तुल. गुज. दम संज्ञा (2) स. सम (सं. दम्) दमन करना. गुज. दम 2221

दमक अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 129, हि. दे. श.) चमकना; सुलग उठना. गुज. दमक 2222

दमदमा स. ना. भव (सं. दमदम; दे. पृ. 193, हि. दे. श.) शोरगुल करना; 'दमदम' ध्वनि करना. तुल. गुज. धमधमा 2223

दमस स. देश. दमन करना; आघात करना 2224

*दया अ. ना. देश (दया संज्ञा) दयापूर्ण व्यवहार करना; दयालु होना. तुल. गुज. दया संज्ञा 2225

दर स. दे. 'दल' गुज. दळ 2226

दरक अ. भव. (सं. दृ; दे. इआलें 6192) खिंचाव या दबाव से फटना, मसकना 2227

दरकच स. अनु (दे. पृ. 27, मा. हि. को - 3) हलके आघात से थोड़ा दबाना; कूटकर मोटे मोटे टुकड़े करना; अ. उक्त क्रिया से दबना 2228

दर-गुजर अ. ना. वि. (दर-गुजर विशे; फा.) उपेक्षापूर्वक छोड़कर अलग होना; बाज आना. तुल. गुज. दर-गुजर संज्ञा. 2229

दरदरा स. ना. अनु. (दरदरा विशे;) इस प्रकार कोई चीज पीसना जिससे उसके कण दरदरे बनते हों 2230

*दरप अ. अर्धसम (दर्प संज्ञा; सं. दृप्) दर्प से युक्त होना; अभिमान करना 2231

दरबरा स. दे. 'दरदरा' 2232

दरर स. दे. 'दर' 2233

दरशा स. दे. 'दरसा' 2234

दरसा स. अर्धसम (सं. दर्शय्) दिखलाना; समझाना; अ. देख पड़ना. गुज. दरशाव, दरश 2235

दरार अ. ना. भव (दरार संज्ञा; सं. दृ; दे. इआलें 6192) विदीर्ण होना; स. फाडना 2236

दरेर स. दे. 'दरर' 2237

दर्रा अ. अनु (दे. पृ. 32, मा. हि. को - 2) तेजी से और बेधड़क चलते हुए आगे बढ़ना 2238

दर्शा स. दे. 'दरसा' 2239

दल स. भव (सं. दल्; प्रा. दल्; दे. इआलें 6216) चक्की में डालकर दो या अधिक टुकड़े करना; कुचलना. गुज. दळ 2240

दलक अ. दे. 'दल' किसी चीज के ऊपर के दल या मोटी तह का रह-रहकर कुछ ऊपर उठते और नीचे गिरते हुए काँपना; डर के मारे काँपना 2241

दलमल अ. देश. किसी चीज को खूब दलना और मलना 2242

*दव अ. देश. जलना; स. जलाना 2243

*दष्ष स. देश. देखना 2244

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दह अ. भव (सं. दह्; प्रा. दह्; दे. इआलें 6245) जलना; बहना. गुज. दह 2245

दहक अ. दे. 'दह' लपट फेंकते हुए जलना; तप्त होना 2246

दहपट स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 129, हि. दे. श.) ढहाना, कुचल डालना 2247

दहबट स. दे. 'दहपट' 2248

दहर अ. दे. 'दहला' 2249

दहल अ. देश. डरकर काँप उठना. 2250

दहाड़ अ. ना. दे. 'धाड़' 2251

दाँ स. ना. भव (सं. दामन संज्ञा; दे. इआलें 6285) डंठल से दाना अलग करने के लिए फसल को बैलों से रौंदवाना. गुज. दाम 'बाँधना' 2252

दाँड स. ना. भव (सं. दण्ड संज्ञा; प्रा. दंडिअ विशे; दे. इआलें 6136) दंड करना. गुज. दंड 2253

दाँत अ. ना. भव (सं. दन्त संज्ञा; प्रा. दंत; दे. इआलें 6152) (पशुओं का) जवान होना; (हथियार का) कुंठित होना. तुल. गुज. दाँत संज्ञा. 2254

दाँव स. दे. 'दाँ' 2255

दाग स. ना. वि. (दाग़ संज्ञा; फा.) जलाना; तपाये हुए लोहे या अन्य धातु की मुद्रा से किसी के शरीर पर विशेष प्रकार का चिह्न अंकित करना. तुल. गुज. दाघ संज्ञा 2256

दाज अ. दे. 'दाझ' 2257

दाझ अ. भव (सं. दह्; प्रा. दज्झ; दे. इआलें 6248) दग्ध होना, जलना; स. जलाना. गुज. दाझ 2258

दाट स. दे. 'डाँट' अ. जान पड़ना, प्रतीत होना 2259

दाढ़ अ. दे. 'धाड़' 2260

*दाध स. ना. भव (दाध संज्ञा; सं दग्ध विशे, दह्; प्रा. दर्ध्; दे. इआलें 6121) जलाना. गुज. दाध 2261

दाप स. ना. भव (दाप संज्ञा; * द्रप्प; प्रा. दप्प संज्ञा; दे. इआलें 6619) दबाना; रोकना 2262

दाब स. ना. देश. (दाब संज्ञा; * दब्ब; दे. इआलें 6173) भार या दबाव के नीचे लाना; दमन करना. गुज. दाब, दबाव 2263

दाव स. भव (सं. दम्; प्रा. दामिय विशे; दे. इआलें 6284) दमन करना; मिटा देना. गुज. दाम 'बाँधना' 2264

दिढ़ा स. ना. भव (दृढ विशे; सं. दृम्ह्; प्रा. दिढ, दढ विशे; दे. इआलें 6508) दृढ करना; पक्का करना. गुज. दड 'दृढ और समतल करना' 2265

*दिप अ. दे. 'दीप' 2266

दिस अ. भव (सं. दृश्; प्रा. दिस्स्; दे. इआलें 6516) दिखना. गुज. दीस 2267

दीठ अ. ना. भव (सं. दृष्ट भू. कृ.; प्रा. दट्ठ, देखना दिट्ठ; दे. इआलें 6518) तुल. गुज. दीठुं भू. कृ. 'देखा' 2268

*दीप अ. भव. (सं. दीप्; प्रा. दिप्प्; दे. इआलें 6362) दीप्त होना; चमकना; स. चमकाना. गुज. दीप 2269

दीस अ. दे. 'दिस' 2270

दुक अ. देश (दे. पृ. 81, मा. हि. को. – 3) लुकना, छिपना 2271

दुक्क अ. देश. किसी को दोष देना 2272

दुख अ. ना. भव (दुःख संज्ञा; सं. दुःख्; प्रा. दुक्ख; दे. इआलें 6376) दर्द करना, पीड़ा होना. गुज. दुख 2273

दुग अ. देश. छिपाना 2274

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुचक अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 129, हि. दे. श.) दबना 2275

*दुझार स. देश. झटकारना, झाडना 2276

दुतकार स. अनु. (दे. पृ. 84, मा. हि. को – 3) 'दुत-दुत' कहकर तिरस्कार करना; धिक्कारना. गुज. धुतकार. 2277

दुदला स. दे. 'दुतकार' 2278

दुदकार स. दे. 'दुतकार' 2279

दुनर अ. दे. 'दुनव' 2280

दुनव अ. ना. भव (दोनों विशे; सं. द्व. विशे; प्रा. दो; दे. इआलें 6648) नरम या लचीली चीज का इस प्रकार झुकना कि उसके दोनों छोर एक दूसरे से मिल जाय; लचकर दोहरा हो जाना; स. लचाकर दोहरा करना. गुज. बेवड तुल. गुज. बे विशे 'दो' 2281

दुबक अ. दे. 'दबक' 2282

दुबरा अ. दे. 'दुबला' 2283

दुबला अ. ना. भव (दुबला विशे; सं. दुर्बल विशे; प्रा. दुब्बल; दे. इआलें 6438) दुबला होना. तुल. गुज. दूबळुं 2284

दुरदुरा स. अनु. दुरदुर करते हुए तिरस्कारपूर्वक दूर करना 2285

दुराना अ. ना. भव (दूर विशे; सं. दूर अन्य; प्रा. दूर; दे. इआलें 6495) दूर होना, हटना; स. दूर करना; छिपाना. तुल. गुज. दूर विशे. 2286

दुरिया अ. दे. 'दुरा' 2287

दुल अ. भव. (सं. दुल्; प्रा. डुल्; दे. पृ. 373, पा. स. म. तथा इआलें 6453) हिलना, डोलना. गुज. डूल 'मिट टाना' 2288

दुलक अ. दे. 'दलक' 2289

दुलख स. देश. बार-बार बतलाना; बार-बार दोहराना; अ. मुकर जाना 2290

दुलरा स. दे. 'दुलार' 2291

दुलार स. ना. भव (सं. दुर्लालित; प्रा. दुल्लालिय; ह. भा.) बच्चों से दुलार करना; बहुत दुलार करके बच्चों को बिगाड़ना. तुल. गुज. दुलारो संज्ञा 'दुलारा पुत्र' 2292

दुह स. भव (सं. दुह्; प्रा. दुह्; दे. इआलें 6476) स्तन और चूचुक को उँगलियों से दबाकर दूध निकालना; सार भाग निकालना. गुज. दुह, दोह 2293

दुहर अ. दे. 'दोहर' 2294

दुहरा स. दे. 'दोहर' 2295

दूँद अ. ना. देश. (दूँद संज्ञा) उपद्रव करना; जोर का शब्द करना 2296

दूख स. देश. किसी पर दोष लगाना; अ. नष्ट होना; दुखना 2297

दूस स. देश. कष्ट देना. गुज. दूझ 'दूध देना, रीसना' 2298

दूभ स. भव (सं. दभ्; प्रा. दूभ्; दे. इआलें 6175) दुःखी करना, दिल जलाना. गुज. दूभ, दूभव 2299

दूम अ. देश. हिलना-डोलना 2300

दूष स. सम (सं. दुष) दोष लगाना; दूषित करना. गुज. दूष 2301

दूह स. दे. 'दुह' 2302

दृढा स. ना. सम (सं. दृढ विशे.) दृढ करना; स्थिर करना. तुल. गुज. दृढ विशे. 2303

दे स. भव (सं. दा; प्रा. दा; दे. इआलें 6141) किसी वस्तु पर से अपना स्वामित्व हटाकर दूसरे को उसका स्वामी बनाना; मारना. 2304

देख स. भव (सं. दृश्; प्रा. देक्ख; दे. इआलें 6507) नेत्रों द्वारा किसीका ज्ञान प्राप्त करना; खोजना. गुज. देख. 2305

दोंक अ. अनु. (दे. पृ. 122, मा. हि. को – 3) गुर्राना 2306

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोच स. ना. देश. (दोच संज्ञा) दबाव डालना 2307

दोद स. देश. किसीकी कही हुई बात सुनकर भी यह कहना कि तुमने ऐसा नहीं कहा था 2308

दोष स. ना. सम (दोष संज्ञा; सं. दुष्) किसी पर दोषारोपण करना. तुल. गुज. दोष संज्ञा 2309

दोस अ. ना. भव (दोष संज्ञा; सं. दुष्; प्रा. दोस; दे. इआलें 6589) दोष देना. तुल. गुज. दोष संज्ञा 2310

*दोह स. देश. दोष लगाना; स. दूहना गुज. दोह ' दुह ' 2311

दोहर अ. ना. देश. (* दुधार; दे. इआलें 6407) दो परत होना, दोहरा होना; स. दोहरा करना. तुल. गुज. दोहरो संज्ञा 'दोहा' 2312

दोहरा स. दे. ' दोहर ' 2313

दौक (1) अ. दे. ' दमक '
(2) अ. देश. (दे. पृ. 112, दे. श. को.) गुर्राना, डाकना 2314

दौड अ. भव (सं. द्रु; प्रा. दव्; दे. इआलें 6624) अति वेगसे चलना; हैरान होना. गुज. दोड 2315

दौर अ. दे. ' दौड ' 2316

*द्रवड अ. ' दौड ' 2317

द्रव अ. सम (सं. द्रव्) द्रवित होना; बहना 2318

धँधला अ. ना. भव (धाँधल संज्ञा. सं. धन्ध संज्ञा; प्रा. धंधा संज्ञा; दे. इआलें 6727) छल-छंद करना; जल्दी मचाना. तुल. गुज. धांधल, धंधो संज्ञा 2319

* धँव स. दे. ' धौंक ' 2320

धँस अ. भव (सं. ध्वम्स्; प्रा. धंसू; दे. इआलें 6896) किसी कड़ी या नुकीली वस्तु का दबाव पाकर भीतर घुसना; नीचे खसकना. गुज. धस ' जोश के साथ आगे बढ़ना ' 2321

धकधक अ. दे. ' धकधका ' 2322

धकधका अ. अनु. देश. (*धुक्क; प्रा. धुक्का-धुक्कू; दे. इआलें 6820) भय, उद्वेग आदि के कारण हृदय का धक-धक शब्द करना; (आग) दहकना; स. (आग) दहकाना. गुज. धकधक 2323

धकपका अ. अनु. (दे. पृ. 145, मा. हि. को - 3) जी में दहलना; स. किसी को दहलाने में प्रवृत्त करना 2324

धकिआ स. दे. ' धकिया ' 2325

धकिया स. ना. देश. (धक्का संज्ञा) धक्का देना; आगे बढने के लिए प्रेरित करना. गुज. धकाव 2326

धकेल स. ना. देश. (* धक्क; दे. इआलें 6701) धक्का देना; धकेलना. गुज. धकेल 2327

धगधग अ. अनु. देश. (* धग्ग; प्रा. धगधग्; दे. इआलें 6704) धडकना, चमकना. गुज. धगधग ' जोरों से जलना ' 2328

धस अ. देश. (दे. पृ. 146, दे. श. को - 3) शान्त होना, ठहरना. गुज. धस ' जोर से आगे बढना ' 2329

धचक अ. देश. (दे. पृ. 146, दे.श. को - 3) दलदल में धँसना, संकट में आना; स. हलका आघात करते हुए दबाना 2330

धडक अ. अनु. देश (* धड, प्रा. धडहडिअ संज्ञा; दे. इआलें 6711) ' धड-धड़ ' शब्द

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्पन्न होना; हृदय का स्पंदन करना. गुज. धडक 2332

धडधड़ा अ. दे. 'धड़क' 2333

धतकार स. दे. 'दुतकार' 2334

धधक अ. अनु. देश. (* धग्ग; प्रा. धगधग्; दे. इआलें 6704) आग का इस प्रकार जलना कि उसमें से उँची लपटें उठें, धायँ धायँ जलना. गुज. धधक 2335

धधा अ. दे. 'धधक' 2336

धना अ. भव (सं. धन्; दे. इआलें 6719) साँड़ आदि के संयोग से गाय, भैंस आदि का गर्भवती होना; स. गाय, भैंस आदि का गर्भाधान कराना. 2337

धप अ. देश (* धप्पः दे. इआलें 6729) वेग से आगे बढ़ना; पीटना. गुज. धप 'वेग से आगे बढ़ना' 2338

धबक अ. अनु. (दे. पृ. 153, मा. हि. को 3) चमकना. गुज. धबक 'धडकना' 2339

धमक अ. ना. भव (सं. धमनी संज्ञा; प्रा. धमधम्; दे. इआलें 6735) 'धम' शब्द उत्पन्न करते हुए गिरना; झपटना. गुज. धमक 2340

धम स.दे. 'धौंक' 2341

धमका स. देश (* धमक्कः दे इआलें 6736) धमकी देना, अहित की चेतावनी देना. गुज. धमकाव 'डाँटना' 2342

धमधमा अ. दे. 'धमक'; कूद फाँद या चल-फिर कर धम-धम शब्द उत्पन्न करना; अ. धम-धम शब्द होना. गुज. धमधमाव 2343

धर स. भव (सं. धृ; प्रा. धर्; दे. इआलें 6747) पकड़ना; रखना. गुज. धर 2344

धरष अ. दे. 'धरस' 2345

धरस स. सम (सं. धर्ष्,) अच्छी तरह कुचलते या रौंदते हुए दबाना; दुर्दशा करना; अ. दबना, सहम जाना 2346

धवल स. ना. सम (सं. धवल विशे.) उज्ज्वल करना; चमकाना; अ. उज्जवल होना. गुज. धोळ 2347

धस दे. 'धँस' 2348

धसक अ. दे. 'धँस' 2349

धसमसा अ. दे. 'धँस' 2350

धाँक अ. दे. 'धाक' 2351

धाँग स. देश. कुचलना. रौंदना 2352

धाँध स. देश. (दे. पृ. 136, मा. हि. को. 3) बंद करना, ठूँस-ठूँसकर खा लेना 2353

धाँस अ. अनु. (दे. पृ. 164, मा. हि को. 3) घोडे आदि पशुओं का खाँसना, ढाँसना. तुल गुज. धांस 'सूखी खाँसी' 2354

धा अ. दे. 'धाव' 2355

धाक अ. ना. देश. (धाक संज्ञा; धाक्क; दे. इआलें 6769) धाक जमाना; किसी धाक से प्रभावित होना. तुल. गुज. धाक संज्ञा 2356

धाड अ. देश. (धाड्; प्रा. धाड्; दे. इआलें 6771) दहाड़ना; बहाना; धडना 2357

धाध (1) स. देश. देखना
(2) अ. दे. 'धाँध' 2358

धाप अ. भव (सं. धैं; दे. इआलें 6890) तृप्त होना. गुज. धरा 2359.

धार स. भव (सं. धृ; प्रा. धार्; दे. इआलें 6791) धारण करना; ऋण लेना. गुज. धार 'अनुमान करना' 2360

धाव अ. भव (सं. धाव् प्रा. धाव्; दे. इआलें 6802) तेजीसे चलना, दौडना. गुज. धा 2361

धिंगा अ. ना. देश. (धिंगा विशे; *डग्ग; दे. इआलें 5524) धींगा-धींगी करना; स. किसीको धींगा-धींगी में प्रवृत्त करना 2362

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धिआ सं. अर्धसम (सं. ध्यै; दे. इआलें 6812) ध्यान करना. गुज. ध्यान 2363

धिक अ. भव (सं. दह्; दे. इआलें 6809) उपद्रव करना; गरम होना. गुज. धीक, धीख 2364

धिकल स. दे. 'धकेल' 2365

धिक्कार स. ना. भव (धिक्कार संज्ञा; धिक्कार; प्रा. धिक्कार; दे इआलें 6808) अनुचित बात के लिए किसी के प्रति निंदा और घृणासूचक शब्दों का प्रयोग करना; लानत करना. गुज. धिक्कार 2366

धिख स. देश. धमकाना. गुज. धख 'तेजी से जलना' 2367

धिया अ. दे. 'ध्या' 2368

धिरा (1) स. देश. भयभीत करना
(2) स. देश. धीरज दिलाना; अ. धीरज रखना; मंद पडना 2369

धीज स. देश. ग्रहण करना; बिश्वास करना अ. धैर्य से युक्त होना. 2370

धुँआ अ. दे. 'धुआँ' 2371

धुँकार अ. ना. देश. (धुँकार संज्ञा) हुंकारना 2372

धुँगार स. ना. देश. (धुँगार संज्ञा) खाने की चीज में तडका देना; बघारना. गुज. धुँगार 2373

धुँधरा स. दे. 'धुंधला' 2374

धुँधला अ. ना. भव (धुंध संज्ञा) धुँधला पडना; स. धुँधला करना. गुज. धूंधळा 5375

धुँधा अ. दे. 'धुँधला' 2376

धुँधुआ अ. ना. देश. (धूआँ संज्ञा) इस प्रकार जलना कि खूब धूआँ उठे; स. इस प्रकार जलाना कि खूब धूआँ उठे 2377

धुँधुरा अ. दे. 'धुँधुआ' 2378

धुँधुवा अ. दे. 'धँधुआ' धुआँ देना. गुज. धुंधवा 2379

धुआँ अ. ना. भव (धुआँ संज्ञा; सं. धूम; प्रा. धूमाअ; दे. इआलें 6859) धूँए से बस जाना, धुएँ की गंध से व्याप्त हो जाना 2380

धुक अ. देश. (प्रा. धुक्काधुक्क; दे. पृ. 490, पा. स. म.) नीचे की ओर ढलना; टूट पडना. 2381

धुकधुका अ. दे. 'धकधक' 2382

धुकर अ. अनु. (दे. पृ. 175, मा. हि. को. 3) धुक-धुक शब्द होना. 2383

धुक्क अ. दे. 'धुक' 2384

धुतकार स. ना. अर्धसम (सं. धूत्कार संज्ञा) दुतकारना, धिक्कारना. गुज. धुतकार. 2385

धुधक अ. देश. (प्रा. धुद्धुअ; दे. पृ. ५००, हि. दे. श.) आवाज करना 2386

धुन स. भव (सं. धू, प्रा धुण् ; दे. इआलें 6846) रुईकी धुनकी से इस प्रकार फटकारना कि गंदगी निकल जाय और रेशों के फैलने से वह फुल-फुली हो जाय; बेतरह पीटना. गुज. धूण 'अभुआना' 2387

धुनक स. दे. 'धुन' 2388

धुप (1) अ. ना देश (धूप संज्ञा) धूप आदि के धूएँ से सुगंधित होना
(2) अ. देश. दौडना; हैरान होना 2389

*धुमिल स ना. देश. (धूमिल विशे.) धूमिल करना; धुँधला करना; म. धूमिल होना. तुल. गुज. धूमिल विशे. 2390

धुर स. देश. मारना-पीटना; आघात करते हुए बाजे बजाना 2391

धुरिया स. ना. भव (धूर संज्ञा) धूल से ढँकना. तुल. गुज. धूळ संज्ञा 2392

धुरेट अ. देश. धूल में लेटना; धूल से युक्त करना; स. धूल लगाना 2393

धूँध स. ना. देश. (धूंध संज्ञा) धोखा देना 2394

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*धूँस अ. देश. जोर का शब्द करना; स. नष्ट करना 2395

*धूक (1) अ. दे. 'ढुक'
(2) अ. देश. वेगसे आगे बढना; स. धुआँ देना; धुआँ पहुँचाकर केले आदि को पकाना 2396

धूत स. ना. भव (धूत संज्ञा; धूर्व्; प्रा. धुत्त संज्ञा; दे. इआले 6865) धूर्तता करना, छलना. गुज. धूत 2397

धून स. दे. 'धुन' 2398

धूप अ. दे. धुप (2) 2399

धूस स. दे. 'धूँस' 2400

*धेय अ. देश. ध्यान करना 2401

धोंक अ. देश. काँपना; स. धौंकना 2402

धो स. भव (सं. धाव्; प्रा. धाव्; दे. इआले 6803 तथा 6886) पानी के योग से किसी वस्तु पर का मैल दूर करना; अलग करना. गुज. धो. 2403

*धोव स. दे. 'धो' 2404

धौंक स. भव (सं. धम्; प्रा. धम्; दे. इआले 6731) आग को तेज करने के लिए उस पर भाथी, पंखे आदिके द्वारा हवाका झोंका पहुँचाना; भार डालना. गुज. धाम 2405

धौंज स. ना. देश. (धौंज संज्ञा) शैंदना, पाँव से कुचलना; अ. दौड-धूप करना 2406

धौंस स. देश. दंड आदिके रूप में कोई काम, खरच या भार किसीके जिम्मे लगाना; धौंकना 2407

धौक स. दे. 'धौंक' 2408

ध्या स. ना. अर्धसम (ध्यान संज्ञा; सं. ध्यै) किसी विषय, व्यक्ति आदिका ध्यान करना; ईश्वर का चिंतन करना. तुल. गुज. ध्यान संज्ञा; ध्या 2409

नंगिया स. ना भव (नंगा विशे; सं. नग्न; प्रा. णग्ग; दे. इआले 6926) नंगा करना; सब कुछ ले लेना. तुल. गुज. नागुं विशे 'नंगा' 2410

*नंग्या स. दे. 'नँगिया' 2411

नंच अ. दे. 'नाच' 2412

नंद अ. ना. सम (नंद संज्ञा; सं. नन्द्) आनंदित होना; स. आनंदित करना. तुल. गुज. नंद 2413

नंस स. भव (नंस संज्ञा; सं. नश्; प्रा. णस्स्, णास्; दे. इआले 7027) नष्ट करना; अ. नष्ट होना; गुज. नास 'भागना' 2414

नक (1) स. दे. 'नाँघ' उल्लंघन करना; छोड़ना; अ. चलना
(2) अ. दे. 'नका'. इतना दुःखी होना कि मानों नाकों दम आ गया हो. तुल. गुज. नाक संज्ञा 2415

नकन्या अ. दे. 'नाक' 2416

नका अ. ना. देश. (नाक संज्ञा; *नक्क; प्रा. णक्क संज्ञा; दे. इआले 6909) नाक में दम होना; नाक से उच्चारण करना; स. नाक में दम करना. तुल. गुज. नाक संज्ञा 2417

नकार अ. ना. अर्धसम (सं. नकार संज्ञा) अस्वीकृत करना, इनकार करना. गुज. नकार 2418

नकाश स. ना. वि. (नक्श विशे; अर.) नक्काशी करना. तुल. गुज. नकशी संज्ञा 2419

नकास स. दे. 'नकाश' 2420

नकिया अ. दे. 'नका' 2421

नक्क स. दे. 'नक' 2422

नख स. दे. 'नाँध' 2423

नखिया स. ना. सम (सं. नख संज्ञा) नाखून से खरोंचना; नाखून धँसाना. गुज. नखोर 2424

नखोट स. देश. (*नख घृष्ट; दे. इआले 6917) दे. 'नखिया' 2425

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नघ स. दे. 'नाँघ' 2426
नच अ. दे. 'नाच' 2427

नज़र अ. ना. वि. (नज़र संज्ञा अर.) देखना; नज़र लगाना; स. नज़र करना. गुज. नजरा 'नज़र लग जाना' 2428

नज़रान अ. दे. 'नज़र' 2429
नज़रा अ. दे. 'नज़र 2430

नजिका स. ना. वि. (नजदीक क्रि. वि. फा.) नजदीक पहुँचना; स. नजदीक पहुँचाना. तुल. गुज. नजीक क्रि. वि. 2431

नट (1) अ. ना. सम (सं. नट संज्ञा) अभिनय करना; नृत्य करना; वचन आदि से मुकरना (2) स. देश. (*नट्ट; दे. इआलें 6935) ठगना 2432

नटव अ. दे. 'नट' 2433
नठ अ. दे. 'नाठ' 2434
नढ स. दे. 'नाध' 2435

नद अ. ना. सम (सं. नद्) नाद होना; बोलना; गरजना. गुज. नद 2436

नद्ध अ. दे. 'नाध' 2437
ननकार अ. दे. 'नकार' 2438

नम अ. सम (सं. नम्) नत होना; प्रणाम करना; गुज. नम 2439

नय अ. दे. 'नौ' 2440

नरज अ. ना. वि. नाराज़ बिशे; फा.) नाराज होना; स. (अर. 'नज़र' से) कोई चीज़ नापना या तोलना. तुल. गुज. नाराज विशे. 2441

नरमा स. ना. वि. (नर्म विश; फा.) नरम होना; नम्र होना. तुल. गुज. नरम विशे. 2442

नराज अ. दे. 'नरज' 2443

नरिया अ. देश. चिल्लाना; नर्राना 2444

*नर्त अ. ना. सम (सं. नर्तन संज्ञा) नाचना. गुज. नर्त 2445

नवाज अ. ना. वि. (नवाजिश संज्ञा; फा.) अनुग्रह करना. गुज. नवाज 2446

नव अ. दे. 'नौ' 2447

नवार अ. देश. (दे. पृ. 119, दे. श. को.) चलना; यात्रा करना; स. निवारना 2448

नश अ. सम. (सं. नश्) नष्ट होना; स. नाश करना 2449

नष स. देश. फेंकना; रोकना 2450

नस दे. 'नास' 2451

नह स. भव (सं: नह; दे. इआलें 7034) नाधना, काम में लगाना 2452

नहा अ. भव (सं. स्ना; प्रा. ण्हा; दे. इआलें 13786) मेल या थकान दूर करने के लिए शरीर को मलकर धोना; रजोधर्म के पश्चात् स्त्री का स्नान करना. गुज. नहा 2453

नाँध स. भव (सं. लङ्घ्; प्रा. लंघ्; दे. इआलें 10905) लाँघना. गुज. लाँघ 'भूखा रहना' 2454

नाँठ अ. दे. नाठ 2455

नाँद (1) स. दे. 'नाध'
(2) अ. भव (सं. नन्द्; प्रा. णंद्; दे. इआलें 6950) प्रसन्न होना, सुखी होना. गुज. नंद
(3) अ. भव (सं. नर्द्; प्रा. णद्द्; दे. इआलें 6982) शोर करना; गर्जना करना 2456

नाक (1) स. दे. 'नाँघ'
(2) स. ना. देश. (नाक संज्ञा; *नाक्क; दे. इआलें 7037) चारों ओर के नाके रोकना; कठिनता को पार करना 2457

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाख स. (सं. नश्; दे. इआलें 6930) नष्ट करना; फेंकना. गुज. नांख, नाख 2458

नाच अ. भव (सं. नृत्; प्रा. णच्च्; दे. इआलें 7583) ताल और लय के अनुसार गात्रविक्षेप करना, नृत्य करना; प्रत्यक्ष–सा प्रतीत होना. गुज. नाच 2459

नाट (1) स. भव (सं. नृत्; प्रा. णट्ट; दे. इआलें 7583) नृत्य करना
(2) अ. देश. पीछे हटना, मुकरना 2460

नाठ स. भव (नष्ट विशे; सं. नश्; प्रा. णस्सू; दे. इआलें 7027) नष्ट करना; अ. नष्ट होना. तुल. गुज. नाठुं भू. कृ. 'भाग गया' 2461

नाथ स. ना. भव (नाथ संज्ञा; सं. नस्ता; प्रा. णत्था; दे. इआलें 7031) बैल आदि की नाक को छेदकर उसमें नाथ पहनाना: एक सूत्र में बन्ध करना. गुज. नाथ 2462

नाद अ. दे. 'नद' 2463

नाध स. ना. भव (सं. नाधन, नद्ध विशे; नह्; प्रा. णद्ध; दे. इआलें 6944) बैल, घोडे आदि को रस्सी या तस्मे के द्वारा सवारी, हल आदि से जोडना या बाँधना; ठानना. 2464

नाप स. भव (सं. ज्ञा, ज्ञाप्प्; प्रा. णप्प्, दे. इआलें 2583) किसी मानदंड के अनुसार किसी वस्तु के विस्तार, परिमाण, मात्रा का निर्धारण करना. तुल. गुज. माप 2465

नार सं. भव (संज्ञा; प्रा. णाण संज्ञा; दे. इआलें 5281) जानना; अनुमान करना; भाँपना. गुज. नाण 2466

नाव स. देश. किसीके अंदर कुछ गिराना, रखना; दे. 'नवा' 2467

नास अ. भव (सं. नश्; प्रा. णस्स्, नास्; दे. इआलें 7027) नष्ट होना, भागना. गुज. नास 2468

निंद स. ना. सम (निंदा संज्ञा; सं. निन्द्) निंदा करना. गुज. निंद 2469

निंदा स. देश. निराना. गुज. नींद 2470

निअरा स. ना. भव (नीरे अव्य; सं. निकटम्; प्रा णिअड, णिअल; दे. इआलें 7136) निकट ले जाना. तुल. गुज. नेडें अव्य 2471

*निकंद स. ना. सम (सं. निकन्दन) नष्ट करना, संहार करना, अ. नष्ट होना. तुल. गुज. निकंदन संज्ञा 2472

निकर अ. दे. 'निकल' 2473

निकल अ. भव (सं. निः + कल्; दे. इआलें 7478) बाहर होना या उगना; उदय होना गुज. नीकळ 2474

निकस अ. भव (सं. निः + कस्; प्रा. णिक्कस्; दे. इआलें 7479) निकलना. गुज. नीकस 2475

निकिया स. देश. (निका विशे; सं. निक्त भू. कृ. प्रा. णिक्क; दे. इआलें 7150) किसी चीज़ को इस प्रकार से नोचना कि उसका अंश या अवयव अलग हो जाय 2476

निकोट स. अनु. ('बकोटना' का अनु. दे. पृ. 261, मा. हि. को-3) नाखूनों की सहायता से तोडना; स. कोई चीज़ गढ़ने या बनाने के लिए खोदना. गुज. निकोल 2477

निकोस स. देश. (* निष्कोष्; दे. इआलें 7481) दाँत निकालना; दाँत पीसना 2478

निखर अ. भव (* नि + क्षर्; सं. क्षर्; दे. इआलें 7095) निर्मल होना; परिमार्जित होना. गुज. निखर 2479

निखुट अ. देश. (* खुट्ट; प्रा. खुंट संज्ञा; दे. इआलें 3893) उपयोग में लाई जानेवाली वस्तु का कोई काम पूरा होने से पहले ही समाप्त हो जाना .तुल. गुज. खूट; खूंट संज्ञा 2480

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निखेध स. ना. अर्धसम (सं. निषेध संज्ञा) निषेध करना. तुल. गुज. निषेध संज्ञा 2481

निखोट स. दे. 'निखुट' 2482

निखोड़ स. देश. (* निष्खोट; दे. इआलें 7497) बाहर खींच लेना; नाखून से नोच लेना 2483

निखोर स. अर्धसम (* निः + क्षुर; सं. क्षुर्; दे. इआलें 7104) कुरेदना, बाहर खींचना 2484

निगंद स. ना. वि. (निगंदा संज्ञा; फा. निगंद) रुईभरे कपड़े के दोनों परतों में बडे-बडे टाँके लगाना 2485

निगर स. दे. 'निगल' 2486

निगरा स. दे. (* नि + गृ, प्रा. णिग्गिण्ण विशे; दे. इआलें 7304) निर्णय करना; स्पष्ट करना; अ. पृथक् होना 2487

निगल स. भव (* नि + गल; दे. इआलें 7163 गले से नीचे उतार देना; रुपया या धन हड़प लेना. गुज गळ 2488

निग्रह स. ना. सम (सं. निग्रह संज्ञा) निग्रह करना; दमन करना. गुज. निग्रह 2489

निघट अ. देश (* निः घट्ट; दे. इआले 7314) घटना; बीतना; स. मिटाना. गुज. घट 2490

निचो स. देश * नि + च्युत्; दे. इआले 7451) निचोडना. गुज. निचोव 2491

निचोड स. देश. (* निश्चोट्; दे. इआलें 7449) दबाकर या पंठकर किसी गीली या रसवाली वस्तु में से पानी या रस निकालना; किसीका सब कुछ ले लेना. तुल. गुज. निचोड संज्ञा; निचोव 2492

निचोर स. दे. 'निचोड़' 2493

निचोव स. दे. 'निचो' 2494

निजका अ दे. 'नजिका' 2495

निझर अ. देश. (* झट्; प्रा. झड्; दे. इआलें 5328; प्रा. णिज्जर; दे. पृ. 395, पा. स. म.) एकदम झड़ जाना; खाली हो जाना 2496

निझा अ. भव (सं. नि + ध्यै; प्रा. णिज्झा; दे. इआलें 7209) लुक-छिपकर देखना; (आग का) बुझना; स. आग बुझाना 2497

निझाट स. दे. 'निझर' झपटकर ले लेना. तुल. गुज. झूंटव 2498

निझोट स. दे. 'निझाट' 2499

निथर अ. भव (सं. नि + तृ प्रा. णित्थर; दे. इआले 7528) जल आदि का स्वच्छ हो जाना. गुज. नीतर 2500

निदर स. भव (सं. निः + दृ; दे. इआलें 7340) अपमान करना, त्यागना 2501

निदरस अ. देश. (हिं. नि + दरस; दे. पृ. 268, मा. हि. को-3) अच्छी तरह दिखलाई देना; स. अच्छी तरह देखना 2502

निदह स. भव (सं. नि + दह्; प्रा. णिद्दह; दे. इआलें 7343) जलाना; अ. जलना. गुज. दह 2503

निनाद स. ना. सम (सं. निनाद) उच्च या घोर शब्द करना. तुल. गुज. निनाद संज्ञा 2504

निनार स. देश. निकालना 2505

निनौ स. ना. भव (सं. निम्न विशे; प्रा. णिण्ण; दे. इआलें 7244 तथा 7334) नमाना, झुकाना 2506

निप अ. देश. पूरा होना; दे. 'निपज' 2507

निपज अ. भव (सं. नि + पद्; प्रा. णिप्पज्ज्; दे. इआले 7511) उपजना; बनना. गुज. नीपज 2508

निपट अ. भव (सं. नि + वृत्; प्रा. निव्वट्ट; दे. इआलें 7395) कार्य आदि संपन्न होना; काम पूरा करके निवृत्त होना 2509

निपात स. ना. सम (सं. निपात संज्ञा) काट, मारकर या और किसी प्रकार नीचे गिराना; ध्वस्त करना. तुल. गुज. निपात संज्ञा 2510

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निपीड स. भव (सं. निः + पीड; प्रा. णिपीडिअ विशे; दे. इआलें 7516) पीडा देना; दबाना. 2511

निपुड अ. देश. (* निष्पुट्; दे. इआले 7518) (दाँत) उघरना; खुलना 2512

निफर अ. भव (सं. निः + पृ; दे. इआलें 7512) धँसकर आर-पार होना; स्पष्ट होना 2513

निबट अ. भव (सं. नि + वृत्; दे. इआलें 7395) फैंसला होना, समाप्त होना 2514

निबड अ. भव (सं. निः + वृ; प्रा. णिव्वड्; दे. इआलें 7392) पूर्ण होना; निवृत्त होना. गुज. नीवड, नीमड (सिद्ध होना, स्पष्ट होना) 2515

निबर अ. भव (सं. नि + वृ, प्रा. णिव्वड्; दे. इआलें 7392) बँधा, फँसा या लगा न रहना; निवृत्त होना. गुज. नीवड, नीमड 'सफल होना' 2516

निबह अ. भव (सं. निः + वह्; प्रा. णिव्वह्; दे. इआलें 7397) बच निकलना; निर्वाह होना. गुज. निभ, नभ 'काम चल जाना' 2517

निबुक अ. ना. भव (निर्मुक्त विशे; सं. निः + मुच्; प्रा. णिमुक्क विशे; दे. इआलें 7373) बच निकलना; मुक्त होना 2518

निभ अ. दे. 'निबह' 2519

निमज्ज अ. ना. सम (सं. निमज्जन संज्ञा) गोता लगाकर स्नान करना. तुल. गुज. निमज्जन संज्ञा 2520

निमट अ. दे. 'निपट' 2521

निमेख स. ना. अर्धसम (सं. निमेष संज्ञा) आँख की पलक गिरना या झपकना. तुल. गुज. निमेष संज्ञा 2522

निमोर स. देश. (सं. नि + मुट्; दें. इआलें 10186) मरोड़ना. गुज. मोड, मरड़ 2523

निम्ना स. भव (सं. निः + मि; दे. इआलें 7372) अच्छे ढंग से पूरा करना 2524

*नियोज स. ना. सम (सं. नियोजन संज्ञा) किसीको काम पर लगाना, नियोजन करना गुज. नियोज 2525

निरख स. भव (सं. नि + ईक्ष्; प्रा. णिरिक्ख्; दे. इआलें 7280) देखना. गुज. नीरख 2526

निरत स. ना अर्धसम (सं. नृत्य संज्ञा) नाचना 2527

निरधार स. ना. अर्धसम (सं. निर्धार; निः + धार) निश्चित करना; मन में धारण करना. गुज. निर्धार 2528

निरबह अ. दे. 'निबह' 2529

निरम स. ना. अर्धसम (सं. निः + मा) निर्मित करना, बनाना, गुज. निर्म 2530

निरमा स. दे. 'निरम' 2531

निरमूल स. ना. अर्धसम (निर्मूल विशे. निः + मूल्) निर्मूल करना; समूल नष्ट करना. तुल. गुज. निर्मूल विशे. 2532

निरवार स. दे. 'निवार' 2533

निरा स. देश. (* निः + दो; प्रा. णिंदिणि संज्ञा; दे. इआलें 7542) पौधों की बढ़ती को रोकनेवाली अनावश्यक घास, तृण आदि को खुरपी से खोदकर दूर करना. गुज. नीद, नींद 2534

निराव स. दे. 'निरा' 2535

निरुआर स. दे. 'निवार' 2536

निरुवर स. दे. 'निवार' 2537

निरूप अ. ना. सम (सं. निरूपण) संज्ञा; निः + रूप) निरूपण करना; निर्णय करना. गुज. निरूप 'निरूपण करना' 2538

निरेख स. दे. 'निरख' 2539

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरोध स. ना. सम (सं. निरोध, निः + रुध्) निरोध करना; अपने वश में करना. गुज. निरोध 2540

निर्गम अ. ना. सम (सं. निर्गमन, निः + गम्) बाहर निकलना. गुज. निर्गम 2541

*निर्दह स. ना. सम (सं. निर्दह विशे; निः + दह्) दहन करना. गुज. दह 2542

निर्बह अ. अर्धसम (सं. निः + वह्) निर्वाह होना; स. निर्वाह करना. तुल. गुज. निर्वाह संज्ञा 2543

निर्म स. सम. (सं. निः + मा) निर्माण करना. गुज. निर्म 2544

निर्मा स. दे. 'निर्म' 2545

निर्वह अ. ना. सम (सं. निर्वाह संज्ञा; निः + वह्) निभना. तुल. गुज. निर्वाह संज्ञा 2546

निव अ. दे. 'नव' 2547

निवस अ. ना. सम (सं. निवसन संज्ञा; निः + वस्) निवास करना, रहना. गुज. निवस 2548

निवाज स. ना. वि. (निवाज़ संज्ञा; फा.) अनुग्रह करना; दे. 'नवाज' 2549

निवार स. भव (सं. निः + वृ; प्रा. णिवार्; दे. इआलें 7419) दूर करना; चुकना. गुज. निवार 2550

निवेद स. ना. सम (सं. निवेदन संज्ञा) निवेदन करना; सेवा में भेंट आदि के रूप में उपस्थित करना. गुज. निवेद 2551

निसंस अ. भव (सं. निः + श्वस्; प्रा. णिस्सस् णिसस्; दे. इआलें 7461) हाँफना, निःश्वास लेना. तुल. गुज. निसासो संज्ञा 'निश्वास' 2552

निसर अ. भव (सं. निः + सृ; प्रा. णिस्सर्; दे. इआलें 7122) बाहर आना, निकलना. गुज. नीसर 2553

निस्तर अ. ना. सम (सं. निस्तरण संज्ञा; निः + तृ) पार होना; मुक्त होना; पार उतारना. तुल. गुज. निस्तरण संज्ञा 2554

निहन स. ना. सम (सं. निहनन) मारना. तुल. गुज. निहंता संज्ञा 2555

निहबर अ. अर्धसम (सं. निः + क्षरण; दे. पृ. 310, मा. हि. को–3) बाहर आना, निकलना 2556

निहस स. देश. शब्द करना; अ. शब्द होना 2557

निहार स.भव(सं. नि + भल्; प्रा. णिभाल. दे. इआलें 7228) गौर से देखना. गुज. निहाळ 2558

निहाल स. दे. 'निहार' 2559

निहुँक अ. ना. भव (सं. नि + भुज्; प्रा. णिहुत्त विशे; दे. इआलें 7229) झुकना 2560

निहुड़ अ. देश. (प्रा. णिहोड; दे. पृ. 417, पा. स. म. झुकना 2561

निहुर अ. दे. 'निहुड' 2562

निहोर अ. देश. (दे. पृ. 121, दे. श. को.) प्रसन्न करना; अनुग्रह करना 2563

नींद अ. भव (सं. निन्द्; प्रा. णिंद्; दे. इआलें 7211) निंदा करना; सं. निराना. गुज. नींद 2564

नीद अ. दे. 'नींद' 2565

नीपज अ. दे. 'निपज' 2566

नीप स. दे. 'लीप' 2567

नीर (1) स. भव (सं. नि + गृ; दे. इआलें 7161 खाना देना

(2) अ. ना. सम (सं. नीर संज्ञा) जल छिडकना. गुज. नीर 'पशुओं को घास देना' 2568

नीराज स. ना. अर्धसम (सं. नीरांजन संज्ञा) नीराजन में दीप जलाकर किसी देवी–देवता की आरती करना. तुल. गुज. नीराजन संज्ञा 'आरती' 2569

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नुक अ. दे. 'लुक' 2570

नुका स. देश. (दे. पृ. 319, मा. हि. को–3) खुरपी से निराना; स. लुकाना 2571

नुखर अ. देश. (दे. पृ. 319, मा. हि. को–3) भालू का चित लेटना 2572

नुच स. भव (सं. लुञ्च्; प्रा. लुंच्; दे. इआले 11074) नख से उखाडना, खरोंचना, अ. नोचा जाना 2573

नुन स. भव (स. लू; प्रा. लुण्; दे. इआले 11082) तैयार फसल को काटना. गुज. लण 2574

नुहर अ. दे. 'निहुर' 2575

नैउत स. दे. 'न्योत' 2576

नेठ अ. दे. 'नाठ' 2577

नेरा अ. दे. 'नियरा' 2578

नेवत स. दे. 'न्योत' 2579

*नेवर अ. देश. निवारण होना, दूर होना; स. निवारण करना 2580

नेवाज स. दे. 'निवाज' 2581

नैस स. देश. नष्ट करना 2582

नोक अ. ना. वि. (नोक संज्ञा; फा.) अनुराग, लोभ आदि के कारण आगे की ओर बढना 2583

नोच स. दे. 'नुच' 2584

नोव स. दे. 'नाँद' 2585

नौ अ. भव (सं. नम्; प्रा. णम्, ण्णवू; दे. इआले 6959) नत होना; नम्र होना. गुज. नम 2586

नौत स. दे. 'न्योत' 2587

न्योत स. ना. भव (न्योता संज्ञा; * निमन्त्र; सं. नि + मन्त्र; दे. इआले 7233) उत्सव के लिए निमंत्रित करना. तुल. गुज. नोतरुं संज्ञा 'न्योता' 2588

न्हा अ. दे. 'नहा' 2589

न्हेर स. दे. 'निहार' 2590

पंघला स. देश. (दे. पृ. 123, दे. श. को.) फुसलाना, बहलाना 2591

पँज अ. दे. 'पाँज'; बरतनों में जोड़ या टाँक लगाना 2592

पंजर अ. दे. 'पजर' 2593

पँवार स. भव (स. प्र + वृ; दे. इआले 8898) तैरना. थाह लेना, फेंकना 2594

पँसिया स. ना. भव (पाँसा संज्ञा, सं. पाशक) पाँसा फेंकना, पासे से मारना 2595

पइठ अ. दे. 'पैठ' 2596

पइस अ. दे. 'पैठ' 2597

पक अ. भव (सं. पक्; प्रा. पक्क विशे; दे. इआले 7621) अनाज आदि का पकने की अवस्था तक पहुँचना, फल आदि का पकना. गुज. पाक 'फल, घाव आदि का पकना' 2598

पकड स. देश. (* पक्कड़; दे. इआले 7616) किसी वस्तु को इस ढंग से हाथ में लेना कि वह इधर-उधर न हो सके; गलती करने या बहकने से रोकना. गुज. पकड 2599

पकर स. दे. 'पकड' 2600

पकस अ. अनु. (दे. पृ. 350, मा. हि. को–3) ऊमस या गर्मी की अधिकता के कारण किसी चीज़ का सडने लगना 2601

पखार स. दे. 'पखाल' 2602

पखाल स. भव (सं. प्र + क्षाल्; प्रा. पक्खाल्, पच्छाल्; दे. इआले 8456) पानी से धोना. गुज. पखाळ 2603

पगला अ. ना. सम (सं. पागल विशे.) पागल होना; स. पागल करना. तुल. गुज. पागल विशे. 2604

पगार स. देश. (दे. पृ. 124, दे. श.को.) फैलाना; पैरों से मिट्टी को रौंदकर गारा बनाना 2605

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पगिआ स. दे. 'पगिया' 2606

पगिया स. ना. देश. (पाग संज्ञा; * पगगा; दे. इआले 7644) पगड़ी बाँधना. तुल. गुज. पाघडी संज्ञा 2607

पगुरा अ. ना. देश. (पागुर संज्ञा; दे. पृ. 124, दे. श. को.) जुगाली करना 2608

पघर अ. दे. 'पिघल' 2609

पघिल अ. दे. 'पिघल' 2610

पच अ. भव (सं. पच्; प्रा. पच्चमान विशे; दे. इआले 7654) पचाया जाना; खपना गुज. पच 2611

पचक अ. दे. 'पिचक' 2612

पचपचा अ. ना. अनु. किसी वस्तु का बहुत गीला होना; स. ऐसी क्रिया करना जिससे किसी गाढ़े तरल पदार्थ में से पच-पच शब्द निकलने लगे. तुल. गुज. पचपच संज्ञा 2613

पचार स. देश. (प्रा. पच्चार; दे. पृ. 509, पा. स. म.) कोई काम करने के पहले उन लोगों के सामने उसकी घोषणा करना जिनके विरुद्ध वह काम किया जाने को हो, ललकारना. गुज. पचार 2614

पछता अ. ना. भव (सं. पश्च + उत्ताप; प्रा. पच्छुत्तावू; दे. इआले 8010) पश्चात्ताप करना. गुज. पस्ता 2915

पछर अ. दे. 'पिछड' 2616

पछाड़ स. देश. (* प्रच्छाट; प्रा. पच्छाडिय विशे; दे. इआले 8493) कुश्ती या लड़ाई में पटकना, परास्त करना. गुज. पछाड 2617

पछार स. दे. 'पछाड़' 2618

पछिआ अ. देश. (* पश्च; प्रा. पच्छ संज्ञा; दे. इआले 7990 पीछा करना; अनुकरण करना. तुल. गुज. पीछो संज्ञा; पछी अव्य. 'बाद में' 2618 (अ)

पछिता अ. दे. 'पछता' 2619

पछिया स. दे. 'पछिआ' 2620

पछिल अ. दे. 'पछेल' 2621

पछेल स. दे. 'पछिआ' किसीको पीछे छोड़ आगे निकलना; पीछे की ओर ढकेलना 2622

पछोड़ स. देश. (* प्रक्षोट्; प्रा. पक्खोड्; दे. इआले 8460) सूप से फटकना 2623

पछोर स. दे. 'पछोड' 2624

पजर अ. दे. 'पजल' 2625

पजल अ. भव (सं. प्र + ज्वाल्; प्रा. पज्जल्; दे. इआले 8518) जलना. गुज. परजळ 2626

पटक स. ना. भव (पट संज्ञा; सं. पट; दे. इआले 7691) किसी वस्तु या व्यक्ति को उठाकर झोंके के साथ पृथ्वी आदि पर गिराना; कुश्ती में पछाड़ना. गुज. पटक 2627

पटतार स. देश. (दे. पृ. 124 दे. श. को.) ऊँची-नीची जमीन को हमवार बनाना, चौरच करना; अंदाजना 2628

पटपटा अ. अनु. भव दे. 'पटक'; भूख या गरमी से तड़पना; 'पट-पट' शब्द निकलना 2629

पठा स. भव (सं. प्र + स्था; प्रा. पट्ठाव्; दे. इआले 8607) भेजना. गुज. पठाव, पाठव 2630

पठौ स. दे. 'पठा' 2631

पड़ अ. भव (सं. पट्; प्रा. पड्; दे. इआले 7722) गिरना; यकायक जा पहुँचना. गुज. पड 2632

पड़ताल स. ना. देश. (पड़ताल संज्ञा) जाँच करना, छानबीन करना. गुज. पडताळ 2633

पड़पड़ा अ. अनु. (दे. पृ. 371, मा. हि. को-3) 'पड़पड़' शब्द होना; मिर्च आदि तीखी वस्तुओं के स्पर्श से जीभ का जलने-सा लगना; स. 'पड़पड़' शब्द करना 2634

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिया अ. ना. भव (* पाड्ड; प्रा. पड्डय; दे. इआलें 8042) भैंस का भैंसे से संयोग होना; स. भैंसे का भैंस से संयोग करना; ऐसा संयोग कराना. तुल. गुज. पाळी आववुं अ. 'भैंस का संयोग के योग्य होना'; पाडो संज्ञा 2635

पढ़ स. भव (सं पठ्; प्रा. पढ्; दे. इआलें 7712) लिखे हुए अक्षरों या शब्दों का क्रम से उच्चारण करना; नया सबक सिखाना. गुज. पढ 2636

पतिआ स. दे. 'पतिया' 2637

पतिया स. दे. 'पत्या' 2638

पतियार स. अर्धसम (सं. प्रति + पाल्) पालन-पोषण करना. तुल. गुज. प्रतिपालन संज्ञा 2639

पती अ. दे. 'पतीज' 2640

पतीज अ. देश. प्रतीति या एतबार करना. गुज. पतीज 2641

पतीत स. दे. पतीज 2642

पत्या स. भव (सं. पति + इ; प्रा. पत्तिअ, दे. इआलें 8610) विश्वास करना. गुज. पतीज 2643

पथर स. ना. भव (सं. प्रस्तार संज्ञा; पा. पत्थार; दे. इआलें 8864) औजारों को पत्थर पर रगड़कर तेज करना; अ. पत्थर की तरह ठोस होना 2644

पथरा अ. ना. भव (सं. पत्थर संज्ञा) सूखकर पत्थर जैसा कड़ा हो जाना; जड हो जाना; स. पत्थर के टुकडे आदि फेंकना. तुल. गुज. पथरो संज्ञा 2645

पधर अ. दे. 'पधार' 2646

पधार अ. ना. देश (* पद्धार्; प्रा. पाधार्, दे. इआलें 7768) पदार्पण करना, चला जाना. गुज. पधार 2647

पनप अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 131, हि. दे. श.) पल्लवित होना; फूलना-फालना 2648

पनास स. देश. पोषण करना; पालना-पोसना 2649

पनिया स. ना. भव (पानीय; प्रा. पाणिअ; दे. इआलें 8082) पानी से सराबोर करना; अ. पानी से पचपचाना. तुल. गुज. पाणी 2650

पनिहा स. ना. भव (पनही संज्ञा, सं. उपानह् संज्ञा; प्रा. उवाणहा; दे. इआलें 2302) जूतों से मारना; बहुत अधिक मारना पीटना. तुल. गुज. वाणही संज्ञा 2651

पन्हा स. दे. 'पहना' 2652

पपड़िया अ. ना. भव (पपडी संज्ञा; सं. पर्पट संज्ञा, प्रा. पप्पड; दे. इआलें 7934) किसी चीज़ पर पपड़ी पड़ना, स. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज़ सूखकर कड़ी हो जाय. गुज. पापड़, पापडी संज्ञा 2653

पपोर स. देश. (दे. पृ. 126, दे. श. को.) बाँहे ऐंठकर उनका भराव देखना 2654

पपोल अ. दे. 'पपोर' दंतहीन का मुँह चुभलाना. तुल. गुज. पंपाळ 'सहलाना' 2655

*पब स. देश. पाना 2656

पबार स. देश. (दे. पृ. 127, दे. श. को.) फेंकना 2657

पमा अ. देश. डींग मारना 2658

पमूँक स. भव (सं. प्र + मुच्-चू, प्रा. पमुक्क्, दे. इआलें 8727) छोडना. त्यागना 2660

परक अ. दे. 'परच' 2661

परकस अ. दे. 'परकास' 2662

परकार स. ना. वि. (परकार संज्ञा; फा.) परकार से वृत्त बनाना. तुल. गुज. परकार संज्ञा 2663

परकास स. ना. अर्धसम (सं. प्रकाश संज्ञा; प्र + काश्) प्रकाशित करना; प्रकट करना; अ. प्रकाशित होना. गुज. प्रकाश 2664

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परख स. भव (सं. परि + इक्ष्; प्रा. परिक्ख्; दे. इआलें 7904) गुण-दोष के निर्द्धारण के लिए किसी व्यक्ति या वस्तु को भली भाँति देखना. गुज. परख, पारख 2665

परगट अ. ना. अर्धसम (सं. प्रगट विशे.) प्रकट होना, स. प्रकट करना. गुज. प्रगट, परगट 2666

परगस अ. दे. 'परगास' 2667

परगास अ. देश. प्रकाशित होना; स. प्रकाशित करना 2668

परच अ. देश. (* प्र + राज्; दे इआलें 8737) किसीसे इतनी जान-पहचान हो जाना कि उससे कोई खटक न रह जाय, चसका लगना. गुज. पळक 2669

परछ स. ना. देश. (परछन संज्ञा) द्वार पर बरात लगने पर कन्या-पक्ष की स्त्रियों का वर की आरती करना, परछन करना. तुल. गुज. पोंक, पोंख 2670

परजर अ. अर्धसम (सं. प्र + ज्वल्) प्रज्वलित होना; बहुत क्रुद्ध होना. गुज. परजळ 2671

परजल अ. दे. 'परजर' 2672

* परज्वल अ. दे. 'परजर' 2673

परण स. भव (सं. परि + नी, प्रा. परिण्; दे. इआलें 7819) ब्याह करना, अ. विवाहित होना. गुज. परण 2674

परत अ. भव (सं परि + वृत्; प्रा. परिवत्त; दे. इआलें 7872) गुज. परत 2675

परतार स. ना. अर्धसम (सं प्रतारण संज्ञा) ठगना. तुल. गुज. प्रतारणा संज्ञा 2676

*परतेज स. अर्धसम (सं. परि + त्यज्) परित्याग करना 2677

परपरा अ. अनु. देश. (दे. पृ. 127, दे. श. को.) मिर्च आदि तीखी वस्तुओं के स्पर्श से जीभ आदि का जलने लगना 2678

परबोध स. अर्धसम (सं. प्र + बुध्) प्रबोधन करना, जगाना 2679

*परवान स. अर्धसम (सं. प्रमाण संज्ञा) किसी बात को ठीक मानना, प्रामाणिक समझना, तुल. गुज. परमाण, प्रमाण 2680

परवाह स. ना. अर्धसम (सं. प्रवाह संज्ञा) प्रवाहित करना. तुल. गुज. प्रवाह संज्ञा 2681

परस स. भव (सं. स्पृश्; प्रा. फास्; दे. इआलें 13811) स्पर्श करना. गुज. परस 2682

*परहर स. दे. 'परिहर' 2683

परहेल स. देश. अवहेलना करना 2684

परा अ. भव (सं. पल् + इ; प्रा. पलाय्; दे. इआलें 7955) पलायन करना 2685

पराग अ. ना. सम (सं. पराग संज्ञा) आसक्त होना; पराग से युक्त होना 2686

परिख अ. दे. 'परख' 2687

*परिगह स. अर्धसम (सं. परि + ग्रह) ग्रहण करना 2688

परिच अ. दे. 'परच' 2689

परिचार स. सम. (सं. परि + चर्) परिचार करना 2690

परिठ अ. देश. देखना 2691

परिबेठ स. देश. आच्छादित करना, लपेटना 2692

परिया अ. अर्धसम (सं. प्र + या) जाना. तुल. गुज. प्रमाण संज्ञा 2693

*परिलेख स. सम (सं. परि + लिख्) कुछ महत्त्व का मानना 2694

परिवान स. देश. प्रमाण के रूप में मानना 2695

परिहर स. भव (सं परि + हृ; प्रा. परिहर; दे. इआलें 7899) छोडना, दूर करना. गुज. परहर 2696

परिहेल स. देश. तिरस्कारपूर्वक दूर हटाना 2697

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*परीक्षा स. सम (सं. परि+ईक्ष्) परीक्षा करना. तुल. गुज. परीक्षा संज्ञा 2698

परेख स. अर्धसम (सं. परि+ईक्ष; दे. इआलें 7912) दे. 'परख' अ. प्रतीक्षा करना; पछताना 2699

परेह स. देश. (दे. पृ. 128, दे. श. को.) खेत में पानी देना 2700

परोर स. देश. मंत्र पढ़कर फूँकना. 2701

परोस स. भव (सं. परि+विष्, प्रा. परिएस्; दे. इआलें 7888) खानेवालों के सामने भोजन की वस्तुएँ रखना. गुज. पीरस; परीस, परस 'वफ़ादारी से सेवा करना' 2702

पल (1) अ. ना. भव (सं. पल्लव; प्रा. पल्लविअ विशे; दे. इआलें 7971) पल्लवित होना: पुष्ट होना. गुज. पल 'पलना, जाना'
(2) स. देश. (दे. पृ. 128, दे. श. को.) कोई पदार्थ किसीको देना 2703

पलट अ. देश. उलट जाना; लौटना. गुज. पलट 'बदलना' 2704

*पलह अ. दे. 'पलुह' 2705

पला अ. देश. (*प्र+स्नु; दे. इआलें 8876) गाय इत्यादि का पिन्हाना; भागना 2706

पलान स. ना. भव (सं. पल्याण संज्ञा; प्रा. पल्लाण; दे. इआलें 7966) पलान कसना. गुज. पलाण 2707

पलास स. देश. (दे. पृ. 444, मा. हि. को-3) सिल जाने के बाद जूते को छांटकर ठीक करना 2708

पलुह अ. ना. भव (सं. पल्लव संज्ञा; प्रा. पल्लविअ विशे; दे. इआलें 7971) पौधे, वृक्ष आदि का पल्लवित होना; उन्नति करना 2709

पले स. भव (सं. प्लु; प्रा. पाव्; दे. इआलें 9027 खेत जोतने के बाद और बोने से पूर्व सींचना 2710

पलेट स. दे. 'लपेट' 2711

पलेड़ स. देश. धक्का देना, ढकेलना 2712

पलोट स. देश. (प्रा. पलोट्ट; दे.पृ. 572 पा. स. म. *प्रलोर्त्; प्रा. पलोट्ट; दे. इआलें 8770) सेवा-भाव से किसीके पैर दबाना; अ. लोटना. गुज. पलोट 'तालीम देकर योग्य बनाना' 2713

पलोव स. दे. 'पलोट' 2714

पलोस स. देश. धोना; अपना काम निकालने के लिए मीठी-मीठी बातें करके किसीको अनुकूल करना 2715

पल्लव अ. ना. सम (सं. पल्लव संज्ञा, दे. इआलें 7970) पल्लवित होना; स. पल्लवित करना. तुल. गुज. पल्लव संज्ञा 2716

पवाँर स. दे. 'पँवार' 2717

पवेर स. देश (*प्र+कृ; दे. इआलें 8449) बीजों को छीटते हुए बोना 2718

पसर अ. भव (सं. प्र+सृ; प्रा. पसर्; दे. इआलें 8825) और अधिक दूरी में व्याप्त होना; बढ़ना. गुज. पसर 2719

पसा स. देश. (*प्र+स्नु; दे. इआलें 8891) पके हुए चावल में से माँड निकालना; जल-युक्त पदार्थ में से जल के अंश को बहा देना 2720

पसीज अ. भव (सं. प्र+स्विद्; दे. इआलें 8896) ताप के कारण किसी ठोस चीज़ का ऐसी स्थिति को प्राप्त होना कि उसका जलांश रस रसकर बाहर निकले; खिन्न होना 2721

पसूज स. देश. (*प्र+सिव्; दे. इआलें 8886) कपड़ो की सिलाई में एक विशेष प्रकार के टाँके लगाना 2722

पस्ता अ. दे. 'पछता' 2723

पहचान स. भव (सं. प्रत्यभि+ज्ञा; प्रा. पच्चभिआण्; पच्चहियाण्; दे. इआलें 8637)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किसी पूर्वपरिचित व्यक्ति को या वस्तु को देखकर यह जान लेना कि वह अमुक है; विवेक करना. गुज. पिछाण 2724

पहट (1) स. देश. (* प्रहट्ट; दे. इआलें 8899) भागने या पकड़ने के लिए दौड़ना (2) स. देश. (दे. पृ. 129, दे. श. को.) पैना करना 2725

पहन स. भव (सं. पि + नह्; दे. इआलें 8198 (कपड़े आदि) शरीर पर धारण करना. गुज. पहेर 2726

पहर (1) स. अर्धसम (सं. प्र + हृ) नष्ट करना
(2) स. दे. 'पहन' 2727

पहल अ. दे. 'पलुह' 2728

पहिचान स. दे. 'पहचान' 2729

पहिन स. दे. 'पहन' 2730

पहिर स. भव (सं. परि + द + धा; प्रा. परिह् पहिर्; दे. इआलें 7835) (कपड़े आदि शरीर पर धारण करना. गुज. पहेर 2731

पहुँच अ. भव (सं. प्र + भू; प्रा. पभूय विशे; पहुच्च्; दे. इआलें 8716) एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान को प्राप्त होना; व्याप्त होना. गुज. पहोंच 1732

पहुच अ. दे. 'पहुँच' 2733

पहुत अ. दे. 'पहुँच' 2734

पहेट स. दे. 'पहट' 2735

पाँछ स. दे. 'पोंछ' 2736

पाँज स. देश. (* प्र + अँज्; दे. इआलें 8926) लोहे, पीतल आदि की वस्तुओं को टाँका देकर जोड़ना, झालना 2737

पाँतर अ. देश. गलती करना 2738

पा स. भव (सं. प्र + आप्; प्रा. पाव्; दे. इआलें 8943) प्राप्त करना, समझ जाना. गुज. पा 'पिलाना', पाम 'पाना' 2739

पाक अ. दे. 'पक' 2740

पाग स. देश. खाने की चीज़ को चाशनी या शीरे में कुछ समय तक डुबाकर रखना 2741

पाछ स. भव (सं. प्र + छो; प्रा. पच्छण संज्ञा; दे. इआलें 8505) खून, पंछा, रस या दूध निकालने के लिए छुरे आदि के हलके आघात से प्राणी के शरीर पर या पेडपौधे पर चीरा लगाना 2742

पाट स. ना. भव (सं. पट्ट संज्ञा; प्रा. पट्ट; दे. इआलें 7699) किसी गड्ढे या नीची भूमि को भरकर आसपास की ज़मीन को बराबर कर देना; भर देना; ढकना. तुल. गुज. पाट संज्ञा 'तख्त' 2743

पाथ स. दे. 'थाप' गीली मिट्टी, ताज़ा गोबर आदि को थपथपाते हुए या साँचों में ढालकर छोटे छोटे पिंड बनाना; मारना-पीटना 2744

पाद अ. भव (सं. पद्; दे. इआलें 7933) अपान वायु को गुदा मार्ग से बाहर निकालना; खेल में विपक्षी दूवारा अधिक दौडाया जाना. गुज. पाद; पदा 2745

पाम स. दे. 'पा' 2746

पार स. भव (सं. पृ; प्रा. पार्; दे. इआलें 8106) पूरा करना; तैयार करना 2747

*पारोक अ. देश. परोक्ष होना; अदृश्य होना. 2748

पाल स. भव (सं पृ; प्रा. पाल्; दे. इआलें 8129) भोजन वस्त्र आदि देकर बड़ा करना; जीविका या मनोरंजन के लिए पशु-पक्षी आदि को आहार आदि देकर अपने यहाँ रखना. गुज. पाळ 2749

पास अ. भव (सं. प्र + स्रु; दे. इआलें 8888) स्तनों में दूध उतरना, पेन्हाना 2750

पिंज स. भव दे. 'पींज' 2751

पिअ स. दे. 'पी' 2752

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिगल अ. भव (सं. प्र + गल्; प्रा. पगलंत विशे; दे. इआलें 8468) किसी ठोस पदार्थ का गरमी पाकर तरल होना; दया से आद्र होना. गुज. पीगळ 2753

पिघर अ. दे. 'पिघल' 2754

पिघल अ. देश. (* प्र + घृ; दे. इआलें 8486) पिगलना. गुज. पीगळ 2755

पिचक अ. भव (सं. पिच्च्; प्रा. पिच्चिय विशे; दे. इआलें 8149) फूले या उभरे हुए तल का भीतर की ओर दबना; सिकुड़ना 2756

पिचपिचा अ. अनु. (दे. पृ. 502, मा. हि. को-3) किसी छेद में तरल पदार्थ का पिच-पिच शब्द करते हुए रसना, घाव आदि में से पंछा निकालना 2757

पिचल स. ना. देश. (पिच्छा विशे; प्रा पिच्छल; दे. इआलें 8152) कुचलना; दे. 'फिसल' 2758

पिछड अ. ना. देश (* पश्च; प्रा. पच्छ संज्ञा; दे. इआलें 7990) पीछे रह जाना. तुल. गुज. पाछळ अव्य. 'पीछे' 2759

पिछल अ. दे. 'पिछड' पीछे हटना या मुड़ना 2760

पिछान स. देश. पहचानना. गुज. पिछाण 2761

पिटपिटा अ. अनु. (दे. पृ. 504, मा. हि. को-3) लाचार होकर रह जाना 2762

पिनक अ. देश. (दे. पृ. 131, दे. श. को.) अफीम के नशे में आगे की ओर झुकझुक पड़ना; ऊँघना. 2763

पिनपिना अ. अनु. देश. (दे. पृ. 131, दे. श. को.) 'पिन-पिन' शब्द करना; बच्चे का नकिया कर और अस्पष्ट स्वर में रुक-रुक कर रोना 2764

पिपिया अ. ना. देश. (पीप संज्ञा; *पिप्प; प्रा. पिप्पय संज्ञा; दे. इआलें 8203) फोडे आदि में पीप पैदा होना; स. फोड़ा पकाना 2765

पियरा अ. ना. भव (सं. पीतल संज्ञा; प्रा. पीअल; दे. इआलें 8233) पीला होना. तुल. गुज. पीळुं विशे. 2766

पिरा अ. ना. भव (सं. पीड़ा संज्ञा; प्रा. पीड़ा; दे. इआलें 8227) (किसी अंग का) दर्द करना, पीड़ा अनुभव करना; किसीको दुःखी देखकर दुःखी होना. तुल. गुज. पीड़ संज्ञा 2767

पिरीत अ. अर्धसम (सं. प्रीति संज्ञा) प्रीति करना; प्रसन्न होना. तुल. गुज. प्रीत संज्ञा 2768

पिरो स. भव (सं. पार + वे; दे. इआलें 7869 प्रा. पोइअ विशे; दे. पृ. 616, पा. स. म.) सुई के छेद में धागा डालना; किसी बारीक छेद में कोई चीज़ डालना 2769

पिल अ. देश. किसी ओर वेग से प्रवृत्त होना; घुस पडना. गुज. पील 'दबाना, कुचलना' 2770

पिलक स. देश. गिराना, ढकेलना; अ. गिरना; लुढ़कना 2771

पिलच अ. देश. दो आदमियों का आपस में भिड़ना; किसी काम में तत्पर होना 2772

पिलपिला अ. अनु. देश. (दे. पृ. 131, दे. श. को.) पिलपिला होना, किसी चिज़ को हल्के हाथ इस प्रकार दबाना कि उसका गूदा रस में परिवर्तित होकर बाहर निकलने लगे 2773

*पिष्ष स. देश. पेखना 2774

पिहक अ. अनु. (दे. पृ. 514, मा. हि. को-3) कोयल, पपीहे, मोर, आदि का पी पी चहकना 2775

पींज स. ना. भव (सं. पिञ्जा संज्ञा : *पिञ्ज्; प्रा. पिंज़; दे. इआलें 8159) (रुई) धुनना गुज. पींज. 2776

पी स. भव (सं. पा, प्रा. पिव्, पिव्; दे. इआलें 8209) किसी द्रव पदार्थ को घूँट घूँट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर पेट में पहुँचाना; किसी बात को सह लेना. गुज. पी 2777

पीक अ. अनु. (दे. पृ. 514, मा. हि. को–3) पी पी शब्द करना 2778

पीच अ. दे. 'पिचक' 2779

पीट स. भव (सं. पिट्ट; प्रा. पिट्ट; दे. इआलें 8165) किसी वस्तु पर आघात करना, मारना. गुज. पीट 2780

पीड अ. भव (सं. पीड्; प्रा. पीड्; दे. इआलें 8225) पीडा देना; दबाना. गुज. पीड 2781

पींन स. देश. 'पींज' 2782

*पीर स. दे. 'पेर' 2783

पीस स. भव (सं. पिष्; प्रा. पीस्; दे. इआलें 8142) झाडकर या दबाव पहुँचाकर किसी कड़ी वस्तु को चूरे के रूप में बदलना; चूर्ण करना. गुज. पीस 2784

पुकार स. ना. देश. (*पुक्कार; प्रा. पुक्कार्; दे. इआलें 8246) किसीको नाम लेकर बुलाना; चिल्लाना. गुज. पुकार, पोकार 2735

पुचकार स. अनु. देश. (दे. पृ. 132 दे. श. को.) ओठों से चूमने का–सा शब्द उत्पन्न करते हुए किसीके प्रति लाड–चाव प्रगट करना. गुज. पुचकार 2786

पुचार स. देश. (दे. पृ. 132, दे. श. को.) पोताना, पुचार देना. 2787

पुटिया स. देश. फुसला कर किसीको अनुकूल या राजी करना 2788

पुन स. देश. (दे. पृ. 132, दे. श. को.) गालियाँ देना. 2789

पुपला अ. ना. देश. (पोपला संज्ञा; *पोप्प; दे. इआलें 8402) पोपला होना; स. पोपला करना. तुल. गुज. पोपलुं विशे. 'ढीला, कमजोर' 2790

पुरै स. दे. 'पूर' 2791

पुल अ. देश. (दे. पृ. 542, मा. हि. को 3) चलना 2792

पुलक अ. ना. सम (सं. पुलक संज्ञा) पुलकित होना. गुज. पुलक 2793

पुलपुला स. अनु. देश. (दे. पृ. 133, दे. श.को.) किसी पुलपुली चीज़ को दबाना; दबाकर चुराना; अ. पुलपुला होना 2794

*पुलह अ. दे. 'पलुह' 2795

पुहत स. दे. 'पहुँच' 2796

पूंछ स. भव (सं. प्रच्छ्; प्रा. पुच्छ्; दे. इआलें. 8352) किसी वस्तु के संबंध में किसी से कोई प्रश्न करना' खोज–खबर लेना. गुज. पूछ; प्रीछ 'समझना, पहचानना' 2797

पूँज स. देश. (दे. पृ. 549, मा. हि. को.–3) नया बंदर पकड़ना 2898

पूग अ. भव (सं. पू.; पुज्ज्; दे. इआलें 8342) पूरा होना, खेल के घर में पहुंचना गुज. पुग 2799

पूछ स. दे. 'पूँछ' 2800

पूज स. सम. (सं. पूज्) पत्र, पुष्प आदि समर्पित कर के देवता का आराधन करना; सत्कार करना. गुज. पूज 2801

पूर स. भव (सं. पू.; प्रा. पूर्; दे. इआलें 8335 पूरा करना; पूर्ति करना. गुज. पूर 2802

पेंड स. देश. बेंड़ना 2803

पेख स. भव (सं. प्र + ईक्ष्; पेक्ख्; दे. इआलें 8994) देखना. गुज. पेख 2804

पेच स. ना. वि (पेच संज्ञा; फा.) दो चीजो के बीच में उसी प्रकार की कोई तीसरी चीज़ इस प्रकार बैठाना कि साधारणतः वह ऊपर से दिखाई न पड़े. तुल. गुज. पेच संज्ञा 2805

पेड़ स. दे. 'पेर' 2806

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पैन्हा अ. भव (सं. पयः + स्रव्; प्रा. पहणव्; दे. पृ. 569, मा. हि. को–3) दुहे जाने के समय भैंस आदि के थन में दूध उतरना; स. पहनाना 2807

पेर स. भव (सं. पीड्; प्रा. पीड्; दे. इआलें 8226) यंत्र से रस या स्नेह निचुड़ना. गुज. पील 2808

पेल स. भव (सं प्र + ईर्; प्रा. पेल्लू; दे. इआलें 9005) दबाकर भीतर पहुंचाना 2809

पेष स. दे. 'पेख' 2810

पेस अ. दे. 'पैस' 2811

पैंच स. देश (दे. पृ. 571, मा. हि. को-3) सूप से अनाज साफ करना 2812

पैछान स. दे. 'पहचान' 2813

पैठ अ. भव (सं. प्र + विश्; प्रा. पविट्ठ, पैट्ठ विशे; दे. इआलें 8803) पैसना, घुसना, तुल. गुज. पेठुं 'घुसा' 2814

पैना स. ना. भव (पैना विशे; * प्र + तीक्ष्ण; प्रा. पडिक्खिअ; दे; इआलें 8622) छुरे आदि की धार रगड़ कर तेज करना, देना 2815

पैन्ह स. दे. 'पहन' 2816

पैर अ. भव (सं. प्र + तृ; दे. इआलें 8536) तैरना. 2817

पैरख स. दे. 'परख' 2818

पैस अ. भव (सं. प्र + विश्; प्रा. पैस्; दे. इआलें 8803 घुसना; प्रवेश करना. गुज. पेस 2819

पोंक अ. भव (सं. प्र + मुच्; प्रा. पमुक्क विशे; दे. इआलें 8727) पतला पाखाना फिरना; बहुत अधिक डरना 2820

पोंछ स. देश. (सं. प्रोञ्छ्; प्रा. पुंछ्; दे. इआलें 9011; यह धातु मभाआ से संस्कृत में गई है) किसी वस्तु पर हाथ, कपड़ा आदि फेरकर उस पर लगा हुआ तरल पदार्थ उठा लेना; या धूल आदि साफ करना. गुज. पुंछ 2821

पो (1) स. भव (सं. प्र + वे; प्रा. पो; दे. इआलें 8785 तथा 8781) गूँथना. गुज. परोव, परव, पो 'पिरोना'

(2) सं. भव (सं. प्र + तप्; प्रा. पवाव्; दे. इआलें 8539) पकाना 2822

पोख (1) सं. दे. 'पोस'

(2)स. दे. 'पोंक' 2823

पोछ स. दे. 'पोंछ' 2824

पोढ़ अ. ना. भव (पोढ़ विशे.; सं मोढ; प्रा. पोढ; दे. इआलें 9021) दृढ होना; सं. दृढ करना. गुज पोढ 'सोना' 2825

पोढ़ा अ. दे. 'पोढ़' 2526

पोत स. देश. किसी तरल पदार्थ को अन्य वस्तु पर फैलाकर लगाना; लेप करना. तुल. गुज. पोतुं सज्ञा 2827

पोपला अ. दे. 'पुपला' 2828

पोस स. भव (सं. पुष्; प्रा. पोस्; दे. इआलें 8410) आहार आदि देकर बड़ा करना; पालन करना. गुज. पोस, पोष 2829

पोह (1) स. देश. (* प्र + उध्; दे. इआलें 8781) गूँथना

(2) स. भव (सं प्र + वह्; प्रा. पवह्; दे. इआलें 8792) रखना 2830

पौंड अ. देश. तैरना 2831

पौंढ अ. दे. 'पौढ' 2832

पौढ (1) अ. भव (सं प्र + वृध्; प्रा. पवड्ढ; दे. झआलें 8789) लेटना. गुज. पोढ, पोड, पहोड

(2) अ. भव (सं. प्लव्; प्रा. पव्व; दे. पृ. 583, मा. हि. को – 3) झूलना 2833

पौर अ. देश. तैरना 2834

पौल स. देश. काटना 2835

प्रकटा स. ना. सम (सं. प्रकट विशे.) प्रकट करना. गुज. प्रगट अ. 2836

प्रकास स. ना. अर्धसम (सं. प्रकाश संज्ञा)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाश से युक्त करना; अ. प्रकाशित होना गुज. प्रकाश 2837

प्रगट अ. ना. अर्धसम (सं. प्रकट विशे.) प्रकट होना; स. प्रगटाना. गुज. प्रगट 2838

प्रजर अ. अर्धसम (सं. प्रज्वल्) अच्छी तरह जलना; स. प्रजारना. गुज. प्रजळ 2839

प्रज्वल अ. सम (सं. प्र + ज्वल्) प्रज्वलित करना गुज. प्रजळ 2840

*प्रतोष स. अर्धसम (सं. प्र + तोष्) संतुष्ट करना; समझाना-बुझाना 2841

*प्रन अ. देश. प्रणाम करना 2842

प्रनम अ. अर्धसम (सं. प्र + नम्) प्रणाम करना गुज. प्रणम 2843

प्रफुल अ. अर्धसम (सं. प्रफुल्ल विशे.) फूलना गुज. प्रफुल्ल 2844

प्रबिस अ. दे. 'प्रविस' 2845

प्रबोध स. सम (सं. प्र + बुध्) जगाना, समझाना-बुझाना. गुज. प्रबोध 2846

प्रभण स. सम. (सं. प्र + भण्) कहना 2847

प्रभास अ. सम (सं. प्र + भास्) प्रकाशित होना, चमकना; स. प्रकाशित करना 2848

प्रमाण स. दे. 'प्रमान' 2849

प्रमान स. ना. अर्धसम (सं. प्रमाण संज्ञा) प्रमाणित करना, ठहराना. गुज. प्रमाण 2850

*प्रमोध स. दे. 'प्रबोध' 2851

*प्रवेश अ. ना. सम (सं. प्रवेश संज्ञा) प्रवेश करना. गुज. प्रवेश 2852

*प्रशंस स. ना. सम (सं. प्रशंसा संज्ञा) प्रशंसा करना, सराहना. तुल गुज. प्रशंसा संज्ञा 2853

*प्रसंस स. दे. 'प्रशंस' 2854

*प्रसव स. ना. सम (सं. प्रसव संज्ञा) प्रसव करना; अ. प्रसव होना. तुल. गुज. प्रसव संज्ञा 2855

*प्रसार स. सम (सं. प्र + सृ) प्रसारण करना; फैलाना. गुज. प्रसार 2856

प्रहरख अ. ना. अर्धसम (सं. प्रहर्षण संज्ञा) हर्षित होना 2857

*प्रहार स. ना. सम (सं. प्रहार संज्ञा) प्रहार करना. तुल. गुज. प्रहार संज्ञा 2858

प्राप अ. ना. सम (सं. प्रापण संज्ञा) प्राप्त होना; स. प्राप्त करना. गुज. पाम 2859

प्रास स. ना. अर्धसम (सं. प्राशन संज्ञा) खाना, चाटना 2860

फंद अ. ना. वि. (फंद संज्ञा फा.) फंदे में फँसना; मुग्ध होना; स. फंदा बिछाना. तुल. गुज. फंदो संज्ञा 2861

फंफा अ. अनु. (दे. पृ. 1, मा. हि. को - 4) बोलने में हकलाना; दूध में उबाल आना 2862

फँस अ. दे. 'फाँस' फँदे में पड़ना; उलझना. गुज. फसा 2863

फगुआ स. ना. (फगुआ संज्ञा, सं फल्गु; प्रा. फग्गु; दे. इआलें 9062) फागुन में किसीके ऊपर रंग छोड़ना या उसे सुनाकर अश्लील गीत गाना; अ. फागुन में इतना उच्छृंखल होना कि सभ्यता का ध्यान न रह जाय. तुल. गुज. फाग संज्ञा 2864

फट अ. भव (सं. स्फट्; प्रा. फट्ट; दे. इआलें 13825) किसी प्रकार के दबाव या आघात से किसी वस्तु का खंडो में विभक्त होना. गुज. फाट 2865

फटक स. अनु. देश (*फट्ट; दे. इआलें 9038) झाड़ना; सूप आदि के द्वारा अन्न आदि साफ करना. गुज. फटक 'झाड़ना' 2866

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फटकार स. दे. 'फटक' कोई चीज इस प्रकार हिलाना कि फट शब्द हो, किसीको लज्जित करने के लिए कडी बातें कहना. गुज. फटकार 'पीटना' 2867

फटफटा स. अनु. देश. (*फट्ट. दे. इआलें 9038) किसी वस्तु से 'फट-फट' शब्द उत्पन्न करना; बकवास करना; अ. 'फट-फट' शब्द होना. गुज. फटक 'पीटना'; फटकार 'फटकारना' 2868

फडक अ. अनु. भव (सं. फर संज्ञा; प्रा. फरक्किद विशे; दे. पृ. 612, पा. स. म.; फट; दे. इआलें 9038) रुक रुककर चलायमान होना. गुज. फरक 2869

फड़फड़ा अ. अनु. देश. (* फट; दे. इआलें. 9038) 'फड़-फड़' शब्द होना; छुटकारा पाने के लिए प्रयत्न करना; स. कोई चीज़ बार बार हिलाकर 'फड़-फड़' शब्द उत्पन्न करना. गुज. फड़फड़ 2870

फड़ोल स. भव (तुल. सं. स्पंदोलिका संज्ञा; प्रा. उप्फंडोल ह. भा.) किसी चीज़ को उलटना-पुलटना 2871

फदक अ. अनु. (दे. पृ. 6, मा. हि. को-4) 'फद-फद' शब्द होना; भात आदि का पकते समय फद-फद शब्द करना 2872

फदफदा अ. अनु. (दे. पृ. 6, मा. हि. को-4) 'फद-फद' शब्द होना; वृक्षो में नई कोपलें या पत्तियाँ निकलना; स. 'फद-फद' शब्द उत्पन्न करना. गुज. फदफद 'सडकर पिल-पिला होना' 2873

फन अ. देश. काम का आरंभ होना; ठाना जाना दे. 'फान' 2874

फनक अ. अनु. (दे. पृ. 6; मा. हि. को-4) फन-फन शब्द करना; इस प्रकार तेजी से चलना कि हवा से वस्त्र फनफन करने लगे 2875

फनग अ. ना. देश. (फुनगा संज्ञा) वृक्षों आदि का फुनगियों से युक्त होना; उन्नति करना. तुल. गुज. फणगो संज्ञा 'अंकुर' 2876

फनफना अ. दे. 'फनक' मुँह से हवा छोड़कर 'फन फन' शब्द करना 2877

फना स. देश. फंदा बनाना; काम शुरू करना 2878

फफक अ. अनु. (दे. पृ. 7, मा. हि. को-4.) रुक-रुक कर और फफ-फफ शब्द करते हुए रोना 2879

फफद अ. अनु. गोबर आदि का विकार-विशेष के कारण बढकर फैलना; दाद आदि का वृद्धि को प्राप्त होना या फैलना. गुज. फदफद 2880

फब (1) अ. ना. भव (सं. फल्फ संज्ञा दे. इआलें 14712) शोभा देना, अनुकूल मालूम होना
(2) अ. भव. (सं स्पृ; प्रा. फव्विह्; दे इआलें 13808) गुज. फाव; तुल. गुज. फग 2881

फरंक अ. अ. अनु. भव (सं. फर संज्ञा; प्रा. फरक्किद विशे; दे. पृ. 201. हि. दे. श.) फड़कना; शीघ्रता-पूर्वक कोई कार्य करना, गुज. फरक 2882

फर अ. दे. 'फल' 2883

फरक (1) अ. दे. 'फरंक'
(2) अ. ना. वि. (फ़र्क संज्ञा; अर.) अलग होना, कटकर निकल जाना 2884

फरचा स. ना. देश. (फरचा संज्ञा) साफ करना; आदेश देना 2885

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फरफर अ. भव (सं. स्फर्; प्रा. फरक्किद विसे; दे. इआले 13820) फड़फड़ाना. गुज. फरफर, फरक 2886

फरमा स. ना. वि. (फ़र्मान संज्ञा; फा.) कहना, आज्ञा करना, गुज. फरमाव 2887

फरहर अ. अनु. भव सं. फरह् ; प्रा. फरहर् ; दे. पृ. 621, पा. स. म.) फरफराना, फहराना गुज. फरहर 2888

फरिया स. देश. चावल आदि का कचरा धोकर साफ करना, निर्णय करना; अ. साफ होना; निर्णीत होना 2889

फर्मा स. दे. 'फरमा' 2890
फलंग अ. दे. 'फलाँग' 2891

फल अ. भव (सं. फलल्; प्रा. फल; दे. इआले 9057) (पेड़ में) फल आना, फल होना, गुज. फल 2892

फलक अ. अनु. (दे. पृ. 12, मा. हि. को – 4) फलकना, उमगना; दे. 'फड़क' 2893

फलाँग अ. ना. देश. (फलाँग संज्ञा) फलाँग भरना, फाँदना, तुल. गुज. फलँग संज्ञा 2894

फसक अ. अनु. देश. (* फस्स; दे. इआले 9068) मसकना; धँसना, गुज. फसक 2895

फहर अ. दे. 'फहरा' 2896

फहरा अ. अनु. हवा में हिलना, लहराना; स. किसी चीज़ को इस तरह खड़ा करना कि हवा में हिले – लहराये 2897

फाँक स. देश. (* फक्क; दे. इआले 9034) चूर या दाने की शकलवाली चीज़ को, हाथ को होठ से सटाये बिना मुँह में डाल देना : फँका मारना. गुज. फाक 2898

फाँट स. दे. 'बाँट' 2899

फाँद अ. भव (सं. स्पन्द्; प्रा. फँद्; दे. इआले 13806) उछलना; स. कूदकर लाँघना 2900

फाँप स. देश. (* प्र + स्फा; दे. इआले 8879 तथा 9066) फूलना 2901

फाँस स. अर्धसम (सं. स्पश्; दे. इआले 13814) फंदे में कसना; दाँव-पेच में बाँधना. गुज. फाँस 2902

फाट अ. दे. 'फट' 2903

फाड़ स. भव (सं. स्फट्; प्रा. फाड्; दे. इआले 13825) चीरना; टुकड़े करना; गुज. फाड 2904

फान स. दे. 'फाँद' (रुई) धुनना, किसी काम को शुरू करना 2905

फार स. दे. 'फाड़' 2906

फाल भव (सं. स्फल्; दे. इआले 13822) कूदना 2907

फिंकर अ. दे. 'फेंकर' 2908

फिट अ. भव (सं. स्फिट्; प्रा. फिट्ट; दे. इआले 13838) पिटकर एक होना, गुज. फीट 'टलना, शिथिल होना' तुल. गुज. फेड 'दूर करना' 2909

फिर अ. देश. (* फिर्; फिर्; दे. इआले 9078) कभी इधर, कभी उधर जाना; लौटना, गुज. फर 2910

फिरक अ. दे. 'फिर' फिरकी की तरह घूमना; थिरकना 2911

फिसफिसा अ. अनु. देश. (दे. पृ. 137, दे. श. को.) फिस होना; ढीला हो जाना 2912

फिसल अ. ना. भव (सं. पिच्छल विशे; प्रा. पिच्छल; दे. इआले 8152 तथा 8080) चिकनाई की अधिकता से पाँव का न टिकना; चूकना 2913

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फिल्मा स. ना. वि. (फिल्म संज्ञा; अं.) दृश्य को फिल्म में अंकित करना; फिल्म तैयार करना. तुल. गुज. फिल्म संज्ञा 2914

फींच स. दे. 'फीच' 2915

फीच स. अनु. (दे. पृ. 23, मा. हि. को, 4) कपड़े को गीला करके बार बार पटक कर साफ करना, कचारना 2916

फुँकर अ. अनु. भव (सं. फूत् + कृ; प्रा. फुक्कार संज्ञा; दे. इआले 9104) फुफकारना, फूत्कार करना. गुज. फुंकार 2917

फुदक अ. अनु. देश. (दे. पृ. 137, दे. श. को.) उछलते हुए चलना; हर्ष के अतिरेक में उछलना 2918

फुफकार अ. अनु. भव (सं. फूत + कृ; प्रा. फुक्कार संज्ञा; दे. इआले 9104) साँप का गुस्से में मुँह से हवा निकालना. तुल. गुज. फुफवाटो, फुफवाडो, फुंकारो संज्ञा 2919

फुफुआ अ. अनु. भव (सं. फुप्फु; प्रा. फुंका; दे. पृ. 202, हि. दे. श.) दे. 'फुफकार' फूं फूं करना 2920

फुर अ. भव (सं. स्फुर्; प्रा. फुर्; दे. इआले 13849 फडकना, सत्य होना 2921

फुरफुरा अ. अनु. देश. (दे. पृ. 137, दे. श. को.) इस तरह उडना कि परों या डैनों से 'फुर-फुर' आवाज़ हो; स. फुदेरी फिराना; पंख आदि फड़फड़ाना 2922

फुरहर अ. देश. फूटकर निकलना 2923

फुरा अ. दे. 'फुर' स. सत्य सिद्ध करना; कथन आदि पूरा उतारना 2924

फुसकार अ. अनु. (दे. पृ. 27, मा. हि. को-4; *फुस्स; दे. इआले 9099) फूँक मारना; फूत्कार छोडना 2925

फुसफुसा अ. अनु. (दे. पृ. 27, मा. हि. को-4) धीमी अस्फुट आवाज में बोलना; 'फुसफुस' शब्द करते हुए कुछ कहना. तुल. गुज. फूस-फासियुं विशे. 'हलका, तुच्छ' 2926

फुसला स. भव (सं. स्पृश्; प्रा. फुस्; दे. इआले 13815) मीठी बातों से बहलाना, बहकाना. गुज. फोसलाव 2927

फुहार स. ना. देश. (फुहार संज्ञा) किसी चीज़ को धोने, रंगने आदि के लिए उस पर किसी तरल पदार्थ की फुहार डालना 2928

फूँक स. अनु. (* फूक; प्रा. फुक्क; दे. इआले 9102) होठों को मिलाकर मुख के मध्य भाग से हवा छोडना; भस्म करना 2929

फूक स. दे. 'फूँक' 2930

फूट अ. भव (सं. स्फुट्; प्रा. फुट्ट; दे. इआले 13845 तथा 13857) चोट या धक्का खाकर टूटना; तोड़कर निकलना. गुज. फूट 2931

फूल अ. ना. भव (सं. फुल्ल विशे: प्रा. फुल्ल; दे. इआले 9093) (पेड़-पौधे में) फूल आना; गर्व से इतराना. गुज. फूल 2932

फेंक स. देश. (* फेंक; दे. इआले 9006) किसी चीज़ को हाथ से ऐसी हरकत देना कि कुछ दूर जा गिरे; पटकना. गुज. फेंक 2933

फेंकर अ. दे. 'फेकर' 2934

फेंट स. देश. हाथ या ऊँगलियों की हरकत से मिलाना; अच्छी तरह मिलाना 2935

फेकर अ. अनु. देश. (दे. पृ. 138, दे. श. को.) फूट-फूट कर रोना; जोर से चिल्लाते हुए कर्णकटु शब्द उत्पन्न करना 2936

फेकार स. देश. (दे. पृ. 138, दे. श. को.) सिर के बाल खोल कर झटकारना 2937

फेट स. दे. 'फेंट' 2938

फेन स. ना. भव (सं. फेन संज्ञा; प्रा. फेण; दे. इआले 9108) ऐसा काम करना जिससे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किसी तरल पदार्थ में फेन उत्पन्न होने लगे. गुज. फेण, फीण 2939

फेर स. देश. (दे. पृ. 138, दे. श. को.) घुमाना; वापस करना. गुज. फेरव 'घुमाना'; तुल. गुज. फेरो 'फेरा' 2940

फैल अ. भन (*प्रथिल; प्रा. पहिल्ल; दे. इआलें 8652) अधिक स्थान घेरना; प्रसिद्ध या प्रचारित होना. गुज. फेला; तुल. गुज. पहेलुं विशे 'पहला' 2941

फोंक अ. देश. (दे. पृ. 138, दे. श. को.) आवेश में आकर डींग मारना 2942

बंच (1) स. ना. अर्धसम (सं. वञ्चना संज्ञा) ठगना; अ. ठगा जाना. गुज. वंच
(2) स. ना. अर्धसम (सं. वाचन संज्ञा) पढ़ना; दे. 'बाँच' 2943

बंछ स. ना. अर्धसम (सं. वाञ्छा संज्ञा) इच्छा करना. गुज. वाँछ 2944

बंद स. अर्धसम (सं. वन्द्) वंदना करना. गुज. वंद 2945

बंबा अ. अनु. (दे. पृ. 43, मा. हि. को-4) गौ आदि पशुओं का बाँ बाँ शब्द करना, रंभाना 2946

बउरा अ. दे. 'बौर' 2947

बक स. देश. (* बक्क; प्रा. बक्कर संज्ञा, दे. इआलें 9117 बोलना, मुँह से गालियाँ निकालना: अ. बड़-बड़ाना. गुज. बक 2948

बकठा अ. देश. बहुत कसैली चीज़ खाने से जीभ का कुछ ऐंठना 2949

बकर अ. भव (सं. बर्कर; प्रा. बक्कर संज्ञा; दे. पृ. 157, हि. दे. श.) अपना दोष स्वीकार करना; आपसे आप ऊबना; बड़बड़ाना 2950

बकस स. दे. 'बख्श' 2651

बकुच अ. देश. सिमटना, सिकुड़ना 2952

बकोट स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 134, हि. दे. श.) पंजे या नाखूनों से नोचना; बलपूर्वक वसूल करना 2953

बखस स. दे. 'बख्श' 2954

बकसीस स. ना. वि. (बख्शिश संज्ञा; फा.) बख्शिश के रूप में देना. तुल. गुज. बक्षिश संज्ञा 2955

बखान स. ना. भव (बखान संज्ञा; सं. व्या + ख्या; प्रा. व + खाण; दे. इआलें 12188) वर्णन करना; बड़ाई करना; गालियाँ देना. गुज. वखाण 2956

बखिया स. ना. वि. (बखिय; संज्ञा: फा.) सिलाई करना. तुल. गुज. बखियो संज्ञा 2957

बखेर स. दे. 'बिखेर' 2958

बखोर स. ना. देश. (खोर संज्ञा) सीधे रास्ते से किसी ओर रास्ते पर ले जाना 2959

बख्श स. ना. वि. (बख्श बिशे, फा.) प्रदान करना; क्षमा करना. गुज. बक्ष 2960

बग अ. देश. घूमना; फिरना; दौड़ना 2961

बगद अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 134, हि. दे. श.) बिगड़ना; गुस्से में अंड-बंड बकना; गिर पड़ना 2962

बगबगा अ. अनु. (दे. पृ. 47, मा. हि. को. ऊँट का काम-वासना से मत्त होना 2963

बगर अ. देश, फैलना, छितराना 2964

बगलिया अ. ना. वि. (बगल संज्ञा फा.) बगल से होकर जाना, अलग होकर जाना; स. अलग करना; बगल में करना, तुल गुज. बगल संज्ञा 2965

*बगेद स. देश. धक्का देकर गिरा देना, विचलित करना 2966

बघार स. भव (सं. व्या + घृ; प्रा. वग्घारिअ विशे; दे. इआलें 12191) हींग, जीरा, प्याज आदि घी में कड़कड़ा कर दाल, तर-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारी आदि में डालना; पांडित्य दिखाने के लिए चर्चा करना. गुज. वघार 2967

बच अ. भव (सं. वञ्च्; प्रा. वंचू; दे. पा. स. म.) बाकी रहना; प्राणरक्षा होना. गुज. बच 2968

बज अ. भव (सं, वद्; प्रा. वज्ज्; दे. इआलें 11513) आघात से आवाज़ पैदा होना; बाजे से आवाज़ निकलना. गुज. वाज, बज, वाग 2969

बजक अ. अनु. (दे. पृ. 51, मा. हि. कों-4) तरल पदार्थ का सड़कर या बहुत गंदा होकर बुलबुले फेंकना 2970

बजबजा अ. दे. 'बजक' 2971

बझ स. दे. 'बाझ' 2972

बट स. भव. (सं. वृत्; प्रा. वट्ट्; दे. इआलें 11356) सूत, धागे के रेशों आदि को तागा, डोरी आदि बनाने के लिए मिलाकर ऐंठना; अ. पिसना. गुज. वाट 'पीसना'; वटाव 'भुनाना' 2973

बटक अ. देश. बचना 2974

बटोर स. ना. भव. (सं. वर्तुल संज्ञा; प्रा. वट्टुल; दे. इआलें 1365) समेटना; इकट्ठा करना 2975

बटोल स. दे. 'बटोर' 2976

बड़बड़ा अ. अनु. (* बड़बड़; प्रा. बडबड्; दे. इआलें 9122) बकबक करना; डींग मारना. गुज. बडबड 2977

बड़रा अ. दे. 'बड़बड़ा' 2978

बढ़ अ. भव (सं. वृध्; प्रा. वड्ढ; दे. इआलें 11376) डील, आकार आदि का अधिक होना; आगे जाना. गुज. वाध 2979

बतरा अ. ना. देश. (बात संज्ञा) बातचीत करना. तुल. गुज. वात स ज्ञा 2980

बतला स. दे 'बता' 2981

बता स. भव (सं. व्यक्त भू. कृ; प्रा. वत्त; दे. इआलें 12156) कहना; जताना. गुज. बताव 2982

बतास अ. ना. देश. (बतास संज्ञा; * वातत्रास; दे. इआलें 11493) हवा चलना 2983

बतिया अ. ना. भव (बात संज्ञा; सं. वार्त्ता संज्ञा; प्रा. वत्ता, वट्टा; दे. इआलें 11564) बातचीत करना, तुल. गुज. वात संज्ञा. 2984

बथ अ. ना. अर्धसम (सं. व्यथा संज्ञा) पीड़ा होना 2985

बद स. देश. ठहराना; दृढ़ता से कोई बात कहना गुज. बद 2986

बदल अ. ना. वि. (बदल संज्ञा; अर.) एक से दूसरी स्थिति में जाना; स. दूसरा रंगरूप देना. गुज. बदल स. 2987

बध (1) अ. अर्धसम (सं. वध्) वध करना (2) अ. दे. 'बढ़' 2988

बधिया स. ना. भव (बधिया विशे; सं. वर्ध्; दे. इआलें 11381) कुछ विशिष्ट नर-पशुओं का शल्य से अंडकोश निकाल कर उन्हें बधिया करना. गुज. वाढ, वधेर 2989

बन अ. भव (सं. वन्; पा. वण्; दे. इआलें 11260) बनाया जाना; नया रूप मिलना. गुज. बन 2990

*बनज स. ना. भव (सं. वणिज्य संज्ञा; प्रा. वणिज्ज; दे. इआलें 11233) व्यापार करना. तुल. गुज. वणज संज्ञा 2991

बनरा अ. ना. देश (बनरा संज्ञा; अ. व्यु. दे. पृ. 134, हि. दे. श.) विवाह कर लेना; छैला बनना 2992

बनार स. देश. काटना; काट काट कर किसी चीज़ के टुकड़े करना 2993

बनिज स. दे. 'बनज' 2994

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बप स. अर्धसम (सं. वप्) बीज बोना. तुल. गुज. वाव 2995

बफर अ. देश. अभिमानपूर्वक लड़ने के लिए ताल ठोंकना; उत्पात करना. गुज. बिफर 2996

बबक अ. दे. 'बमक' 2997

बम अ. अर्धसम (सं. वम्) वमन करना 2998

बमक अ. भव (सं. बम्; प्रा. बम्; दे. पृ. 202 हि. दे. श.) आवेश में अपने बल-पौरुष की डींग मारना; उछलना 2999

बय स. दे. 'बो' 3000

बर स. भव (सं. वृ; प्रा. वर्; दे. इआले 11318) वरण करना; ब्याहना. गुज. वर 3001

बरक (1) अ. देश. घटित न होना, बचना. गुज. बरक 'जोरसे बोलना'
(2) दे. 'बलक' 3002

बरख अ. अर्धसम (सं. वृष्) वर्षा होना. गुज. बरस 3003

बरज स. अर्धसम (सं. वृज्) मना करना, रोकना. गुज. बर्ज 3004

बरट अ. देश. सड़ना 3005

बरत स. अर्धसम (सं. वृत्) काम में लाना; बर्ताव करना; अ. व्यवहार होना. गुज. बतर 3009

बरद अ. दे. 'बरदा' 3007

बरदा स. ना. देश (बरधा संज्ञा; सं. बलिवर्द; प्रा. बलिवद्द, बलिद्द; दे. इआले 9176) गौ, भैंस आदि पशुओं का गर्भाधान कराने के लिए उनकी जाति के नर पशुओं से संयोग कराना; अ. गौ, भैंस आदि का जोड़ा खाना. तुल. गुज. बळद संज्ञा 3008

बरधा स. दे. 'भरदा' 3006

बरन स. ना. अर्धसम (सं. वर्ण्) वर्णन करना. गुज. बर्णव 3010

बरबरा अ. दे. 'बड़बड़ा' 3011

बरम्हा स. ना. अर्धसम (सं. ब्रह्म संज्ञा) किसीको आशीर्वाद देना 3012

बररा अ. दे. बड़बड़ा' 3013

बरष अ. अर्धसम (सं. वृष्) बरसना. गुज. वर्ष 3014

बरस अ. भव (सं. वृष्; प्रा. वरिस्; दे; इआले 11394) वायुमंडल के जलांश का घनीभूत होकर बूंदों की शक्ल में नीचे आना; झड़ना गुज. वरस 3015

बरह्म स. दे. 'बरम्हा' 3016

बरा स. दे. 'बार' 3017

बरिष स. दे. 'बरष' 3018

बर्ज् स. दे. 'बरज' 3019

बर्त स. दे. 'बरत' 3020

बर्रा अ. दे. 'बड़बड़ा' 3021

बल (1) अ. देश. (* द्वल; दे. इआले 6654) जलना. दहकना. गुज. बळ
(2) अ. भव (सं. वल्; प्रा. वलइय विशे; दे. इआले 11405) मोड़ना गुज. वाळ 3022

बलक अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 134, हि. दे. श.) उमगना; इतरा कर बोलना 3023

बलग अ. दे. 'बलक' 3024

बलबला अ. अनु. देश. (दे. पृ. 143, दे. श. को.) जल या किसी तरल पदार्थ का बलबल करना 3025

बवंड़ अ. देश. बेकार घूमना 3026

बवंडिया अ. दे. 'बवंड' 3027

बस (1) अ. भव (सं. वस्; प्रा. वस्; दे. इआले 11435) स्थायी रूप से रहना; आबाद होना. गुज. वस
(2) अ. भव (सं. वास्; दे. इआले 11601) सुगंधित होना. तुल. गुज. वास संज्ञा 3028

बसिया अ. दे. 'बस (2)' 3029

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बह अ. भव (सं. वह्; प्रा. वह्; दे; इआलें 11453) तरल पदार्थ का नीचे की ओर जाना; धारा या बहाव के साथ आगे जाना. गुज. वहे 3030

बहक अ. भव (सं. व्यथ्; प्रा. वहिअ विशे; दे. इआलें 12164) ठीक रास्ते से हट कर गलत रास्ते पर जाना; बढ़-बढ़ कर बोलना. गुज. वहा; स. वाह, वाहा, वा 'धोखा देना' 3031

बहरा (1) अ. ना. भव (बाहर अव्य; सं. *बाहिर, प्रा. बाहिर; दे. इआलें 9226) बाहर होना; अलग होना. तुल. गुज. बहार अव्य. 'बाहर' (2) स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 134, हि. दे. श.) बहलाना 3032

बहरिया अ. दे. 'बहरा (1)' 3033

बहला स. ना. वि. (बहाल विशे; फा.) कष्ट; रोग, विरक्ति आदि की दशा में दुःखी या चिन्तित को इधर-उधर की बातो में लगाकर प्रसन्न, शांत या सुखी करने का प्रयत्न करना. गुज. बहेलाव 3034

बहस अ. ना. वि. (बहस संज्ञा; अर.) बहस करना, होड लगाना 3035

बहार स दे. 'बुहार' 3036

बहिरा स. दे. 'बहरा (2)' 3037

बहुर अ. भव (सं. व्या + घुट; प्रा. वाहुडिअ कृ; दे. इआलें 12192) वापस आना; फिर से प्राप्त होना 3038

बाँक स. देश. टेढ़ा करना; अ. टेढ़ा होना. तुल. गुज. वांकुं विशे; 'टेढ़ा' 3039

बाँच (1) स. अर्धसम (सं. वच्) पढ़ना (2) अ. भव (सं. वञ्च्; प्रा. वंच्; दे. इआलें 11208) बचना. गुज. वंच 3040

बाँछ स. ना. अर्धसम (सं. वाञ्छा संज्ञा) इच्छा करना; चुनना. गुज. वांछ 3041

बाँट स. भव (सं. वण्ट्; प्रा. वंट्; दे. इआलें 11238) हिस्से करना; बहुतों को थोड़ा-थोड़ा देना. गुज. वांट, वाट, 'पीसना, बाँटना' 3042

बाँध स. (सं. बन्ध्; प्रा. बंध्; दे. इआलें 9139) रस्सी, जंजीर आदि से कसना; लपेटना. गुज. बाँध 3043

*बाँव स. देश. (दे. पृ. 145, दे. श. को.) रखना 3044

बा स. अर्धसम (सं. व्या + दा; दे. इआलें 12191) मुँह खोलना; फैलाना 3045

बाक अ. दे. 'बक' 3046

बाग (1) अ. ना. वि. (बाग संज्ञा; फा.) बाग में घूमना; सैर करना. तुल. गुज. बाग संज्ञा (2 अ. ना. भव (सं. वाक्य संज्ञा; प्रा. वक्क; दे. इआलें 11468) कहना; आक्रमण करना 3047

बाच (1) अ. दे. 'बच'
(2) स. दे. 'बाँच' 3048

बाछ स. भव (सं. व्रश्च्; दे. इआलें 12080) छाँटना; जुदा करना 3049

बाज (1) अ. अर्धसम (सं. व्रज्) जाना (2) अ. ना. अर्धसम (सं. वाद संज्ञा) तर्क-वितर्क करना; लड़ाई-झगड़ा करना (3) अ. देश. कहना. किसी नाम से प्रसिद्ध होना (4) अ. दे. 'बज' 3050

बाझ अ. भव (सं. बन्ध्; प्रा. बज्झ्; दे. इआलें 9134 तथा 9206) फँसना, उलझना. गुज. बाझ 3051

बाट स. भव (सं. वृत्; प्रा. वट्ट, वत्त्; दे. इआलें 11356) मोड़ना, पीसना. गुज. वाट 'पीसना' 3052

बाढ़ अ. दे. 'बढ़' 3053

बाद अ. देश. बकवाद करना; तर्क-वितर्क करना 3054

बाध स. ना. सम (सं. बाधा; संज्ञा) बाधा डालना; कष्ट देना, तुल. गुज. बाधा संज्ञा 'मनौती' 3055

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बान स. ना. देश (बाना संज्ञा) किसी प्रकार बाना ग्रहण करना; ठानना. तुल. गुज. बानुं संज्ञा 3056

बापर स. अर्धसम (सं. व्या + पृ) व्यवहार करना; काम में लाना. गुज. वापर 3057

बापूकार स. देश. (* बाप्प; प्रा. बप्प; दे. इआलें 9209) 'बापू' कहकर ललकारना 3058

बार स. भव (सं. वृ; प्रा. वार्; दे. इआलें 11554) रोकना, निवारण करना. गुज. वार 3059

बाहुड़ अ. दे. 'बहुर' 3060

बाहुर अ. दे. 'बहुर' 3061

बिंद स. अर्धसम (सं. वन्द्) वंदना करना. गुज. वंद 3062

बिआ स. दे. 'ब्याह' स्त्री का संतान प्रसव करना; मादा पशुओं का बच्चे को जन्म देना, गुज. विवा 3063

बिआह स. दे. 'ब्याह' 3064

बिकला अ. ना. अर्धसम (सं. विकल विशे.) व्याकुल होना; स. व्याकुल करना, तुल. गुज. विकळ विशे. 3065

बिकस अ. अर्धसम (सं. वि + कस्) विकसित होना; बहुत प्रसन्न होना. गुज. विकस 3066

बिखर अ. भव (सं. विश् + कृ; प्रा. विक्खर्; दे. इआलें 11985) तितर-बितर होना, फैलना, गुज. विखेर 3067

बिगड़ अ. भव (सं. वि + घट्; प्रा. विघड्; दे. इआलें 11673) गुण-रूप आदि में बिकार होना; काम देने लायक न रहना. गुज. बगड 3068

बिगर अ. दे. 'बिगड़' 3069

*बिगस अ. दे. 'बिकस' 3070

*बिगुरच अ. दे. 'बिगूच' 3071

बिगूच अ. अर्धसम (सं. वि + गुच्; दे. इआलें 11671) उलझना 3072

बिगूट अ. भव (सं. वि + गुच्; प्रा. विग्गुट्ट विशे; दे. इआलें 11671) उलझना. तुल. गुज. विगूटी संज्ञा 3073

बिगूत अ. दे. 'बिगूच' 3074

बिगो (1) स. भव (सं. वि + गुप्; प्रा. विग्गोव्; दे. इआलें 11667) छिपाना, बिगाड़ना; बहकाना 3075

बिघट स. अर्धसम (सं. वि + घट्) विघटित होना. तुल. गुज. विघटन संज्ञा 3076

बिघर स. दे. 'बिगड़' 3077

बिचक अ. देश. मुँह) इस प्रकार टेढ़ा होना जिससे अप्रसन्नता, अरुचि आदि सूचित हो. गुज. वचक 3078

बिचर अ अर्धसम (सं वि + चर्) विचरण करना. गुज. विचर 3079

बिचल अ. अर्धसम (सं. वि + चल्) विचलित होना, मुकरना. गुज. चळ 3080

बिचार अ. ना. अर्धसम (सं. विचार संज्ञा) विचार करना. गुज. विचार 3081

बिछड़ अ. भव (सं. वि + छृद्; प्रा. विच्छड्डिअ विशे; दे. इआलें 11689) साथ छूटना. गुज. वछूट 3082

बिछल अ. अर्धसम (सं. वि + छल्; दे. 'इआलें 11690) फिसलना; डगमगाना 3083

बिछला अ. दे. 'बिछल' 3084

बिछा स. भव (सं. वि + छद्; दे. इआलें 11692) आसन-बिस्तर आदि को जमीन आदि पर फैलाना; बिखेरना. गुज. बिछाव 3085

बिछुड़ अ. देश. (*वि + क्षुट्; प्रा. विच्छुडिअ विशे; दे. इआलें 11651) जुदा होना; दे. 'बिछड' गुज. वछूट 3086

बिछुर अ. दे. 'बिछुड़' 3087

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*बिजो (1) स. देश अच्छी तरह देखना; अ. बिजली चमकना
(2) स. ना. देश. (बीज संज्ञा) बीज बोना. तुल. गुज. बीज संज्ञा 3088

बिझक अ. दे. 'बिझुक' 3089

बिझुक अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 134, हि. दे. श.) बिचकना 3090

बिटंब अ. भव (सं. वि + डम्ब्; प्रा. विडंब्; दे. इआलें 11716) तुल. गुज. विटंब संज्ञा 'संताप' 3091

बिदार अ. देश. घँघोलना; घँघोलकर गंदा करना 3092

बिटाल स. देश. (* विट्टाल; प्रा. विट्टाल संज्ञा; दे. इआलें 11712) चखना. गुज. विटाळ 'भ्रष्ट करना' 3093

बिडर (1) अ. देश. बिखरना; पशुओं आदि का बिचकना
(2) अ. देश. भयभीत होना. गुज. डर 3094

बिडव स. देश. तोड़ना 3095

बितर (1) स. अर्धसम (सं. वि + तृ) वितरण करना. गुज. वितर
(2) अ. देश. दोष लगाना 3096

बितीत अ. ना. अर्धसम (सं. व्यतीत विशे.) व्यतीत होना; स. बिताना. गुज. वितावः तुल. गुज. व्यतीत विशे. 3097

बिथक अ. ना. देश. (* विस्थक्क; प्रा. वित्थक्कंः दे. इआलें 12012) थकना; चकित होना 3098

बिथर अ. दे. 'बिथरा' 3099

बिथरा स. भव (सं. वि + स्तृ; प्रा. वित्थर्; दे. इआलें 12005) बिखेरना, छिटकाना 3100

बिथुर अ. दे. 'बिथरा' 3101

बिथुल अ. दे. 'बिथरा' 3102

बिदक स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 135, हि. दे. श. तथा पृ. 234, हि. वि. बो.) भड़कना, फाड़ना 3103

*बिदल अ. अर्धसम (सं. वि + दल्) दलित करना; छिन्नभिन्न करना 3104

बिदह (1) अर्धसम (सं. वि + दह्) भस्म करना
(2) स. देश. धान या ककुनी आदि की फसल में आरम्भ में पाटा या हेंगा चलाना 3105

बिदार स. भव (सं. वि + दृ; प्रा. विआ; दे. इआलें 11735) फाड़ना; नष्ट करना. गुज. विदार, विडार 3106

बिदाह स. दे. 'बिदह (2)' 3107

बिदीर स. दे. 'बिदार' 3108

बिदूष स. अर्धसम (सं. वि + दूष्) दोष लगाना; बिगाड़ना 3109

बिदोर स. दे. 'बिदार' दीनतापूर्वक मुँह या दांत खोलकर दिखाना 3110

बिधँस स. दे. 'बिधाँस' 3111

बिधाँस स. भव (सं. वि + धंस्; प्रा. विद्धंस्; दे. इआलें 11762) विध्वंस करना 3112

*बिधुंस स. दे. 'बिधाँस' 3113

बिन (1) स. भव (सं. वि + चि; प्रा. विचिण् दे. इआलें 11686) चुनना; डंक मारना. गुज. वीण
(2) स. भव (सं. वे; प्रा. विणण संज्ञा; दे. इआलें 11773) बुनना. गुज. वण 3114

*बिनय अ. ना. अर्धसम (सं. विनय संज्ञा) प्रार्थना करना. तुल. गुज. विनय संज्ञा 3115

बिनव अ. दे. 'विनय' 3116

बिनस स. भव (सं. वि + नश्; प्रा. विणास्; दे. इआलें 11770) विनाश होना, गुज. वणस 'बिगड़ना' 3117

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिनौ स. भव. (सं. वि + नम्; प्रा. विणमंत विशे; दे. इआले 11766) विनय करना. गुज. विनय, विनम 3118

बिफर अ. अर्धसम (सं. वि + स्फर्; दे. इआले 12014) भड़कना; मचलना. गुज. बिफर 3119

बिबछ अ. देश. विरोधी पक्ष में जाना; अटकना 3120

बिबस अ. ना. अर्धसम (सं. विवश विशे) विवश होना. तुल. गुज. विवश विशे 3121

*बिबाद अ. ना. अर्धसम (सं. विवाद संज्ञा) विवाद करना; झगड़ना 3122

*बिबाह स. ना. अर्धसम (सं. विवाह संज्ञा) ब्याह करना. तुल. गुज. विवाह संज्ञा 3123

बिबेच स. ना. अर्धसम (सं. विवेचन संज्ञा) विवेचन संज्ञा. गुज. विवेच 3124

*बिभा अ. अर्धसम (सं. वि + भा) चमकना; सुशोभित होना; स. चमकाना 3125

*बिभिना स. ना. अर्धसम (सं. विभिन्न विशे) पृथक् करना. तुल. गुज. विभिन्न विशे 3126

बिमोच स. ना. अर्धसम (सं. विमोचन संज्ञा) मुक्त कराना. गुज. विमोच 3127

बिमोह स. अर्धसम (सं. वि + मोह्) मोहना; अ. मोहित होना. गुज. मोह 3128

बिय स. दे. 'बीज' 3129

बिया स. दे. 'ब्या' 3130

बियाह स. दे. 'ब्याह' 3131

बिरंच स. दे. 'बिरच' 3132

*बिरच (1) स. अर्धसम (सं. वि + रच्) रचना, बनाना. गुज. रच

(2) अ. देश. मन उचटना 3133

बिरझ अ. दे. बिरुझ 3134

बिरबिरा स. अनु. शिकायत की तरह धीरे-धीरे कुछ कहना. गुज. बबड 3135

बिरम अ. भव (सं. वि + रम्; प्रा. विरम्; दे. इआले 11846) रुकना, आराम करना. गुज. विरम 3136

बिरस (1) अ. भव (सं. * वि + रह्; प्रा. विरहज्ज; दे. इआले 11852) रोकना, रहना

(2) अ. दे. 'बिलस' 3137

बिरह स. देश. खंडित करना; नष्ट करना 3138

बिरहा अ. ना. अर्धसम (सं. विरह संज्ञा) विरह-व्यथा का अनुभव करना. तुल. गुज. विरह संज्ञा 3139

*बिराग अ. ना. अर्धसम (सं. विराग संज्ञा) विरक्त होना; संन्यास ग्रहण करना. तुल. गुज. विराग संज्ञा 3140

बिरा (1) स. भव (सं. वि + राध्; प्रा. विराह्; दे. इआले 11859) चिढ़ाना

(2) स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 135, हि. दे. श.) द्रवित करना 3141

बिराज अ. अर्धसम (सं. वि + राज्) शोभित होना; बैठना. गुज. विराज 3142

बिरुझ अ. भव (सं. वि + रुध्; प्रा. विरुज्झ्; दे. इआले 11866) उलझना; झगडना 3143

बिरोध अ. ना. अर्धसम (सं. विरोध संज्ञा) विरोध करना. तुल. गुज. विरोध संज्ञा 3144

बिरोल स. दे. 'बिलोड़' 3145

बिलंग (1) अ. भव (सं. वि + लग्; प्रा. विलग्ग्; दे. इआलें 11881) झूलना; लटकना. गुज. वलग, वळग 'पकडना'; तुल. गुज. वळगण, वळगणी

(2) अ. भव (सं. वि + लङ्घ्; प्रा. विलंघ्; दे. इआलें 11882) – में कूद पडना 3146

बिलंब अ. ना. अर्धसम (सं. विलम्ब संज्ञा) बिलंब करना, रुकना. तुल. गुज. विलंब संज्ञा 3147

बिलक अ. दे. 'बिलख' 3148

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिलख (1) अ. भव (सं. वि + लक्ष्; प्रा. विलक्ख संज्ञा; दे. इआलें 11877) पहचानना; देखना
(2) अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 135, हि. दे. श.) विलाप करना 3149

बिलग अ. ना. अर्धसम (सं. वि + लग्न विशे) अलग होना; स. अलग करना 3150

बिलगा अ. दे. 'बिलग' 3151

बिलछ अ. अर्धसम (सं. वि + लक्ष) लक्ष करना, ताड़ना 3152

बिलट अ. ना. भव (विनष्ट विशे; सं. वि + नश्; प्रा. विणट्ठ; दे. इआलें 11771) नष्ट होना, बुरा हो जाना 3153

बिलप अ. ना. अर्धसम (सं. विलाप संज्ञा) विलाप करना, रोना. गुज. विलाप 3154

बिलबिला अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 135 हि. दे. श.) दुःख-पीडा आदि से विकल होना; चिल्लाना 3155

बिलम अ. भव (सं. वि + लम्ब्; प्रा. विलंब्; दे. इआलें 11891) विलंब होना. तुल. गुज. विलंब संज्ञा; विलंबा 3156

बिलला अ. अनु. (दे. पृ. 139, मा. हि. को-4) बिलखकर रोना; असंबद्ध प्रलाप करना 3157

बिलस अ. भव (सं. वि + लस्; प्रा. विलस्; दे. इआलें 11894) प्रसन्न होना; स. भोगना. गुज. विलस 'शोभित होना' 3158

बिला अ. देश. (* वि + लभ्; दे. इआलें 11899) देना. गुज. वराव 3159

*बिलाप अ. दे. 'बिलप' 3160

बिलोक स. अर्धसम (सं. वि + लोक्) ध्यानपूर्वक देखना. गुज. विलोक 3161

बिलोड् स. भव (सं. वि + लोड्; प्रा. विलोड्; दे. इआलें 11911) मथना, गड्डमड्ड करना, गुज. वरोळ 'बिगाडना' 3162

बिलो स. भव (सं. वि + लुड्; प्रा. विलोड्; दे. इआलें 11911) मथना, (आँसू) ढालना, तुल. गुज. वलोव 3163

बिलोल अ. ना. अर्धसम (सं. विलोलन संज्ञा) इधर-उधर लहरें मारना, लहराना 3164

बिलोव स. दे. 'बिलो' 3165

बिल्ला अ. दे. 'बिलला' 3166

बिवर स. ना. अर्धसम (सं. विवरण संज्ञा) उलझी वस्तुओं को अलग-अलग करना; (बालों को) सुलझाना. तुल. गुज. विवरण संज्ञा 3167

बिवरा स. दे. 'बिवर' 3168

बिसतर स. ना. अर्धसम (सं. विस्तार संज्ञा) विस्तार करना; अ. विस्तृत होना. गुज. विस्तर 3169

बिसम स. ना. अर्धसम (सं. वि + शम्; दे. इआलें 11932) टूटना, विच्छिन्न होना 3170

बिसमर स. अर्धसम (सं. विस्मरण संज्ञा) विस्मृत करना. गुज. वीसर 3171

बिसर अ. भव (सं. वि + स्मृ; प्रा. विम्हर्; विस्सर्; दे. इआलें 12021) भूल जाना. गुज. वीसर 3172

बिसस (1) स. अर्धसम (सं. विश्वसन संज्ञा) विश्वास करना. तुल. गुज. विश्वास संज्ञा
(2) स. अर्धसम (सं. विशसन) मार डालना; काटकर टुकड़े टुकड़े करना 3173

बिसह स. भव (सं. वि + सह्; प्रा. विसह्; दे. इआलें 11975) मोल लेना 3174

बिसा (1) अ. देश. वश चलना
(2) अ. देश. विष का प्रभाव करना, जहरीला होना; स. दे. 'बिसाह' 3175

बिसाह स. दे. 'बिसह' 3176

बिसुन अ. देश. खाते समय खाद्य पदार्थ का नाक की ओर चढ जाना 3177

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिसूर अ. देश. दुःखित होना; चुपके चुपके रोना 3178

बिसेख स. अर्धसम (सं. विशेष संज्ञा) विशेष प्रकार से वर्णन करना; निश्चित करना 3179

बिस्तर स. दे. 'बिसतर' 3180

बिहंड स. दे. 'बिहाड' 3181

बिहँस अ. दे. 'बिहस' 3182

बिहड अ. दे. 'बिहर' 3183

बिहर अ. भव (सं. वि + हृ; प्रा. विहर; दे. इआलें 12029) विहार करना. गुज. विहर 3184

बिहस अ. भव (सं. वि + हस्; दे. इआलें 12030) हँसना 3185

बिहा स. अर्धसम (सं. वि + हा) छोडना 3186

बिहाड स. भव (सं. वि + खण्ड्; दे. इआलें 11662) टुकड़े टुकड़े करना 3187

बिहार अ. दे. 'बिहर' 3188

बिहोर अ. देश. बिछुड़ना 3189

बींद अ. देश. (दे. पृ. 148, दे. श. को.) अनुमान करना; स. बींधना 3190

बींध स. दे. 'बीध' 3191

बीग स. देश. छितराना; बिखेरना 3192

बीछ स. भव (सं. व्रश्च तथा वृष्य्; प्रा. विच्छअ संज्ञा; दे. इआलें 12080) पसंद करना 3193

बीज स. ना. भव (सं. वीज्; प्रा. विज्जिज्ज्; दे. इआलें 12044) बीज बोना. गुज. बींज, बींस पंखा करना, घुमाना' 3194

बीझ (1) स. भव (सं व्यध्; प्रा. विज्झ्; दे. इआलें 11759 तथा 11805)
(२) अ. दे. 'बझ' 3195

बीत अ. ना. भव (सं. वृत्; प्रा. वट्ट, वत्त विशे; दे. इआलें 12069) गुजरना; दूर होना. गुज. वीत 3196

बीध स. ना. भव (विद्ध विशे; सं. व्याध्; प्रा. विद्ध्; दे. इआलें 11739 तथा 11805) छेदना, बेधना. गुज. बींध 3197

बीन स. 'बिन' 3198

बीस स. ना. अर्धसम (सं. वेशन) शतरंज आदि खेलने के लिए बिसात फैलाना 3199

*बीसर स. दे. 'बिसर' 3200

बुक स. देश. (*बुक्क; प्रा. बुक्का; दे. इआलें 9262) खाना; चूर्ण होना 3201

बुझ अ. देश. (* वि + झै; प्रा. विज्झ्; दे. इआलें 11703) (आग, दीपक आदि का) जलना बंद होना; शांत होना. गुज. बुझा. 3202

बुट अ. देश. (दे. पृ. 149, दे. श. को.) दौड़कर चला जाना, भागना 3203

बुड़बुड़ा अ. अनु. भव (सं. बुडबुड संज्ञा; दे. पृ. 203; हि. दे. श.) किसी पदार्थ के पानी में डूबने की ध्वनि होना 3204

बुढ़ा अ. ना. भव बूढ़ा विशे; सं. वृध्; प्रा. वुड्ढ; वूढ विशे.; दे. इआलें 12073) बुढ़ा होना. गुज. वृध 'बढना, जाना'; वध 'बढना, विकसित होना' 3205

बुत अ. दे. 'बुझ' 3206

बुदबुदा अ. अनु. देश. (*बुदबुद; दे. इआलें 9274 तथा दे. पृ. 203, हि. दे. श.) अस्पष्ट शब्द निकलना. तुल. गुज. बुदबुद संज्ञा 3207

बुन स. भव (सं. वे; प्रा. वुणन संज्ञा; दे. इआलें 11773) धागे से कपड़ा बनाना; कुरसी आदि की खाली जगह भरना; दे. 'बिन' गुज. वण 3208

बुनक अ. अनु. (दे. पृ. 152, मा. हि. को-4) ढाढ मारकर जोर जोर से रोना 3209

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बुबुक अ. दे. 'बुनक' 3210

बुरक अ. अनु. (दे. पृ. 152, मा. हि. को-4) चूर्ण जैसी बस्तु को छिड़कना 3211

बुरबुर स. ना. देश. (* बूर ; इआले 9298) छिटकना 3112

बुरबुरा स. दे. 'बुरबुर' 3213

बुस अ. भव (सं. उद् + वास् ; दे. इआले 2034) सडौंध होना 3214

बुहार स. ना. भव (बुहार संज्ञा; सं. बहुकार संज्ञा; प्रा. बौहारी, बहुरिया संज्ञा; दे. इआले 9188) झाड़ू देना, झाडना; दे. 'बहार' गुज. बार, बोर, वाळ 3215

बूँड अ. देश. (*बुड; प्रा. बुड्डु; दे. इआले 9272) डूबना. गुज. बूड 3216

बूक स. दे. 'बुक' 3217

बूज स. देश. (दे. पृ. 14?, दे. श. को.) धोखा देने के लिए कुछ छिपाना 3218

बूझ स. भव (सं. बुध् ; प्रा. बुज्झ् ; दे. इआले 9279) समझना; जानना. गुज. बूज 3219

बूट अ. दे. 'बुट' 3220

बूठ अ. देश. वर्षा होना 3221

बूड अ. दे. 'डूब' 3222

बूर अ. दे. 'डूब' 3223

बेंच स. दे. 'बेच' 3224

बेंड स. देश. बाढ़ लगाना 3225

बेंढ स. दे. 'बेढ' 3226

बेंध अ. भव (सं. वे; दे. इआले 11300) वेणी गूंथना 3227

बेंबत स. दे. 'ब्योंत' 3228

*बेग अ. ना. अर्धसम (सं. वेग संज्ञा) वेगपूर्वक कोई काम करना; जल्दी मचाना. तुल. गुज. वेग संज्ञा 3229

बेच स. देश (*वेत्य; प्रा. वेच्चू, विच्चू; दे. इआले 12100) दाम लेकर देना. गुज. वेच 3230

बेझ स. देश. बेधना 3231

बेड़ स. देश. बाड़ लगाना; थाला बनाना 3232

बेढ़ स. भव (सं. वेष्ट्; प्रा. वेढ्ढिड विशे; दे. इआले 12132) बाड़ बनाना. ढोरों को घेर कर ले जाना 3233

बेत अ. देश. जान पड़ना 3234

बेध स. दे. 'बीध' 3235

बेरस स. दे. 'बेलस' 3236

बेल स. भव (सं. वेल्ल; प्रा. वेल्ल ; दे. इआले 12121) चकले पर बेलने से रोटी पूरी आदि बनाना 3237

बेलस स. ना. अर्धसम (सं. विलास संज्ञा) विलास करना, आनंद करना 3238

बेवत स. दे. 'ब्योंत' 3239

बेवह अ. भव (सं. व्यव + ह्; प्रा. ववहर्; दे. इआले 12173) व्यवहार करना; सूद पर रुपयों का लेनदेन करना. गुज. वोहोर, वोर 'खरीदना' 3240

बेसह स. दे. 'बेसाह' 3241

बेसाह स. देश. (दे. पृ. 152, दे. श. को.) मोल लेना; जान-बुझकर अपने ऊपर लेना. तुल. गुज. वसाणु संज्ञा 'पाक' 3242

बेहँस अ. देश. विहँसना, ठठाकर हँसना 3243

बेहर अ. ना. देश. (बेहर विशे. दे. पृ. 152, दे. श. को.) किसी चीज का फटना 3244

बैंड स. दे. 'बेड' 3245

बैक अ. दे. 'बहक' 3246

बैठ अ. भव (सं. उप + विश् ; प्रा. उवविश्, वेस् ; दे. इआले 2245) इस तरह स्थिर होना कि चूतड़ ज़मीन या किसी आसन पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टिका रहे और कमर के ऊपर का धड़ उसके बल सीधा रहे; सवार होना. गुज. बेस 3247

बैढ़ स. दे. 'बेढ़' 3248

बैरा अ. देश. वातग्रस्त होना; दे. 'बौरा' 3249

बैस स. दे. 'बैठ' 3250

बो स. भव (सं. वप्; प्रा. वव्; दे. इआलें 11282) बीज जमीन में डालना, बिखेरना गुज. बो 3251

बोच स. देश. झेलना, लोकना 3252

बोझ स. ना. भव (बोझ संज्ञा; सं. वह्य संज्ञा; प्रा. वाल्झ संज्ञा; दे. इआलें 11465) लादना, बोझ रखना. तुल. गुज. बोझ, बोझो संज्ञा 3253

बोध स. ना. सम (बोध संज्ञा; सं. बुध्) बोध कराना, समझाना-बुझाना. गुज. बोध 3254

बोल अ. देश. (*बोल्ल; प्रा. बोल्ल, बुल्ल्; दे. इआलें 9321) मुँह से शब्द, आवाज़ निकालना, भाषण करना; रोकटोक करना. गुज. बोल 3255

बोव स. दे. 'बो' 3256

बोह (1) अ. ना. देश. (बोह संज्ञा) डुबकी लगाना
(2) स. दे. 'बो' 3257

बोहार स. दे. 'बुहार' 3258

बौआ अ. देश. सपने में निरर्थक बातें करना; बड़बड़ाना 3259

बौखला अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 135, हि. दे. श.) होश-हवास में न रहना, क्रोध से पागल हो उठना 3260

बौड़ अ. दे. 'बौर' 3261

बौर अ. ना. भव (बौर संज्ञा; सं. मुकुल संज्ञा प्रा. मौर, दे. इआलें 10146) बौर से युक्त होना; दे. 'मौर' तुल. गुज. मोहोर 3262

बौरा (1) अ. ना. भव (सं. वातुल विशे; प्रा. वाउल; दे. इआलें 11504) पागल हो जाना, बहकना; स. बेवफूक बनाना
(2) अ. दे. 'बौर' 3263

बौला अ. दे. 'बौरा' 3264

बौसा अ. देश. भोग-विलास करते हुए आनन्द लेना; उन्नति करना 3265

ब्या स. भव (सं. वि + जन्; प्रा. विआ; दे. इआलें 11701) (पशु का) जनना; अ. बच्चा देना. गुज. विवा 3266

व्याप अ. सम (सं. वि + आप्) किसी वस्तु या स्थान में इस प्रकार फैलना कि उसका कोई अंश बाकी न रह जाय; चारों ओर से घिरना. गुज. व्याप 3267

ब्याह स. भव (सं. वि + वह्; प्रा. विवाह; दे. इआलें 11923) ब्याह करना 3268

ब्योंच अ. अर्धसम (सं. वि + कुच्; दे. इआलें 11632) हाथ, पैर आदि के एकाएक मुड़ जाने से नस का हट जाना, मोच आना 3269

ब्योंत स. दे. 'ब्योत' 3270

ब्योट स. दे. 'ब्योत' 3271

ब्योत स. भव (सं. वि + या + कृत्; दे. इआलें 11830) सिलाई के लिए कपड़े को नाप से काटना. तुल. गुज. वेतर 3272

ब्योर स. भव (सं. वि + वृ: प्रा. विवर्; दे. इआलें 11916) ब्योरे वार कोई बात बतलाना; सुलझाना; अ. सोचना-समझना 3273

ब्यौत स. दे. 'ब्योत' 3274

ब्रज अ. अर्धसम (सं. व्रज्) चलना 3275

ब्वौ स. दे. 'बो' 3276

भंग अ. भव (सं. भञ्ज्; प्रा. भंज्; दे. इआलें 9363) भग्न होना, टूटना; स. तोड़ना. गुज. भांज, भाग 3277

भंगिया स. ना. भव (भाँग संज्ञा; सं. भंगा संज्ञा; प्रा. भंगा; दे. पृ. 640, पा. स. म.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाँग के नशे में चूर होना; स. भाँग पिलाकर नशे में चूर करना. तुल. गुज. भांग संज्ञा 3278

भँज अ. दे. 'भंग' 3279

भंड स. सम. (सं. भण्ड् क्षति पहुँचाना; तोड़ना–फोडना 3280

भंभर अ. देश. डरना 3281

भंभा अ. देश. गौ–भैंसों आदि का चिल्लाना, रंभाना. गुज. भांभर 3282

भंभेाड़ अ. देश. नोच–खसोट कर क्षत-विक्षत करना 3283

भंय अ. दे. 'भंव' 3284

भंव अ. भव (सं. भ्रम्; प्रा. भम्; दे. इआलें 9648) घूमना. गुज. भम 'घूमना, भटकना' 3285

भंस अ. भव तैरना, डूबना 3286

भक्कट अ. दे. 'भकस' 3287

भकभका अ. अनु. (दे. पृ. 187, मा. हि. को –4) भक-भक शब्द करके जलना, चमकना; स. जलाना, चमकाना. गुज. भभक 3288

भकस अ. अनु. (दे. पृ. 187, मा. हि. को-4) खाद्य पदार्थ का अधिक समय तक पड़े रहने के कारण खट्टा और बदबुदार हो जाना 3289

भकसा अ. दे. 'भकस' 3290

भकुआ अ. ना. भव (सं. भकुआ संज्ञा; सं. भेक संज्ञा; प्रा. भेग, दे. इआलें 9600) मूर्ख बनना; स. किसीको मूर्ख बनाना 3291

भकुड़ा स. ना. देश. (भकुड़ा संज्ञा) लोहे के गज से तोप के मुँह में बत्ती भरना 3292

भकुर अ. देश. नाराज होना; क्षुब्ध होकर मुँह डाल देना 3293

भकुवा अ. दे. 'भकुआ' 3294

भकोस स. देश. भक्षण करना; ठूँसना 3295

भक्ष स. सम (सं. भक्ष्) भक्षण करना. गुज. भक्ष 3296

भख स. ना. भव (सं. भक्ष्; प्रा. भक्ख संज्ञा; दे. इआलें 8340) खाना, निगलना, तुल. गुज. भक्ष्य संज्ञा; भक्ष 3297

भग अ. दे. 'भाग' 3298

भगर अ.देश. खत्ते में रखे हुए अनाज का गरमी पाकर सड़ने लगना 3299

भचक अ. अनु. लंगड़ाते हुए चलना; आश्चर्य में निमग्न रह जाना 3300

भज (1) स. सम (सं. भज्) सेवा, भक्ति करना; जपना, गुज. भज

(2) अ. भव (सं. भञ्ज्; दे. इआलें 9361) भागना, पहुँचना 3301

भटक (1) अ. देश. (*भट्ट; दे. इआलें 9365) व्यर्थ घूमना, रास्ता भूलकर इधर उधर घूमना गुज. भटक

(2) अ. ना. भव (भ्रष्ट विशे; सं. भ्रष्ट; प्रा. भट्ठ; दे. इआलें 9655) घूमना 3302

भठिया अ. ना. देश. समुद्र में भाटा आना 3303

भड़क अ. देश. (* भट; दे. इआलें 9363) प्रज्वलित होना; क्रुद्ध होना. गुज. भड़क 'सहम उठना' 3304

भड़भड़ा स. अनु. 'भड़भड़' आवाज़ पैदा करना; अ. 'भड़भड़' आवाज़ होना 3305

भडोल स. देश. रहस्य प्रकट कर देना 3306

*भण अ. भव (सं. भण्; प्रा. भण्; दे. इआलें 9383) कहना. गुज. भण 'कहना, पढ़ना' 3307

भणक अ. दे. 'भनक' 3308

*भन अ. भव (सं. भन्; प्रा. भण्; दे. इआलें 9383) दे. 'भण' 3309

*भनंक अ. दे. 'भनक' 3310

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*भनक अ. अनु. भव (सं. भन संज्ञा; प्रा. भंकार; दे. पृ. 203, हि. दे. श.) 'भन भन' शब्द होना; स. बोलना. तुल. गुज. भणभणाट संज्ञा 3311

भनभना स. अनु. देश. (* भन; दे. इआले 9382) 'भन-भन' आवाज़ करना; गुंजार करना; अ. 'भन भन' शब्द होना. तुल. गुज. भणको संज्ञा 3312

भबक अ. दे. 'भभक' 3313

भभक अ. अनु. देश. (* भभ; दे. इआले 9388) जोर से जल उठना; भड़कना. गुज. भभक; तुल. गुज. भभको संज्ञा 3314

भभर अ. दे. 'भरभरा' 3315

भया अ. ना. भव (सं. भय संज्ञा; प्रा. भय; दे. पृ. 645, पा. स. म.) भयभीत होना; स. भयभीत करना. तुल. गुज. भय संज्ञा 3316

भर स. भव (सं. पृ; प्रा. भर्; दे. इआले 9397) खाली बरतन आदि में कोई चीज़ डालना; ढालना. गुज. भर 3317

भरक अ. देश. (दे. पृ. 155, दे. श. को.) गर्म होना 3318

भरभरा अ. अनु. देश (*भर; दे. इआले 9405) रोएँ खड़े होना; रोमांच होना; घबराना 3319

*भरम अ. ना. अर्धसम (सं. भ्रम संज्ञा) चलना-फिरना; धोखे में पड़कर इधर-उधर होना. तुल. गुज. भम 3320

भरमा अ. दे. 'भरम' 3321

भररा अ. अनु. (दे. पृ. 200, मा. हि. को-4) भरर शब्द करते हुए गिरना; किसी पर पिल पड़ना; स. गिराना 3322

भरहर अ. दे. 'भहरा' 3323

भरहरा अ. दे. 'भहरा' 3324

भरुआ अ. ना. भव (सं. भार संज्ञा प्रा. भार, दे. पृ. 649, पा. स. म.) भारी होना; भार अनुभव करना; भारी करना. तुल. गुज. भार संज्ञा 3325

भरुआ (1) अ. दे. 'भरुआ' अभिमान करना (2) स. देश. भ्रम में डालना 3326

भर्म अ. ना. अर्धसम (सं. भ्रम संज्ञा) भरमना. गुज. भरमा 3327

भर्रा अ. दे. 'भरभरा' 3328

भव अ. देश. घूमना, चक्कर खाना 3329

*भष स. अर्धसम (सं. भक्ष्) भक्षण करना, खाना. गुज. भक्ष, भख 3330

भस अ. भव (सं. भ्रंश्; प्रा. भस्सू; दे. इआले 9654) तैरना; डूबना 3331

भसक अ. दे. 'भस' 3332

भसया अ. दे. 'भस' 3333

भहरा अ. अनु. (दे. पृ. 205, मा. हि. को.-4) यक बारगी गिर पड़ना; झोंके से फिसल पड़ना 3334

भाँज स. भव सं. भञ्ज्; प्रा. भंज्; दे. इआले 9363) तह करना; (मुगदर आदि) घुमाना. गुज. भाँज 'तोड़ना' 3335

*भाड़ स. भय (सं. भण्ड; प्रा. भंड्; दे. इआले 9372) बिगाड़ना; बदनाम करते फिरना; अ. भटकना. गुज. भाँड 3336

भाँप स. देश. (दे. पृ. 156, दे. श. को.) रंग-ढंग से जान लेना, ताड़ना 3337

भाँव स. भव (सं. भ्रम्; प्रा. भाम्; दे. इआले 9677) खराद पर घुमाना; मथना 3338

भा अ. भव (सं. भा; प्रा. भा; दे. इआले 9445) रुचना, फबना. गुज. भाव 3339

भाड दे. 'भा 3340

भाग अ. ना. भव (सं. भाग विशे; प्रा. भग्ग; दे. इआले 9361) किसी जगह से हट जाने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के लिए दौड़ना; हारकर पलायन करना. गुज. भाग 3341

भाज (1) अ. भव दे. 'भाँज'
(2) स. भव (सं. भ्रज्ज्; प्रा. भज्ज्; दे. इआले 9583) पकाना, सेंकना 3342

*भान स. ना. भव (सं. भग्न; प्रा. भग्ग; दे. इआले 9361) तोड़ना; नष्ट करना. तुल. गुज. भाग 3343

*भार स. भव (सं. भृ; दे. इआले 9463) बोझ लादना; दबाना. गुज. भार 'गाडना, मोहक लगना' 3344

भाल स. भव (सं. भल्; दे. इआले 9474) भली भाँति देखना; तलाश करना. गुज. भाळ; भार 'मोहित करना' 3345

भाव अ. दे. 'भा' 3346

भाष अ. सम (सं. भाष्) बोलना, बातचीत करना. स. दे. 'भष' 3347

भास अ. भव (सं. भास्; प्रा. भास्; दे. इआले 9481) आभास होना; चमकना. गुज. भास 3348

भिटक अ. देश. कोई अप्रिय वस्तु सामने आने पर मन का उससे दूर हट जाने में प्रवृत्त होना 3349

भिड़ अ. देश. (*भिड़; प्रा. भिड; दे. इआले 9490) टकराना, सटना. गुज भिडा 3350

भिनक अ. अनु. देश. (*भिन; दे. इआले 9382) मक्खियों का भिन-भिनाना; किसी (गंदी) चीज़ पर मक्खियों के झुंड का बैठना 3351

भिनभिना अ. दे. 'भिनक' 3352

भिन्ना अ. अनु. (दे. पृ. 222, मा, हि. को–4) दुर्गंध आदि से सिर चकराना; डरकर दूर रहना; दे. 'भिनभिना' 3353

भिय अ. दे. 'भय' 3354

भिर अ. दे. 'भिड़' 3355

भिरम अ. दे. 'भरम' 3356

भींग अ. दे. 'भीग' 3357

भींच स. देश. कसकर खींचना; (आँख या मुँह) इस प्रकार जोर से दबाना कि वह बहुत कुछ बंद हो जाय. तुल. गुज. भींस 'कसकर दबाना' 3358

भींज अ. दे. 'भींग' 3359

भीग अ. भव (सं. भि + अज्ज्; दे इआले 9500) पानी से तर होना, गीला होना. तुल. गुज. भीनुं विशे 'गीला' 3360

भीच अ. दे. 'भींच' 3361

भीज अ. दे. 'भीग 3362

भीन अ. देश. (*भियग्न; प्रा. भग्ग; दे. इआले 9500) भीगना; किसी चीज़ के छोटे छोटे अंशों या कणों का किसी दूसरी चीज़ के सभी भीतरी भागों में पहुँचकर अच्छी तरह एकरस होना. तुल गुज. भीनुं विशे 'गीला' 3363

*भीर अ. ना. देश. (भीरु विशे) भयभीत होना 3364

भुँक अ. दे. भुँक' 3365

भुंज अ. भव (सं. भुज्; प्रा. भुंज्; दे. इआले 9529) भागना; पकाना; सताना 3566

भुखा अ. ना. भव (भूख संज्ञा; सं. बुभुक्षा संज्ञा; प्रा. बुभुक्खा, भुक्खा; दे. इआले 9286) भूखा होना; स. किसीको कुछ समय तक भूखा रखना. तुल. गुज. भूख संज्ञा 3367

भुगत अ. ना. अर्धसम (सं. भुक्त विशे) भोगना; अ. बीतना. गुज. भोगव 3368

भुतला अ. देश. रास्ता भूलकर इधर-उधर हो जाना; कोई चीज़ भूलने के कारण गुम हो जाना 3369

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भुन अ. ना. भव (सं. भग्न विशे. प्रा. भग्ग; दे. इआले 9361 तथा 9577) भूना जाना; रुपये आदि का छोटे सिक्को में बदला जाना 3370

भुनभुना अ. दे. 'भनक' 3371

भुरक स. अनु. देश. (दे. पृ. 158, दे. श. को.) छिड़कना; अ. भुरभुरा होना 3372

भुराभुरा अ. अनु. (दे. पृ. 229, मा. हि. को–4) इस प्रकाश किसी चीज़ को स्पर्श करना कि कण या रवे अलग-अलग हो जायँ; बुरकना. तुल. गुज. भूको संज्ञा 3373

भुलस अ. दे. (*भुल; दे. इआले 9537) गरम राख में झुलसना; स. गरम राख में झुलसाना 3374

भुँक अ. भव (सं. भष्; प्रा. भस्; दे. इआले 9423) कुत्ते का भौं भौं करना; व्यर्थ बकना. गुज. भस 3375

भूँज (1) दे. 'भुंज'
(2) स. भव सं. भ्रज्ज्; भज्ज्; दे. इआले 9583, 9586) पकाना, सेंकना 3376

भूँस अ. दे. 'भूक' 3377

भूक अ. दे. 'भूँक' 3378

*भूख स. ना. अर्धसम (सं. भूषण संज्ञा) भूषिक करना; सजाना; अ. सजना 3379

भूल अ. देश. (*भूल्ल; प्रा. भुल्ल्; दे. इआले 9538) याद न रहना; गलती करना. गुज. भूल 3380

*भूष स. ना. सम (सं. भूषण संज्ञा) दे. 'भूख' 3381

भूस अ. दे. 'भूँक' 3382

भेंट स. दे. 'भेंट' 3383

भेज स. देश. (*भेज्ज; दे. इआले 9603) अन्य स्थान के लिए रवाना करना. गुज. भेज 3384

भेट स. देश. (*भेट्ट; प्रा. भिट्टिज्ज्; दे. इआले 9490) मिलना, गले लगाना. गुज. भेट 3385

भेद स. सम (सं. भिद्) बेधना. गुज. भेद 3386

भेल स. देश. तोड़ना-फोड़ना; लूटना. गुज. भेळाव 3387

*भेष स. ना. देश. (भेष संज्ञा भेस बनाना; पहनना 3388

भेस स. दे. 'भेष' 3389

भोंक स. देश. (*भोक्क; दे. इआले 9624) शरीर में नुकीली चीज़ घुसेड़ना; अ. भूँकना. गुज. भोंक 3390

भो अ. दे. 'भीन' 3391

भोग स. ना. सम (सं. भोग संज्ञा) सुख-दुःख का अनुभव करना; सहना. गुज भोगव 3392

*भोगव स. दे. 'भोग' 3393

भोथरा अ. ना. देश (भोथरा विशे.) भोथरा होना 3394

*भोरा अ. देश. धोखे या भ्रम में जाना. गुज. भोळवा 3395

*भौं अ. दे. 'भरम' 3396

भौंक अ. दे. 'भूँक' 3397

भौंस अ. दे. 'भूँक' 3398

भौ अ. दे. 'भरम' 3399

भ्रम अ. ना. सम (सं. भ्रमण संज्ञा) घूमना-फिरना; अ. भ्रम में पड़ना. गुज. भम; भरमा 'भ्रम में पड़ना' 3400

मंगल स. ना. सम (सं. मङ्गल विशे) किसी शुभ अवसर पर अग्नि आदि जलाना; अ. प्रज्वलित होना. तुल. गुज. मंगल विशे. 3401

मँगार स दे. 'मंगल' 3402

मूँझिया स. ना. भव (सं. मध्य संज्ञा; प्रा. मज्झ विशे; दे. इआले 9804) धँसकर पार करना; नाव खेना 3403

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंड स. भव (सं. मण्ड्; प्रा. मंड्; दे. इआलें 9741) सजाना, सँवारना. गुज. मांड 'सजाना, शुरू करना' 3404

मँडरा अ. ना. भव (सं. मण्डल संज्ञा; प्रा. मंडल; दे. इआलें 9742) मंडलाकर चक्कर देते हुए उड़ना; घूमते रहना. तुल. गुज. मंडळ संज्ञा 3405

मँडला अ. दे. 'मँडरा' 3406

मंद अ. ना. अर्धसम (सं. मन्द विशे) मंद होना, सुस्त होना. तुल. गुज. मंद विशे 3407

*मंदा अ. दे. 'मंद' 3408

मंस स. दे. 'मनस' 3409

मकड़ा अ. ना. भव (मकडी संज्ञा; सं. मर्कट; प्रा. मक्कड; दे. इआलें 9883) मकड़ी की तरह चलना; अकडकर चलना. तुल. गुज. माकड, माँकड, 'खटमल' 3410

मकोर स. दे. 'मरोड' 3411

मग अ. ना. अर्धसम (सं. मग्न विशे) मगन होना; डूबना. तुल. गुज. मग्न विशे 3412

मगन अ. दे. 'मग' 3413

मच अ. दे. 'माँच' 3414

मचक अ. अनु. देश. (* मच्च; दे. इआलें 9709) लकडी, चमड़े आदि की चीज़ का दबकर 'मचमच' आवाज़ करना, लचकना; स. 'मचमच' आवाज़ पैदा करना. गुज. मच 'समाना, जमना' 3415

मचमचा स. दे. 'मचक' 3416

मचल अ. अनु. देश. (अ व्यु. दे. पृ. 137, हि. दे. श.) किसी चीज़ को लेने या न देने का हठ पकड़ लेना 3417

*मज (1) अ. ना. अर्धसम (सं. मज्जन संज्ञा) डूबना, निमज्जित होना

(2) अ. दे. 'मँज' 3418

*मज्ज अ. दे. 'मज' (1) 3419

मज्झिया स. दे. 'मँझिया' 3420

मटक अ. अनु. देश. (* मट्ट; दे. इआलें 9722) चलने में हाथ, आँख, भौ आदि को नाज नखरे की अदा से हिलाना; हटना. गुज. मटमटा 'तेजी से खुलना-बंद होना' 3421

मटिआ अ. दे. 'मटिया' 3422

मटिया अ. दे. 'मिटिया' 3423

मठार स. भव (सं. मृष्ट विशे; प्रा. मट्ठ; दे. इआलें 10299) गोलाई लाने के लिए बरतन को मठरने से पीटना. गुज. मठार 3424

मठोर स. दे. 'मठार' 3425

मठोल स. देश. हस्त-मैथुन करना 3426

मड़मड़ा अ. अनु. मरमराना 3427

मडरा अ. दे. 'मँडरा' 3428

मडला अ. दे. 'मँडरा' 3429

मढ़ स. देश. (*मढ़; प्रा. मढिअ विशे; दे. इआलें 9729) ऐसी चीज जड़ना जिससे पूरी वस्तु ढक जाय; थोपना. गुज. मढ 3430

मत अ. ना. सम (मति संज्ञा) किसी विषय में अपना मत निश्चित करना; दे. 'मात' तुल. गुज. मत संज्ञा 'राय' 3431

मथ सं. सम (सं. मथ्; प्रा. महुणित विशे; दे. इआलें 9771) दूध, दही को मथानी आदि से बिलोना; छाछ डालना. गुज. मथ 'छानना, प्रयत्न करना' 3432

मनक अ. अनु. (दे. पृ. 287, मा. हि. को-4) हिलना-डोलना; दे. 'मिनक' 3433

मनना अ. अनु. (दे. मू. 288, मा. हि. को-4) गुजारना, गूँजना. तुल. गुज. मन संज्ञा 3344

मनस स. दे. 'मनसा' 3435

मनसा अ. ना. सम (स. मनस संज्ञा) उत्साहित होना; स. संकल्प करना; संकल्प करवाना. तुल. गुज. मानस संज्ञा 'मन का दुःख' 3436

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनुसा अ. दे. 'मनसा' 3437

मनुहार स. ना. देश. (मनुहार संज्ञा) रुठे हुए को प्रसन्न करने का प्रयत्न करना; खुशामद करना 3438

मन्ना अ. देश. (साँप का) फन उठाना; मन में बहुत नाराज होना 3439

मर अ. भव (सं. मृ; प्रा. मर्; दे. इआलें 9871) जीवन-क्रिया का बंद हो जाना; अति श्रम करना; मोहित होना. गुज. मर 3440

मरक अ. अनु. देश. दबकर टूटना; भडकना तुल. गुज. मरक 'मुस्कुराना' 3441

मरमरा अ. अनु. देश (दे. पृ. 163; दे. श. को.) 'मर-मर' की आवाज़ करना; डाल आदि का दबकर टूटना; स. इस प्रकार दबाना कि 'मरमर' शब्द हो. तुल. गुज. मरमर संज्ञा 'पत्तों के हिलने की आवाज़ 3442

मरोड़ स. दे. 'मोड'. ऐंठना; मसलना. गुज. मरोड 3443

*मर्द स. सम (सं. मृद्) मर्दन करना; कुचलना गुज. मर्द 3444

मल स. भव (सं. मृ; प्रा. मल्; दे. इआलें 9870) मालिश करना; मरोड़ना 3445

मलमला स. दे. 'मल' बार-बार हलका स्पर्श करना; (आँख, पलक आदि) बार-बार खोलना-बंद करना 3446

*मलरा स. दे. 'मल्हार' 3447

*मलिना अ. ना. सम (सं. मलिन विशे) मैला होना, म्लान या उदास होना; स. मैला करना. तुल. गुज. मलिन विशे 3448

मलोल अ. ना. वि. (मलाल संज्ञा; अर.) मन के किसी काम या बात के लिए दुःखी होना 3449

मल्हप अ. देश. कुछ कहते हुए और इठलाते हुए चलना 3450

मल्हर अ. दे. 'मल्हार' 3451

मल्हार स. ना. सम (सं. मल्ह संज्ञा) दुलार करते हुए विशेषतः बच्चों को समझाना, चुमकारना 3452

मस स. दे. 'मसल' 3453

मसक स. अनु. देश. (*मष्; दे. इआलें 9919 किसी नरम चीज़ को दबाकर मलना; समेटना गुज. मसळ 3454

मसल अ. दे. 'मसक' 3455

मसिया अ. ना. सम (मांस संज्ञा) शरीर का भली भाँति मांस से भर जाना; स. ऐसी क्रिया करना जिसमें शरीर माँसल हो जाय, तुल. गुज. मांसल विशे 3456

मसूस अ. दे. 'मसोस' 3457

मसोस अ. ना. वि. (अफसोस संज्ञा; फा.) मन ही मन कुढ़ना; मनोवेग को रोकना 3458

मस्ता अ. ना. वि. (मस्तान; विशे; फा.) मस्त होना; स. मस्त करना. तुल. गुज. मस्त विशे 3459

मस्मसा अ. दे. 'मुस्मुसा' 3460

*मह स. भव (सं. मन्थ्; प्रा. महेज्जा संज्ञा; दे. इआलें 9766) मथना 3461

महक अ. ना. अर्धसम (महक संज्ञा) महक देना. गुज. महेक, महेंक 3462

महटिया स. देश. सुनी अनसुनी करना 3463

*माँख अ. दे. 'माख' 3464

माँग स. ना. भव (सं. मार्ग; प्रा. मग्ग; दे. इआलें 10074) याचना करना; चाहना, गुज. माग, माँग 3465

माँच अ. भव (सं. मच्; प्रा. मच्च्; दे. इआलें 9710) शुरू होना; फैलना; लीन होना, गुज. मच 3466

माँज स. भव (सं. मृज्; प्रा. मज्ज्; दे. इआलें 10080) रगड़कर साफ करना; चमकाना. गुज. माज, माँज 3467

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माँझ स. दे. 'माँज' 3468

माँड़ (1) स. भव मृद्; प्रा. मद्द; दे. इआले 9890) रौंदना; अनाज की बालों से कुचल-वाकर दाने निकालना
(2) स. भव (सं. मण्ड; प्रा. मंड; दे. इआले 9741) मंडित करना, पहनना. गुज. मांड 'शुरू करना, व्यवस्थित रखना' 3469

माँत अ. दे. 'मात' 3470

माँप अ. दे. 'मात' 3471

मा अ. भव (सं. मा; प्रा. मा; दे. इआले 10059) अटना. समाना, गुज. मा 3472

माख अ. ना. भव (माख संज्ञा; सं. मक्षा संज्ञा; प्रा. मक्खिआ; दे. इआले 9696) मन में अप्रसन्न होना; पश्चात्ताप करना, तुल. गुज. माख, माखी संज्ञा 3473

माग स. दे. माँग 3474

*माच अ. दे. 'मच' 3475

माड स. दे. 'माँड (2)' 3476

माण अ. दे. 'माँड़' 3477

*मात अ. ना. भव (सं. मत्त विशे; प्रा. मत्त; दे. इआले 9750) मत्त होना, तुल. गुज. मत्त विशे 3478

*माथ स. दे. 'मथ' 3479

मान स. भव (सं. मन्; प्रा. मण्ण्; दे. इआले 9857) स्वीकार करना; योग्यता का कायल होना; मान जाना. गुज. मान 3480

माप स. भव (सं. मा; दे. इआले 10054) वस्तु का विस्तार, घनत्व या वजन मालूम करना, नापना. गुज. माप 'विस्तार नापना' 3481

मार स. भव (सं. मृ; प्रा. मार्; दे. इआले 10066) पीटना; चोट पहुँचाना; हत्या करना; दे. 'मर' गुज. मार 3482

माष अ. दे. 'माख' 3483

मास अ. देश. मिलना 3484

माह अ. भव (सं. मन्थ्; दे. इआले 10028) उमड़ना, उमंग में आना; दे. 'उमाह' 3485

मिचक स. देश (*मिच्च; दे. इआले 10118) (आँखों का) बारबार बंद होना और खुलना 3486

मिचरा अ. देश. बिना भूख के खाना, अरुचि से थोड़ा थोड़ा खाना 3487

मिचला अ. देख. (अ. व्यु. दे. पृ. 137, हि. दे. श.) मतली आना 3488

मिचौ स. दे. 'मींच' 3489

मिट अ. ना. भव (सं. मृष्ट विशे; प्रा. मिट्टिज्ज्; दे इआले 10299) मिट्टी में मिलना या नष्ट होना. गुज. मट, मिट 3490

मिटिया स. ना. भव. (सं. मृत्तिका संज्ञा; प्रा. मट्टी; दे. इआले 10286) मिट्टी लगाकर या मिट्टी रगड़कर साफ करना. तुल. गुज. माटी संज्ञा 3491

मिठा अ. ना. भव (मीठा विशे; सं. मिष्ट विशे; प्रा. मिट्ठ; दे. पृ. 699, पा. स. म. तथा दे. इआले 10299 मीठा होना; स. मीठा करना. तुल. गुज. मीठुं 'मीठा' 'नमकीन' 3492

मिन स. देश. आयति, विस्तार आदि जानने के लिए नापना 3493

मिनमिना अ. अनु. (दे. पृ. 359, मा. हि. को –4) 'मिन मिन' करना, अस्पष्ट तथा धीरे स्वर में बोलना; नाक से स्वर निकालते हुए बोलना 3494

मिमिया अ. अनु. (दे. पृ. 360, मा. हि. को –4) बकरी या भेड़ का में–में शब्द करना; बहुत दबी जबान से चापलूसी करना. तुल. गुज. बें बें संज्ञा 3495

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिल (1) अ. भव (सं. मिल् ; प्रा. मिल् ; दे. इआलें 10133) संयोग होना, भेंटना; प्राप्त होना. गुज. मळ
(2) स. देश. (दे. पृ. 166, दे. श. को.) गौ आदि का दूध दुहना 3496

मिलक अ. देश. प्रज्वलित होना; जलना; स. जलाना 3497

मिस अ. ना. भव (सं. मिश्र विशे; प्रा. मिस्स; दे. इआलें 10137) मिलाया जाना, मला जाना. तुल. गुज. मिश्र विशे 3498

मिहा (1) अ. देश. (*मिह् ; दे. इआलें 10138) बहरा होना
(2) अ. देश. वर्षाऋतु में पकवानों का नमी के कारण मुलायम पड़ जाना और कुरकुरा न रहा जाना 3499

मींज स. भव (सं. मृज् ; दे. इआलें 10275) मलना, मसलना 3500

मींड स. दे. 'माँड' 3501

मीच स. देश. (*मिच्च; प्रा. मिंचण संज्ञा; दे. इआलें 10118) (आँख) मूंदना; बंद करना. गुज. मीच, मींच, वींच 3502

मीज स. दे. 'मींज' 3503

मीट अ. दे. 'मीच' 3504

मीड स. दे. 'मींज' 3505

मुँच स. सम (सं. मुच्च्) मुक्त करना 3506

मुंढ अ. देश. (*मुण्ढ; दे. इआलें 10187) मूंडना 3507

मुकर अ. देश. नटना, इनकार करना. गुज. मुकर 3508

मुकला स. ना. भव (मोकला विशे; * मुक्त; प्रा. मुक्क; दे. इआलें 10157) बन्धन से मुक्त करना; वर का वधू को उसके मायके से पहले-पहल अपने घर लाना. तुल. गुज. मोकळु विशे 'मुक्त, खुला' 3509.

मुकिया स. ना. देश. (मुक्की संज्ञा) मुक्कों से मारना; मुक्कियों से आटा संवारना. तुल. गुज. मुक्की संज्ञा 3010

मुगत अ. नस. अर्धसम (सं. मुक्त विशे) मुक्त होना. तुल. गुज. मुक्त विशे 3511

मुच स. दे. 'मुँच' 3512

मुटा अ. ना. देश. (मोटा विशे; *मोट्ट; दे. इआलें 10187) मोहा होना; घमंडी हो जाना. तुल. गुज. मोटु विशे 3513

मुठिया अ. ना. भव (मूठ संज्ञा; सं. मुट्ठि संज्ञा; प्रा. मुट्ठि; दे. इआलें 10121) मुट्ठी में भरना; मुट्ठियों से हलका आघात करना. तुल. गुज. मुट्ठी संज्ञा 3514

मुडक अ. दे. 'मोड' लचक कर किसी ओर झुकना; लौटना 3515

मुरक अ. दे. 'मुडक' 3516

मुरछ अ. दे. 'मुरछा' 3517

मुरछा अ. ना. अर्धसम (सं. मूर्च्छा) मूर्च्छित होना; स. मूर्च्छित करना. तुल. गुज. मूर्च्छा संज्ञा 3518

मुरझा अ. देश. (दे. पृ. 168, दे. श. को.) सूखना, झुलस जाना 3519

मुरमुरा अ. अनु. देश. (*मुरमुर; प्रा मुरुमुरिअ संज्ञा; दे. इआलें 10115) मुर्री या ऐंठ के कारण किसी चीज़ का टूट जाना; किसी कठोर वस्तु के टूटने से इस प्रकार का शब्द होना 3520

*मुरा स. भव (सं. मृ; प्रा. मुर् ; दे. इआलें 10211) चुभलाना; चबाना; स. मुडाना. गुज. मोर, मोळ 'तरकारी काटना' 3521

मुरुछ अ. दे. 'मुरछ' 3522

मुरुझ अ. दे. 'मुरझा' 3523

*मुलक अ. देश. पुलकित होना; मुस्कराना. गुज. मलक 3524

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुलमुला अ. अनु. देश. (दे. पृ. 168, दे. श. को.) आंखों की पलकों का बार-बार झपकना 3525

मुव अ. दे. 'मर' 3526

मुसकरा अ. दे. 'मुस्का' 3527

मुसकिरा अ. दे. 'मुस्का' 3528

मुसकुरा अ. दे. 'मुस्का' 3529

मुसक्या अ. दे. 'मुस्का' 3530

मुस्करा अ. दे. 'मुस्का' 3531

मुस्का अ. देश (* मुस्स; दे. इआलें 10227) इस तरह हँसना कि शब्द न हो, मंद-मंद हँसना, गुज. मुस्का 3532

मुस्मुसा अ. अनु. देश. (* मुस्स्; दे. इआलें 10227) हिचकियाँ लेते हुए रोना 3533

मूँड स. ना. भव (सं. मुण्ड संज्ञा; प्रा. मुड दे. इआलें 10194) सिर के बाल उस्तरे से बनाना; ठगना गुज. मूंड 3534

मूँद स. ना. भव (सं. मुद्रा संज्ञा; प्रा. मद्द; दे. इआलें 10202) बंद करना; रुद्ध करना 3535

मू अ. दे. 'मर' 3536

मूक स. भव (सं. मुच्; प्रा. मुक्क्; दे. इआलें 10157) त्यागना; बंधनमुक्त करना. गुज. मूक 'रखना, जाने देना' 3537

मूख स. दे. 'मूस' 3538

*मूच स. भव (सं. मुच्; प्रा. मुच्; दे. इआलें 10182) मुक्त करना, गिराना 3539

मूझ अ. देश. मूर्च्छित होना; मुरझाना 3540

*मूठ अ. ना.भव (सं. मुष्ट संज्ञा; प्रा. मुट्ठ; दे. इआलें 10220) नष्ट होना 3541

मूत अ. ना. भव (सं. मूत्र संज्ञा; प्रा. मुत्त; दे. इआलें 10238) पेशाब करना. गुज. मूतर 3542

मूद स. दे. 'मूँद' 3543

मून अ. ना. भव (सं. मौन संज्ञा; प्रा. मूण दे. इआलें 10371) शान्त होना 3544

मूरछ अ. दे. 'मुरछ' 3545

मूव अ. दे. 'मर' 3546

मूस सं. भव (सं. मुष्; दे. इआलें 10222 तथा 10260) चुराना; ठगना 3547

मेंडरा अ. दे. 'मँडरा' 3548

मे स. देश. (दे. पृ. 169, दे. श. को.) पकवान आदि में मोयन देना. गुज. मो 3549

मेल स. भव (सं. मिल्; प्रा. मेल्. दे. इआलें 10332) मिलाना; डालना. गुज. मेल 'रखना, जाने देना' 3550

मेल्ह अ. देश. (दे. पृ. 169, दे. श. को.) क्लेश या पीडा से छटपटाना; काम करने में आनाकानी करना 3551

मेहर अ. ना. वि. (मेह् संज्ञा; फा.) अनुग्रह करना. तुल. गुज. मेहेर संज्ञा 3552

मेहरा अ. देश. नमी आदि के कारण कुरकुरे या मुरमुरे पदार्थ का कुछ आर्द्र होना. 3553

मो स. ना. भव (सं. मुद्; दे. इआलें 10357) भिगोना. गुज. मो 'तेल से आटा मलना' 3554

मोक स. दे. 'मूक' 3555

मोकरा स. दे. 'मोक' 3556

मोकल स. देश. भेजना. गुज. मोकल 3557

मोच स. दे 'मूच' 3558

मोटा अ. दे. 'मुटा' 3559

मोड़ स. भव (सं. मुद्; प्रा. मोड्; दे. इआलें 10186) घुमाना; टेढ़ा करना, गुज. मोड 3560

*मोद अ. ना. सम (सं. मोदन संज्ञा) मुदित होना; सुगंध फैलना; स. मुदित करना; सुगंध फैलना. गुज. मोद 3561

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*मोर स. दे. 'मोड' मथे हुए दही में से मक्खन निकालना; स. दे. 'मोड़' गुज. मोड़ 3562

मोल स. ना. भव (सं. मौल्य; प्रा. मोल्ल; दे. इआले 10373) खरीदना. तुल. गुज. मोल संज्ञा 3563

मोला स. दे. 'मोल' 3564

मोव स. दे. 'मो' 3565

मोस स. भव (सं. मुष्; प्रा. मोसण संज्ञा; दे. इआले 10359) चुराना. दे. 'मूस' 3566

मोह स. सम (सं. मुह्; प्रा. मोह; दे. इआले 10362) मोहित होना. गुज. मोह, मो 3567

मौर अ. ना. भव (सं. मुकुल; प्रा. मौल; दे. इआले 10147) बौर लगना; मौर आना. गुज. मोर 3568

मौल अ. दे. 'मौर' 3569

*म्या स. ना. वि. (मियान संज्ञा; फा.) म्यान में (तलवार) डालना. तुल. गुज. म्यान संज्ञा 3570

याच स. सम (स. याचू) याचना करना, माँगना. गुज. याच, जाच 3571

रंग (1) स. ना. भव (सं. रंग संज्ञा; प्रा. रंगू; दे इआलें 10570) रंग देना, रंग में डुबोना
(2) स. ना. वि. (रंग संज्ञा; फा.) गुज. रंग 3572

*रंज स. सम (सं. रञ्जू) रंजन करना, मन प्रसन्न करना; 'रंग' गुज. रंज 'खुश होना; दुःखी होना; रंगना' 3573

रँझ अ. दे. 'रंज' 3574

रँद स. ना. वि. (रंद संज्ञा; फा.) रंदा फेरना; रंदे से लकडी की सतह चिकनाना. तुल. गुज. रंदो. रंधो संज्ञा; रद 3575

रंभा अ. भव (सं. रम्भ्; दे इआले 10634) गाय का बोलना 3576

रख स. भव (सं. रक्ष्; प्रा. रक्ख्; दे इआले 10547) धरना; ठहराना; सौंपना. गुज. राख. 3577

रग अ. ना. भव (सं. रक्त संज्ञा; रज्; प्रा. रत्त; दे. इआले 10854) प्रेम में होना 3578

रगड स. देश. *रग्ग; इआले 10558) घिसना; पीसना; अ. विकास न करना; अत्यधिक परिश्रम करना. गुज. रगड 'घिसना' 3579

रगद स. दे. 'रगेद' 3580

रगा अ. देश. (दे. प्र. 466, मा. हि. को–4) चुप होना, शांत होना; स. चुप करना 3581

रगेद स. देश. (अ. व्यु. दे. प्र. 138, हि. दे. श.) भगाना, खदेड़ना 3582

रगेल स. दे. 'रगेद' 3583

रच स. सम (सं. रच्) उत्पन्न करना; कल्पना करना. गुज. रच 3584

रज अ. दे. 'रंज' 3585

रझ अ. भव (सं. रन्ध्; दे. इआले 10611) पकना; उबलना. तुल. गुज. रंधा 3586

रट स. सम (सं. रट्; प्रा. रड्; दे. इआले 10590) शब्द आदि की बार बार आवृत्ति करना. गुज. रट 3587

रड़क अ. ना. वि. (रडक संज्ञा; अर.) हलका दरद होना; शरीर में चुभी हुई चीज़ की कष्टदायक अनुभूति होना; स. धक्का देना 3588

रड़का स. दे. 'रडक' 3589

*रढ़ स. दे. 'रट' 3590

रता अ. ना. भव (राता विशे; सं. रक्त; प्रा. रत्त; दे. इआले 10539) रत होना; स. रत करना. तुल. गुज. रातु विशे 3591

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रन अ. भव (सं. रण संज्ञा; प्रा. रण; दे. इआले 10596) घुँघरुओं आदि का मन्द और मधुर शब्द में बजना. गुज. रणरण; तुल. गुज. रणको संज्ञा 3592

रनक अ. दे. 'रन' 3593

रपट अ. ना. वि. (रफ्तन संज्ञा; फा.) चिकनी या ढालवी ज़मीन पर पाँव आदि का फिसलकर आगे बढ़ना; स. मैथुन करना (बाजारू) 3594

रबक अ. देश. डर से छिपना, दुबकना 3595

रबड़ (1) स. देश. घुमाना-फिराना; अ. घूमना (2) स. दे. 'रगड़' 3596

रम अ. भव (सं. रम्; प्रा. रम; इआले 10626 तथा 10637) विहार करना; चैन करना. गुज. रम 3597

रमक (1) अ. दे. 'रम' हिंडोले पर झूलना; हिंडोले पर पेंग मारना
(2) अ. देश. किसी चीज़ में किसी दूसरी चीज़ की हलकी गन्ध, छाया या प्रभाव दिखाई देना 3598

रमड़ अ. देश. रमण करना; युक्त होना 3599

अ. भव (सं. रट्; प्रा. रड्; दे. इआले 10590) चिल्लाना. गुज. रड 'रोना' 3600

ररक स. देश. (* रड्ड; प्रा. रड्ड; दे. इआले 10594) धकेलना; अ. पीड़ा होना. गुज. रळ 'फिसलना' 3601

रल अ. देश. (* रुल; प्रा. रुल्; दे. इआले 10786) एक में मिलाना; घुलना-मिलना. गुज. रोळ 3602

*रव (1) अ. ना. सम (सं. रव संज्ञा) शब्द होना (2) अ. दे. 'रम' 3603

रवक अ. देश. तेजी से आगे बढ़ना; झपटना 3604

रस अ. दे. 'रिस' रसमग्न होना; प्रेमयुक्त होना 3605

रसा अ. सम (सं. रस्; दे. इआले 10653) आनंद लूटना. गुज. रस 'मुलम्मा चढ़ाना' 3606

रह अ. देश. (* रह्; प्रा. रह्; दे. इआले 10666) ठहरना; बसना. गुज. रहे 3607

रहचट अ. देश. (दे. पृ. 173; दे. श. को.) चहचहाना 3608

रहा अ. दे. 'राह' 3609

राँच अ. भव (सं. रक्त विशे रज्; प्रा. रत्त विशे. दे. इआले 10584) रंग से युक्त होना, अनुरक्त होना; स. रंगना; अनुरक्त करना. दे. 'रच' गुज. राच 3610

राँज अ. भव (सं. रञ्ज्; प्रा. रंज्; इआले 10588) आँख में काजल लगना; स. रंगना; राँगे से जोड़ना 3611

राँढ़ स. देश. विलाप करना, रोना 3612

राँध स. भव (सं. रन्धू; प्रा. रंधू; दे. इआले 10616) पकाना; पाक करना. गुज. राँध 3613

राँभ अ. दे. 'रंभा' 3614

*राख स. दे. 'रख' 3615

*राग अ. दे. 'राँच' रंगा जाना; अनुरक्त होना; स. रंगना, गीत आदि गाना 3616

राच अ. ना. भव (सं. रक्त विशे, रज्; प्रा. रत्त; दे. इआले 10584) अनुरक्त होना; प्रसन्न होना. गुज. राच 'प्रसन्न होना' 3617

राज अ. भव (सं. रञ्ज्; दे. इआले 10583) शोभा देना, चमकना. गुज. राज 'भव्य लगना' 3618

राध स. सम (सं. राध्) आराधना करना; युक्ति से काम निकालना 3619

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राष स. देश. खेत में एक विशेष प्रकार से खाद डालना 3620

राम अ. दे. 'रम' 3621

राल स. देश (*रल्ल; दे. इआले 10640) मिश्रित करना; गोदना. गुज. रळ 'अर्जित करना' 3622

राह स. देश. (दे. पृ. 147, दे. श. को.) चक्की के पाटों को खुरदुरा करके पीसने योग्य बनाना 3623

रिंग अ. देश. 'रेंग' 3624

रिडक स. देश. दही आदि बिलोना; अ. खटकना 3625

रित अ. ना. भव (सं. रिक्त विशे; प्रा. रित्त; दे. इआले 10729) खाली होना तुल. गुज. रिक्त विशे. 3626

रिपट अ. दे. 'रपट' 3627

रिर अ. अनु. (दे. पृ. 511, मा. हि. को-4) बहुत गिडगिडाते हुए अपनी दीनता प्रकट करना 3628

रिरिया अ. दे. 'रिर' 3629

*रिल अ. दे. 'रल' 3630

रिस (1) अ. सम (सं. रिश्; दे. इआले 10749) नन्हें नन्हें छेदों से तरल द्रव्य का निकलना
(2) अ. भव (सं. रिष्; दे. इआले 10749) नाराज होना. गुज. रिसा 3631

रिसा अ. दे. 'रिस (2)' 3632

रिसिआ अ. दे 'रिस (2,' 3633

रींध स. दे. 'राँध' 3634

रीझ अ. भव (सं. ऋध्; प्रा. रिज्झ्; दे. इआले 2457) प्रसन्न होना; मुग्ध होना. गुज. रीझ 3635

रीत अ. दे. 'रित' 3636

रीध स. दे. 'राँध' 3637

रुखा (1) अ. ना. वि. (रुख संज्ञा; फा.) किसी ओर रुख होना; किसी ओर रुख करना
(2) अ. ना. रूखा होना; सं. नीरस या फीका करना 3638

रुच अ. भव (रुच्; प्रा. रुच्च्; दे. इआले 10765) प्रिय जान पड़ना, पसंद आना. गुज. रुच 3639

रुझ (1) अ. देश घाव आदि का भरना
(2) अ. देश. उलझना; मन का किसी काम में लगे रहना 3640

रुल अ. देश. मारा-मारा फिरना; दबा रह जाना 3641

रूँद (1) स. दे. 'रौंद'
(2) स. दे. 'रूँध' 3642

रूँध स. भव (सं. रुध्; प्रा. रुध्; दे. इआले 10782) (रक्षा के लिए) कांटेदार पौधों आदि से घेर देना; रास्ता बंद कर देना. गुज. रूँध 'रास्ता बंद करना' 3643

रूच अ. दे. 'रुच' 3644

रूठ अ. ना. भव (सं. रुष्ट; रुष्; प्रा. रुट्ठ विशे; दे. इआले 10791) अप्रसन्न होना. गुज. रूठ 3645

रूत अ. दे. 'रता' 3646

रूम अ. अनु. ('झुम' का अनु. दे. पृ. 522, मा. हि. को-4) 3647

रूर अ. देश. ऊँचे स्वर में बोलना; दहाड़ना 3648

रूस अ. भव (सं रुष्; प्रा. रूस्; दे. इआले 10794) रोष करना; रूठना, गुज. रूस 3649

रूह (1) अ. दे. 'रोह'
(2) अ. दे. 'रूँध' 3650

रेंक अ. अनु. देश. (रेंक; दे इआले 10734) गधे का बोलना; बहुत बुरी तरह से चिल्लाते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुए गाना या बोलना, गुज. रेंक 'गाय-भैंस का बोलना, भद्दे प्रकार से रोना' 3651

रेंग अ. भव (सं. रिङ्ग; प्रा. रिंग्; दे इआलें 10739) कीड़ों, सरीसृपों का चलना; धीरे धीरे चलना. 3652

रेंड अ. देश. गर्भित होना; गेहूँ आदि का इस अवस्था को प्राप्त होना जिसके कुछ ही समय बाद उसमें बालें फूटती हैं 3653

रे स. देश. (दे. पृ. 526, मा. हि. को-4) किसी वस्तु में डालकर लटकाना 3654

रेख स. ना. सम (सं. रेखा संज्ञा) रेखा खींचना, चित्र आदि अंकित करना. गुज. रेख 3655

रेघा स. ना. अर्धसम (रे, ग, स्वर संज्ञा; दे. पृ. 525, मा. हि. को-4) सस्वर गाना, रेंकना 3656

रेत स. ना. भव (रेत संज्ञा: सं. रेत्र संज्ञा; दे. इआलें 10816) रेती से रगड़कर काटना, औजार की धार रगड़ना. तुल. गुज. रेत संज्ञा 3657

रेह स. ना. भव (सं. रेखा संज्ञा; रिख्; प्रा. रेहा; दे. इआलें 10810) रेखांकित करना 3658

रैंग अ. दे. 'रेंग' 3659

रोंस अ. दे. रोस 3660

रोंथ अ. ना. भव (सं. रोमन्थ संज्ञा; प्रा. रोमंथ् दे. इआलें 10853) पगुराना; सोचते रहना 3661

रो अ. भव (सं. रुद्; प्रा. रोय् ; दे. इआलें 10840 रुदन करना. गुज. रो. 3662

रोक स. देश. (* रोक्कि; दे. इआलें 10827) गति बंद करना; मना करना. गुज. रोक 3663

रोद अ. दे. 'रो' 3664

रोध स. ना. भव (सं. रुद्ध विशे; रुध्; प्रा. रुद्ध; दे. इआलें 10775) रोकना. गुज. रोध 3665

रोप स. भव (सं. रुप्; प्रा. रुप्प्; दे. इआलें 10783) लगाना; स्थापित करना. गुज. रोप 3666

रोल अ. भव (सं. लुड्; प्रा. लोल्; दे. इआलें 11080) घुमाना; साफ करना. गुज. रोळ 3967

रोव अ. दे. 'रो' 3668

रोस अ. भव (सं. रुष्; प्रा. रोस्; दे. इआलें 10857) वादग्रस्त होना. 3669

रोह अ. भव (सं. रुह् ; प्रा. रोह्; दे. इआलें 10862) आरोहण करना, चढ़ना 3670

रौंद स. देश. मर्दन करना; पैरों से बहुत अधिक मार-मार कर अंजर-पंजर ढीले करना. तुल. गुज. खूंद, गूंद 3671

रो (1) अ. भव (सं. रु; दे. इआलें 10644) आवाज़ करना
(2) अ. दे. 'रो' 3672

रौरा स. ना देश. (रौरा संज्ञा) व्यर्थ बोलना, हल्ला करना 3673

लंगड़ा अ. ना. भव (लंगड़ा विशे; सं. लङ्ग विशे; दे इआलें 10877) लंगड़ाकर चलना, गुज. लंगडा 3674

लंगरा अ. दे. 'लंगड़ा' 3675

लंबा स. ना. भव (लंबा विशे; सं. लम्ब्; प्रा. लंब; दे. इआलें 10951) लंबा करना. गुज. लंबा 3676

लकडा अ. ना. भव (लकडी संज्ञा; सं. लकुट प्रा. लक्कुड; दे इआलें 10875) सूखकर लकडी की तरह सख्त हो जाना; हाड-हाड हो जाना. तुल. गुज. लाकडी संज्ञा 3677

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लख स. भव (सं. लक्ष्; प्रा. लक्ख्; दे. इआलें 10883 तथा 10891) देखना; ताड जाना. गुज. लख 3678

लखलखा अ. अनु. देश. (*लक्क; दे. इआलें 10876) धूप से हाँफना 3679

लखेद स. दे. 'खदेड़' 3680

लखेर स. दे. 'खदेड़' 3681

लग अ. भव (सं. लग्; प्रा. लग्ग्; दे. इआलें 10895) जुड़ना; अनुभव होना. गुज. लाग 3682

लच अ. दे. 'लचक' 3683

लचक अ. देश. (*लच्चू; दे. इआलें 10907) लंबी चीज का दबाव आदि से झुकना; स्त्रियों की कमर का नखरे-नज़ाकत से झुकना; गुज. लचका, लचक; लांच 3684

लछिआ (1) स. अनु. (लच्छा संज्ञा; दे. पृ. 550, मा. हि. को-4) डोरे, सूत आदि का लच्छा बनाना

(2) अ. भव (सं. लक्षित भू. कृ. प्रा. लक्खिअ; दे. इआलें 10885) दिखाई देना 3685

लज्ज अ. भव (सं. लज्ज्; प्रा. लज्जाव्; दे. इआलें 10909) अपने अनुचित आचरण का अनुभव करके संकुचित होना; शर्माना; दे. 'लाज' गुज. लजव, लजाव 'बदनाम करना' 3686

लट अ. भव (सं. लट्; दे. इआलें 10916) थककर गिरना; रोग आदि से कमजोर पड़ जाना. गुज. लट 'लड़ना' 3687

लटक अ. दे. 'लट' ऊँची जगह के आश्रय से नीचे की ओर अवलंबित होना, टँगना. गुज. लटक 3688

लटपटा अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 139, हि. दे. श.) कमजोरी, नशे आदि के कारण सीधे न चल पाना; विचलित होना. गुज. लटपट 'स्नेह से सटना' 3689

लड़ स. देश. (* लड; दे. इआलें 10920) एक पदार्थ, व्यक्ति का दूसरे पदार्थ, व्यक्ति से टक्कर खाना; वाग् युद्ध करना. गुज. लड 3690

लड़खड़ा अ. अनु. भव (सं. लट्; दे. इआलें 10916) डगमगाना; अस्थिर होना. गुज. लड-बड 'लटकना' 3691

लड़बड़ा अ. दे. 'लड़खड़ा' 3692

लताड स. ना. देश (* लत्त; प्रा. लत्ता संज्ञा; दे. इआलें 10931) रौंदना; लात से मारना. तुल. गुज. लात संज्ञा; लाताट 3693

लतिया स. दे. 'लताड' 3694

लथाड़ स. दे. 'लथेड़' 3695

लथेड़ स. देश. 'अ. व्यु. दे. पृ. 140, हि. दे. श.) कीचड़ आदि लपेटना; भर्त्सना करना 3696

*लद्ध स. ना. भव (सं. लब्ध विशे; प्रा. लद्ध; दे. इआलें 10946) प्राप्त होना; दे. 'लाध' गुज. लाध 3697

लप अ. अनु. (दे पृ. 559, मा. हि. को-4) बेत का एक छोर पकड़कर जोर से हिलाने जाने से इधर उधर झुकना. गुज. लप 'छिपना' 3698

लपक अ. देश. (* लप्प; दे. इआलें 10939) झटपट चल पड़ना; किसी पर झपटना. गुज. लपक; तुल. गुज. लपकारो संज्ञा; लपटु विशे 3699

लपट अ. दे. 'लिपट' 3700

लपलपा अ. दे. 'लप' 3701

लपेट स. देश. (* लप्पेट्ट; दे. इआलें 10942 सूत, कपड़े आदि को किसी चीज के चारों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओर फेरा देकर लगाना; समेटना. गुज. लपेट 3702

लफ अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 140, हि. दे. श.) लपना; झुकना. 3703

लफलफा अ. दे. 'लप' 3704

लबझ अ. देश. (दे. पृ. 179, दे. श. को.) उलझना, फँसना 3705

लबड़ अ. ना. देश. (लबाड़ विशे.) झूठ बोलना; अ. लिबड़ना. तुल. गुज. लबाड विशे; लबड 'लटकना' 3706

लमक (1) अ. ना. देश. (लंबा विशे) लंबाई के कारण बाल नीचे की ओर लटकना
(2) अ. दे. 'लपक' 3707

लरक अ. दे. 'लटक' 3708

लरखरा अ. दे. 'लड़खड़ा 3709

लरज अ. ना. वि. (लर्ज़ संज्ञा; फा.) काँपना; डर जाना. गुज. लरज 3710

ललक अ. भव (सं. लल्; दे. इआले 10968) किसी चीज़ के लिए अत्यधिक उत्सुक होना; उमंग से भर जाना. गुज. लळ 'प्रेम से उत्तेजित होना' 3711

ललकार स. अनु. ना. देश. (ललकार संज्ञा; प्रा. लल्लक संज्ञा; दे. पृ. 723, पा. स. म. * लल्लक्क; दे. इआले 10973) विपक्षीको लड़ने की चुनौती देना; उभाड़ना. गुज. ललकार संज्ञा 3712

ललच अ. देश. किसी अभिलषित वस्तु की प्राप्ति के लिए उत्सुक होना; लालसा करना. गुज. ललचा 3713

ललसा अ. ना. भव (लालस संज्ञा; सं. लस्; दे. इआले 11026) –की लालसा करना. तुल. गुज. लालसा संज्ञा 3714

लला (1) अ. ना. वि. (लाल संज्ञा; अर.) लाली पकडना
(2) अ. ना. भव (सं. लल्; दे इआले 10986) लालायित होना 3715

लव स. दे. 'लुन' 3716

लवक अ. दे. 'लौक' 3717

लशकार स. अनु. (दे. पृ. 566, मा. हि. को– 4) मुँह से लशलश शब्द करते हुए शिकारी कुत्ते को उत्तेजित करना 3718

लस (1) स. भव (सं. लस्; प्रा. लस्; ल्हस्; दे. इआले 10993) चमकना, दिखाई देना. गुज. लस
(2) स. देश. (*लस; दे. इआले 10994 चिमकाना, सटाना. गुज. लस 'फिसलना' 3719

लसक अ. दे. 'लस (2)' 3720

लसलसा अ. दे. 'लस (2)' 3721

लह स. भव (सं, लभ्; प्रा. लभ्, लह्; दे इआले 10948) पाना; लाभ करना. गुज. लहे 'ध्यान से सुनना' 3722

लहक अ. देश. हवा का चलना; लहराना 3723

लहकार स. अनु. उभाड़ना; कुत्ता छोड़ना 3724

लहट अ. देश. (दे. पृ. 180, दे. श. को.) परचना 3725

लहर अ. दे. 'लहरा' 3726

लहरा अ. ना. भव (लहर संज्ञा; सं. लहरी; प्रा. लहरी; दे. इआले 10999) हवा के झोंके से हिलना-डुलना; हवा का चलना. गुज. लहेरा 3727

लहलहा अ. दे. 'लहरा' लहलहानेवाली हरी पत्तियों से भरना; पनपना 3728

लहेस स. भव (सं. श्लिष्; प्रा. सिलेसू; लेसण संज्ञा; दे इआले 12742) पलस्तर करना; टिपकारी करना 3729

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लाँघ स. भव (सं. लङ्घ्; प्रा. लंघ्; दे इआले 10905) नाँघना, पार करना. गुज. लांघ 'भूखा रहना' 3730

ला (1) स. भव (सं. लभ्; प्रा. लाय विशे; दे. इआले 10948) ले आना; सामने रखना, गुज. लाव
(2) स. भव (सं. लग्; प्रा. ले; दे. इआले 11004) प्रयुक्त करना, तैयार करना, गुज. लाव 3731

लाख (1) अ. ना. भव (लाख संज्ञा; सं. लाक्षा; प्रा. लक्खा; दे. इआले 11002) बरसनों के छेदों पर लाख लगाकर उन्हें बंद करना. तुल. गुज. लाख संज्ञा
(2) स. दे. 'लख' 3732

लाग अ. दे. 'लग' 3733
लाज अ. दे. 'लजा' 3734

लातर अ. ना. देश. (लात संज्ञा; दे. पृ. 181, दे.श.को.) चलते चलते थक जाना; पथभ्रष्ट होना 3735

लाद स. भव (सं. लर्द्; प्रा. लद्द्; दे. इआले 10966) अनेक चीज़ों को एक पर रखना; ढोने के लिए बोझ भरना. गुज. लाद 3736

लाध स. ना. भव (लब्ध विशे; स. लभ्; प्रा. लद्ध; दे. इआले 10946) पाना, लेना. गुज. लाध 'मिलना' 3737

लाफ अ. देश. (* लप्फ; दे. इआले 10939) कूदना 3738

लाल स. भव (सं. लालन संज्ञा; लल्; प्रा. लालण; दे. इआले 11025) लाड करना; पालन-पोषण करना. तुल. गुज. लालन-पालन संज्ञा 3739

लाव स. देश. लगना; स्पर्श करना 3740
लाष स. दे. 'लाख' 3741
लास अ. दे. 'लस' 3742

लिख स. सम (सं. लिख्) कोई बात लिपिबद्ध करना; ग्रंथ रचना. गुज. लख 3743

लिपट अ. भव (सं. लिप्; प्रा. लिप्प्; दे. इआले 11061) सटना, लग्न होना. गुज. लपेड 3744

लिबड अ. अनु. (दे. पृ. 583, मा. हि. को-4 लथबथ होना; सनना; स. लथ-पथ करना 3745

लिलक अ. दे. 'ललक' 3746

लिशक अ. अनु. (दे. पृ. 583, मा. हि. को-4) बहुत तेजी से चमकना 3747

लिस अ. दे. 'लस' 3748

लिह् स. भव (सं. लिख्; प्रा. लिह्; दे. इआले 11084) दे. 'लिख' 3749

लीप स. भव (सं. लिप्; प्रा. लिप्प्; दे. इआले 11061) किसी चीज़ पर गाढे या पतले पदार्थ का लेप करना. गुज. लीप, लींप 3750

लील स. देश. (* नि + गल्; दे. इआले 7163 निगलना 3751

लुंडिया स. ना. देश (लुंडी संज्ञा; *लुण्ड; दे. इआले 11076) सूत, रस्सी आदि की लुंडी या गोले के रूप में लपेटना. तुल. गुज लूंडो संज्ञा 'भ्रष्ट पुरुष' 3752

लुक अ. भव (सं. लुप्; प्रा. लुट्ट विशे; दे. इआले 11083) छिपना 3753

लुघड़ अ. दे. 'लुढ़क' 3754

लुप अ. सम (सं. लुप्) लुप्त होना. तुल. गुज.

लुचक स. भव (सं. लुञ्च्; प्रा. लुंच्; दे. इआले 11074) झटके के साथ छीनना 3755

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लुटक अ. दे. 'लुढ़क' 3756
लुटपुट अ. दे. 'लटपटा' 3757
लुटर अ. दे. 'लोट' 3758
लुठ अ. दे. 'लुढ़' 3759
लुड़क अ. दे. 'लुढ़क' 3760
लुड़खुड़ा अ. दे. 'लड़खड़ा' 3761

लुडिया स. भव (सं. लुड्; दे. इआले 11080 गोल तुरपना 3762

लुढ़ अ. भव (सं. लुठ्; प्रा. लुढ; दे. इआले 11079) चक्कर खाते हुए आगे बढ़ना या गिरना; रपटना. गुज. लुठः 'रुई साफ करना लोढ़ना' 3763

लुढ़क अ. दे. 'लुढ़' 3764
लुढ़िया अ. दे. 'लुडिया' 3765

लुन स. भव (सं. लू; प्रा. लुण्; दे. इआले 11082) फसल काटना; नष्ट करना. गुज. लण 3766

लुप अ. सम (सं. लुप्) लुप्त होना. तुल. गुज. लोप संज्ञा 3767

लुबध अ. ना. अर्धसम (सं. लुब्ध विशे) लुब्ध होना. तुल. गुज. लुब्ध विशे. 3768

लुबुध अ. दे. 'लुबध' 3769

लुभा अ. भव (सं. लुभ्; प्रा. लुब्भ्; दे. इआले 11086) आकृष्ट होना; लालसा करना. गुज. लोभा 3770

लुर अ. देश (*लात्; प्रा. लोट्ट; दे. इआले 11156) ऊपर से तनी चली आई वस्तु का इधर-उधर हिलना डुलना; अचानक आ पहुँचना 3771

लुरक अ. दे. 'लुढ़क' 3772
लुरिया अ. देश. प्रेम-पूर्वक स्पर्श करना; थपथपाना 3773
लुल अ. दे. 'लुर' 3774

लुलुआ अ. अनु. (दे. पृ. 589, मा. हि. को-4) लूल् कहकर के किसीका उपहास करना 3775

लुह अ. भव (सं. लुभ्; दे. इआले 11085) दे. 'लुभा' 3776

लूक स. देश. आग लगना; अ. दे. 'लुक' 3777

लूट स. देश. (*लुट्ट; प्रा. लुट्ट् दे. इआले 11078) जबरदस्ती छीनना; ठगना, गुज. लूट 3778

लून स. दे. 'लुन' 3779

लूम अ. ना. देश (*लुम्ब; प्रा. लुंब संज्ञा; दे. इआले 11089) झूलना, लटकना गुज. लूम 3780

लूर अ. दे. 'लुर' 3781

लूस स. भव (सं. लूष्; प्रा. लूस्; दे. इआले 11097) मटियामेट करना; नष्ट करना 3782

ले स. भव (सं. लभ्; प्रा. ले; दे. इआले 10948) प्राप्त करना; थामना; धारण करना. गुज. ले 3783

लेट अ. सम (सं. लेट्; दे. इआले 11109) किसी आधार पर पड़ा रहना; आराम करना गुज. लेट 3784

लेप स. दे. 'लीप' 3785
लेवर स. दे. 'लेवार' 3786

लेवार स. ना. देश (लेवार संज्ञा) लेप लगाना आग पर चढ़ाने से पहले बरतन के पेंदे में लेवा लगाना 3787

लेस स. भव (सं. श्लिष्; प्रा. सिलेस्, लेसण संज्ञा; दे. इआले 12742) जलाना; दीवार पर मिट्टी आदि लेवारना 3788

लेह स. दे. लेस 3789

लोक स. देश. किसी चीज़ को गिरने से पहले ही हाथों से पकड लेना; रास्ते में ही उड़ा लेना 3790

लोच स. ना. सम (सं. लोचन संज्ञा) प्रकाशित करना; देखना; अ. अच्छा होना 3791

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोट अ. देश. (लोर्ट्; दे. इआलें 11156) नीचे-ऊपर होते हुए जाना; करवटें बदलना. गुज. लोट 3792

लोड़ स. सम (सं. लुड्; प्रा. लोल; दे. इआलें 11136) आवश्यकता होना; दरकार होना 3793

लोढ स. दे. (प्रा. लोढ्; दे. पृ. 730, पा. स. म.) (पौधों से फूल) तोड़ना; (कपास) ओटना गुज. लोढ 3794

लोढक अ. दे. 'लुढक' 3795

लोभ अ. ना. सम (सं. लोभ संज्ञा) लुब्ध होना स. लुब्ध करना, लुभाना. गुज. लोभा 3796

लोर अ. दे. 'लोल' 3797

लोल अ. भव (सं. लुड्; प्रा. लोल्; दे. इआलें 11080) हिलना-डोलना. गुज. रोळ 'गोल तुरपना; नष्ट करना. 3798

लोहा अ. ना. भव (सं. लोह संज्ञा; प्रा. लोह; दे. इआलें 11158) किसी चीज़ का अधिक समय तक लोहे के बरतन में पडे रहने के कारण लोहे के गुण, रंग, स्वाद, आदि से युक्त होना. तुल. गुज. लोढुं संज्ञा 3799

लौक अ. दे. 'लौक' 3800

लौक अ. ना. अर्धसम (सं. लोकन संज्ञा) चमकना; दिखाई पड़ना 3801

लौ अ. भव (सं. लू; प्रा. लव्; दे. इआलें 10986) फसल काटना 3802

लौट अ. देश. वापस आना; मुकर जाना; दे. 'उलट' 3803

ल्हेस स. दे. 'लेस' 3804

वंच (1) स. भव (सं. वञ्च्; प्रा. वंच्; दे. इआलें 11208) छलपूर्वक व्यवहार करना गुज. वंच
(2) स. दे. 'बाँच' 3805

वंछ स. ना. सम (सं. वाञ्छा संज्ञा) चाहना 3806

वदुस स. देश. दोष मढ़ना; भलाबुरा कहना 3807

वध (1) अ. ना. भव (सं. वृद्धि संज्ञा; प्रा. वद्धि, वुद्धि; दे इआलें 12076) बढ़ना, उन्नति करना गुज. वध
(2) स. सम. (सं. वध्; वध करना तुल. गुज. वध संज्ञा 3808

वफर अ. देश. (दे. पृ. 185, दे. श. को.) क्रोध से बकना या गुर्राना 3809

वर स. दे. 'बर' 3810

वर्गला स. वि. (वर्गलानीदन; फा.) छल-फरेब से किसीको किसी ओर प्रवृत्त करना, बहकाना 3811

वर्ज स. दे. 'बरज' 3812

वल अ. दे. 'बल' (2) किसी ओर घूमना, लौटना 3813

वस अ. दे. 'बस' 3814

वसूल स. ना. वि (वसूल संज्ञा; अर.) वसूल करना. गुज. वसुलात संज्ञा 3815

वाकार स. देश. ललकारना 3816

वाच स. दे. 'बाँच' 3817

वार स. भव (सं. वृ; प्रा. वार; दे. इआलें 11554) निछावर करना; उत्सर्ग करना. गुज. वार 3818

वाल स. ना. सम (सं. वलय संज्ञा) गिराना, डालना. तुल. गुज. वळु संज्ञा 'वर्तुल, जमीन का भाग' 3819

वाव अ. देश. बजना; स. बजाना. तुल. गुज. वाव 'बोना' 3820

वास स. दे. 'बास' 3821

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विकला अ. ना. सम (सं. विकल विशे) व्याकुल होना; स. किसीको बेचैन करना. तुल. गुज. विकळ विशे 3822

विकस अ. ना. सम (सं. विकास संज्ञा) विकास के रूप में होना; फूलों आदि का खिलना. गुज. विकस 3823

विकीर स. दे. 'बिखर' 3824

विचर अ. दे. 'बिचर' 3825

विचल अ. दे. 'बिचल' 3826

विचार अ. दे. 'बिचार' 3827

विछल अ. दे. 'बिछल' 3828

विडर अ. दे. 'बिडर' 3829

वितता अ. देश. व्याकुल होना 3830

वितर स. सम (सं. वि. + तृ) वितरण करना. गुज. वितर 3831

विथक अ. दे. 'बिथक' 3832

विथरा अ. दे. 'बिथरा' 3833

विदक अ. दे. 'बिदक' 3834

विदल स. सम (सं. वि + दल्) दलित करना; नष्ट करना 3835

विदार स. दे. 'बिदार' 3836

विधंस स. दे. 'बिधाँस' 3837

विध स. सम (सं. वि + धृ) प्राप्त करना; अपने साथ लेना 3838

विनव स. दे. 'बिनौ' 3839

विनस स. दे. 'बिनस' 3840

विभा अ. दे. 'बिभा' 3841

विभास अ. दे. 'बिभा' 3842

विभूष स. त. सम. (सं. विभूषण संज्ञा) विभूषित करना. तुल. गुज. विभूषण संज्ञा 3843

विभेद स. ना. सम (सं. विभेदन संज्ञा) भेदन करना; काटना. गुज. विभेद 3844

विमास अ. भव (सं. वि + मृश्; प्रा. विमंसिअ त्रिशे; दे. इआले 11821) विमर्श करना. गुज. विमास 'सोचना' 3845

विमोच स. ना. सम (सं. विमोचन संज्ञा) बिमोचन कराना; निकालना. गुज. विमोच 3846

विमोह अ. ना. सम (सं. विमोहन संज्ञा) मोहित होना; भ्रम में पड़ना; स. मोहित करना. गुज. विमोह 3847

विरच स. दे. बिरच' 3848

विरम अ. दे. 'बिरम' 3849

विराज अ. दे. 'बिराज' 3850

विरुझ अ. दे. 'बिरुझ' 3851

विलंब स. ना. सम (सं. विलम्ब संज्ञा) विलंब करना; अ. विलंब होना. गुज. विलंबा 3852

विलख अ. दे. 'बिलख' 3853

विलगा अ. दे. 'बिलगा' 3854

विलप अ. दे. 'बिलप' 3855

विलम अ. दे. 'बिलम' 3856

विलस अ. दे. 'बिलस' 3857

विला अ. दे. 'बिला' 3858

विलोक स. दे. 'बिलोक' 3859

विलोड़ स. दे. 'बिलोड़' 3860

विलोप स. ना. सम (सं. विलोपन संज्ञा) लेपा करना; नाश करना; अ. लुप्त होना. गुज. विलोप 3861

विवद अ. ना. सम (सं. विवाद संज्ञा) विवाद करना. तुल. गुज. विवाद संज्ञा 3862

विवर अ. दे. 'बिवर' 3863

विवाह स. दे. 'ब्याह' 3864

विहँस अ. दे. 'बिहँस' 3865

विहर अ. दे. 'बिहर' 3866

वीख स. अर्धसम (सं. वीक्ष्) देखना 3867

वेल अ. सम (सं. वेल्) हिलना; विकल होना 3868

वेसास स. ना. अर्धसम (सं. विश्वास संज्ञा) विश्वास करना. तुल. गुज. विश्वास संज्ञा 3869

वैर स. भव (सं. अव + कृ; प्रा. अक्खिवण त्रिशे; दे. इआले 732) –में डालना, बोना. गुज. ओर 3870

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यतीत अ. ना. सम (सं. व्यतीत भू. कृ.) बीतना; स. बिताना. तुल. गुज. व्यतीत भू. कृ. 3871

व्याप अ. सम (सं. वि + आप्) व्याप्त होना. गुज. व्याप 3872

शंक अ. ना. भव (सं. शङ्का संज्ञा) संदेह करना, डरना. गुज. शंक 3873

शरमा अ. ना. वि (शर्म संज्ञा; फा.) लज्जित होना; स. लज्जित करना. गुज शरमा 3874

शराप स. ना. अर्धमस (सं. शाप संज्ञा) किसीको शाप देना. गुज. शाप 3875

शिथिला अ. ना. समा (सं. शिथिल विशे) शिथिल होना; थकना; स. शिथिल करना. तुल. गुज. शिथिल विशे 3876

शूल अ. सम (सं. शूल्) शूल की तरह गड़ना; शूल गड़ने के समान पीड़ होना; स. शूल चुभाना. 3877

शृंगार स. ना. सम (सं. शृङ्गार संज्ञा) शृंगार करना. तुल. गुज. शृंगार संज्ञा 3878

शोध स. सम. (सं. शुध्) शुद्ध करना; खोज करना. गुज. शोध 3879

शोष स. सम (सं. शुष्) शोषण करना. गुज. शोष 3880

सँउप स. दे. 'सौंप' 3881

संक अ. दे. 'शंक' 3882

संकरा स. ना. भव (साँकर विशे; सं. सङ्कट विशे; प्रा. संकर; दे. इआले 12817) तंग करना. तुल. गुज. सांकडुं विशे 3883

संकलप स. ना. अर्धसम (सं. संकल्प संज्ञा) संकल्प करना; धार्मिक रीति से कोई चीज़ दान करना. तुल. गुज. संकल्प संज्ञा 3884

सँकला स. दे. 'संकलप' 3885

सँका अ. दे. 'शंक' 3886

सँकार स. देश. संकेत करना 3887

सँकुर अ. दे. 'सिकुड' 3888

संकेत (1) अ. ना. सम (सं. सङ्केत संज्ञा) संकेत करना. गुज संकेत
(2) स. देश. संकट में डालना 3889

संकेल स. देश. समेटना, बटोरना. गुज. संकेल 3890

सँकुचा अ दे. 'सकुचा' 3891

सँकोच स. भव (सं. सम् + कुच्; प्रा. संकोअ; दे. इआले 12832) दे. 'सँकुच' 3892

*सँकोप अ. ना. सम (सं. सङ्कोप संज्ञा) कोप करना. गुज. कोप 3893

संकोर स. देश (* सिक्क; दे. इआले 13387) सिकोड़ना. गुज. संकोर 3894

संक्रम अ. ना. सम (सं. सङ्क्रमण संज्ञा) संक्रमण करना. गुज. संक्रम 3895

*संघर स. देश. संहार करना. गुज. संघर 'रखना' 3896

संघरा स. देश (दे. पृ. 186, दे. श. को.) दुःखी या उदासीन गाय को उसका दूध दूहने के लिए परचाना या फुसलाना 3897

*संघार स. दे. 'संघर' 3898

*संच स. भव (सं. सम् + चि; दे. इआले 12867) जमा करना, बटोरना. गुज. सांच 3899

*संचर अ. भव सं. सम् + चर्; प्रा. संचर्; दे. इआले 12868) चलना, फिरना. गुज. सांचर, संचर 3900

सँजो स. भव (सं. सम् + युज्; प्रा; संजो; दे. इआले 12989) सजाना; सज्ज करना. गुज सजाव 3901

*संताप स. ना. सम (सं. सन्ताप संज्ञा) संताप देना; सताना. गुज. संताप 3902

संतोष अ. ना. सम (सं. सन्तोष) संतोष होना; सन्तोष करना. गुज. संतोष स. 3903

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संध अ. ना. अर्धसम (सं. सन्धि संज्ञा) संयुक्त होना; स. संयुक्त करना. गुज. सांध 3904

संधान स.ना. सम (सं. सन्धान संज्ञा) धनुष पर बाण चढ़ाकर लक्ष्य करना; निशाना साधना तुल. गुज. संधान संज्ञा 3905

संप अ. ना. अर्धसम (सं. सम्पन्न विशे) पूरा होना; समाप्त होना 3906

सँपड अ. दे. 'सपड़' 3907

संपाद स. दे. 'संपार' 3908

संपार स. अर्धसम (सं. सम् + पृ; दे. इआले 12939) पूरा करना 3909

संपेख स. ना. अर्धसम (सं. सम्प्रेक्षण संज्ञा) देखना 3910

*संबर स. ना अर्धसम (सं. सम्वरण संज्ञा) संवरण करना, रोकना 3911

*संबोध स. ना. सम (सं. सम्बोधन संज्ञा) समझाना–बुझाना; बोध कराना. गुज. संबोध 'संबोधन करना' 3912

सँभल अ दे. 'सँभाल' 3913

*संभार स. भव (सं. सम् + स्मृ; प्रा. संभारिअ विशे; दे. इआले 13057) स्मरण करना गुज. संभार 3914

सँभाल स. भव (सं. सम् + भृ; प्रा; संभार्; दे. इआले 12961) देखना; पालन करना गुज. सँभाळ 3915

*संभ्राज अ. ना. सम (सं सम्भ्राज संज्ञा) पूर्णतः सुशोभित होना 3916

संवर (1) अ. भव (सं सम् + वृ; दे. इआले 13021) सुन्दर रूप में आना; संवारा जाना गुज. समार 'ठीक करना, सब्जी काटकर तैयार करना'

(2) स. भव (सं. स्मृ; प्रा. समर्; दे. इआले 13863) स्मरण करना. गुज. स्मर 3917

सँवरा अ. ना. भव (साँवरा विशे; सं. श्यामल; प्रा. सामल; दे. इआले 12665) श्यामल हो जाना. गुज. शामळु विशे 3918

संहार स. दे. संघर 3919

सक अ. भव (सं. शक्; प्रा. सक्कू; दे. इआले 12252) समर्थ होना; संभव होना. गुज. शक 3920

सकपका अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 141 हि. दे. श) हिचकाना; चकित होना 3921

सकबका अ. देश. 'सकपका' 3922

सकस अ. देश. भयभीत होना, अड़ना 3923

सकसका अ. दे. 'सकपका' 3924

सकार स. ना. अर्धसम (सं. सत्कार संज्ञा; प्रा. सक्कार; दे. इआले 13108) स्वीकार करना; महाजनी बोलचाल में हुंडी की मिति पूरी होने के एक दिन पहले हुंडी देखकर उस पर हस्ताक्षर करना और उत्तरदायित्व मानना 3925

सकिल अ. भव (सं. सम + कृ; प्रा. संकिण्ण विशे; दे इआले 12823) फिसलना; सिकुड़ना जमा होना; स. जमा करना. गुज. संकेल रू. 3926

सकुच अ. भव (सं. सम् + कुच्; प्रा. संकुच्; दे. इआले 12824) संकोच करना; लज्जित होना; स. लज्जित करना. गुज. संकोच, संकोचा 3927

सकुचा अ. दे. 'सकुच' 3928

सकुड़ अ. दे. 'सिकुड़' 3929

*सकुप अ. दे. 'सकोप' 3930

*सकेत अ. देश (दे. पृ. 187, दे. श. को) संकुचित होना, सिकुड़ना 3931

सकोड स. भव (सं. सम् + कुट्; प्रा. संकोडिअ विशे; दे. इआले 12833) संकुचित करना; बटोरना 3932

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सगबगा अ. अनु. (दे. पृ. 251, मा. हि. को-5) लथपथ होना; फुरती करना; दे. 'सकपका' दे. साँच 3933

सचर अ. दे. 'संचर' 3935

सचा स. ना. भव (साच संज्ञा; सं. सत्य संज्ञा; प्रा. सच्च; दे. इआलें 13112) सच्चा कर दिखलाना. तुल. गुज. साच संज्ञा; साचुं विशे 3936

सज अ. ना. भव (सं. सज्य विशे, प्रा. सज्ज, दे. इआलें 13091) वस्त्राभूषण से अलंकृत होना; स. धारण करना. गुज. सज 3937

सट अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 142, हि. दे. श.) दो वस्तुओं का एक साथ लग जाना, निकट आना. गुज. सट 'फिसल जाना' 3938

सटक अ. देश. (*सट्ट; दे. इआलें 13100 धीरे से खिसक जाना; स. नाज निकालने के लिए डांठ पीटना. गुज. सटक 'लुप्त होना, भाग जाना' 3939

सटका स. अनु. (दे. पृ. 255, मा. हि. को-5) छड़ी, कोडे आदि से इस प्रकार मारना कि 'सट' शब्द हो; 'सटसट' शब्द करते हुए कोई क्रिया करना 3940

सटकार स. दे. 'सटका' 3941

सटपटा अ. अनु. देश (अ. व्यु. दे. पृ. 142, हि. दे. श.) संकोच करना; 'सटपट' शब्द करना 3942

सठिया अ. ना. भव (साठ विशे; सं. षष्टि; प्रा. सट्ठी; दे. इआलें 12804) साठ वर्ष की अवस्था का होना; वृद्ध होना 3943

सठोर स. अनु. (बटोरना का अनु. दे. पृ. 257, मा. हि. को-5) एकत्र करना 3944

सड़ अ. भव (सं. शद्; प्रा. सड्; दे. इआलें 12268) किसी चीज़ का गलना, बुरी हालत में रहना. गुज. सड 3945

*सतकार स. ना. अर्धसम (सं. सत्कार संज्ञा) सत्कार करना; इज्जत करना. गुज. सत्कार 3946

सतरा अ. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 142, हि. दे. श.) इठलाना; क्रुद्ध होना; स. चिढ़ाना 3947

*सतर्प स. ना. अर्धसम (सं. संतर्पण संज्ञा) भली-भाँति तृप्त करना. गुज. संतर्प 3948

सता अ. भव (सं. सम् + तप्; प्रा. संतावू; दे. इआलें 12886) कष्ट देना. गुज. सताव 3949

*सतोख स. ना. अर्धसम (सं. संतोषण संज्ञा) संतुष्ट करना; प्रसन्न करना. गुज. संतोष 3950

सद अ. भव (सं. स्यन्द्; प्रा. संदु; दे. इआलें 13869) रसना; नाव के छेदों से पानी आना 3951

सदर्थ स. ना. सम (सं. सदर्थ संज्ञा) समर्थन करना. गुज. सदर्थ 'शुभ अर्थ' 3952

सनक अ. ना भव (सनक संज्ञा; सं. स्वन्; प्रा. सण; दे. इआलें 13901) पागल होना; सर में शूल जगना. तुल. गुज. सणको संज्ञा 3953

सनकिया अ. दे. 'सनक' 3954

*सनमान स. ना. अर्धसम (सं. सम्मान संज्ञा) सम्मान करना. गुज. सन्मान 3955

सनसना अ. भव (सं. सम् + नद्; दे. इआलें 12972 तथा 13901) गतिशील पदार्थ में हवा लगने, चलने या पानी उबलने आदि से 'सन-सन' शब्द उत्पन्न होना. गुज. सणसण 3956

सन्मान स. दे. 'सनमान' 3957

सपच अ. दे. पूरा होना 3958

सपड़ अ. भव (सं. सम् + पत्, प्रा. संपड्; दे. इआलें 12930) गिरना; फँसना. गुज. सांपड 'प्राप्त होना; पैदा होना' 3959

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सपत अ. देश. किसी स्थान पर पहुँचना 3960

सपना अ. ना. अर्धसम (सं. स्वप्न संज्ञा) स्वप्न होना; स. स्वप्न दिखाना. तुल. गुज. सपनुं संज्ञा 3961

सपर अ. दे. 'संपार' 3962

सबुना स. ना. वि. (साबुन संज्ञा; अर.) साबुन लगाना. तुल. गुज. साबु संज्ञा 3963

समक अ. देश. चमकना 3964

समझ अ. भव (सं. सम् + बुध्; प्रा. संबुज्झ्; दे. इआलें 12959) जान लेना; विचारना; स. किसी बात को जान लेना. गुज. समज 3965

समद (1) अ. देश. (दे. पृ. 188, दे. श. को.) प्रेमपूर्वक मिलना, भेंटना; स. भेंट देना, विवाह करना
(2) स. ना. अर्धसम (सं. सम्वाद संज्ञा) समाचार देना. तुल. गुज, संवाद 'बातचीत' 3966

समप स. दे. 'सौंप' 3967

समर (1) स. दे. 'सुमिर'
(2) अ. दे. 'सँवर' 3968

*समर्प स. ना. सम (सं. समर्पण संज्ञा) समर्पण करना. गुज. समर्प 3969

समा अ. भव. (सं. सम् + मा; प्रा. संमा; दे. इआलें 12975) भीतर आना; अटना; स. अटाना, भरना. गुज. समा अ. 3970

*समाचर स. ना. सम (सं. समाचरण संज्ञा) आचरण करना; अ. व्याप्त होना. तुल. गुज. समाचरण संज्ञा 3971

*समाधान स. ना. सम (सं. समाधान संज्ञा) किसीका समाधान करना; सान्त्वना देना. तुल. गुज. समाधान संज्ञा 3972

समार (1) स. अर्धसम (सं. सम् + मृ; दे. इआलें 12978) मारना, नष्ट करना. गुज. 'समार' 'मारना, काटना'
(२) स. दे. सँवार 3973

समुझ अ. दे. समझ 3974

समुहा अ. ना. भव (सं. सम्मुख विशे. प्रा. समुह, दे. इआलें 12982) सामने आना या होना; सामने लाना. तुल. गुज. सामुं विशे. 3975

समेट स. भव (सं. सम् + वेष्ट्; दे. इआलें 13026) बटोरना; तह करके खाना. गुज. समेट 3976

समो अ. दे. 'समा' 3977

सम्राज अ. सम (सं. सम् + रज्) अच्छी तरह प्रतिष्ठित होना, विराजमान होना 3978

सम्हल अ. दे. 'सँभल' 3979

सर अ. भव (सं. सृ; प्रा. सर्; दे. इआलें 13250) सरकना; काम चलना. गुज. सर 3980

सरक अ. दे. 'सर' रेंगना. गुज. सरक 3981

*सरज स. ना. अर्धसम (सं. सर्जन संज्ञा) सर्जन करना. गुज. सरज 3982

सरदा अ. ना. वि. (सर्दी संज्ञा; फा.) सरदी लगने के कारण ठंडा या शिथिल होना; स. ठंडा करना. तुल. गुज. शरदी संज्ञा 3983

सरदिया अ. दे. 'सरदा' 3984

सरफरा अ. अनु. (दे. पृ. 298, मा. हि. को – 5) व्यग्र होना, घबराना 3985

*सरबर अ. अनु. (दे. पृ. 298, मा. हि. को– 5) किसीकी समता करना. तुल. सरभर संज्ञा 3986

सरस अ. ना. सम (सं. सरस विशे) हरा होना, सोहना; रसपूर्ण होना. तुल. गुज. सरस विशे 3987

सरसरा अ. ना. अनु. भव (सरसर; सं. सृ; दे. इआलें 13257) 'सरसर' आवाज़ होना; साँप आदि का रेंगना. गुज. सरसर संज्ञा 3988

सरसा अ. दे. 'सरस' 3989

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरसेट स. अनु. (दे. पृ. 300, मा. हि. को– 5) फटकार बतलाना 3990

सरहत स. देश. (दे. पृ. 300, मा. हि. को – 5) साफ़ करने के लिए अनाज फटकना, पछोड़ना. 3991

*सराप स. ना. अर्धसम (सं. शाप संज्ञा) शाप देना; कोसना. गुज. शाप 3992

सराह स. भव (सं. श्लाघ्; प्रा. सलाह; दे. इआले 12734) प्रशंसा करना. गुज. सराह 3993

सरिया स. देश. (दे. पृ. 189, दे. श. को.) के अनुसार रखना, तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना 3994

*सरुह अ. देश. सुधरना; सुलझना 3995

सरेख स. देश. सहेजना 3996

सलसला अ. ना. अनु. भव (सलसल संज्ञा; सं. सल्; दे. इआले 13287) रेंगना; स. खुजलाना, गुदगुदाना 3997

सलाक स. ना. वि. (सलाख संज्ञा; फा.) सलाख से किसी चीज़ पर लकीर खींचना; किसीकी आँखों में तपी हुई सलाई फेरकर उसे अंधा करना 3998

सलाख स. दे. 'सलाक' 3999

सवाँग अ. ना. अर्धसम (सं. स्वाङ्ग संज्ञा) नकली भेस बनाना; रूप भरना. तुल. गुज. स्वांग संज्ञा 4000

सवार स. दे. 'सँवार' 4001

सशंक अ. ना. सम (सं. सशंक विशे) शंकायुक्त होना; डरना. तुल. गुज. सशंक विशे. 4002

ससंक अ. दे. 'सशंक' 4003

सस (1) स. ना. सम (सं. ससन संज्ञा) यज्ञ में पशु का बलिदान करना; अ. बलिदान होना (2) अ. सम (सं. श्वस्) साँस लेना 4004

ससक अ' दे. 'सशंक' 4005

ससर अ. ना. अर्धसम (सं. सरण) सरकना 4006

सस्ता अ. ना. वि. (सस्ता विशे; सुस्त विशे; फा. से –ह. भा.) सस्ता होना; स. सस्ता करना. तुल. गुज. सस्तुं विशे 4007

सह स. भव (सं. सह्; प्रा. सह्; दे इआले 13304) झेलना, फल भोगना. गुज. सह, सहे, से 4008

सहम अ. ना. वि. (सहस संज्ञा; फा.) भय खाना, डरना 4009

सहर अ. दे. 'सिहर' 4010

*सहरा स. दे. 'सहला' 4011

सहला स. ना. देश (अ. व्यु. दे. पृ. 142, हि. दे. श.) धीरे–धीरे मलना या हाथ फेरना; गुदगुदाना. गुज. सहेलाव 4012

सहार स. दे. 'सह' 4013

सहेज स. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 142, हि, दे. श.) सँभालना; जाँचना 4014

साँभल स. भव (सं. सम् + भल्; प्रा. संभल्; दे. इआले 12962) स्मरण करना; सुनना; अ. सँभल. गुज साँभळ 4015

*साँस स. भव (सं. शास्; प्रा. सास्; दे. इआले 12419) दण्ड देना; डाँटना; शासन करना 4016

*सा अ. देश. शांत होना; समाप्त होना 4017

साज स. ना. भष (सं. सज्य विशे; प्रा. सज्ज्; दे. इआले 13091 तथा 13093) सजाना; तैयार करना. गुज. साज 'स्वच्छ करना' 4018

साध स. सम (सं. साध्; दे. इआले 13339) सिद्ध करना; निशान लगाना. गुज. साध 4019

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सान (1) स. भव (सं सम्+धा; प्रा. संधा, संध्; दे. इआले 12898 तथा 12924) गूँधना; शरीक करना. गुज. साँध 'जोड़ना' (2) स. ना. भव (सं. शान संज्ञा; प्रा. साण; दे. इआले 12383) सान पर चढ़ाकर धार तेज करना 4020

*साप स. ना. अर्धसम (सं. शाप संज्ञा) शाप देना; कोसना, गुज. शाप 4021

साल स. ना. भव (सं. शल्य संज्ञा, शल्; प्रा. सल्लिअ विशे; दे. इआले 12354) कष्ट देना; चुभाना. गुज. साल अ. 4022

सास स. दे. 'साँस' 4023

साह स. देश. ग्रहण करना; लेना. गुज. साह. 4024

सिकोर स. दे. 'सकोड' 4025

सिंगार स. ना. भव (सं. शृंगार संज्ञा; प्रा. सिंगारिय विशे; दे. इआले 12593) शृंगार करना; सँवारना 4026

सिकुड अ. देश. (*सिक्क; दे. इआले 13387) संकुचित होना 4027

सिकुर अ. दे. 'सिकुड़' 4028

सिटपिटा अ. अनु. देश (अ. व्यु. दे. पृ. 142, हि. दे. श.) दब जाना; मंद पड़ जाना 4029

सिधा अ. भव (सं. सिध्; प्रा. सिज्झ्; दे. इआले 13407) जाना; मर जाना. गुज. सिधाव 4030

सिधार अ. दे. 'सिधा' 4031

सिनक स. देश. अन्दर से जोर की वायु निकालते हुऐ नाक का मल या कफ बहार करना 4032

सिपर स. दे. 'सुमिर' 4033

*सिमेट स. दे. 'समेट' 4034

*सिय (1) स. दे. उत्पन्न करना, रचना (2) स. देश. सीना 4035

*सिर (1) स. ना. अर्धसम (सं सर्जन संज्ञा) सृजन करना. गुज. सरज (2) स. दे. 'सँच' 4036

सिरा (1) अ. ना. भव. (सील विशे; स. शीतल विशे; प्रा. सीअल; दे. इआले 12487) ठंडा होना; तृप्त होना; स. ठंड़ा करना; धार्मिक अवसरों पर गेहूँ, जौ आदि को उगाई हुई बालें या पत्रियाँ किसी जलाशय में ले जाकर प्रवाहित करना (2) अ. ना. देश. (सिरा संज्ञा) सिरे तक पहुंचना; निपटना; स. सिरे तक पहुँचाना 4037

सिसक अ. अनु. (दे. पृ. 376, मा. हि. को-5) 'सी सी' ध्वनि करते हुए रोना, सुबकना. तुल. गुज. सिसकारो संज्ञा 4038

सिसकार अ. दे. 'सिसक'; जीभ दबाते हुए वायु मुँह से इस प्रकार छोडना जिसमें सीटी का-सा 'सी सी' शब्द होता है; सीत्कार करना. गुज. सिसकार 4039

सिहर अ. ना. भव (सं. शिखा संज्ञा; प्रा. सिहर दे. इआले 12435) काँपना; भयभीत होना 4040

सिहला अ. ना. देश. ठंडा होना, सरदी खाना 4041

सिहा अ. भव (सं. स्पृह; प्रा. सिहू; दे. पृ. 159, हि. दे. श.) ईर्ष्या करना; ललचना, तुल. गुज. स्पृहा संज्ञा 4042

सिहार स. देश (दे. पृ. 377, मा. हि. को-5) तलाश करना; इकट्ठा करना 4043

सिहिक अ. देश. सूखना, फसल का सूखना 4044

सींग स. ना. भव (सींग संज्ञा; सं. शृङ्ग; प्रा. सिंग; दे. इआले 12583) चुराए हुए पशु पकड़ने के लिए उनके सींग देखना और उनकी पहचान करना. तुल. गुज. सिंग संज्ञा 4045

सींच स. भव (सं सिच्; प्रा. सिंच्; दे. इआले 13394) पेड़-पौधों को पानी देना; छिड़कना गुज. सिंच, सींच 4046

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सी स. भव (सं. सिव् ; प्रा. सिव्व् ; दे. इआलें 13444) सुई या सुए से किये हुए छिद्रों से तागा निकालकर कपड़े आदि के टुकड़ों को जोड़ना 4047

सीख स. भव. (सं. शिक्ष् ; प्रा. सिक्ख् ; दे. इआलें 12430) किसी विषय का ज्ञान प्राप्त करना; अनुभव प्राप्त करना. गुज. सीख, शीख 4048

सीज अ. भव (सं श्रा; दे. इआलें 12712 तथा 13933) आग और पानी की सहायता से पकना; गलना. गुज. सीझ 4049

सीझ (1) अ. दे. 'सीज'
(2) अ. भव (सं, सिध् ; प्रा. सिज्झ ; दे. इआलें 13408) गुज. सीझ, सीज 4050

सीट अ. अनु. (दे. पृ. 378, मा. हि. को–5) बढ-बढ़ कर बातें करना; जीट हाँकना 4051

सीद अ. सम (सं सीद्) दुःख पाना; नष्ट होना 4052

सील अ. दे. 'सिरा' 4053

सीव अ. दे. 'सी' 4054

सुकच अ. दे. 'सकुच' 4055

सुकुड अ. दे. 'सिकुड़' 4056

सुकुर अ. दे. 'सिकुड़' 4057

*सुगबुगा अ. दे. 'सगबगा' 4058

सुगा अ. देश. दुःखी होना; बिगड़ना 4059

सुचक अ. दे. 'सकुच' 4060

सुच स. दे. 'संच' 4061

सुटुक (1) अ. ना. देश. (सुटका संज्ञा) सुटका मारना, चाबुक लगाना
(2) अ. देश. चुपके से निकल जाना; सिकुड़ना 4062

सुड़क स. अनु. देश (*सुढ; प्रा. सुढिअ विशे; दे. इआलें 13467) किसी तरल पदार्थ को नाक की राह साँस के साथ भीतर खींचना; नाक के मल को ऊपर की ओर खींचना; (तलवार) खींचना 4063

सुड़सुड़ा स. अनु. देश. (दे. पृ. 194, दे. श. को.) (हुक्का आदि) इस तरह पीना कि 'सुड़-सुड़' आवाज़ निकले; कार्य करते समय सुड़-सुड़ शब्द करना 4064

सुडुक स. दे. 'सुड़क' 4065

सुधर अ. ना. भव (*शुद्धकार; दे. इआलें 12521) दुरस्त होना, बिगड़े हुए का बनाना. गुज. सुधर 4066

सुन स. भव (सं. श्रु; प्रा. सुण् ; दे. इआलें 12598) श्रवणेन्द्रिय से शब्द का ग्रहण करना; ध्यान देना. गुज. सुण, सण. 4067

सुबक अ. अनु. देश. (अ. व्यु. दे. पृ. 142 हि. दे. श.) 'सुबक-सुबक' ध्वनि के साथ रोना 4068

सुबुक अ. दे. 'सुबक' 4069

*सुभ अ. देश. सुशोभित होना 4070

सुभा स. भव (सं. शुभ् ; दे. इआलें 12538) सुंदर बनाना 4071

सुमर स. दे. 'सुमिर' 4072

*सुमिर स. भव (सं. स्मृ; प्रा. समर् ; दे. इआलें 13863) स्मरण करना. गुज. समर 4073

सुरक स. अनु. (दे. पृ. 410, मा. हि. को–5) सुर-सुर शब्द करते हुए तथा एक-एक घूँट भरते हुए कोई तरल पदार्थ पीना 4074

सुरझ अ. दे. 'सुलझ' 4075

सुरसुरा अ. अनु. भव (सं. सुरसुर; प्रा. सुरसुर; दे. पृ. 921, पा. स. म.) कीड़ों आदि का सुरसुर करते हुऐ रेंगना; शरीर में हलकी खुजली या सुरसुराहट होना; स. कोई ऐसी क्रिया करना जिससे सुरसुर शब्द हो 4076

सुरेत स. देश (दे. पृ. 195, दे. श. को.) खराब अनाज को अच्छे अनाज से अलग करना 4077

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुलग अ. ना. भव (सं. सम्लग्न विशे, सम् + लग्; प्रा. संलग्ग; दे. इआलें 12999) (लकड़ी उपले आदि का) आग पकडना; कुढ़ना गुज. सळग 4078

सुलझ अ. देश. (दे. पृ. 195, दे. श. को.) गुत्थी का खुलना; पेचीदगी का दूर हाना. 4079

सुलट अ. देश. (*सम् + उल् + लट्; दे. इआलें 13237) सीधा होना. गुज. सुलट; तुल. गुज. सूलटुं विशे. 4080

सुलाग अ. दे. 'सुलग' 4081

सुसक अ. दे. 'सिसक' 4082

सुसता अ. ना. वि. (सुस्त विशे; फा.) थकावट दूर करना; आराम करना. तुल. गुज. सुस्त विशे. 4083

*सुसुआ अ. दे. 'सुसक' 4084

सुसुक अ. दे. 'सिसक' 4085

सुस्ता अ. दे. 'सुसता' 4086

सुहा अ. भव (सं. शुभ्; दे. इआलें 12537) शोभा देना, फबना. गुज. सुहा 4087

सूँघ स. देश. (* शृंख्; प्रा. सिंघ्; दे. इआलें 12579) नाक से गंध ग्रहण करना; (साँप का) डसना. गुज. सूंघ 4088

सूख अ. ना. भव (सं शुष्क विशे; प्रा. सुक्ख्; दे. इआलें 12552) जलहीन होना; डरना गुज. सुका, सुक 4089

सूज अ. भव (सं स्वि; दे. इआलें 12568) किसी अंग का फूल जाना. गुज. सूज 4090

सूझ अ. भव (सं. सुध्; प्रा. सुज्झ्; दे. इआलें 12527) दिखाई देना; दिमाग में आना. गुज. सूझ 4091

सूड स. देश. (देश. दे. पृ. 196, दे. श. को) घूँसना; बंद करना 4092

सूत अ. ना. भव (सं. सुप्त विशे, स्वप्; प्रा. सुत्त; दे. इआलें 13979) सोना, सूथना 4093

*सूद स. सम (सं. सूद्) मार डालना, नष्ट करना 4094

*सूध अ. ना. अर्धसम (सं. शुद्ध विशे) शुद्ध होना; सत्य सिद्ध होना; स. शोधना 4095

सूल स. ना. भव (सं. शूल संज्ञा; प्रा. सूल; दे. इआलें 12575) भाले छेदना; कष्ट देना; अ. दुखना; चुमना. तुल. गुज. शूळ संज्ञा 4096

*सूव अ. ना. अर्धसम (सं स्रवण संज्ञा) प्रवाहित होना; स. प्रसव करना 4097

सृज स. सम. (सं. सृज्) सृष्टि करना, रचना. गुज. सर्जे 4098

सेंक स. ना. देश (*सेक; दे. इआलें 13581 आग पर पकाना; गरम करना. गुज. शेक, सेक 4099

सेंध स. ना. देश (सेंध संज्ञा) चोरी करने के लिए दीवार में छेद करके मकान में घुसने के लिए रास्ता बनाना 4100

सेक स. दे. 'सेंक' 4101

सेट अ. देश. किसीका महत्त्व आदि स्वीकार करना 4102

सेल अ. देश. चल बसना 4103

सेल्ह अ. दे. 'सेल' 4104

सेव स. भव (सं. सेव्; प्रा. सेव्; दे. इआलें 13593) सेवा करना; अण्डे सेना. गुज. सेव 4105

सेहय स. देश. झाड-बुहारकर साफ-सुथरा बनाना 4106

सैंत स. देश. संचित करना; संभालकर रखना 4107

सोंट स. देश. सुधारना 4108

सो अ. भव (सं. स्वप्; प्रा. सुव्, सोव्; दे. इआलें 13902) निद्राग्रस्त होना, लेटना, गुज. सू 4109

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोअ अ. दे. 'सो' 4110

सोक अ. ना. अर्धसम (सं. शोक संज्ञा) शोक-विह्वल होना; स. सोखना 4111

सोच स. भव (सं. शुच्; प्रा. सोच्च्; दे. इआले 12621) विचार करना; शोक करना. तुल. गुज. सोच संज्ञा 4112

सोज अ. देश. शोभा देना 4113

सोझ स. देश. शुद्ध करना; ढूँढना 4114

सोध स. अर्धसम (सं. शुध्; दे. इआले 12626) ढूँढ़ना; शुद्ध करना. गुज. शोध, सोध 4115

सोरा अ. ना. देश (सोर संज्ञा) बोई हुई चीज़ में सोर या जड निकलना 4116

सोह (1) स. भव (सं. शुध्; प्रा. सोहू; दे. इआले 12630) (खेत) निराना. गुज. सो. (2) स. भव (सं. शुभ्; प्रा. सोभ्, सोह; दे. इआले 12636) शोभित होना, चमकना. गुज. सोह, सो 4117

सोहरा स. दे. 'सहला' 4118

सौंच स. ना. अर्धसम (सं. शौच संज्ञा) मलत्याग करना 4119

सौंद स. ना देश (सौंदन संज्ञा) रेह मिले पानी में कपड़े भिगोने का काम करना; दे. 'सान' 4120

सौंध स. ना भव (सं. सुगन्ध संज्ञा; प्रा. सौंध; दे. इआले 13454) सुगंधयुक्त करना. (2) स. ना. भव (सं. सम् + उद् + धा; दे. इआले 13235) सानना 4121

सौंप स. भव (सं. सम् + ऋ; प्रा. समप्प्; दे. इआले 13192) (वस्तु आदि) किसीके सिपुर्द करना. गुज. सोंप 4122

सौंर स. दे. 'सँवर' 4123

सौज अ. दे. 'सोज' 4124

सौन स. दे. 'सौंद' 4125

स्फुर अ. ना. सम (सं. स्फुरण संज्ञा) प्रकट होना; कोई बात मन में सहसा उत्पन्न होना. गुज. स्फुर 4126

स्यो स. दे. 'सेव्' 4127

*स्रज स. दे. 'सृज' 4128

*स्रव अ. ना. सम (सं. स्रवण संज्ञा) बहना; टपकना. गुज. स्रव 4129

*स्वच्छ स. ना. सम (सं. स्वच्छ विशे) स्वच्छ करना. तुल. गुज. स्वच्छ विशे 4130

*स्वप्ना स. ना. सम (सं. स्वप्न संज्ञा) स्वप्न दिखाना. तुल. गुज. स्वप्न संज्ञा 4131

स्वहा अ. दे. 'सुहा' 4132

*स्वाँग स. दे. सवाँग 4133

*स्वीकार स. ना. सम (सं. स्वीकार संज्ञा) स्वीकार करना; अपनाना. गुज. स्वीकार 4134

हँकड़ अ. ना. देश (हाँक संज्ञा) हँकारना; गला फाड़कर चिल्लाना. तुल. गुज. हाँक संज्ञा 4135

हँकर अ. दे. 'हँकड़' 4136

हँकार अ. ना. देश (*हक्कार; प्रा. हक्कार्; दे. इआले 13941) जोर से आवाज़ दे कर किसी दूर के मनुष्य को पुकारना; ललकारना. गुज. हकार. 4137

हँकाल स. दे. 'हाँक' 4138

हँड अ. देश. पैदल चलते हुए चारों तरफ घुमना-फिरना; मारे मारे फिरना. गुज. हींड 'चलना' 4139

हँडव अ. देश. गौओं आदि का रंभाना; जोर का शब्द करना 4140

हंस अ. दे. 'हस' 4141

हअ स. दे. 'हन' 4142

हकबका अ. ना. अनु (हक्का-बक्का विशे; दे. पृ. 509; मा. हि. को-5) स्तंभित होना; भौंचक रह जाना 4143

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हकला अ. अनु. देश (दे. पृ. 200, दे. श. को.) वाग्यंत्र, विशेषतः जिह्वा के दोष के कारण रुक-रुक कर बोलना 4144

हका (1) स. देश (दे. पृ. 510, मा. हि. को -5) पाल तानना; झंडा उठाना
(2) स. दे. 'हंकार' 4145

हग अ. भव (सं. हद्; दे. इआले 13960) शौच करना; अत्यधिक मात्रा में देना. गुज. हग, अघ 4146

हच अ. दे. 'हिचक' 4147

हचक अ. अनु. (दे. पृ. 510, मा. हि. को-5) भार पड़ने पर चारपाई, गाड़ी आदि का झोंका खाना; स. झोंका देना. गुज. अचका 4148

हट अ. देश. (*हट्ट; दे. इआले 13943) किसी स्थान से चला जाना; पीछे हटना. गुज. हट, हठ संज्ञा 4149

हटक अ. ना. देश. (*हट्टक्क; दे. इआले 13945) रोकना 4150

*हठ अ. ना. देश (हठ संज्ञा) हठ करना; संकल्प करना. गुज. हठ 4151

हड अ. देश. तौल में जांचा जाना, तौला जाना 4152

हड़क अ. देश (*हट; प्रा. हढ; दे. इआले 13942) किसी वस्तु के लिए लालायित होना; चिढ़ना. तुल. गुज. हडकवा संज्ञा 'हडक, जलातंक'; हडसेल 'खदेड देना' 4153

हडप स. ना. अनु. देश (दे. पृ. 200, दे. श. को.) किसी वस्तु की अनुचित साधनों द्वारा कभी न देने की इच्छा से अपने अधिकार में कर लेना; निगलना. गुज. हडप 4154

हड़बड़ा अ. अनु देश. (*हडबड्; इआले 13949) हड़बड़ी में कोई काम करना; स. जल्दी कार्य करने के लिए किसीको प्रेरित करना 4155

हड़हड़ा अ. दे. 'हड़बड़ा' 4156

हत स. ना. सम (सं. हत भू. कृ.) हत्या करना; पीटना 4157

हथ-वाँस स. ना. भव (हिं हाथ + अबाँसना) दे. 'हथिया'; किसी व्यवहार में लाई जानेवाली वस्तु में पहले-पहल हाथ लगाना 4158

हथिया स. ना. भव (सं. हस्त संज्ञा; प्रा. हत्थ; दे. इआले 14024) अपने अधिकार में कर लेना; हाथ से पकड़ना 4159

हथ्या स. दे. 'हथिया' 4160

हदस अ. ना. वि. (हदसा संज्ञा; अर.) डर जाना 4161

हन स. भव (सं. हन्; प्रा. हण्; दे. इआले 13963 तथा 14139) वध करना. गुज. हण 4162

हप स. ना. अनु. (दे. पृ. 517, मा. हि. को -5) कोई चीज़ हप करते हुए मुँह में रखना या निगलना; तुल. गुज. हप संज्ञा 4163

हबक स. अनु. (दे. पृ. 517, मा. हि को-5) झपटकर किसीको दाँत से काटना, किसी वस्तु, फल आदि को झट से दांत से काटकर खाना. गुज. हबक 'चौंकना' 4164

हबरा स. दे. 'हड़बड़ा' 4165

हर स. भव (सं. हृ; प्रा. हर्; दे. इआले 13980) हरण कर लेना. छीन लेना. गुज. हर 4166

हरक अ. देश. किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा करना 4167

*हरख अ. ना. अर्धसम (हरख संज्ञा; सं. हर्ष संज्ञा) हर्षित होना. गुज, हरख 4168

*हरखा अ. दे. 'हरख' 4169

हरबरा अ. दे. 'हड़बड़ा' 4170

हरबा अ. दे. 'हड़बड़ा' 4171

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*हरष अ. ना अर्धसम (सं. हर्ष संज्ञा) हर्षित होना. गुज. हर्ष 4172

हरस अ. दे. 'हरष' 4173

हरहरा अ. अनु. (दे. पृ. 522, मा. हि. को –5) 'हरहर' की आवाज़ होना; स. 'हरहर' शब्द उत्पन्न करना. तुल. गुज. हरहर संज्ञा 4174

हरिआरा अ. दे. 'हरिआ' 4175

हरिआ अ. ना. भव (हरा विशे; सं हरित; प्रा. हरिय; दे. इआले 13985) हरा होना, स. हरा करना. तुल. गुज. हरियाळी संज्ञा 'हरियाली'; हरु विशे 4176

हरुआ अ. ना. भव (हरुआ विशे; सं. लघु विशे; प्रा. लहु; दे. इआले 10896) हलका होना; जल्दी से जाना; स. हलका करना. तुल. गुज. हळवुं, हलकुं विशे 'हलका' 4177

हर्ष अ. ना. सम (सं. हर्ष संज्ञा) दे. 'हरष' 4178

हलक अ. देश. (* हल; प्रा. हलहलिअ विशे; दे. इआले 14003) हिलना, अस्थिर होना. गुज. हळक 'लटकना'; हलक 4179

हलका अ. ना. भव (सं. लघु विशे; रम्ह; प्रा. लहु; दे. इआले 10896) हलका होना; हलकोरना; स. हलक करना. तुल. गुज. हलकुं विशे. 4180

हलकार स. ना. वि. (हल संज्ञा; अर.) हल करके बहुत ही महीन चूर्ण के रूप में लाना; छितसना. तुल. गुज. हल संज्ञा 'फ़ैसला' 4181

हलबला अ. अनु. (दे. पृ. 530, मा. हि. को. –5) भय या शीघ्रता आदि के कारण घबराना; स. किसीको घबराने में प्रवृत्त करना 4182

हलरा स. दे. 'लहरा' 4183

हलहला स. देश (*हल्ल; प्रा. हल्लाविय विशे; दे. इआले 14018) घुसेड़ना; हिलाना; अ. काँपना. दे. गुज. हलाव 4184

हलोर स. ना. भव (सं. हिल्लोल संज्ञा; दे. इआले 14121) जल अथवा अन्य तरल पदार्थ को हाथ से या किसी चीज़ से हिलाना, सूप या अन्य पात्र में अन्न अथवा दूसरी वस्तुओं को रखकर उन्हें इस प्रकार पछोड़ना कि उनका खोखला अंश अलग हो जाय. तुल. गुज. हिलोळो संज्ञा 'हिलोर' 4185

हस अ. भव (सं. हस्; प्रा. हस्; दे. इआले 14021) हँसना. गुज. हस 4186

हहर अ. अनु. (दे. पृ. 536, मा. हि. को–5) काँपना; परेशान होना 4187

हहरा अ. दे. 'हहर' 4188

हहल अ. दे. 'हहर' 4189

हहला अ. दे. 'हहल' 4190

हाँक स. भव (सं. हक्क; प्रा. हक्क; दे. इआले 13939) इक्का, बैलगाड़ी आदि वाहनों को चलाना; बढ़ा–चढ़ा कर बातें करना गुज. हाक 'हाँककर भगा देना; चलाना' 4191

हाँड़ अ. देश (* हण्ड; दे. इआले 13943) आवारागर्दी करना. गुज. हाँड 'चलना' 4192

हाँत (1) स. देश. अलग करना; दूर करना (2) स. दे. 'हत' 4193

हाँप अ. दे. 'हाँप' 4194

हाँफ अ. देश. (*हम्फ; दे. इआले 13973) थकावट, भय आदि के कारण फेफड़ों का जल्दी जल्दी और लम्बे–लम्बे साँस लेने लगना. गुज. हाँफ, आँफ 4195

हाँस अ. भव (सं. हस्; प्रा. हस्स्; दे. इआले 14048) हँसना. तुल. गुज. हांसी संज्ञा 4196

हार अ. भव (सं. हृ; प्रा. हार; दे. इआले 14061) पराजित होना; थकना; स. खोना; त्यागना. गुज. हार 4197

हाल अ. देश (*हल्ल; प्रा. हल्ल; दे. इआले 14081) हिलना–डोलना, काँपना. गुज. हाल 4198

हिंकर अ. अनु. (दे. पृ. 5546, मा. हि. को–5) घोड़ों का हिनहिनाना, हींसना 4199

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिंच अ. देश. पीछे की ओर हटना 4200
हिंछ अ. भव (सं. अभि +इष्; दे. इआलें 536) इच्छा करना; चाहना 4201
हिंड अ. भव (सं. हिण्ड्; प्रा. हिंड्; दे. इआलें 14089) चलना. गुज. हींड 4202
हिंडोर अ. दे. 'हिंदोर' डोलना 4203
हिंदोर स. ना. भव (सं. हिण्दोल्; प्रा. हिंडोलण संज्ञा. दे. इआलें 14095) घँधोलना 4204
हिंस अ. दे. 'हींस' 4205
हिकला अ. दे. 'हकला' 4206
हिच अ. दे. 'हिचक' 4207
हिचक अ. देश (* हिच्च; प्रा. हिंचिअ विशे; दे. इआलें 14083) हिंचकी लेना; हिचकिचाना. गुज. हींच. हीचक 'झूलाना' 4208
हिचहिचा अ. दे. 'हिचक' 4209
*हिता अ. ना. देश (हित संज्ञा) हितकर होना; अनुराग से युक्त होना तुल. गुज. हित संज्ञा 4210
हितौ अ. दे. 'हिता' 4211
हिनक अ. दे. 'हिनहिना' 4212
हिनहिना अ. अनु. देश (* हिन; दे. इआलें 14092) घोड़े का हींसना. गुज. हणहण 4213
हिरक अ. दे. 'हिलग' परचने के कारण धीरे-धीरे पास आने लगना; सटना 4214
हिरग अ. दें. 'हिरक' 4215
हिर (1) अ. दे. 'हर'
(2) स. दे. 'हर' 4216
हिरा (1) अ. देश. खेतों में भेड़, बकरी आदि चौपाये रखना जिसमें उनकी लेंडी या गोबर से खेत में खाद हो जाय
(2) अ. दे. 'हेरा' 4217
हिल (1) अ. देश. (*हिल्ल्; दे. इआलें 14120) अस्थिर होना; काँपना. गुज. हिल, हल
(2) अ. देश. (*हिल्; दे. इआलें 14116) हिलमिल जाना; एक हो जाना. गुज. हळ 4218
हिलक अ. देश. (*हल्ल्; दे. इआलें 14120) हिहकना; सिसकना; सिकोड़ना 4219
हिलकोर स. देश (*हिल्ल्; दे. इआलें 14120) जल को तरंगित करना. गुज. हिल्लोळ 4220
हिलग अ. भव (सं अभि + लग्; दे. इआलें 528) परचना; फँसना 4221
हिलोर स. ना. दे. 'हलोर' हिलकोरना. गुज. हिलोळ 4222
हिहिना अे. दे. 'हिनहिना' 4223
हींग अ. दे. 'हींस' 4224
हींच स. दे. 'खींच' 4225
हींछ स. दे. 'हिंछ' 4226
हींड (1) अ. दे. 'हिंड'
(2) स. देश. धँधोलकर गंदा करना; हुडकना 4227
हींस अ. भव (सं. हेष्; प्रा. हेसिअ, हीसमण संज्ञा; दे. इआलें 14166) घोड़े का हिनहिनाना 4228
हीच अ. दे. 'हिचक' 4229
हीछ स. दे. 'हींछ' 4230
हीठ अ. भव. (सं. अभि + स्था; दे. इआलें 518) जाना; निकट आना 4231
हील अ. दे. 'हिल' 4232
हुँक अ. दे. 'हुँकार' 4233
हुँकार अ. अनु. दर्पयुक्त होकर 'हुं' शब्द का उच्चारण करना; चिग्घाडना 4234
हुआ अ. अनु. (दे. पृ. 559, मा. हि को-5) गीदड़ का 'हुआँ हुआँ' करना 4235
हुक अ. देश (दे. पृ. 559, मा. हि. को - 5) भूल जाना; वार या निशाना चूकना 4236
हुकार अ. दे. 'हुँकार' 4237
हुटक अ. देश. (दे. पृ. 203, देश. को.) बच्चों का रोना 4238
हुडक अ. दे. 'हुटक' 3239

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुत अ. ना. सम (सं. हुत भू. कृ.) आहुति के रूप में आग में पडना; स. दे. 'हुन' 4240

हुदक अ. देश. उमंग में आकर आगे बढना 4241

हुन (1) स. भव (सं. हु; प्रा. हुण्; दे. इआले 14139) जलाने के लिए कोई चीज़ आग में छोडना; आहुति देना.
(2) स. दे. 'हन' 4242

हुमक अ. ना. अनु. भव (सं. हुङ्कार; प्रा. हुंकार; दे. पृ. 949, पा. स. म.) 'हुम्' ध्वनि उच्चरित करना; उल्लासित होना 4243

हुमग अ. दे. 'हुमक' 4244

हुमस अ. देश (अ. व्यु. दे. पृ. 143, हि. दे. श.) इच्छा आदि उठना; उत्तेजित होना 4245

हुलक अ. ना. वि. (हलक संज्ञा; फा.) कै करना 4246

हुलका स. देश. (दे. पृ. 203, दे. श. को.) उकसाना, घावा करना 4247

हुलस अ. भव (सं. उत् + लस्; प्रा. उल्लस्; दे. इआले 2375) उल्लसित होना; उमड़ना. गुज. उलास 4248

हुसकार स. अनु. (दे. पृ. 562, मा. हि. को-5) हुश-हुश शब्द करके कुत्ते को किसीकी ओर काटने के लिए उत्तेजित करना. गुज. हुसकार 4249

हुहा अ. अनु. (दे. पृ. 563, मा. हि. को-5) हू हू शब्द होना; स. हू हू शब्द करना. 4250

हूंक (1) अ. दे. 'हुंकार'
(2) अ. अनु. पीड़ा के कारण गाय का रंभाना 4251

हूँस स. अनु. (दे. पृ. 563, मा. हि. को-5) रह रह कर कुढ़ते हुए किसीको बुरा भला कहना 4252

हूक अ. ना. भव (हिक संज्ञा; सं. हिक्का संज्ञा; प्रा. हिक्का; दे. इआले 14075) हूक की पीडा उठना. तुल. गुज. हिका संज्ञा 4253

हूठ अ. देश. हटना; किसीकी ओर पीठ करना 4254

हूद स. देश. बारबार ठोकर लगाकर तोड़ना-फोड़ना 4255

हून स. दे. 'हुन' 4256

हूर स. दे. 'हूल' 4257

हूल स. ना. देश. (*हूल; दे. इआले 14147) गड़ाना 4258

*हेर स. देश (*हेर; प्रा. हेर; दे. इआले 14156) किसी चीज़ को ढूँढना; जासूसी करना. गुज. हेर 4259

हेर-फेर स. दे. 'हेर' + 'फेर' 4260

हेरिया अ. देश. (दे. पृ. 568, मा. हि. को-5) जहाज़ के अगले पालों की रस्सियाँ तानकर बाँधना, हेरिया मारना 4261

हेल स. भव (सं. *हिड्; दे. इआले 14115) क्रीडा करना; पानी में घुसना; अवहेलना करना. गुज. हळ 'अवैध रूप से स्त्री का पुरुष से हिलना-मिलना' 4262

हौंकर अ. अनु. (दे. पृ. 570, मा. हि. को-5) हो-हो शब्द करना; हुँकारना 4263

हो अ. भव. (सं. भू; प्रा. भव, हो; दे. इआले 9416 तथा 1031) कायम रहना; परिस्थिति आदि में परिवर्तन आना. गुज. हो 4264

होड़ अ. ना. देश (होड़ संज्ञा; *होड्ड प्रा. होड्ड, हुड्ड संज्ञा; दे. इआले 14175) किसीसे होड लगाना. तुल. गुज. होड संज्ञा 4265

होम स. ना. सम. (सं. होम संज्ञा) हवन करना गुज. होम 4266

होर स. दे. 'हेर' 4267

होल्द स. देश (दे. पृ. 204, दे. श. को.) धान के खेत में घातपात दूर करने के लिए हल चलाना 4268

हौंक (1) अ. दे. 'हुंकार'
(2) अ. देश. पंखे से हवा करके आग सुलगाना; दे. 'धौंक' 4269+1

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातुकोश–टिप्पणी

2 'प्रा. अंकवालिया' चाहिए–ह. भा.
7 मा. हि. को. व्यु. अंखुआ संज्ञा, सं. अक्ष, प्रा. रूप नहीं दिया ।
8 मा. हि. को. में केवल संस्कृत 'अङ्ग' का दिशेंक है ।
9 संभवतः 'अंग' से सम्बद्ध
14 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
33 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
37 मा. हिं. को. व्यु. सं. 'अदि' बांधना, बंधन करना ।
40 मा. हि. को. व्यु. सं. 'उल्लंघन' से ।
41 मा. हि. को. व्यु. सं. 'अवहेलन' से ।
42 संभवतः 'आ + उवल्' या 'अप + उवल्' से निष्पन्न, 'उवल्' का प्राकृत में 'उल्ल', जिससे ऊल होकर अऊल या औल हो सकता हैं ।
43 व्यु. असंभाव्य
44 मा. हि. को. व्यु. सं. आकुल से, ?
45 मा. हि. को. व्यु. सं. 'चकित' से, ?
49 मा. हि. को. व्यु. सं. 'आकर्षण' से, ?
50 मा. हि. को. व्यु. सं. 'आकर्ष' से ?, सं. आ + कृषू, प्रा. आगासिय दे. इअ.लें 1002
53 सं. 'आकुल' से सीधे ही निष्पन्न मानने पर तत्सम।
54 मा. हि. को. व्यु. सं. 'आकोंशन' से ?
55 मा. हि. को. व्यु. सं. 'खर' (तीव्र या कटु) से ?
56 मा. हि. को. व्यु. सं. 'एकत्र' से ?
61 मा. हि. को. व्यु. सं. 'अग्र' से ?
62 मा. हि. को. व्यु. 'आगुंठन' से–असंभाव्य, व्यु. 61 के अनुसार स्वीकार्य । दे. श. को. ने इसे देशज बताया है, दे. पृ. । ।, अस्वीकार्य ।
70 (2) मा. हि. को. व्यु. 'सं. अंग + हि. ओट' से ?
71 ह. भा. के अनुसार यह धातु 'आगल' से व्युत्पन्न नहीं हो सकती ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

75 मा. हि. को. में यह धातु नहीं है ।
78 मा. हि. को. में यह धातु नहीं है । 'अचय', 'अचव' की व्यु. सं. 'आचमन' से दी है ।
83 (1) सं. 'उज्ज्वार' से – ह. भा. ।
84 मा. हि. को. व्यु. 'सं. आर्त्त, प्रा. अट्ट' से ? अस्वीकार्य । 'अट्' तत्सम – ह. भा.
85 मा. हि. को. व्यु. सं. 'आटङ्कण' से ।
86 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
87 मा. हि. को. में सं. 'अर्ध + कल् किंवा अत्तर + कल्' – इस प्रकार व्युत्पत्ति सूचित की है । गुजराती रूप 'अठकल' दिया है, सही रूप है 'अटकल' ।
89 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
90 मा. हि. को. में 'अटेरन' संज्ञा की व्युत्पत्ति सं. इति–ईरण' से दी गई है ।
91 इसके मूल में मा. हि. को. ने 'अठखेली' संज्ञा का निर्देश किया है ।
92 मा. हि. को. में व्यु. 'सं. स्थान, पा. ठान' से, ?
95 मा. हि. को. में व्यु. 'सं. अलं = वारण करना या हि. हठ ?'
98 इसको मा. हि. को. ने 'अनु' बताया है ।
102 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
103 मा. हि. को. में व्यु. सं. आ + ज्ञा (बोध करना) – आज्ञापन, पा. अम्पापन, प्रा. आणवन – इस प्रकार दी गई है ।
108 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
112 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है । द्विरुक्त – ह. भा.
116 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
122 मा. हि. को. व्यु. 'अनख संज्ञा सं अन् + अक्ष' से, ?
123 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अन् + अवगना, आगे बढ़ना'
129 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अनादर' से ?
130 मा. हि. को. व्यु. 'हि. अन=नहीं + सं. रस' ।
131 मा. हि. को. व्यु. 'सं. नव + हि बासन' ?
147 इसका प्रयोग पंजाब – राजस्थान में सूचित करके मा. हि. को. ने व्यु. दी है, 'सं. आ + पत्' से; और 'अपड़ाना', 149 के लिए 'सं. अपर' का निर्देश किया है ।
150 हि. श. र. में इसकी व्युत्पत्ति 'आप' से सूचित की गई है, दे. पृ. 272 ।
152 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अपसरण' से ।
157 मा. हि. को. व्यु. 'सं. आपृष्ठ' से ।
158 मा. हि. को. व्यु. 'सं. आपोथन' से ।
171 सं. अद्भुत, प्रा. अब्भुअ से सम्बद्ध–ह. भा. ।
172 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अभेद' से ।
173 हि. दे. श. ने इसे अ. व्यु. बताया है । दे. पृ, 97 मा. हि. को. ने 'सं आ=पूरा, पूरा + मान =माप' से व्यु. सूचित की है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

186 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
188 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अर्द्दन' से ।
192 'दरर' से द्विरूक्त – ह. भा. ।
195 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अलस' से ?
196 मा. हि. को. व्यु. 'सं. स्पर्शन से ?
202 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अनुगायन' से ।
209 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अरूस् = क्षत्, घाव' से ।
221 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
222 मा. हि. को. 'सं. अट्' से ।
228 (2) मा. हि. को. व्यु. 'सं. अवलोकन' से ?
229 मा. हि. को. व्यु. 'सं. लीप' से ।
230 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अर्' से ।
236 मा. हि. को. व्यु ? 'सं. आपर्जन या फा. आवाज ?
237 मा. हि. को. व्यु ? 'हिं. अव + डेरा ?'
238 मा. हि. को. आना का पुराना रूप'
263 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
264 मा. हि. को. में व्यु. सं. अस्ति ।
272 मा. हि. को. व्यु. 'सं. हठ' ?
273 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अंकन' से ।
277 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
281 कुछ विद्वान इसे सं. 'आप्' से सम्बद्ध बताते हैं – ह. भा. ।
289 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
300 मा. हि. को. व्यु. 'सामना के अनु. पर' ।
315 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अस्=होना' ।
332 मा. हि. को. व्यु. 'सं. इष्ट' से ।
333 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
338 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं हैं ।
339 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
341 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उत्कर्ण, पा. उक्कस' ।
345 मा. हि. को. व्यु. 'सं. आकुल, पु. हिं. अकुताना' ।
355 इसके मूल में अ. उखड़ है । छत्तीसगढी में 'उखान' रूप मिलता है । छ. का. उ. के अनुसार संस्कृत 'उत्खाटयति' से उत्पन्न ।
359 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
371 यह धातुरूप मा. हि. को में नहीं है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

373 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उद्घाटन, प्रा. उग्घाटन' पा. स. म. में 'उग्घाटन' रूप नहीं है।
394 मा. हि. को. में 'गु. उचलगूं' रूप ?
398 'उजड़' और 'उजर' की व्यु. एक ही है, मा. हि. को. की व्यु. यादृच्छिक है।
400 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है।
409 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उत् + सरण'।
415 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उत्य + अंग'।
417 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
419 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
420 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उद्वासन' से, दे. श. को. ने इसे देशज कहा है, दे. पृ. 331।
421 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
432 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
434 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उत्तरण' से।
435 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. आतुर' से।
437 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उत्थापन'।
438 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उत्थापन'।
441 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उत्सादन' से।
452 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उद्दारण' से।
456 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उद्विग्न' से।
457 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उद्धरण' से।
462 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उद्धारण'।
463 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उद्धरण'।
464 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उद्वसन, हिं. उधरना'।
467 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उदंचन=ऊपर उठाना या खींचना'।
471 मा. हि. को. व्यु. 'उनमान=सं. उद्–मान'।
473 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उन्मेष'।
474 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उन्नमन'।
475 मा. हि. को. 'सं. उन्नरण=ऊपर जाना'।
477 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उत्पन्न' से।
488 गुज. 'ऊपड' की व्यु. सं. उत् + पत्, प्रा. उप्पड्, दे. इआलें 1810।
491 मा. हि. को. व्यु. (2) 'सं. उपनयन'।
494 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
496 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उपार्जन'।
501 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उपसरण'।
514 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

517 ह. भा. की दृष्टि से से टर्नर की व्यु. ठीक नहीं है । प्रा. 'उब्भल्ल' के मूल में सं. 'उद् + ज्वल्' है ।
521 ह. भा. इस व्यु. से सहमत नहीं हैं । अप. उब्बिट्ठ के मूल में सं. उद् + विवृ होगा ।
522 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
525 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. उभरना' से ।
528 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
531 मा. हिं. को. व्यु. हिं. उचीटना' ।
534 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उन्मञ्च=ऊपर उठना' ।
535 अ. व्यु. दे. पृ. 88, हि. दे. श.
542 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उन्मीलन' ।
544 मा. हि. को. व्यु. 'सं. जृंभण' ।
549 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. उघड़ना' ।
552 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. उड़सना' ।
554 बृ. हि. को. 'दे. ओगारना' ।
561 मा. हि. को. में यह धातुरूप नहीं है ।
568 मा. हि. को. में व्यु. 'सं. उद् + स्थल' ।
569 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उल्लोटन' ।
570 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उद् + लर्व' ।
571 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. उड़ेलना' ।
573 यह धातुरूप मा. हि. को. में. नहीं है ।
574 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उल्लंभन' ।
579 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उल्लुंचन' ।
580 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
588 यह धातुरूप मा. हि. को. में. नहीं है ।
590 'उसन' सं. 'उत् + श्वस्' से, दे. इआलें 1859 ।
593 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उच्छ्वसन' ।
596 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उत् + शालन' ।
598 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
599 यह धातुरूप मा. हि. को में नहीं है । गुज. 'सीझ' का सम्बन्ध सं. 'सिध्यति' से
601 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
613 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उत् + सज्जा' ।
615 मा. हि. को. व्यु. (1) 'सं. ऊह' (2) 'सं. ऊढ' ।
621 दे. श. को. ने इसे देशज बताया है, दे. पृ. 17 ।
622 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
626 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. उछलना' ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

631 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
632 मा. हि. को. व्यु. 'सं. आवर्त्तन, प्रा. आवहन'; दे. श. को. ने इसे देशज बताया है, दे. वृ. 17 ।
635 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अंचन=पूजा करना' ।
636 मा. हि. को. ने इसे अनु. बताया है ।
637 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. ओंगना' ।
639 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अवगरण' ।
641 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अवरुन्धन, प्रा. ओरुज्झन, हि. ओझल' ।
642 भो. ख. तु. अ. ने. (1) को देशी बताया है ।
645 हि. वि. अ. यो. ने 'उप + विष्ट' का निर्देश करते हुए इसे सोपसर्गज धातु कहा है, दे. पृ. 139 ।
650 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उन्नयन' ।
652 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
655 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. ओर= अंत + आना (प्रत्य); ।
661 यह धातु मा. हि. को. में. नहीं है ।
663 मा. हि. को. व्यु. 'सं. आवर्षण, प्रा. आवरसन' ।
664 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अवधारण' ।
670 मा. हि. को. व्यु. 'सं. आवेजन = व्याकुल होना ।
673 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उन्माद' ।
676 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अव + घूर्णन' ।
679 दे. श. को. ने इसे देशज बताया है, दे. पृ. 18 ।
684 यह धातुरूप मा. हि. को. में. नहीं है ।
685 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अव = बुरा + रस' ।
686 मा. हि. को. ने इसे अनु. बताया है ।
688 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कांक्षा' ।
691 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कम् (चाहना) + थन् – टाए्' ।
698 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कच्चरण' ।
709 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
710 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
718 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कर्षण' ।
723 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कर्षण, प्रा. कड्ढन' । 'कर्ष्' से प्रा. करिस् कास् होगा, हिं. 'कस' ।
742 मा. हि. को. व्यु. 'सं. क्रम, प्रा. कम्मवण, दे. प्रा. कम्मवइ, गु. कमावूं, सिं. कमनु, मरा. कमविणें' गुज. 'कमावु' चाहिए ।
744 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कर्षण' ।
746 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. कालिख' ।
747 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कलरव' ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

753 'सं. कृ.' से, शंकास्पद दे. इआलें 3060 ।
760 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कल्पन' ।
765 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
768 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कड् या कल् = संज्ञाशून्य होना' ।
780 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
784 दे. श. को. ने इसे देशज बताया है, दे. पृ. 24 ।
799 यह धातुरूप मा. हि. को. में. नहीं है ।
800 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कीर्णन' ।
801 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कर्कट' ।
804 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कर्तन' ।
813 यह धातुरूप मा. हि. को में नहीं है ।
823 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. कुंड, हलकी लकीर' ।
827 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कुद्ध, प्रा. कुड्ढ' ।
829 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कर्तन : कतरना' ।
840 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कलरव वा कुरव, हिं. कुर्र' ।
844 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कर्तन' ।
865 मा. हि. को. व्यु. 'सं. आकूत : आशय' ।
867 छत्तीसगढ़ी में 'कुद' रूप मिलता है। दे. पृ. 275, छ. का. 3. ।
868 मा. हि. को. व्यु. 'सं कु+हन' ।
879 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कुंड्' ।
885 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कुद्ध' ।
903 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
904 मा. हि. को. व्यु. 'सं. क्षरण' ।
905 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. खदेड़ना' ।
906 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
910 मा. हि. को. व्यु. 'हि. खदेरना' ।
911 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
912 मा. हि. को. ने इसे अनु. बताया है ।
921 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. खाता' से, सा. जो. को. ने 'खातुं' फा.खत' से व्यु. बताई है । परन्तु यह शब्द अरबी है, दे. पृ. 180, हि. प. फा. अं. प्र. ।
930 छत्तीसगढ़ी में 'खपाना' रूप 'रचना' के अर्थ में प्रयुक्त; दे. पृ. 278, छ. का. 3 ।
932 मा. हि. को. व्यु. 'हि. भरना' ।
935 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
964 मा. हि. को. व्यु. 'सं. स्कंदन' ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

965 मा. हि. को. व्यु. 'सं. खादन' ।
966 मा. हि. को. व्यु. 'सं. क्षेपन, प्रा. खेपन' ।
967 व्यु. शंकास्पद – ह. भा. ।
968 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कासन, प्रा. खांसन' ।
972 मा. हि. को. व्यु. 'सं. क्षिप्त' ।
976 मा. हि. को. व्यु. 'सं. क्षीण, प्रा. खिज्ज' धातुकोश में दी गई व्यु. शंकास्पद—ह. भा. ।
979 मा. हि. को. व्यु 'सं. कीर्णन' ।
983 टर्नर ने 'खस' रूप नहीं दिया ।
991 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कृष्, प्रा. खंच' ।
994 मा. हि. को. व्यु. 'सं खिद्यते, प्रा. खिज्जइ' ।
999 मा. हि. को. व्यु. 'सं. खुड् या खोट' ।
1004 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1006 मा. हि. को. 'सं. क्षुब्ध' ।
1008 मा. हि. को. व्यु 'सं. क्षुरण' ।
1009 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1011 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1012 मा. हि. को. व्यु. 'सं. क्षुर, प्रा. खुल्ल,' सा. जो. को. ने इसे वि. बताया है : खला अर. विशे. ।
1013 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1021 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1028 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1031 मा. हि. को. व्यु. 'सं. कोश + हि. ना प्रत्य.' ।
1032 मा. हि. को. व्यु. 'सं. क्षेपन' ।
1042 मा. हि. को. व्यु. 'सं. क्वेल' ।
1047 मा. हि. को. व्यु. 'सं. ग्रंथन' ।
1051 मा. हि. को. व्यु. 'सं. गच्छ' ।
1061 यह धातु हिन्दी में पंजाबी से आई होगी – ह. भा. ।
1063 मा. हि. को. व्यु. 'सं. घट्, प्रा. घड्, दे. पृ. 66–2, अस्वीकार्य – ह. भा., टर्नर ने गुज. 'घड' रूप नहीं दिया ।
1072 मा. हि. को. व्यु. 'सं. गह्वर' ।
1093 छत्तीसगढी में 'गर' रूप मिलता है दे. पृ. 275, छ. भा. उ. ।
1098 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1104 मा. हि. को. व्यु. 'सं. गद्गद' ।
1113 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1114 मा. हि. को. व्यु. 'सं. गाहन' ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1121 सा. जो. को. व्यु. 'सं. गर्त, प्रा. गड्ड, हि. गाडना'।
1124 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
1129 मा. हि. को. व्यु. 'सं. गाह'।
1138 मा. हि. को. व्यु. 'सं. गुंजन'।
1150 मा. हि. को. व्यु. (1) 'सं. गुह', (2) 'सं. गुण'।
1159 मा. हि. को. व्यु. 'सं. गुम्फित'।
1162 मा. हि. को. व्यु. 'सं. अवरुंधन'।
1164 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
1165 मा. हि. को. व्यु. 'सं. गुरु=बड़ा+हेरना=ताकना'।
1170 मा. हि. को. (1) व्यु. 'सं गिल = निगलना'।
1171 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है।
1180 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
1184 मा. हि. को. व्यु. 'सं कुंठन'।
1196 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. खोदना = गड़ाना'।
1193 मा. हि. को. व्यु. 'सं. गो + हार (हरण)'।
1204 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
1212 हि. दे. श. पृ. 89 पर लेखक द्वारा दिया गया टर्नर का संदर्भ सही नहीं है।
1213 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है।
1215 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
1216 हि. दे. श. में दिया हुआ प्रा. रूप ? ? दे. पृ. 308, पा. स. म. = घुमघुमिय विशे.
1230 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है।
1231 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है।
1232 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है।
1234 मा. हि. को. व्यु. 'सं. घर्षण, प्रा. घसण'।
1261 दे. श. को. ने इसे देश बताया है, दे. पृ. 53।
1272 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है।
1274 मा. हि. को व्यु. 'सं. चन्द्रमा'।
1279 मा. हि. को. व्यु. 'सं. चक्षु ओर अंध'।
1280 मा. हि. को. व्यु. 'हि. चक + चौहना'।
1294 छत्तीसगढ़ी में 'चघ' रूप मिलता है। दे. पृ. 275, छ. का. उ.।
1300 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है
1320 मा. हि. को. व्यु. 'सं. चर्चन'।
1326 मा. हि. को. व्यु. 'सं. च्यवन'।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1327 मा. हि. को. व्यु. 'सं. चषण' ।
1337 मा. हि. को. व्यु. 'हिं चौ = चार + अक=चिह्न' ।
1366 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1381 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1388 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1389 मा. हि. को. व्यु. 'सं. चीत्कार' ।
1390 मा. हि. को. व्यु. 'सं. चमत्कृ, प्रा. चवकि' ।
1391 मा. हि. को. व्यु. 'सं. चिपिट, हिं. चिमटना' ।
1392 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1393 मा. हि. को. व्यु. 'सं. चीत्कार' ।
1394 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1407 मा. हि. को. व्यु. 'सं. चूषण' ।
1409 मा. हि. को. व्यु. 'सं. शुष्क' ।
1436 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1469 मा. हि. को. व्यु. 'हि. चौर + आना (प्रत्य)' ।
1482 मा. हि. को. व्यु. 'सं. छत्रक' ।
1488 मा. हि. को. व्यु. 'सं. चिपिट' ।
1503 मा. हि. को. व्यु. 'सं. क्षरण' ।
1504 मा. हि. को. व्यु. 'सं. छिन्न' ।
1519 मा. हि. को. व्यु. 'सं. इच्छ' ।
1520 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1522 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1533 मा. हि. को. व्यु. 'सं. क्षीण' ।
1535 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1538 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1539 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1547 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1558 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. छोह = प्रेम + ना (प्रत्य)' ।
1562 इसका सक. रूप नहीं मिलता ।
1572 पा. स. म. ने प्रा. रूप 'जग्गज्ज' दिया है, दे. पृ. 344, हि. दे. श. ने इसे देश. बताया है, दे. पृ. 192 ।
1598 मा. हि. को. व्यु. 'सं. जहन, हि. जंहड़ना' ।
1602 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. चांपना का अनु.' ।
1607 मा. हिं. को. व्यु. 'सं. झपन' ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1611 छत्तीसगढ़ी में 'जिउ' रूप मिलता है । दे. पृ. 275, छ. का. उ. ।
1624 मा. हि. को. व्यु. 'सं. उद्विलन = उगलना' ।
1632 इसको दे. श. को. ने देश. बताया है, दे. पृ. 69 ।
1643 मा. हि. को. व्यु. 'सं. ज्योति' ।
1645 मा. हि. को. व्यु. 'सं. जुषण = सेवन'
1654 मा. हि. को. व्यु. 'सं. झर्झन' ।
1664 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1674 सकर्मक रूप 'झाड़ना', छत्तीसगढ़ी में 'झारना' । दे. पृ. 277, छ. का. उ. ।
1689 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1718 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1720 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1721 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1723 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1743 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1751 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1753 टर्नर ने गुज. रूप 'जुठ्' दिया है ।
1762 टर्टन ने गुज. रूप 'झरबुं' दिया है, चाहिए 'झूरबुं', मा. हि. को. व्यु. सं. क्षर, प्रा. झूरइ या सं. ज्वल्' ? ?
1766 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
1773 हि. दे. श. ने इसे अ. व्यु. बताया है, दे. पृ. 121 ।
1784 मा. हि. को. व्यु. 'सं. ज्वलन' ।
1826 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. टांकना' ।
1834 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1861 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1866 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1867 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1884 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
1906 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1970 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1971 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
1980 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. दो + पट' ।
1990 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. डावाँडोल' ।
1996 मा. हि. को. व्यु. 'सं. स्थग, प्रा. ढक्क, ढकण ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1997 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. धक्का' ।
2009 मा. हि. को. व्यु. 'सं. ध्वंसन' ।
2016 मा. हि. को. व्यु. 'सं. ध्वंसन' ।
2036 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. तपना' ।
2037 मा. हि. को. व्यु. 'सं. तक्षण' ।
2057 मा. हि. को. व्यु. 'सं. ताम्र, हिं. ताँबा' ।
2077 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
2086 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2089 मा. हि. को. व्यु. 'सं. तक्षण' ।
2096 डॉ. डबासने हि. दे. श. में इस धातु को अ. व्यु. बताया है, दे. पृ. 127; लगता है इन्होंने टर्नर शब्दसंख्या 5908 को देखा नहीं है ।
2107 मा. हि. को. व्यु. 'हि. तडकना' ।
2108 मा. हि. को. व्यु. 'अनु' ।
2110 मा. हि. को. व्यु. हि. तिल + औछना (प्रत्य)' ।
2114 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. चूना, चुकना' ।
2119 मा. हि. को. व्यु. 'सं. त्रुट' = टूटना का अनु. अथवा हिं. तोट' ।
2121 मा. हि. को. व्यु. 'सं. स्तुभ, स्तोभन' ।
2123 मा. हि. को. व्यु. 'सं. तुर' ।
2128 मा. हि. को. व्यु. 'सं. तोषण'
2130 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2133 मा. हि. को. व्यु. 'सं. तूलन या तुलना' ।
2135 मा. हि. को. व्यु. हिं. तृपित सं. तृप्त' ।
2140 मा. हि. को. व्यु. 'सं. तपन' ।
2163 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2172 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2178 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2195 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2210 मा. हि. को. व्यु. 'सं. दग्ध' ।
2211 मा. हि. को. व्यु. 'सं. दत्तचित्त' ।
2220 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. दबाना' ।
2221 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. चमकना का अनु.' ।
2224 मा. हि. को. व्यु. 'सं. दमन' ।
2248 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2250 मा. हि. को. व्यु. 'सं. दर = डर + हिं. हलना = हिलना'।
2252 मा. हि. को. व्यु. 'सं. दमन'।
2266 मा. हि. को. व्यु. 'सं. दीपन'।
2276 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. झाड़ना'।
2290 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. दो + लक्षण'।
2292 मा. हि. को. व्यु. 'सं. दुर्लाल; प्रा. दुल्लाउन' पा. स. म. में 'दुल्लाउन' रूप नहीं है।
2297 मा. हि. को. व्यु. 'सं. दूषण + ना (प्रत्य)'।
2298 मा. हि. को. व्यु. 'सं. दुःख'।
2300 मा. हि. को. व्यु. सं. द्रुम।
2325 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
2336 टर्नर ने इआलें में गुज. रूप नहीं दिया।
2337 मा. हि. को. व्यु. 'सं. धनु'।
2346 मा. हि. को. व्यु. 'सं. घर्षण'।
2352 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
2359 दे. श. को. ने इसे देश. कहा है, दे. पृ. 115।
2362 मा. हि. को. ने धिंगा को संज्ञा बताया है, है विशेषण।
2364 टर्नर ने इआलें में 'धीख' रूप नहीं दिया है।
2367 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
2369 मा. हि को. व्यु. (1) 'सं. घर्षण', 'सं. धीरज, धीर'।
2370 मा. हि. को. व्यु. 'सं. धृ, धार्य, धैर्य'।
2382 यह धातुरूप मा. हि. को में नहीं है।
2391 मा. हि. को. व्यु. 'सं. धूर्वण'।
2393 मा. हि. को. व्यु. धूर + एटना (प्रत्य)'।
2407 मा. हि. को. व्यु. 'सं. दंशन, हिं. धौंस'।
2423 मा. हि. को. व्यु. 'सं. लंघन'।
2449 मा. हि. को. व्यु. 'सं. नक्ष'।
2457 दे. श. को. ने इसे देश. बताया है, दे. पृ. 119।
2465 हि. दे. श. ने इसे अ. व्यु. बताया है, जो गलत है।
2467 मा. हि. को. व्यु. 'सं. नामन'।
2467 मा. हि. को. ने इसे स. माना है।
2482 यह धातुरूप मा. हिं. को. में नहीं है।
2497 दे. श. को. ने इसे देश. बताया है, दे. पृ. 120।
2507 मा. हि. को. व्यु. 'सं. निष्पन्न'।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2509 मा. हि. को. व्यु. 'सं. निवर्त्तन, प्रा. निवट्टना. पु. हिं. निबटना, टर्नर ने प्रा. रूप 'णिवट्टण' दिया है, दे. इआलें 7412।

2527 मा. हि. को. व्यु. 'सं. नर्तन'।

2553 मा. हि. को. व्यु. 'सं. निघोषण'।

2561 दे. श. को. ने इसे देश. बताया है, दे. पृ. 121।

2563 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. निहोरा संज्ञा, सं. मनोहार, हिं. मनुहार'।

2579 छत्तीसगढ़ी में 'नेंवत' रूप मिलता है। दे पृ. 276, छ. का. उ।

2580 मा. हि. को. व्यु. 'सं. निवारण'।

2582 मा. हि. को. व्यु. 'सं' नाशन'।

2591 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है।

2605 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. पग + गारना'।

2613 मा. हि. को. व्यु. 'सं. पच् + अच्, द्विर्वत्व'।

2614 मा. हि. को. व्यु. 'सं. प्रचारण'।

2618 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. पाछे + आना'।

2622 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. पीछे + एलना (प्रत्य)'।

2623 मा. हि. को. व्यु. 'सं. परितोलन'।

2640 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. प्रतीत + ता (प्रत्य)'।

2647 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. पर्ग + धारना'।

2648 मा. हि. को. व्यु. सं. पर्ण + पर्ण या पर्णय से; 'पर्ण' से प्रा. पण्ण होगा, हिन्दी पान दे. इआलें 79।8।

2649 मा. हि. को. व्यु. 'सं. पानाशन'।

2660 मा. हि. को. व्यु. 'सं. प्र + मुक्त'।

2665 टर्नर ने इसका अर्थ दिया है 'टु आब्टेन, टु सिक्योर', दे. इआलें 8736, यह अर्थ मा. हि. को. में नहीं है।

2668 मा. हि. को. व्यु. 'सं. प्रकाशन'।

2675 मा. हि. को. 'सं. परावर्तन'।

2680 मा. हि. को. व्यु. 'सं. प्रमाण'।

2685 मा. हि. को. व्यु. 'सं. पलायन'।

2692 मा. हि. को. व्यु. 'सं. प्रतिवेष्ठन'।

2700 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है।

2704 मा. हि. को. व्यु. 'सं. प्रलोटन'।

2707 टर्नर ने गुज. रूप नहीं दिया है।

2713 मा. हि. को. व्यु. 'सं. प्रलोठन'।

2720 मा. हि. को. व्यु. 'सं. प्रस्रवण'।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2733 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2738 मा. हि. को. व्यु. 'सं. पीत्रल' ।
2741 मा. हि. को. व्यु. 'सं. पाक' ।
2748 मा. हि. को. व्यु. 'सं. परोक्ष' ।
2753 यह धातुरूप मा. हि. को. या बृ. हि. को. में नहीं है । यहाँ टर्नर से लिया है ।
2769 मा. हि. को. व्यु. 'सं. प्रोत, प्रा. पोइअ, पोअ + ना (प्रत्य)' सा. जो. को. व्यु. 'सं. प्र + वे, प्रा. पौअ' ।
2780 मा. हि. को. में यह धातुरूप नहीं है ।
2788 मा. हि. को. व्यु. 'हि. पुट + देना' ।
2807 पा. स. म. में प्रा. रूप नहीं है ।
2813 यह धातुप मा. हि. को. में नहीं है ।
2821 टर्नर द्वारा दिया गया गुज. रूप 'पुंछ' सा. जो. को. में नहीं है ।
2826 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2827 छत्तीसगढ़ी में 'पोखना' रूप मिलता है । दे. पृ. 278, छ का. उ.
2871 मा. हि. को. व्यु. 'सं. स्फुरण' ।
2878 मा. हि. को व्यु. 'हिं. फाँदना' ।
2882 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2884 मा. हि. को. व्यु. 'सं. स्पृश्य, प्रा. फरस्स' ।
2889 मा. हि. को. व्यु. 'सं. फलन' ।
2901 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2907 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2907 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2924 मा. हि. को. व्यु. 'सं. स्फुरण' ।
2927 दे. श. को. ने इसे देश. बताया है, दे. पृ. 138 ।
2928 मा. हि. को. व्यु. 'सं. फुत्कार'
2935 मा. हि. को. व्यु. 'सं. पिष्ट, प्रा. पिट्ठ + ना (प्रत्य)' ।
2942 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
2952 मा. हि. को. व्यु. 'सं. विकुचन' ।
2961 मा. हि. को. व्यु. 'सं. वल्गन' ।
2962 मा. हि. को. व्यु. 'सं. विकृत, हि. बिगड़ना' ।
2964 मा. हि. को. व्यु. 'सं. विकिरण' ।
2976 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2992 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
2998 दे. श. को. ने इसे देश. बताया है, दे. पृ. 142 ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2999 मा. हि. को. ने इसे अनु. बताया है ।
3009 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3024 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3026 मा. हि. को. व्यु. 'सं. व्यावर्तन, प्रा. व्यावट्टन'; पा. स. म. में प्रा. रूप नहीं है ।
3031 हि. दे. श. ने इसे अ. व्यु. बताया है, टर्नर की व्युत्पत्ति लेखक ने शायद देखी नहीं है ।
3042 मा. हि. को. व्यु. 'सं. वण' से. अस्वीकार्य ।
3058 मा. हि. को. व्यु. 'बापू फा. बाम', हि. बापू + कारना'
3073 यह धातुरूप मा. हिं. को. में नहीं है ।
3092 मा. हि. को. व्यु. 'सं. विलोडन' ।
3093 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3095 मा. हि. को. व्यु. 'सं. विट् = जोर से चिल्लाना' ।
3118 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3119 मा. हि. को. व्यु. 'सं. विपक्ष' ।
3134 टर्नर की धारणा से ह. भा. सहमत नहीं हैं, 'विरह' से 'बिरस' नहीं हो सकता ।
3138 मा. हि. को. व्यु. 'सं. विराधन' ।
3156 टर्नर ने गुज. 'विलंब' रूप नहीं दिया ।
3163 टर्नर ने गुज. 'वलोव' रूप नहीं दिया ।
3166 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3170 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3181 मा. हि. को. व्यु. सं. विघटन, प्रा. विहंडन, दे. पृ. 143 मा. हि. को. 4, अस्वीकार्य ।
3194 अर्थ दुराकृष्ट – ह. भा.
3205 टर्नर ने हिन्दी रूप नहीं दिया ।
3212 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3213 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3221 मा. हि. को. व्यु. 'सं. वर्षण' ।
3227 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
3228 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं हैं, 'बेंवता' है ।
3237 मा. हि. को. व्यु. 'सं. वलन' ।
3242 मा. हिं. को. व्यु. 'सं. व्यवसन' ।
3247 छत्तीसगढ़ी में 'बइठ' रूप मिलता है । दे. पृ. 276 छ. का. उ. ।
3259 मा. हि. को. व्यु. 'सं. वायु' ।
3262 मा. हि. को. व्यु. 'सं. मुकुल, प्रा. मुउड़'
3265 मा. हि. को. व्यु. 'सं. वस्' ।
3271 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3272 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3273 मा. हि. को. व्यु. 'सं. विवरण' ।
3286 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3294 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3299 मा. हि. को. व्यु. 'सं. विवरण, हिं. बिगड़ना' ।
3310 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3315 टर्नर ने गुज. रूप 'भभक' नहीं दिया है ।
3334 इसकी व्यु. 'भस' के समान बताई जा सकती है । यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3358 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. खींचना' ।
3394 यह धातु या विशे. मा. हि. को. में नहीं है ।
3398 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3403 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3405 टर्नर ने गुज. रूप 'मंडळ' नहीं दिया ।
3460 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3468 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3473 मा. हि. को. व्यु. सं. मक्ष ।
3474 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3484 मा. हि. को. व्यु. 'सं. मिश्रण, हिं. मीसना' ।
3493 मा. हि. को. व्यु. 'सं. मान' ।
3499 मा. हि. को. व्यु. 'सं. हिमायन, हिं मेंह' ।
3508 मा. हि. को. व्यु. 'सं. मा = नहीं + करना' ।
3512 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3532 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3543 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3544 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3545 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3569 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3578 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3584 टर्नर ने गुज. रूप 'रच' नहीं दिया ।
3587 टर्नर ने गुज. रूप 'रट' नहीं दिया ।
3597 टर्नर ने हिन्दी रूप 'रम' नहीं दिया ।
3600 दे. श. को. ने इसे देश. बताया है, दे. पृ. 173।
3601 टर्नर ने गुज. रूप 'रड' दिया है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3602 मा. हि. को. व्यु. 'सं. ललन' ।
3606 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3612 मा. हि. को. व्यु. 'सं. रुदन' ।
3641 मा. हि. को. व्यु. 'सं. लुलन' ।
3648 मा. हि. को. व्यु. 'सं. रोरवण' ।
3658 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3659 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3660 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3661 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3669 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3671 मा. हि. को. व्यु. 'सं. मर्दन' ।
3690 छत्तीसगढ़ी में 'लरना' रूप मिलता है । दे. पृ. 278, छ. का. उ. ।
3691 हि. दे. श. तथा दे. श. को. ने इसे अ. व्यु. तथा देश. बताया है ।
3693 हि. वि. बो. ने इसे पश्तो बताया है, दे. पृ. 231 ।
3711 मा. हि. को. ने इसे देश. बताया है, दे. पृ. 563–4 ।
3720 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3740 मा. हि. को. व्यु. 'हिं लगना' ।
3742 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3770 टर्नर ने गुज. रूप. 'लोभा' नहीं दिया ।
3771 मा. हि. को. व्यु. 'सं. ललनी = झूलना' ।
3784 टर्नर इसके मूल में आर्येतर भाषा का निर्देश करते हैं ।
3795 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3807 मा. हि. को. व्यु. 'सं. विदूषण' ।
3815 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
3818 टर्नर ने हिन्दी रूप 'वार' नहीं 'बार' दिया है, इस दृष्टि से इसे तत्सम भी कहा जा सकता है ।
3830 मा. हि. को. व्यु. सं. व्यथा ।
3845 टर्नर ने हिन्दी रूप नहीं दिया, गुज. 'विश्रास' दिया है ।
3870 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3907 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3908 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3909 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3921 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
3953 डबास ने हि. दे. श. में इसे अ. व्यु. बताया है, जो सही नहीं है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

4000 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
4041 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
4048 सा. जो. को. में 'सीख' रूप नहीं है, जो टर्नर ने दिया है ।
4049 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
4058 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
4067 सा. जो. को. में 'सण' रूप नहीं है, जो टर्नर ने दिया है ।
4068 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
4069 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
4078 डबास ने हि. दे. श. में (पृ. 143) इसे अ. व्यु. बताया है, जो गलत है ।
4079 मा. हि. को. व्यु. 'अनु. उलझना का अनु. 'दे. पृ. 418–5 ।
4080 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
4090 मा. हि. को. ने 'फा. सोजिश' का निर्देश किया है, पृ. 433–5 ।
4092 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
4101 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है।
4104 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
4112 सा. जो. को. ने गुज. 'सोच' रूप नहीं दिया है, जो टर्नर ने दिया है ।
4113 मा. हि. को. व्यु. 'हिं. सजना ।'
4115 सा. जो. को. में गुज. 'सोध' रूप नहीं है, जो टर्नर ने दिया है।
4117 सा. जो. को. में गुज. रूप 'सों' नहीं है, जो टर्नर ने दिया है ।
4185 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है ।
4186 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
4202 यह धातु मा. हि. को. में नहीं है, टर्नर ने दी है ।
4207 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
4208 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
4209 यह धातुरूप मा. हि. को. में नहीं है ।
4214 मा. हि. को. व्यु. 'सं. हिरुक = समीप' ।
4264 गुज. 'छे' के लिए : सं. क्षि; प्रा. अच्छ; दे. इआलें 1031 ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खण्ड–३

वर्गीकरण तथा विश्लेषण

अ. धातुओं का ऐतिहासिक वर्गीकरण

1. तद्भव धातुएँ
2. देशज धातुएँ
3. अनुकरणात्मक धातुएँ
4. तत्सम धातुएँ
5. अर्धतत्सम धातुएँ
6. विदेशी धातुएँ

आ. विश्लेषण तथा निष्कर्ष

1. वर्गीकरण की शास्त्रीयता का प्रश्न
2. परिवर्तन, वृद्धि तथा क्षति
3. निष्कर्ष
4. फलश्रुति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. तद्भव धातुएँ

(हिन्दी धातु के सामने गुजराती धातु दी गई है। (—)
जिस धातु के गुजराती पर्याय में अर्थ या अर्थच्छाया
की भिन्नता है उसे चिह्नित (+) किया गया है।)

अँकवार, अँकुर–अंकुर, अँखुआ, अँगुरिया, अँगोछ, अँड़ुआ, अँतरा–आंतर, अंधेर, अँसुआ, अउलग, अउहेर, अएर, अकन, अकाज, अकुला–अकळा, अखार, अगर, अगव, अगिया, अगुआ, अगोर, अघा, अचा–आचम, अछवा, अजोर, अट–अट, अठा, अथा–आथम, अधिया–अधुसार, अधीज, अनक, अनुसर–अनुसर, अनुहर, अन्हा–नहा, अपडर, अपना–अपनाव, अपूर, अप्प–आप, अफर–आफर, अमा, अमात–आमंत्र, अरड़–आरड तथा अराड, अरस–परस, अरुना, अरोह–आरोह, अलगा, अवट, आर्सास, अहार–आहार

आँक–आंक, आँच, आंज–आंज, आ–आव, आख–आख, आछ, आथ, आदर–आदर+, आन–आण, आरंभ, आलोड़, आवट, आवाह–आवाह, आहला–आहलाद

इतरा

ईख

उँगला, उंच, उकट, उकढ, उकस–उकांस, उकेल–उकेल, उखाड–उखाड, उग–ऊग, उगल–ऊगर+, उगाह–उघराव, उघाड़–उघाड, उच, ऊचक–ऊचक तथा ऊंचक, उचट–उचेड+, उचर–ऊचर+, उचल–ऊचल+, उचार–उचार, उछल–ऊछळ, उछीन, उजल–उजाळ, उट–ऊट, उड–ऊड, उडेल, उदार, उतर–ऊतर, उथरा, उदबास, उदस, उधड़–उधेड+, उनव, उपज–ऊपज, उपट–ऊपट, उपरा, उपाट–उपाट, उपार–उपाड, उफाल, उबछ, उबट–ऊटवा, उबस, उबह, उबार–उगार, उबिठ, उबीध, उभ, उभर–उभळ, उभास, उमग–उमग+, उमेट, उरझ–ऊरझ+, उरेह, उलर–ऊलळ, उलस–ऊलस+, उलाँघ–उलंघ, उलाह, उसक, उसार, उसिन, उसीज, उसीझ–सीझव

ऊछ, ऊअ, ऊक, ऊब–ऊब तथा ऊबा+, ऊम, ऊमह

ऐंच–ऐंच, ऐंठ

ओंइड, ओंक, ओट–ओट+, ओदर, ओध, ओलम, ओसन, ओहर–ओसर

औंध, औट–अवटा, औस

कंटिया, कजरिया, कठिया, कड़ुआ, कतर–कातर, कनखिया, कमा–कमा, कर–कर, करखा, कलिया, कलोल–कल्लोल, कस–कस, कसक–कसक, कसा, कह–कहे, काँख–कांख, काँड़, काँद, काँध, काँप–कांप, काछ, काट–काट तथा काप, काढ़–काढ तथा काड, काँत–कांत, किलकिला, किलस–कणस, कीन, कील–खील+, कुंदेर, कुकड़–कूड+, कुटना, कुढ़, कुरै, कुहा, कुट,–कूट, केरा, केवट, कोंप, कोड़, कोस–कोस, कोहा, कौआ, खँगाल,–खंगाळ तथा खंखोळ, खँडर, खँदा, खट,–खाट+, खटा, खनिया, खप–खप, खमा–खम+, खय, खर–खर+, खल–खळ+, खाँग, खाँड–खांड, खाँभ, खाँस–खाँस, खा–खा, खाम, खिप, खिया–खवा, खिव, खिसिया, खीज–खीज, खील, खुजला–खजवाळ, खुभ, खुरप, खूँद–खूंद तथा गूंद, खे, खेप, खेर, खेव, खो–खो, खोस–खोस

गंधा–गंधा+, गँवा–गमाव तथा गुमाव, गट, गप, गम–गम, गरुआ, गल–गळ, गलिया, गह–ग्रह, गहरा, गाँठ–गांठ, गाँथ, गा–गा, गार, गाह, गिन–गण, गिल–गळ, गीध, गुज्झ, गुन–गुण, गुलिया, गृह, गूंज–गुंज, गूँध, गूँथ,–गूंथ, गोबरा, गोलिया, गोव

घड–घड, घतिया, घामा–घाम, घरघरा, घा, घाल–घाल+, घिना–,घिस–घस, घुन, घुर–घोर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चबा–चाव, चर–चर, चल–चाल, चाँछ–ताछ, चाँड़, चाक, चाल–चाळ, चिकना, चिकार, चिटक, चितार, चिन–चण, चीख–चाख, चीत–चीत तथा चीतर, चीन्ह–चीन, चीर, चुन–चुण तथा चण, चूँट–चूंट, चू–चू, चूम–चूम तथा चुंब, चूस,–चूस, चोर–चोर, चौरसा

छत, छतरा, छर, छल–छळ, छा–छा, छाज–छाज, छाड़–छांड, छार, छींक, छर, छीज, छीत, छीन–छीन तथा छीनव, छू–छू, छूट–छूट, छेंक–छेक तथा छेंक, छेत, छेद–छेद, छेव, छोभ, छोर

जँता, जंप–जंप+, जकड़–जकड, जड–जड+, जडक, जड़ा, जता, जन–जण, जम्हा, जय, जर, जल–जळ, जा–ज तथा जा, जाग–जाग, जाच–जाच, जान–जाण, जाम–जाम, जार, जी–जीव, जीत–जीत, जीम–जम, जीर–जेरव+, जुआठ, जुतिया, जूझ–झूझ, जोगौ, जोत–जोतर, जोव–जो

झंकार–झणकार, झनझना–झणझण, झर–झर+, झूम–झूम तथा झझूम+

टल–टळ, टाँक–टांक, टूट–तूट

ठर–ठर+

डँस–डस, डर–डर, डह–दह, डास, डिढ़ा, डीठ, डुल, डेवढ़, डोरिया–दोर, डोल–डोल, डोलिया

ढूंक–ढूंक+, ढो

तँत्रिया, तच्छ–ताछ, ताता, तातार, तमक, तर–तर, तरछा, तरिया, तल–तळ, तव–तव, ताँस, ता–ताव, ताक, ताड़–ताड+, तान–ताण+, तिनक, तिलौंछ, तिसा–तरस, तुट्ठ–तूठ तथा टुठ, तुरप–टूप, तू–तरवा+, तूठ–तूठ तथा ट्रुठ, तुरप–टूप, तू–तरवा+, तूठ–तूट तथा ट्रुठ, तूम, तूस, तेहरा, तैर–तर, तोप, तोल–तोळ तथा तोल, तौंस

थप–थाप; थान, थाम–थाम; थिर, थुड

दज्झ–दाझ; दढ़–दाध, दमदमा–धमधमा; दरक, दरार, दल–दळ; दह–दह; दाँ–दाम+, दाँड–दंड; दाँत, दाझ–दाझ; दाध–दाध; दाप, दाव–दाम+, दिढ़ा–दड+, दिस–दीस; दरठ, दीप–दीप; दुख–दुख; दुनव–बेवड; दुबला, दुराना, दुल–डूल+, दुलार, दुह–दुह तथा दोह; दूभ–दूभ तथा दूभव; दे–दे; देख–देख; देास, दौड–दोड धंधला, धँस–धस+, धना, धमक–धमक; धर–धर, धाप–धरा; धार–धार+, धाव–धा; धीक–धेाक, धीख, धिकार–धिकार, धुँधला–धूँधळा; धुआँ, धुन–धुण+, धुरिया, धतु–धूत; धेा–धेा; धौंक–धाम

नंगिया, नंस–नास+, नह, नहा–नहा; नाँघ–लांघ+, नाँद–नंद; नाख–नाख तथा नाँख; नाच–नाच; नाट, नाठ, नाथ–नाथ; नाह; नाप–माप; नार–नाण; नास–नास; निअरा, निकल–नीकळ; निकस–नीकस; निकिया, निखर–निखर; निगल–गळ; निझा, निझेाट, निथर–नीतर; निदर, निदह–दह; निनौ, निपज–नीपज; निपट, निपीड–पीड; निफर, निबट, निबड–नीवड तथा नीमड; निबर, निबह–निभ तथा नभ; निबुक, निम्ना, निरख–नीरख; निवार–निवार; निसंस, निसर–नीसर; निहार–निहाळः निहुँक, नींद–नींद; नीर–नीर+, नुच, नुन–लण; नौ–नम; न्योत

पँवार, पँसिया, पक–पाक+, पखाल–पखाळ; पच–पच; पछता–पस्ता; पजल–परजळ; पटक–पटक; पठा–पठाव तथा पाठव; पड–पड; पढ़–पढ; पत्या–पतीज; पथर, पथरा, पनिया, पनिहा, पपड़िया, पमूँक, परख–परख तथा पारख; परण–परण; परत–परत; परस–परस; परा, परिहर–परहर; परोस–पीरस तथा परस+, पल–पलाण; पलह, पले, पसर–पसर, पसीज, पहचान–पिछाण; पहन–पहेर; पहिर–पहेर; पहुँच–पहोंच पा–पा+, पाछ, पाट, पाद–पाद; पार, पाल–पाळ; पास, पिगल–पीगळ; पिचक, पियरा, पिरा–परोव; पींज–पींज; पी–पी; पीट–पीट; पीड–पीड; पीस–पीस; पूँछ–पूछ तथा प्रीछ+, पूग–पूग; पूर–पूर; पेख–पेख; पेड़–पील; पेन्हा, पेल, पैठ, पैना, पैर, पैस–पेस; पोंक, पो–पो तथा परोव+, पीढ़, पोस–पोस तथा पोष; पौढ–पोढ तथा पोड तथा पहोड

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फगुआ, फट–फाट; फडक–फरक, फड़ोल, फब–फव तथा फग+, फल–फळ; फाँद, फाड–फाड, फिट–फीट+, फिसल, फुर, फुसलो–फोसलाव; फूट–फूट; फूल–फूल; फेन–फेण तथा फीण; फैल–फेला

बकर, बखान–वखाण; बघार–वघार; बच–बच; बज–बज तथा वाज तथा वाग; बट–वाट तथा वटाव+, बटोर; बढ़–वाध तथा वध, बता–बताव; बतिया, बधिया–वाढ तथा वधेर; बन–बन; बनज, बमक, बर–वर; बरस–वरस; बल वाळ; बस–वस; बह–वहे; बहक–वहा तथा वा+, बहरा, बहुर, बाँच–वंच; बाँट–वांट तथा वाट+, बाँध–बाँध; बाग, बाछ, बाझ–बाझ; बाट–वाट+, बार–वार; बिखर–विखेर; बिगड़–बगड; बिगूट, बिगो, बिछुड़–वछूट; बिछा–बिछाव; बिटंब, बिथरा, बिदार–विदार तथा विडार; बिधाँस, बिन–वीण, वण; बिनस–वणस+, बिनौ–विनव तथा विनम; बिरम; बिरस, बिरा, बिरुझ, बिलंग–वलग तथा वळग+, बिलख, बिलट, बिलम–विलंबा; बिलस–विलस+, बिलोड–वरोळ; बिलो–वलोव; बिसर–वीसर; बसह, बिहर–विहर; बिहस, बिहाड, बीछ, बीज–वींज तथा बींझ+, बीझ; बीत–वीत; बीध–वींध; बुढ़ा, बुन–वण; बुस, बुहार–बार तथा बोर; बूझ–बूज; बैंध, बेढ़, बेल, बेवह–वोहोर तथा वोर+, बैठ–बेस; बो–बो; बोझ, बौर–मोहोर; बौरा, ब्या–विवा; ब्याह, ब्योत, ब्योर

भंग–भाँज तथा भाग; भंगिया, भँव–भम+, भकुआ, भख, भज–भज+, भटक–भटक; भन–भण +, भया, भर–भर; भरुआ, भस, भाँज–भाँज+, भाँड़–भाँड; भाँव, भा–भाव; भाग–भाग; भाज, भान–भाग; भार–भार +, भाल, भास–भास; भीग, भुंज, भुखा, भुन, भूँक–भस; भूँज–भूंज

मँझिया, मंड–मांड+, मंडरा, मंकडा, मठार–मठार; मर–मर; मल; मह, माँग–माग तथा मांग; माँच–मच; माँज–माज तथा माँज; माँड–मांड+, मा–मा; माख, मात, मान–मान; माप–मापः+, मार–मार; माह, मिट–मट तथा मिट; मिटिया, मिठा, मिल–मळ; मिस, मींज, मुकला, मुठिया, मुरा–मोर तथा मोळ; मूँड–मूंड, मूँद, मूक,–मूक+, मूच, मूठ, मूत,–मूतर; मून, मूस, मेल–मेल+, मो–मो+, मोड–मोड; मोल; मोस, मौर–मोर

रँग–रंग; रँभा, रख–राख; रग, रझ, रता, रन–रणरण; रम–रम; रर–रड+, राँच–रच; राँज, राँध–रांध; राच–राच; राज–राज+, रित, रिस–रिसा; रीझ–रीझ; रूँध–रूंध+, रुच–रुच; रूठ–रूल; रूस–रूस; रेंग, रेत, रेह, रोंथ, रो–रो; रोध–रोध; रोप–रोप; रोल–रोळ; रोस, रोह, रौ

लंगडा–लंगडा; लंबा–लंबा; लकडा, लख–लख; लग–लाग; लछिआ, लजा–लजव तथा लजाव+, लट–लट+, लद्ध–लाध; ललक–लळ+, ललसा, लला, लस–लस; लह–लहे+, लहरा–लहेरा; लहेस, लाँघ–लांघ+, ला–लाव; लाख; लाख, लाद–लाद; लाध–लाध+, लाल, लिपट–लपेड; लिह, लीप–लीप तथा लींप; लुक, लुचक, लुडिया, लुढ़, लुन–लुण; लुभा–लोभा; लुह, लूस, ले–ले; लेस, लोड़, लोल, लोहा, लौ

वंच–वंच; वध–वध; वार–वार; विमास–विमास+, वैर–ओर; शंक–शंक; संकरा, संकोच–संकोच तथा संकोचा; संच–सांच; संचर–सांचर तथा संचर; संजो–सजाव; सँभार–संभार; सँभाल–संभाळ; सँवर–समार+, सँवरा, सक–शक; सकिल–संकेल; सकोड़, सचा, संज–सज; साठिया, सड–सड; सता–सताव; सद, सनक, सनसना–सणसण; सपड़–सांपड; समझ–समज; समा–समा; समुहा, समेट–समेट; सर–सर; सराह–सहार; सह–सह तथा सहे तथा से; साँभल–साँभळ; साँस, साज–साज+, सान–साँध; साल–साल; सिगार, सिधा–सिधाव; सिरा, सिहर, सिहा, सींग, सी–सीव; सींच–सिच तथा सींच; सीख–सीख तथा शीख; सीज–सीझ; सुधर–सुधर; सुन–सुण तथा सण; सुभा, सुमिर–समर; सुलग–सळग; सुहा–सुहा; सूख–सुका तथा सूक; सूज–सूज; सूझ–सूझ; सूत सूल, सेव–सेव; सो–सू; सोच, सोह–सोह तथा सो; सौंध, सौंप–सोंप

हग–हग तथा अघ; हथवाँस, हथिया, हन–हण; हर–हर; हरिआ, हरुआ, हलका, हलोर, हस–हस; हाँक–हाक, हाँस, हार–हार; हिंछ, हिंड–हींड, हिंदोर, हिलग, हींस, हीठ, हुन, हुलस–उलास: हेल–हळ+, हो–हो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. देशज धातुएँ

[प्राकृत, अपभ्रंश आदि में प्रयुक्त (हिन्दी की पूर्वप्रचलित) देशज धातुओं को चिह्नित (०) किया गया है।]

अँगडा, अँगुसा, अँगेज, अँटिया–अटवा+, अँडर, अँदा, अऊल, अक, 0अकड़–अकडा; अकरख, अकस, अकोस, अखर, अखाँग, अखुट, अगट, अगुता, अगूठ, अगोट, अचकचा, अछक, 0अट–अट; अटक–अटक; अटकल–अटकळ; 0अटेर–अटेर; 0अड़–अड तथा अडक+, अड़प, अड़रा, अड़ा, अडार, अड्डल, अढ़, अढ़व, अढुक; 0अथा–आथम; अदबदा, 0अनखा–अणख, अनग, अनर, अनरस, अनवाँस, अनसा, अनैस, अपड़, अपड़ा, अपस, अपसौ, अपुट्ठ, अपूठ, अमेर–मेळव, अमेट, अर, अरप–अर्प+, अरबरा–अडवड+, अरस, अराड़, अरुगा, अरुर, अरूल, अरेर, 0अलूट–आळोट+, अलोप, अवगार, अवज्ज, अव, अवडेर, अह, अहटा, अहर, 0अहल, अहुट.

आँध, आँवड़, आँस, आज, 0आड़, 0आरोग–आरोग, आलुझ, आष, आस

इचक, इठला

ईठ

उँझ, उँडेर, उअ, उकच, उकठ, उकता, 0उकल, उकीर, उखट, उगच, उगद, उगसार, उघट, उघेल, उचल उचा, उच्छर, उछक, उछट, उछर, 0उजड, उजरा, उजास, उजिया, उजियार, उजेर, उब्जार, उझक, उझप, उझर, 0उझल, उटक, 0उठंग–उठंग; उडका, उडोक, 0उढ़क, उतरा–तर; उतला, उत्थव, उथल–ऊथल; उदंस, उदक, उदमद, उदमान, उदर, उदास, उदिया, उद्ध, उधर, उधरा, उधस, उधिया, उन, उनच, उनमान, उनर, उपड़–ऊपड+, उपन, उपराह, उपव, उपसव, उपाठ, उपेख, उपै, उफड़, उब, 0उबक, 0उबल, 0उभाल, उभिट, उमच, 0उमड़–ऊमड तथा ऊमट; उमस, उमाक, उमेल, उयबा, 0उरक, उरग, उरधार, उरम, उरस, उरा, उराह, उरैंड, उलंग, 0उलट–ऊलट, उलथ–ऊथल; उलद, उलल,–उलळ; उलह, उलाल, उलीच–उलेच, डलेढ, उसाल, उसे, उहट

0ऊंघ–ऊंघ, ऊ, ऊकट, ऊछज, ऊप, 0ऊभ, ऊल

ओक–ओक; ओगर–गाळ; 0ओट–ओट; ओड, 0ओढ़–ओढ़; ओदर, ओना, 0ओप–ओप; ओरा, ओलिया, ओसर, ओह

0औंध, औंज, औंड़, औंद, औंधूर, औछा, औदक, औधार, और, औरस

कँख, कँजिया, ककोर, 0कचक–कचक+, कचर–कचर; कचा, कचिया, कटमटा, कटूर, कट्ठ, कड, कढरा, कतकता–कंता; कदवा, बदरा, कनकना, कना, कनिया, करोद, कर्रा–करडा; कलप–कळप; कलम, कल्ला, 0कल्हार, कवर, कसीट, कहल, किचड़ा, किर, किरिट, किरोल, किलबिला, कुँभिला, कुड़क, कुड़प, कुड़ेर, कुतकुता, 0कुतर–कोतर तथा खोतर; 0कुन, कुनकुना, 0कुम्हला–करमा, कुर, कुरला, कुरिआर, कुरिया, कुरेद, 0कुल, कूंच, कूत, कूह, कोंछ, 0कोच–कोच; 0कोर–कोर; कोल, कोलिया, कौंध, कौर,

खँधिया, खँस, खजोट, खंखोर–खंखोळ; खग, खचेर, खजबजा, 0खदेड–खदेड तथा खदड तथा खद; खमस, खरक, खरहर, खरिया, खरौंट, खला, खलिया, 0खस–खस+, खसोट, खाँच–खच, खाँद, 0खाँध, खाँप, खिमिर, खिरिट, 0खिल–खील; खिव, 0खिसक–खस तथा खिस, खिसल, 0खींच–खिंच तथा खेंच; खीस, खुट–खूट; खुटक,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खुदबुदा, Oखुपखुपा, खुभर, खुरच, Oखुल–खूल; खुलेड़, Oखूँट–खोड; खेड–खेड+, खेद–खदेड; खेल–खेल; Oखेवर, खेवरिया, Oखोंच, Oखोंस–खोंस; Oखोज–खोज; Oखोंद–खोद, खोभर, खोर, खौखिया, खौल

गँवन, गँस–ग्रस; गँह–ग्रह; गछ, Oगड़–घड, घट; Oगदरा, Oगदला–गद; गभुरा, गमक, गरट, गरथि, गरेठ, गरेर, गलगंज, गलगला, गस–ग्रस; गहक–गहेक; गहडोर, गहभर, गहर, गहिला, गाँछ, Oगाँज–गांज+, गाँस, Oगाड–गाड; Oगाढ़, गाहट, गिर–गर; गींज, गुटला, गुड़–गड; गुढ, गुमक, गुमिट, गुर, गुरच, गुरझ, गुलच, गुलिया, गूम, गेंड़, गोंठ–गांठ, Oगोड–गोड; Oगोत–गोत; गोद–गोद+, गोहरा, गौल, ग्वैंठ

Oघँघोल, Oघट–घट, घटक, घपचिया, Oघबरा–गभरा; घमंड, घरिया, घस–घस; घसक, घसीट–घसड; घहर, घिचोल, घिसक, घिसिआ, घींच, Oघुँट, घुमड़–घूमड+, Oघुस–घूस; Oघूम–घूम+, Oघूर–घूर; Oघेप, Oघेर–घेर; Oघोंट–घूँट; Oघोट, Oघोल–घोळ

चंचना, चंचोर, चंदरा, चक, चकचदा, चकचा, चकचा, चकचूर, चकचौह, चकला, चकवा, चकास, चकोट, Oचख–चाख; चटपटा, Oचढ़–चढ तथा चड; चतर, चनक, चनख, चप–चंपा; चपक–चपक तथा चबक; चपतिया, चपर, चपरा, चपेट, चभोर–झबोळ, चमक–चमक; चमचमा–चमचम +, चरज, चरपरा, चव, चस–चस, चसक; चहल, चहोड़–चोड; चांक–चोक, Oचाँप–चांप, Oचाख–चाख; Oचाट–चाट; Oचास–चास; Oचाह–चाह; चिंगुड़, Oचिंघाड़, Oचिकट, चिखुर, Oचिढ़–चिडा; चिथाड़, चिपट, Oचिमट–चिंबोळ, चिचार, चिरक–चरक; चिरच, Oचिलक–चळक; चिलबिला, चिल्ला, चिहूँट, चिहूँट, चीक, Oचीथ, चीस, चुकट, Oचुग–चुग; चुपक, चुचा, चुटक, चुटा, चुनिया, Oचुपड़–चोपड; चुपा, Oचुचक, Oचुभ, चुर–चड़+, Oचूँग–चगळ, चूक–चूक; चूर–चूर; चैप, चेहा, चोंक, चोख, चोट–पोट, चोटिया, Oचोद–चोद; Oचौंक–चौंक; चौंध, चौंरा, चौआ, चौडा, चौपत,

छक–छक तथा छाक+, छटक–छटक, छड़–छड तथा छडक; छतिया, छपट, छपरिहा, छब, छम, छय, छहक, छहर, छाँग, Oछाँट+, Oछाँद, छान–छाण,: Oछाप–छाप; छाल, छिछ, छिंडा, छिटक–छिटकोर, Oछिडक–छांट; छितर–छीत+, Oछिनक–छीण+, Oछिप–छूप; Oछिंट, छीछ, Oछुप–छूप तथा छुपा, Oछेड़–छेड,: Oछेर–छेर+, छैला, Oछोप, Oछोल–छोल; छोह

जक, Oजगजगा–जगमग; जट, जता, Oजमक, जमुक, जमोग, जहँड़, जहक, जहद, जाँप, जाप–जप; जुगाल, Oजुट, Oजुठार, Oजुड–जोडा; Oजोख–जोख; Oजोड़–जोड; जोय

झँख–झंख+, Oझँझोड़–झंझेड़ तथा झंझोड; Oझँप–झंपाव तथा झंपलाव; Oझंवरा, Oझंवा–झाम; झकुर, झकेल, Oझकोर–झकोळ; Oझगड़–झघड; झझक, Oझटक–झटक; झड़, Oझड़क–झाडक,: Oझड़प–झड़प+, झप–झंप; Oझपक–झप+, Oझपट–झपेट+, झपडिया, झपस, झरस, Oझल–झाल+, झलक–झळक; Oझल्ला–झल्ला+, झष, झाँक–झांख; Oझाँख–झांख; Oझाँप, झाँव, Oझाग, झाल–झाळ; झिंगर, झिंझोड, झिझक, झिडक, Oझिलमिला, Oझींक, Oझींख, Oझीझ, Oझुक–झूक+, Oझुठका, Oझुर–झूर; झुरझुरा, झुलस, झुहिर, झूल,–झूल; झेंप, झेर–झेर+, Oझेल, झोंक–झोंक; Oझोड़–झूड+, झोल, झौर

टकटो–टटोळ; Oटकरा–टकरा; टकूच, टकोर–टकोर; टघर, Oटटा, टप–टप+, टसक–टसटस+, Oटहल–टहेल, टेल; Oटाँग–टाँग; टाँच–टाँच; टाँस, Oटाप, Oटिक–टक, टिन्ना, Oटीक, Oटीप–टीप; टीस, Oटुँग, टुघला, टुपक, टूम, टे, Oटेक–टेक; टेर+; टोंच–टोंच; Oटो, Oटोक–टोक+, Oटोप, टोर

ठंडा, Oठग–ठग; ठठ–ठठ; ठढा, ठय, ठला, Oठाँस–ठाँस तथा ठोंस; ठाक, ठान–ठाण; ठिकिया, ठिठक, ठिठुर–ठूठवा; Oठुकरा, ठुनक, ठूँस–ठाँस; ठेक–ठेक+, Oठेल–ठेल; Oठेस, Oठोंग, ठोस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डंक, डंकिया, डंड–दंड, डंड़िया, डंडूर, डँडोर, डंफ. डकर, डकाव, डगर, डट–डटा; डपट–डपट+, डबक, डबिर, डहक, डाँक, डाँट, Oडाल, डिकर, Oडिग–डग; डिगर, डिभग, डुगर, डुपट, डूक–डूक; डोर–दोर; डौंडा, डौल

ढंकिल, ढंढोर–ढंढोळ; ढकेल–धकेल; Oढल–ढळ; ढह–ढस; Oढाँक–ढांक; Oढाप, ढिसर, ढील, ढुल–ढळ:; ढोर

तच, तड़प–तडप तथा तलप; Oतनतना, तरमा, तरेर, तलफ–तलफ तथा तलप; Oतलास–तळांस; तह, ताँवर, ताग–ताग+, ताछ, ताम, तिग, तिडल, तिमा, Oतिरमिरा, तिलक, Oतिलछ, तुअ, तुनक, तुभ, तुरा, तूख, तूल, तृपिता, तै, Oतोल–तोळ तथा तोल; त्यौरा, त्रिय, त्वचक

थक–थाक; थपेड़, Oथरहरा–थरथर तथा थथर; थलक, थसक, थसर, Oथाप–थाप; थाह, Oथुथा, थुथर, थुर, थुरथुरा, थूक–थूंक; Oथेाप–थेाप

दंदा, दच, दत, दफरा, Oदब–दबा; दबक, दबोच, दमस, दसा, दलमल, दव, दष, दहपट, दहल, Oदाब–दाब, दबाव; दुक, दुक्क, दुग; दुचक; दुझार, दुलख, दूँद, दूख, दूझ–दूझ+, दूम, दोच, दोद, दोह–दोह+, दोहर, दौंक

धकिया–धकाव; धकेल–धकेल; धस–धस+, धचक, Oधप–धप+, धमका–धमकाव+, धाँग, धाँध, Oधाक, धाड़, धाध, Oधिंगा, धिख–धख+, धिरा, धीज, धुँकार, धुँगार–धुंगार; धंधुआ–धुंधवा, Oधुक, Oधुधक, धुप, धुमिल, धुर, धुरेट, धूँध, धूँस, धूक, धेय, धोंक धौंज, धौंस

Oनका, Oनखेाट, Oनट, नवार, नष, Oनाक, नाट, नाव, निंदा–निंद; Oनिकोस, Oनिखुट–खूट; निखेाड, Oनिगरा, Oनिघट–घट, Oनिचेा–निचेाव; Oनिचेाड़–निचेाड; Oनिझर, निदिरस, निनार, निप, Oनिपुड़, निमेार–मेाड तथा मरेाड; Oनिरा–नीद तथा नींद; निहस, Oनिहुड, निहेार, नुका, नुखर, नैवर, नैस

पंघला, Oपकड़–पकड; पगार, Oपगिया, पगुरा, Oपचार–पचार, Oपछाड़–पछाड; Oपछिया, Oपछेाड़, पटतार, पड़ताल–पडताळ; Oपडिया, पतीज–पतीज; Oपधार–पधार; पनप, पनास, पपेार, पब, पबार, पमा, परगास, Oपरच–पळक; परछ–पेांक तथा पोंख; परहेल, परिठ, परिबैठ, परिवान, परिहेल, परेह, परेार, पल–पल+, पलट–पलट+, Oपला, पलास, पलेड, Oपलेाट–पलेाठ+, पलेास, O–पवेर, Oपसा, Oपसूज, Oपहट, Oपांज, पाँतर, पाग, पारेाक, Oपिघल–पीगळ; Oपिचल, Oपिछड, पिछान–पिछाण; पिनक, Oपिपिया, पिल–पील+, पिलक, पिलच, पिष, Oपुकार–पुकार तथा पेाकार; पुचार, पुटिया, पुन, Oपुपला, पुल, पूँज, पेंड, पैंछ, Oपेांछ–पुँछ; पेात, Oपेाह, पौंड, पौर, पौल, प्रन

फन, फनग, फना, फरचा, फरिया, फलाँग, Oफाँक–फाक, Oफाँप, Oफिर–फर; फुरहर, फुहार, फेंक–फेंक, फेंट, फेकार, फेर–फेरव; फोंक

Oबक–बक; बकठा, बकुच, बकोट, बखेार, बग, बगद, बगेद, बटक, बतरा, Oबतास, बद–बद; बनरा, बनार, बफर–बिफर; बरक–बरक+, बरट, Oबरदा, Oबल–बळ तथा बाळ; बलक, बवँड़, Oबहरा, बाँव, बाज, बाद, बान, Oबापूकार, बिचक–बचक; Oबिछूड़–बछूट; बिजेा, बिझुक, बिटार, बिटाल–बिटाळ; बिडर–डर; बिडव, बितर, Oबिथक, बिदक, बिदह, बिबछ, बिरच, बिरह, Oबिरा, बिलख, Oबिला–बराव; बिसा, बिसुन, बिसूर, बिहेार, बींद, बीग, Oबुक, Oबुझ–बुझा, बुट, Oबुरबुर, Oबूँड–बूड; बूज, Oबेच–बेच; बेझ, बेठ, बेत, बेसाह, बैहंस, बेहर, बैरा, बेाय, Oबेाल–बेाल; बेाह, बौआ, बौखला, बौसा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भमर, भँभा–भँभोड़, भकुड़ा, भकुर, भकोस, भगर, Oभटक–भटक; भठिया, Oभड़क–भडक+, भडोल, भरक, भरुहा, भव, भाँप, भिटक, Oभिड़–भिड़ा; भींच–भींस+, भीन, भीर, भुतला, Oभुलस, Oभूल–भूल, Oभेज–भेज; Oभेट–भेट; भेल–भेळाव; भेष, Oभोंक–भोंक; भोथरा, भोरा–भोळवा

मढ़–मढ; मनुहार, मन्ना, मल्हप, महटिया, मास, Oमिचक, मिचरा, मिचला, मिन, मिल–मळ; मिलक, Oमिहा, Oमीच–मींच तथा भींच तथा वींच; मुंढ, मुकर–मुकर; मुकिया, Oमुटा, मुलक, मूझ, मे–मो; मेल्ह, मेहरा, मोकल–मोकल

रगड़–रगड+, रगा, रगेद, रबक, रबड, रमक, रमड़, Oररक–रळ+, Oरल–रोळ; रवक, Oरह–रहे; रहपट; राँढ़, राब, Oराल–रळ+, राह, रिडक, रुझ, रुल, रूर, रेंड, रे, Oरोक–रोक; रौंद–खूंद तथा गूँद; रौरा

Oलचक–लचक तथा लचका तथा लांच, Oलड़–लड; Oलताड–लाताड; लथेड, Oलपक–लपक; Oलपेट–लपेट; लफ, लबझ, लबड–लबड+, ललच–ललचा; लस–लस+, लहक, लहट, लातर, Oलाफ, लाव, Oलील, Oलुंडिया, लूर, लुरिया, लूक, Oलूट–लूट; Oलूम–लूम; लेवार, लोक, Oलोट–लोट; Oलोद–लोढ; लौट

वदुस, वफर, वाकार, वाव–वाव+, वितता

सँकार, संकित, संकेल–संकेल; Oसंकोर–संकोर, संघर–संघर+, संघरा, सकस, सकेत, सट–सट+, Oसटक–सटक+, सतरा, सपत, समक, समद, सरहत, सरिया, सरुह, सरेख, सहला–सहेलाव, सहेज, सा, साह–साह; Oसिकुड, सिनक, सिय, सिरा, सिहला, सिहार, सिहिक, सुगा, सुटुक, सुभ, सुरेत, सुलझ, Oसुलट–सूलट; Oसूँघ–सूंघ, सूड़, Oसेंक–शेक तथा सेक; सेंघ, सेठ, सेल, सेहथ, सैंत, सोंट, सोज, सोझ, सोरा, सौंद

हँकड़, हँकार–हकार; हँड–हींड; हँडव, हका, Oहट–हट; Oहटक, हठ–हठ; हड, Oहडक–हडसेल; हरक, Oहलक–हळक+ तथा हलक; Oहलहला–हलाव; Oहाँड; हाँत, Oहाँफ–हाँफ तथा आंफ; हाल–हाल; हिंच, Oहिंचक–हींच तथा हीचक; हिता, हिरा, Oहिल–हिल तथा हल तथा हळ; Oहिलक, Oहिलकोर–हिल्लोळ; हींड, हुक, हुटक, हुदक, हुमस, हुलका, हूठ, Oहूल, Oहेर–हेर; हेरिया, Oहेाड़ हेाल्द, हौंक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. अनुकरणात्मक धातुएँ

अकचका, अकबका, अछतापछता, अटपटा, अभुआ, अरक–अड; अरबरा, अरर, अरर–दरर, Oअरिया, अर्रा, अलला

इखर

उरर

कचकचा–कचकचाव; कचार, कचोक, कचोट, कटकटा, कड़क–ककळ, Oकनकना, कनमना, करबरा–कलबल; करष, करार, कराह, कलकला, कलमल, कसमसा, किकिया, किछकिया–कचकचाव; किटकिटा, किड़क, किरकिरा, किररा, कीक, कुचकुचा, Oकुड़कुड़ा, कुरमुरा, कुरल, कुलक, कुलकुला–कळकळ, कुलबुला, कुहक, Oकूक

Oखकार–खंखार; Oखखर–खंखार तथा खोंखर; खटक–खटक; खड़खड़ा–खखड; खड़बड़ा, खदबदा–खदखद; खनक–खळक; खभड़–खळभळ; खमक–खमक; Oखरखरा–खरखर; खरभर–खळभळ; खलखला–खळखळ; खलबला–खळबळ; खिलखिला, खुरखुरा, Oखोंख, खोंप–खूंप

गच, गटक–गटक; गड़क, गड़गड़ा–गडगडाव तथा गगड; गड़प, गनगना, गनना–गणगण, गपक–गपकाव तथा गबकाव; गररा, गहगहा; गिड़गिड़ा, गिलबिला, गुंगुंआ, गुटक, गुडगुड़ा, गुदगुदा, Oगुनगुना–गगण तथा गणगण, गुरेर, गुर्रा–घूरक; गुलगुला–गुर, गुरगुर

Oघड़घड़ा, घनक, Oघनघना–घणघण तथा घणाण; घमक–घमक; Oघमघमा, घरर, घिघिआ, घिचपिचा, घिर्रा, घुघुआ, घुटक, घुड़क–घुरक तथा घरक; Oघुरघुरा, घोंप–घोंच

चकचौंध, चकपका, चटक–चटक; चटचटा, चबक, चरचरा–चचण, चचर+, चरमरा, चर्रा, Oचहक, Oचिचिया–चीच; चिडचिड़ा, चिपचिपा, चुकचुका, चुचकार–चुचकार; चुनचुना–चणचण तथा चचर; चुभक, चुमकार, चुरक, चुरग, चुरचुरा, चुलचुला, चुहचुहा, चुहुक, चोंथ

Oछटपटा, छनक–छणक; छनछना–छछण तथा छणछण; छपक, छमक–छमक; Oछमछमा–छमक; छरक–छरक; छरक–छरक; छरछरा, Oछलक–छलका; छलछला, छिछकार, छिछया, छुछुआ, छुनछुना, छुताक, Oछौंक

जुगजुगा, जौंक

झंझना–झणझण; झंस, झक, झकझोर–झकझोळ; झड़झड़ा–झाडक तथा झाटक+, Oझनक–झणक, Oझनकार–झणकार; झम, झमक–झमक; झरझरा, झरस, झरहर, झलझला–झळ+, झलमल, झहन, झहर, झिमिट, झीझ, झीड़, झीम, झुँझला, झुनक, Oझुनझुना, झेक, झौंहा

टंकार–टंकार; टकटका, टनक, Oटपक–टपक; टपर, टरक–टरक+, टरटरा, टर्रा–टरडा; टस, टहक, टिटकार, टिमटिमा–टमक, टमटम; टिलटिला, टूम

ठंठना, ठक, ठकठका, Oठठा–ठठाड+, ठनक, ठनग, Oठनठना–ठणठण, ठणक; Oठप; Oठमक–ठमक; ठिनक, ठिलटिला, ठुनक, ठुमक–ठमक; ठुमकार, Oठुसक, ठेक–ठेक+, ठोक–ठोक

Oडकार, Oडगडगा–डग तथा डगडग तथा डगमग; डडक, डबडबा, Oडभक, डहडहा, डुकिया, Oडुगडुगा, Oडूब–डूब

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ढकेस, ढनमन, ढमक–ढमक; ढाँस, ढोंस

Oतडक–तडक; तडतडा, तड़फड़ा–तडफड तथा तरफड; तड़ाग, तणक्क, तररा, तिरतिरा, तुतला–तोतळा

थपक–थपकाव; Oथरक–थरक; थिरक–थरक; Oथुथकार, Oथुथुला,

दगदगा, दचक, दडोक, दनदना, दमक–दमक; दरकच, दरदरा, दर्रा, Oदुतकार–धुतकार; दुरदुरा, दोंक

धकधका–धकधक; धकपका, Oधगधग–धगधग+, Oधड़क–धडक; Oधधक–धबक+, धाँस, धुकर

निकोट

पकस, पचपचा, पटपटा, पड़पड़ा, पिचपिचा, पिटपिटा, पिनपिना, पिलपिला, पिहक, पीक, पुचकार–पुचकार; पुलपुला

फँफा, Oफटक–फटक+, Oफटफटा–फटक तथा फटकार+, फडक–फरक; Oफड़फड़ा–फडफड; फदक, फदफदा–फदफद+, फनक, फफक, फफद–फदफद; Oफरंक–फरक; Oफरफरा–फरफर तथा फरक; Oफरहर–फरहर; फलक, Oफसकः, फहरा, फिसफिसा, फीच, Oफुंकर–फुंकार; फुदक, Oफुफकार, Oफुफुआ, फुरफुरा, Oफुसकार, फुसफुसा, फूँक–फूंक; फेकर

बंबा, बगबगा, बजक, Oबड़बड़ा–बडबड, बलबला, बिरबिरा–बबड; बिलबिला, बिलला, Oबुडबुड़ा, Oबुदबुदा, बुनक, बुरक

भकभका–भभक; भकस, भचक, भड़भड़ा, Oभनक, Oभनभना–भणभण; Oभभक–भभक; Oभरभरा, भररा, भहरा, Oभिनक, भुरक, भुरभुरा

Oमचक–मच+, Oमटक–मटमटा+, मड़मड़ा, मनक, मनना, मरक–मरक+, मरमरा, Oमसक, मिनमिना, मिमिया, Oमुरमुरा, मुलमुला, Oमुस्मुसा,

रिर, रूम, रेंक–रेंक+

लखलखा, लछिआ, लटपटा–लटपट, Oलड़खड़ा–लडबड; लशकार, लहकार, लिबड, लिशक, लुलुआ,

सपकना, सगबगा, सटका, सटपटा, सठोर, सरफर, सरफरा, सरबर, Oसरसरा, सरसेट, Oसलसला, सिटपिटा, सिसक, सीट, Oसुड़क, Oसुड़सुड़ा, सुबक, सुक, Oसुरसुरा

हकबका, हचक, Oहडप–हडप; हड़लड़ा, हप, हबक–दबक; हरहरा, हलबला, हहर, हिकर, Oहिनहिना, हुंकार, हुआ, Oहुमक, हुश्कार–हुसकार, हुहा, हूँक, हेांकर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. तत्सम धातुएँ

अंग, अघ्रान, अतीत, अतुरा, अदरा–आदर+, अधिका, अधीन, अनंग, अनंद–आनंद; अनुकूल, अनुभव–अनुभव; अनुमान–अनुमाप, अनुराग, अनुराध, अनुरूप, अनुसंधान, अपमान, अपहर–अपहर; अभिनंद–अभिनंद; अभिसर–अभिसर; अरंभ–आरंभ; अरंभ–आरंभ; अराध–आराध; अर्थ, अर्द, अलस–आळस, अलाप–आलाप, अलप; अलोक–आलोक; अवकल, अवगत, अवगाह, अवतर–अवतर; अवधार–अवधार; अवमान–अवमान; अवराध, अवरोध–अवरोध; अवरोह, अवलंभ–उलंघ; अवलेख, अवलेप, अवलोक–अवलोक; अवसाद, अस्वीकार

आंदोल, आकर्ष–आकर्ष, आराध–आराध; आरोप–आरोप; आरोह–आरोह; आलिंग–आलिंग

इच्छ–इच्छ

उग्रह, उच्चर–उच्चार; उच्छल, उतपाट, उत्तार, उत्साह, उदघट, उदय, उदास, उद्धार; उनमूल, उन्मीन, उपचार, उपधर, उपमा, उल्लंघ–उल्लंघ; उल्लास–उल्लास

ऊढ, ऊन

कंथ, कथ–कथ; कपट–कपट; कर्ष–करख तथा करष तथा करस; कविता, कूज–कूज; कोप–कोप; क्रम, क्रम्य, क्रीड–क्रीड

खंड–खंड; खच–खच; खन–खण+

गद, गाँज, गुढ़, गुण, गोप–गोप; ग्रंथ, ग्रस–ग्रस; ग्रास

घोर–घोर

चपला, चय, चित्र, चिन्हार–चींध; चुंब, चेत–चेत+

छंद

जन्म–जन्म; जप–जप; जल्प–जल्प

तप–तप; तिष्ठ, तृप्ता, तोष, त्याग–त्याग; त्रस, त्रूट–त्रुट

दंश–दंश; दूष, दृढ़ा, दोष, द्रव–द्रव

धरस, धवव–धोळ

नंद–नंद; नखिया–नखोर; नट, नद, नम–नम; नर्त–नर्त, नश, निंद–निंद; निकंद, निग्रह–निग्रह; निनाद, निपात, निमज्ज, नियोज–नियोज; निरूप–निरूप; निरोध–निरोध; निर्गम–निर्गम; निर्दह–दह; निर्म–निर्म; निर्वह, निवस–निवस; निवेद–निवेद; निस्तर, निहन, नीर–नीर+

पगला, पराग, परिचार, परिलेख, परीक्ष, पल्लव, पूज–पूज; प्रकटा–प्रगट; प्रज्वल–प्रजळ; प्रबोध–प्रबोध; प्रभास, प्रवेश–प्रवेश; प्रशंस–प्रशंश; प्रसव–प्रसव; प्रसार–प्रहार, प्राप–पाम;

बाध, बाध–बोध; व्याप–व्याप

भंड, भक्ष–भक्ष; भज–भज; भाष, भूष, भेद–भेद; भोग–भोगव; भ्रम–भम तथा भरमा

मंगल, मंद, मत, मथ–मथ; मनसा, मर्द–मर्द; मलिना, मल्हार, मसिया, मोद–मोद; मोह,–मोह तथा मो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

याच–याच तथा जाच;

रंज–रंज+, रच–रच; रट, रव; रसा–रस; राध, रिस, रेख–रेख

लिख–लख; लुप, लेट–लेट; लोच, लोभ–लोभा

वंछ–वांछ; वध–वध; वाल, विकला, विकस–विकस; वितर–वितर; विदल, विध, विभूष, विभेद–विभेद विमोच–विमोच; विमोह–विमोह; विलंब–विलंबा; विलोप–विलोप; विवद, वेल, व्यतीत, व्याप–व्याप

शिथिला, शूल, शृंगार, शोध–शोध; शोष–शोष

संकेत–संकेत; संकोप, संक्रम–संक्रम; संताप–संताप; संतोष–संतोष; संधान, संबोध–संबोध; संभ्राज, सदर्थ, समर्प–समर्प; समाचर, समाधान, सम्राज, सरस, सशंक, सस, साध–साध; सीद, सृद, सृज–सर्ज, स्फुर–स्फुर; स्रव–स्रव; स्वच्छ, स्वीकार–स्वीकार

हत, हर्ष–हर्ष; हुत, होम–होम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. अर्धतत्सम धातुएँ

अगम, अगसर, अद्धय, अनमील, अभिलाख–अभिलाख; अरच–अर्च; अरज, अरथा, अरद, अरप–अर्प; अरह, अलोक–आलोक; अवरेख, अवलच्छ, अवलोच, अवाँग, अवसेर, अवार, असंध, असकता, अहक, अहिघुट्ट

आकरख–आकर्ष; आकरस–आकर्ष; आगम, आमरख, आरूंध, आरोध–अवरोध; आवर, आसर

उखाल, उगार, उडास, उतपन, उतपाद, उथप–उथाप; उदगर, उनमा, उनमाथ, उनमेख, उपकर, उपच, उपदेस–उपदेश; उपराज, उफन, उब, उभट, उलंघ

ओंग––ऊंग, ऊंज, ओज, ओसा–ओसाव+, औगाह–अवगाह; औतर–अवतर; औधार

कंष, कटाष, कत्थ, करष, कला–कालव; कीड, कुच, कूंथ, कूद–कूद; क्रील

गथ, गरज–गरज तथा गर्ज; गरब, गरभा, गरास–ग्रस; गवेस, गहवर, गहास, गिरास–गरास

घोख–गोख; घोस

चकरा–चकरा; चरम–चर्च; चूंठ

छंदर

जंत्र, जनम–जनम; जरजर, जलप–जल्प;

ठहर

ढोक

तज–तज; तरक, तरज, तरस–तरस तथा तलस; तिरास

थर

दगध, दरम, दरसा–दरशाव तथा दरश

धिआ–ध्या, धुतकार–धुतकार; ध्या–ध्या

नकार–नकार; निखेध, निखेार, निमेख–निमेष; निरत, निरधार–निर्धार; निरम–निर्म; निरमूल, निर्बह, निहवर, नीराज

पतिपार, परकास–प्रकाश, परगट–प्रगट तथा परगट; परजर–परजळ; परतार, परतेज, परबेाध–प्रबोध; परवान–परमाण तथा प्रमाण; परवाह, परिग्रह, परिया, परेख, पहर, पिरीत, प्रकास–प्रकाश; प्रगट–प्रगट; प्रजर–प्रजळ; प्रतोष, प्रनम–प्रणम; प्रफुल–प्रफुल्ल; प्रमान–प्रमाण; प्रहरख, प्रास

फाँस–फाँस

बंच–वंच; बंछ–वांछ; बंद–वंद; बथ, बध, बप–वाव; बम, बरख–वरस; बरज–वर्ज; बरत–वरत; बरन–वर्णव; बरम्हा, बरष–वर्ष; बाँच–वंच; बांछ–वांछ; बा, बाज–बाज तथा बाझ+, बापर–वापर; बिंद–बंद; बिकला, बिकस–विकस; बिगूच, बिघट, बिचर–विचर; बिचल–चळ; बिचार–विचार; बिछल, बितर–वितर; बिदल, बिदह, बिदूष, बिनय, बिफर–विफर; बिबस, बिबाद, बिवाह, बिवेच–विवेच; बिभा–विभा; बिभिना, बिमोच–विमोच; बिमोह–मोह;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिरच-रच; बिरहा, बिराग, बिराज; बिरोध, बिलंब, बिलग, बिलछ, बिलप-विलाप; बिलोक-विलोक; बिलोळ, बिवर, बिसतर-विस्तर; बिसम-विशम; बिसमर-वीसर; बिसस, बिसेख, बिहा, बीस, बेग, बेलस, ब्योंच, ब्रज

भरम-भम; भर्म-भरमा; भष-भक्ष, भख; भुगत-भोगव; भूख

मग, मज, महक-महेक; मुगत, मुरछा

रेखा

लुबध, लौक

वीख, बेसास

शराप-शाप

संकलप, संध-सांध; संप, संघार, संपेख, संबर, सकार-सकार; सतकार-सत्कार; सतर्प-संतर्प; सतोख-संतोष; सनमान-सन्मान; सपना, समद, समार्-समार; सरज-सरज तथा सर्ज; सराप-शाप; सवांग, ससर, साप-शाप; सिरज-सरज; सूध, सूव, सेाध-शोध तथा सेाध, सैंच

हरख-हरख; हरष-हर्ष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. विदेशी धातुएँ

अपसोस, अमेज, अरज, आजमा–अजमाव
उजर
कफ़ता, कबूल–कबूल; कम, कसीस, कुन्न, कुलाँच, केाक
खतिया–खतव; खरच–खर्च तथा खरच; खराद, खरीद–खरीद; खसिया, खुनसा
गंदोल, गड़बड़ा, गरदान, गरमा, गाँज–गांज + गुजर–गुजर; गुम, गुस्सा
चंग, चहक–चहँक; चुलबुला
जकंद, जफील, जम–जाम, जूम, जेर
तराश, तरिया, तलाश, तहसील, तहा, तुनक, तुर्श
दगल, दफना–दफना; दम, दरगुजर, दाग–दाग
नकाश, नजर–नजरा+, नजिका, नरज, नरमा, नवाज–नवाज, निगंद, नोक
परकार, पेच
फंद, फरक, फरमा–फरमाव, फिल्मा
बकसीस, बखिया, बख्श–बक्ष; बगलिया, बदल–बदल; बहला–बहेलाव;
बहस, बाग
मलोल, मसोस, मस्ता, महेर, म्या
रंग–रंग, रँद–रंद; रडक, रपट, रूखा
लरंज–लरज; लला
वर्गला, वसूल
शरमा–शरमा
सबुना, सरदा, सलाक, सस्ता, सहम, सुसता
हदस, हलकार, हुलक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ. विश्लेषण तथा निष्कर्ष

1. वर्गीकरण की शास्त्रीयता का प्रश्न

1.1 प्रस्तुत शोधकार्य के द्वितीय खण्ड के ऐतिहासिक तुलनात्मक धातुकोश द्वारा हिन्दी-गुजराती के अध्ययन की वैज्ञानिक पीठिका का एक अंश तैयार हुआ। हिन्दी का भाषा-भूगोल बहुत बड़ा है। एक ही मूल धातु विभिन्न बोलियों में रूपवैविध्य रखती है। इन बोलियों में साहित्य-रचना शुरू होने के उपरान्त इनका शास्त्रीय अध्ययन भी होने लगा है। ऐसे अध्ययनों के फलस्वरूप एक ही धातु के विविध रूप सुलभ हुए। इनकी उपेक्षा करने के बजाय इनको वर्गीकरण के द्वारा छाँटना उचित लगा। धातुकोश का संख्याभेद इस प्रक्रिया में दूर हो गया।

1.2 ऐतिहासिक अध्ययन में व्युत्पत्ति अनिवार्य समझी जानी चाहिए। संभव होता तो सभी तद्भव धातुओं का विकासक्रम समझाने के लिए संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा पुरानी हिन्दी, पुरानी गुजराती – सभी के रूप दिए जाते। सुलभ आधार तथा सुगमता दोनों को लक्ष्य करते हुए केवल संस्कृत और प्राकृत रूप ही दिए हैं। इनको टर्नर आदि विद्वानों के संदर्भों से समर्थित किया है इसलिए इनके अधिकृत होने का प्रश्न शायद ही कहीं खड़ा होगा।

1.3 प्रस्तुत अध्ययन के विषयक्षेत्र की सीमा में धातुओं का अकर्मक, सकर्मक आदि प्रकारभेद बताना आवश्यक नहीं था; यह क्षेत्र व्याकरण का है। परन्तु जहाँ एक ही धातु के अकर्मक-सकर्मक दोनों रूप सुलभ हों वहाँ दोनों का समावेश करने से धातुसंख्या और भी बढ़ जाती। इस दोष से बचने के लिए इस व्याकरणिक वर्गीकरण के संकेतों का धातुकोश में उपयोग किया है।

1.4 कुछ अनुकरणात्मक धातुएँ तद्भव हैं, कुछ देशज। इनका तद्भव या देशज होना दूसरी पहचान है। वर्गीकरण करते समय इनको अनुकरणात्मक के विभाग में रखा गया है। कुछ तद्भव धातुएँ अनुकरणात्मक होने का आभास देती हैं किन्तु अधिकारी विद्वानों ने इन्हें केवल तद्भव के रूप में ही पहचाना हैं। इसी में समाधान पाकर ऐसी धातुओं को तद्भव के अंतर्गत रहने दिया है; जैसे 'झनझना' (1610)।

1.5 संस्कृत से हिन्दी तक पहुँची हुई सभी धातुएँ क्रियावाचक धातुओं के मूल रूप में ही सुरक्षित रहकर कालजयी नहीं हुई हैं। पूर्व-प्रचलित विविध क्रिया-रूपों से कोई रूप आगे बढ़ा। उस सरल रूप में रही मूल धातु फिर से रूपवैविध्य पाकर जी उठी। जैसे कि संस्कृत के तिङन्त तथा कृदन्त रूपों के तद्भव एवं इन दोनों के संयोग से बने क्रियारूप अपभ्रंश में प्रयुक्त होने लगे। संस्कृत में तो प्रयोग, काल, पुरुष और वचन के बहुसंख्य होने के कारण, प्रत्येक धातु के $6 \times 10 \times 3 \times 3 = 540$ रूप होते थे। डॉ. शु. सिंह, डॉ. उदयनारायण तिवारी आदि की दृष्टि से यह अस्वाभाविक स्थिति थी[1]। नई भाषाएँ सरलीकरण की ओर उन्मुख हुईं और अपभ्रंश तक पहुँचते पहुँचते केवल एक गण रह गया। संस्कृत की गणव्यवस्था हिन्दी तक पहुँचने से पहेले ही शून्यशेष हो गई। इसे सरलीकरण तथा प्रयत्न-लाघव के रूप में लक्षित होते भाषा-परिवर्तन की सहज प्रक्रिया मानाना होगा। जहाँ तक क्रियारूप के परिवर्तन तथा परस्पर विनिमय का प्रश्न है, विद्वानों ने हिन्दी-गुजराती दोनों भाषाओं के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय में उल्लेखनीय अध्ययन किया है। जैसे कि अपभ्रंश-कालीन कृदंतों से कई हिन्दी-गुजराती धातुओं का निकलना।

हिन्दी की सभी नामधातुएँ गुजराती में नहीं हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि गुजराती में नामधातुएँ कम हैं। विदेशी शब्दों से बनी हिन्दी तथा गुजराती नामधातुओं की भिन्नता इस स्थिति को विशेष स्पष्ट करती है। तद्भव धातुओं में से कौन सी धातु किस समय संज्ञा, विशेषण या अव्यय से बनी इसका विशेष अध्ययन भी रसप्रद हो सकता है। यहाँ द्वितीय खण्ड के धातुकोश में नाम-धातुओं के व्यापक वर्ग का केवल निर्देश किया है, इनकी अलग से वर्गीकृत सूची आवश्यक नहीं लगी। क्योंकि ऐसा करने पर फिर संयुक्त क्रियाओं का प्रश्न खड़ा होता और विषयक्षेत्र बड़ा हो जाता, व्याकरणिक अध्ययन अनिवार्य हो जाता। केवल इस गणना से ही संतोष माना है कि हिन्दी में 865 नामधातुएँ हैं जब कि इनके विकल्प के रूप में यहाँ गुजराती की 247 नामधातुएँ तथा 283 संज्ञा, विशेषण, अव्यय जैसे तुलनीय रूप प्राप्त होते हैं।

1.6 हिन्दी-गुजराती के देशज शब्दों में क्रियावाचक शब्दों की बहुतायत है[2]।-पिशेल के इस निर्देश ने देशज धातुओं के अध्ययन का महत्त्व बढ़ा दिया है। वास्तव में यह 'देशज' संज्ञा एकार्थक नहीं है। जैसे विदेशी शब्द-वर्ग के अंतर्गत अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि सभी भाषाओं के शब्दों का समावेश किया जाता है वैसे ही देशज शब्द-वर्ग के अंतर्गत एकाधिक भाषाओं के शब्दों का समावेश है। अंतर इतना ही है कि ये शब्द अज्ञात रहकर इस व्यापक वर्ग के अंग बने हैं बल्कि वैयाकरणों द्वारा बनाए गए हैं। इन देशज धातुओं को 'देशज' न कहकर 'अज्ञात-व्युत्पत्तिक' कहने का सुझाव भोलानाथ तिवारी आदि विद्वानों ने दिया है। यहाँ प्रश्न यह होता है कि आज जो धातुएँ अज्ञातव्युत्पत्तिक कही जाएगी वे क्या सदा-सर्वदा अज्ञात-व्युत्पत्तिक ही रहेंगी। हेमचन्द्र द्वारा देखज बताई गई कई धातुएँ अब ज्ञातव्युत्पत्तिक होकर तद्भव के रूप में पहचानी जाती हैं। इस क्रम को प्रस्तुत शोधकार्य से (विशेष करके डा. भायाणी के परामर्श के कारण) कुछ गति मिली है। संभव है बची हुई देशज धातुओं में से भी कुछ को भविष्य में भिन्न अभिधान प्राप्त हो। मुण्डा तथा द्रविड भाषाओं के विशेष अध्ययन से भी शक्यता बढेगी।

1.7 अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं की अपेक्षा गुजराती के अध्ययन के लिए एक विशेष सुविधा यह है कि हेमचन्द्र द्वारा दिए गए उदाहरणों में अपभ्रंश और पुरानी गुजराती के बीच की कडियाँ देखी-परखी जा सकती हैं। परन्तु इसकी भी एक सीमा है। डॉ. हरिवल्लभ भायाणी के अनुसार गुजरात के पांडित्य को प्रतिष्ठित करने के आशय से हेमचन्द्र ने पूर्ववर्ती व्याकरणों के आधार से एक अद्यतन पाठ्यपुस्तक के रूप में 'सिद्धहेम' अपभ्रंश-व्याकरण लिखा था[3]। इस में दिए गए उदाहरण विभिन्न प्रदेश तथा काल के लक्षण सूचित करते हैं। इसलिए हेमचन्द्र द्वारा प्रस्तुत सामग्री छाँटकर ही गुजराती भाषा के इतिहास-लेखन के आधार तैयार किए जा सकते हैं। इस शोधकार्य में हिन्दी-गुजराती की तद्भव, देशज तथा अनुकरणात्मक धातुओं के तुलनात्मक वर्गीकरण से फलित साम्य, दोनों भाषाओं के इतिहास-लेखन का एक परोक्ष, छोटा-सा किन्तु महत्त्वपूर्ण आधार बन सकता है।

1.8 संस्कृत की जो धातुएँ किसी आधुनिक भारतीय आर्यभाषा के प्राचीन काल में ग्रहण न होकर आधुनिक काल में ग्रहण की गई और जिन्होंने रूप-विकार धारण किया इन्हें यहाँ (डा. ग्रियर्सन तथा चटर्जी महोदय के निर्देशानुसार) अर्धतत्सम कहा गया है। पंडित किशोरीदास वाजपेयी ने 'अर्धतत्सम' शब्द-प्रयोग का मखौल उडाते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुस पूछा है कि क्या 'तिहाई तथा चौथाई तत्सम' जैसे शब्द–प्रयोग भी नहीं करने पड़ेंगे ? वास्तव में 'अर्धतत्सम' शब्दप्रयोग गाणितिक नापतौल के लिए नहीं है। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं ने अपनी शब्दसमृद्धि बढ़ाने के लिए बिना रूपविकार के जिन संस्कृत धातुओं का व्यवहार शुरू किया उन्हें तत्सम तथा उत्तरकालीन रूपविकार के साथ जिनको प्रयुक्त किया उन्हें अर्धतत्सम कह के हमें भाषापरिवर्तन की एक विलक्षणता को समझना है। परिवर्तन के सहज क्रम में तो सभी संस्कृत धातुएँ तद्भव रूप में ही हिन्दी–गुजराती तक पहुँचनी चाहिए थीं। ग्रियर्सन ने कहा है कि क्रियाएँ तत्सम नहीं हो सकतीं। यदि उनमें से कुछ की धातु किसी प्रकार तत्सम हो भी तो काल–रचना, वाच्य–परिवर्तन आदि के कारण वे तद्भव रूप धारण कर लेती हैं[4]। विज्ञान तो यहाँ तक कहता है कि कोई भी शब्द दुबारा उच्चरित होता है तब अपने पूर्वरूप से कुछ भिन्न तो होता ही है। परन्तु सादृश्य आदि के कारण हम उसे उसके पूर्वरूप में ही पहचानते हैं। यह एक हकीकत है कि आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं ने प्राकृत–अपभ्रंश की प्रक्रिया से न गुजरने वाली कई धातुएँ संस्कृत से ग्रहण की हैं। यह एक सांस्कृतिक घटना है। इसे कई प्रभावों के संदर्भ में समझा जा सकता है। यहाँ उल्लेखनीय तथ्य यह है कि अन्य तत्सम–अर्धतत्सम शब्दरूपों की अपेक्षा तत्सम और अर्धतत्सम धातुओं की संख्या कम है। हाँ, गुजराती की अपेक्षा हिन्दी में यह प्रवृत्ति कुछ अधिक रही, बोलियों में भी। डा. शुकदेव सिंह ने उदाहरण देकर प्रतिपादित किया है कि भोजपुरी में कुछ ऐसी भी अर्धतत्सम धातुओं का प्रचलन है, जो संस्कृत की मूल धातुओं से प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध हैं। यह कथन भी डा. सिंह का है कि खड़ीबोली में अर्द्ध–तत्सम धातुओं का अनुपात अधिक है, इसलिए कि खड़ीबोली साहित्यिक भाषा है। बोलचाल की गुजराती और साहित्यिक गुजराती में उतना अंतर नहीं है। फिर भी साहित्यिक एवं शास्त्रीय गद्यलेखन के देढ़ शती के इतिहास ने तत्सम–अर्धतत्सम धातुओं का लगभग इसी अनुपात में प्रयोग किया है। सार्थ गुजराती कोश में मगनभाई देसाई ने जिस प्रकार कुछ अंग्रेजी शब्दों से 'ओक्सव', 'क्लोरव' आदि गुजराती धातुरूप बनाए हैं इसी प्रकार तत्त्वज्ञान, मनोविज्ञान तथा साहित्य–समीक्षा जैसे विषयों के कुछ विद्वानों ने पारिभाषिक पर्याय खोजते खोजते धातु, क्रियार्थक संज्ञा तथा संयुक्त क्रियाओं के संस्कृताश्रित प्रयोग किए हैं। कुछ प्रयोगशील कवियों ने अश्व, वृक्ष आदि संज्ञाओं के क्रियारूप बनाए हैं। पिछले देढ़–दो दशक में व्याप्त दोनों भाषाओं की इस प्रवृत्ति को आत्यंतिक मानकर ऐसी धातुओं का परिशिष्ट में भी समावेश नहीं किया है। अलबत्ता, भविष्य की अनिश्चितता इस नकार को पलट भी सकती है।

1.9 हिन्दी की 2981 धातुओं के पर्याय के रूप में 1126 गुजराती धातुएँ प्राप्त होती हैं। इनमें से 555 धातुओं में पूर्णतया रूपसाम्य है। 571 धातुओं में आंशिक रूपसाम्य है। पूर्णतया रूपसाम्य रखनेवाली धातुओं में से 468 धातुओं में अर्थसाम्य है, आंशिक रूपसाम्य–युक्त धातुओं में से अर्थ–साम्य रखनेवाली धातुएँ 502 हैं, जब कि थोड़ा–बहुत अर्थवैषम्य जताती धातुएँ 87 + 69 = 156 हैं। जो धातुएँ समानस्रोतीय नहीं हैं उनके ध्वनिसाम्य को महत्त्व नहीं दिया। केवल देशज धातुएँ ही इसमें अपवाद–रूप हैं क्योंकि इनके स्रोत संदिग्ध हैं। अतः अर्थ तथा प्रयोग की सहायता से इनका चयन किया था।

2. परिवर्तन, वृद्धि तथा क्षति :

2.1 भाषाविज्ञान के क्षेत्रविस्तार के बारे में विद्वानों के मतभेदों का उल्लेख करते हुए पाल किपार्स्की ने हर्मन पाल की इस मान्यता का जिक्र किया है: भाषाविज्ञान से सम्बन्धित सारी स्पष्टताएँ अनिवार्य रूप से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऐतिहासिक हैं। बाद में, शोसूर ने प्रत्येक भाषिक स्थिति में एक स्वयंप्राप्त व्यवस्थित संचरना देखी। फलतः भाषाविज्ञान के दो क्षेत्र स्पष्ट हो गए: ऐतिहासिक तथा संरचनात्मक। इन दोनों के अध्ययन की पद्धतियाँ भी भिन्न होती गईं।

शोसूर की यह स्थापना भी व्यापक रूप से स्वीकृत हो चुकी है कि परिवर्तन तथा संरचना परस्पर सम्बद्ध हैं। ऐतिहासिक निष्कर्ष भाषाविज्ञान के सिद्धान्तों के परीक्षण के बाह्य मूर्त आधार हो सकते हैं। दूसरी ओर ऐतिहासिक समाधान प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी भाषाविज्ञान के सिद्धान्तों ने—विशेष कर के वर्तमान सिद्धान्तों ने नहीं उठाई।[5]

2.2 परिवर्तन के सैद्धान्तिक आधार क्या हैं? भाषिक परिवर्तन नियमित होता है या उसमें वैविध्य पाया जाता है?

एण्टिला ने कहा है कि प्रत्येक अनियमितता के पीछे कोई कारण होता है। कभी कभी तो अनियमितताओं तथा नियमितताओं का प्रमाण समान होता है। इसके बावजूद ऐतिहासिक भाषाविज्ञानियों को ध्वनिपरिवर्तन की नियमितता की आधारशिला का ही आश्रय लेना है।[6]

पाल किपार्स्की ने एक प्रश्न यह उठाया है कि पूर्ववर्ती ध्वनिनियम के अनुक्रम में ही क्या नये नियम का स्थान पाना संभव है? जहाँ भी क्रम निर्धारित हो पाया है, ध्वनि-परिवर्तन के अधिकांश नियम अनुपूर्ति के रूप में ही अस्तित्व में आए हैं? इन नियमों की भूमिका शुद्ध रूप से ध्वन्यात्मक होगी जब कि पूर्ववर्ती काल में अस्तित्व में आ चुके नियम रूपात्मक भूमिका को पहुँच चुके होंगे।

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान के अध्ययन का विस्तार बढ़ा। इसमें गहराई आई इसके साथ ही परिवर्तन की प्रक्रिया बहुआयामी दिखाई देने लगी। इसको समझने का प्रयत्न भी बढ़ा।

2.3 तुलनात्मक तथा आंतरिक पुनर्गठन की पद्धतियाँ भाषिक परिवर्तन के हमारे ज्ञान पर आधारित हैं। परन्तु क्या भाषाओं के इतिहास केवल परिवर्तन के दस्तावेज होते हैं? जैसा कि विनफ्रेड लेमान कहते हैं परिवर्तित होने के साथ भाषाएँ क्षतिग्रस्त भी होती हैं।

Besides changing, languges also under go Loss.

क्षति की इस प्रक्रिया को अभी व्यापक रूप से समझने का पुरुषार्थ नहीं हुआ। क्षति या लोप की तरह परिवर्तन के साथ एक और प्रक्रिया देखी जाती है—वृद्धि की। 'धातुकोश' में मूल धातुओं के साथ परवर्ती काल में आकर एकरूप हुई ध्वनियों के शताधिक उदाहरण मिलेंगे। वृद्धि ध्वनि, रूप तथा अर्थगत ही नहीं होती; पूर्णतया शब्दगत भी होती है। विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आया हुआ धातुसमूह इन्हीं घटनाओं का निर्देश करता है। क्षति की प्रक्रिया को विद्वानों ने अधिक सूक्ष्मता से देखा है। भाषिक सम्बन्धों के क्रम-निर्धारण के लिए शब्दसामग्री में हुई क्षति का कालानुवर्ती अनुपात (रेट) या सुरक्षित शब्दसामग्री का प्रतिशत उपयोग में लिया जाता है। इसे कालानुवर्ती भाषिक परिवर्तन का प्रमाण—ग्लोटोक्रोनोलाजी कहते हैं। ऐतिहासिक हेतुओं के लिए शब्दसमूह के अंकशास्त्रीय अध्ययन की पद्धति का उपयोग होता है। इस व्यापक संज्ञा को शब्दकोशीय सामग्री-संरक्षणशास्त्र—'लेक्सिको स्टेटिस्टिक्स' कहते हैं। लेमान के अनुसार जिन भाषाओं का सम्बन्ध निकट भूतकाल में देखा-परखा जा सकता है और जो समान सांस्कृतिक विस्तार में बोली जाती हैं उनके विषय में कालानुवर्ती भाषिक परिवर्तन-प्रमाण—'ग्लोटोक्रोनोलोजी' के द्वारा उपयोगी जानकारी प्राप्त हो सकती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2.4 भारोपीय परिवार की भाषाओं के पिछले देढ सौ वर्ष के अध्ययन के फलस्वरूप, उनमें हुए परिवर्तन के द्वारा विद्वानों ने उनका इतिहास निर्धारित किया है, उनके पारस्परिक सम्बन्धों को समझाया है। हिन्दी–गुजराती एक ही परिवार की भाषाएँ होने के साथ साथ कुछ विदेशी भाषाओं से विशेष कालखण्डों में लगभग एकसाथ प्रभावित हुई हैं। इन दोनों भाषाओं के विशेष अध्ययन की सामग्री के रूप में इनकी धातुओं के शब्दकोशीय सामग्री–संरक्षणशास्त्रीय 'लेक्सिकोस्टेटस्टिकल' निष्कर्ष निम्नलिखित हैं :

[इस पद्धति के अंतर्गत सामान्यतया कुछ चुने हुए शब्दों को लेकर विविध भाषाओं में उन के सुलभ रूपोंका अध्ययन करके निष्कर्ष निकाले जाते हैं।]

3. निष्कर्ष :

3.1 विलियम ड्वाइट व्हिटनी ने 'रूट्स, वर्बफोर्म्स एण्ड प्राइमरी डेरिवेटिव्स आफ ध संस्कृत लेंग्वेज' के अंत में धातुसूची दी है। जिसमें कुल–मिलाकर 1014 संस्कृत धातुओं का समावेश है। परन्तु उनमें 85 धातुएँ दो से लेकर पाँच की संख्या में ध्वनिसाम्य रखती हैं। कुल जोड में से इन 85 धातुओं को कम करने पर 829 धातुएँ बचेंगी।

डा. गजानन पळसुले ने 'ए कोन्कोर्डन्स आफ संस्कृत धातुपाठाज' में कुल मिलाकर 3706 संस्कृत धातुओं का ससावेश किया है। इनमें 920 धातुएँ ध्वनिसाम्य के आधार से कम करने पर 2786 संस्कृत धातुएँ बचेंगी। ये धातुएँ वास्तव में 'पुस्तकीय' हैं और निःशेष गणना के प्रयत्न में इनमें संख्यामेद आ गया है। व्हिटनी द्वारा निर्दिष्ट धातुओं में से 200 धातुएँ संस्कृत के प्रारंभिक काल में पाई जाती है; लगभग 500 धातुएँ दोनों काल–विभागों में तथा 150 से कम परवर्ती काल में पाई जाती हैं। डा. पळसुले ने संस्कृत की गणव्यवस्था के आधार से सभी सुलभ धातुपाठों में प्राप्त धातुओं में कितनी क्षति–वृद्धि हुई इसका गणित दिया है। वृद्धि का प्रमाण उनको क्षति से ज्यादा लगा है। इनके द्वारा निर्दिष्ट सभी धातुएँ किसी भी काल की संस्कृत में एक साथ व्यवहृत नहीं होती होंगी यह तो स्वयंस्पष्ट है, परन्तु जब लिखित सामग्री के उपयोग से ही निष्कर्ष तक पहुँचना अनिवार्य हो तब यह मानकर चलेंगे कि संस्कृत में अधिक से अधिक 2786 धातुएँ प्रयुक्त हुई हैं और एक धातुः एक अर्थ के हिसाब से इनकी संख्या 3706 होती है। धातुसंख्या की गणना डा. पळसुले ने नहीं की, इस शोधकर्ता ने की है।

3.2 प्रस्तुत प्रबन्ध के द्वितीय खण्ड के धातुकोश में 877 तद्भव हिन्दी धातुओं का समावेश हुआ है। इनमें से 476 धातुओं के गुजराती रूप मिलते हैं। धातुकोश में तो तुलना के लिए संज्ञा, विशेषण आदि का भी निर्देश किया है। इस गणना में केवल धातुओं का ही समावेश है। इन 476 गुजराती धातुओं में 78 धातुएँ ऐसी हैं जिनमें से किसी की एकाध अर्थच्छाया भिन्न है या किसी में पूरे अर्थ की भिन्नता है।

बोलियों तथा प्रयोगों के कारण आए रूप–वैविध्य से बढे संख्याभेद को दूर करने के बाद 2981 हिन्दी धातुएँ शेष रहीं। इनमें तद्भव धातुओं का प्रतिशत 29.4 है। तद्भव विभाग में हिन्दी के साथ दी गई गुजराती धातुएँ 54.2 प्रतिशत हैं।

3.3 हिन्दी की देशज धातुओं की संख्या 1160 है। इस संख्या के सामने गुजराती की देशज धातुएँ 308 मिलती हैं। इनमें से अधिकांश समानस्रोतीय हैं। यहाँ दी गई 308 गुजराती देशज धातुओं में से 56 धातुओं में अर्थच्छाया या अर्थ की भिन्नता लक्षित होती है। हिन्दी में देशज धातुओं का प्रतिशत 39 है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन धातुओं के साथ गुजराती की 25.7 प्रतिशत देशज धातुएँ प्राप्त हुई हैं। 1160 हिन्दी देशज धातुओं में से 310 पूर्ववर्ती काल में अस्तित्व में थीं। गुजराती की अपनी देशज धातुओं की संख्या उल्लेखनीय रूप से बड़ी है।

3.4 हिन्दी में 367 अनुकरणात्मक धातुएँ हैं। ये कुल संख्या की 12.3 प्रतिशत हैं। इनके साथ गुजराती की अपनी 103 धातुएँ मिली हैं। जो हिन्दी धातुओं की 30.8 प्रतिशत हैं। गुजराती की अपनी अनुकरणात्मक धातुओं की संख्या काफ़ी बड़ी है। ऊपर निर्दिष्ट प्रतिशत केवल तुलनात्मक दृष्टि से दी गई धातुओं का है। इनके 15 गुजराती रूपों में अर्थ या अर्थच्छाया की भिन्नता लक्षित होती है। हिन्दी की 367 अनुकरणात्मक धातुओं में से 87 पूर्व-प्रचलित हैं।

3.5 हिन्दी की 246 तत्सम धातुओं के साथ गुजराती की 122 धातुएँ मिली हैं। जिनका प्रतिशत क्रमशः 8.2 तथा 49.6 होगा। पाँच गुजराती रूप अर्थ या अर्थच्छाया की भिन्नता रखते हैं।

3.6 धातुकोश में दी गई अर्धतत्सम धातुओं में से अधिकांश काव्य में प्रयुक्त तो कुछ कालग्रस्त भी हैं। इनकी संख्या 238 है। हिन्दी की कुल धातुओं की ये आठ प्रतिशत हुईं। इनके साथ रखने योग्य गुजराती रूप 96 हैं जिनमें से कई तत्सम हैं। ये धातुएँ हिन्दी अर्धतत्सम की 403 प्रतिशत हैं। इन हिन्दी-गुजराती अर्धतत्समों में केवल दो धातुओं के बीच ही अर्थभिन्नता पाई जाती है।

3.7 हिन्दी-गुजराती में प्रयुक्त होता विदेशी शब्दसमूह बड़ा है। परन्तु संज्ञा, विशेषण आदि की अपेक्षा क्रियाएँ कम मिलती हैं। इनकी केवल 93 धातुएँ ही हिन्दी में प्रयुक्त होती हैं जिनमें से अधिकांश अरबी-फ़ारसी हैं। अंग्रेज़ी से तो केवल एक ही (नाम) धातु उतर आई है ('फ़िल्मा')। हिन्दी धातुओं में विदेशी धातुओं का प्रतिशत केवल 3.1 है। इन धातुओं के 22.5 प्रतिशत रूप गुजराती में भी प्रयुक्त होते हैं। इनमें से केवल दो धातुओं में अर्थभिन्नता पाई जाती है।

तुलनात्मक वर्गीकरण : अ

वर्गीकृत धातु	हिन्दी संख्या	प्रतिशत	गुजराती संख्या*	हिन्दी की प्रतिशत	अर्थ या अर्थच्छाया की भिन्नता रखनेवाली धातुएँ	टिप्पणी
तद्भव	877	29.4	476	54.2	78	
देशज	1160	39	308	25.7	56	हिन्दी की 310 देशज-धातुएँ पूर्व प्रचलित हैं।
अनु.	367	12.3	103	30.8	15	हिन्दी की 87 अनु. धातुएँ पूर्वप्रचलित हैं।
तत्सम	246	8.2	122	49.6	5	
अर्ध सम	238	8	96	40.3	2	
विदेशी	93	3.1	21	22.5	2	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*** तुलनात्मक वर्गीकरण : आ**

वर्गीकृत धातु	पूर्ण रूप–साम्य रखती हि-गु. धातुएँ	इनमें पूर्ण अर्थसाम्य–युक्त धातुएँ	इनमें आंशिक अर्थसाम्य वाली धातुएँ	आंशिक रूपसाम्य युक्त हि–गु. धातुएँ	इनमें पूर्ण अर्थसाम्य रखती धातुएँ	इनमें आंशिक अर्थसाम्यवाली धातुएँ
तद्भव	228	192	36	248	208	40
देशज	162	123	39	146	128	18
अनु.	32	25	7	71	64	7
तत्सम	97	94	3	25	23	2
अर्धसम	21	20	1	75	74	1
विदेशी	15	14	1	6	5	1

एक स्पष्टता यहाँ आवश्यक है। जिन हिन्द–गुजराती धातुओं में पूर्ण रूपसाम्य दिखाई देता है उनमें भी वास्तव में पूर्णतया रूपसाम्य नहीं होता। 'उठ', 'आंज', 'कर', 'खा' आदि धातुरूप हिन्दी और गुजराती में पूर्ण रूपसाम्य रखते हैं, इनके उच्चारण की आकृतियाँ भी समान हैं। परन्तु 'जड', 'पढ़' आदि में रूपसाम्य नजर आने पर भी पूर्णतया उच्चारण–साम्य नहीं है। यहाँ लिपि की मर्यादा भाषिक अध्ययन की मर्यादा बनती है। दूसरी ओर हिन्दी 'मिल' और गुजराती 'मळ' में पूर्ण नहीं, आंशिक रूपसाम्य दिखाई देता है परन्तु इन दोनों धातुओं के मूल में तो संस्कृत–प्राकृत 'मिल्' है। जो ध्वनिभेद–रूपभेद लक्षित होता है वह तो इन दोनों भाषाओं की स्वतंत्र विकास–प्रक्रिया का परिणाम है। इस प्रकार 'मिल' 'और 'मळ' मूलतः पूर्ण रूपसाम्य की धातुएँ होने के बावजूद हिन्दी–गुजराती की वर्तमान भाषिक स्थिति के अनुसार इन्हें आंशिक रूपसाम्ययुक्त धातुएँ मानकर उपर्युक्त गणना की गई है। गुजराती में ह्रस्व-दीर्घ के उच्चारण में वैसा अंतर नहीं है जो हिन्दी में है। इसलिए प्रस्तुत गणना में हिन्दी 'उग' तथा गुजराती 'ऊग' आदि को पूर्ण रूपसाम्ययुक्त धातु माना है। गुजराती में दीर्घ लिखे जाते कई रूपों को टर्नर महोदय ने ह्रस्व लिखा है।

4. फलश्रुति :

इस शोधकर्ता के लिए हिन्दी और गुजराती की क्रियावाचक धातुओं का यह तुलनात्मक अध्ययन जिज्ञासा-पूर्ति का एक विरल निमित्त बना। जिज्ञासा की आंशिक पूर्ति भी विस्मय जगाती है और विस्मयजन्य आनंद जिज्ञासा की नई यात्रा को जन्म देता है।

यहाँ रवीन्द्रनाथ की वह उक्ति याद आ जाती है: 'कत आजानारे जानाइले तुमि।' यदि मैं इस अध्ययन से न गुजरता तो कित–कितनी धातुओं से, इनके रूपवैविध्य से अनजान ही रह जाता! इनकी सृष्टि भी मानवीय सृष्टि की तरह इतनी रसप्रद हो सकती है यह अब तो अनुभव की बात है, पहले कल्पना भी नहीं थी।

अभी सहज रूप से ही एक बंगला पंक्ति याद आ गई! हो सकता है कि पंजाबी; मराठी और बंगला को मिलाकर इन पाँचों भाषाओं की धातुओं का तुलनात्मक अध्ययन करने का मौका मिले! अलग अलग व्यक्तियों के द्वारा दो दो भाषाओं के ऐसे तुलनात्मक अध्ययन भी भविष्य में इतना तो सिद्ध कर ही सकते हैं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कि हिन्दी के साथ अन्य कौन-सी आधुनिक भारतीय आर्यभाषा अधिकाधिक निकटता रखती है? बिना अध्ययन के भी कोई उत्साहमूर्ति इसका जवाब दे दे, परन्तु वह केवल राय होगी जब कि सामग्री के साथ अध्ययन करने के फलस्वरूप जो प्राप्त होगा वह निष्कर्ष होगा—सिद्धान्त का प्रतिपादन होगा।

प्रस्तुत अध्ययन के तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक अभिगम के कारण सूचित हुआ कि मूल संस्कृत की धातुसामग्री का कितना अंश सुरक्षित रहा। धातुकोश में हिन्दी की सभी सुलभ धातुएँ देने के फलस्वरूप वृद्धि-लोप तथा परिवर्तन की प्रक्रिया से गुज़री सारी सामग्री सामने आ गई। धातुओं के आगमन की घटना से तो भाषा के विद्वान अच्छी तरह से परिचित थे, जहाँ कहीं बहस का मौका आया, पाँच-दस अरबी-फारसी धातुएँ गिना देते थे। इनकी संख्या इतनी बड़ी है यह तथ्य इस अध्ययन के फलस्वरूप सामने आया! अनुकरणात्मक धातुओं का इतनी बड़ी संख्या में अस्तित्व, इनका तथा देशज धातुओं का उल्लेखनीय संख्या में पूर्ववर्ती होना ये तथ्य भी विशेष रूप से स्पष्ट हुए।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के उद्भव और विकास की एक रूपरेखा विद्वानों के पास है अवश्य, किन्तु कौन-सी भाषा कब किससे अलग हुई इसका प्रामाणिक इतिहास हमारे पास नहीं है। डा. प्रबोध पंडित ने ध्वनिमूलक अध्ययन के द्वारा संस्कृत से कब कौन-सी प्राकृत अलग हुई इसके क्रम का निर्देश किया है[9]। सामग्री से सिद्धान्त और सिद्धान्त से तथ्य तक पहुँचा जा सकता है। यहाँ केवल धातुओं का तुलनात्मक-ऐतिहासिक अध्ययन किया गया, भविष्य में समग्र शब्दराशि के ध्वनि, रूप तथा अर्थमूलक एवं व्याकरण-विषयक अध्ययनों के द्वारा हम सभी आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के क्रमिक इतिहासों का साक्षात्कार कर सकेंगे। भाषा भले ही असंलक्ष्य रूप से आगे बढ़ती रहे, हम भूतकाल में जाकर इसका पुनर्निर्माण करेंगे!

टिप्पणी

1. पृ. 67 भोजपुरी और हिन्दीका तुलनात्मक अध्ययन
2. पृ. 9 हिन्दी में देशज शब्द
3. पृ. 74 गुजराती भाषाना इतिहासनी केटलीक समस्याओ
4. पृ. 136 हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग
5. पृ. 205-6 टेस्टिंग लिंग्विस्टिक हाइपोथेसिस
6. पृ. 76-77 गुजराती भाषाना इतिहासनी केटलीक समस्याओ
7. पृ. 309 न्यू हेराइज़न इन लिंग्विस्टिक्स
8. पृ. 107 हिस्टोरिकल लिंग्विस्टिक्स : एन इण्ट्रोडक्शन
9. दे. प्राकृत भाषा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट

1. गुजराती धातुसूची
2. महत्त्वपूर्ण शब्दकोश
3. संदर्भसूची

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-1

गुजराती धातु-सूची

[यहाँ 2136 गुजराती धातुएँ दी गई हैं। रूपवैविध्य के कारण समाविष्ट (कोष्टक में दी हुई 191) धातुएँ कम करने पर 1945 धातुएँ शेष रहेंगी]

अकडा, अकळा, अखडा, अघ, अचक, (उचका,) अछवा, अछाड, अछाव, अज, अजमाव, अजवाळ, अजोतर, अट, अटक, अटकळ, अटा, (अटवा,) अटेर, अटोप, अठवा, अठिग, (अठींग,) अड, अडक, अडप, अडबड, अडवड, अडवाळ, अडाव, अढेल, अणसार, अणाव, अथड, अदरक, अधरक, अधुसार, अनुकंप, अनुसर, अपसर, अपमान, अफरा, अफाळ, अबगर, अभडा, अभिसींच, अभिवंद, अमळा, अमूंझा, अर्प, अलव, अलाण, अवखोड, अवगण, अवट, अवतर, अवधार, अवरोध, अवहेल, अषेर, अष्टा, अळदा, अळपा, (अळसा,) अळांस, अधोळ, अंजा, अंटवा, (अंटेवा,) अंबोळ

आख, आखड, आखर, आगर, आचक, आचर, आछट, (आछेट,) आछर, आट, आटक, आटोप, आढ, आण, (आथड,) आथ, आथम, आथर, आदर, आप, अफरक, आफर, आफळ, आभड, आमळ, आरड, आरंभ, आरोग, आरोह, आलळ, आलाप, आलिंग, आलेख, आलोच, आव, आवकार, आवट, आवड, आवर, आवर्त, आशर, आसरड, आळस, आळेख, आंक, आंगम, आंचक, आंज, आंट, आंतर, आंब

इच्छ, इजार,

ईच, ईतरा, ईज[1]

उकाण, उकाळ, उकांस, उकेल, उखाड, (उखेड,) उगाम, उगार, उघाड, उघराव, उचार, (उच्चार,) उचेड, उचेल, उछेद, उछेर, उजमा, उजा, उजास, उजाळ, उजेर, उझरड, उटांक, उठंग, उठाव, उणाव, उतरड, (उजेड,) उत्थाप, उत्पत, उथाप, उथाम, उद, उद्भव, उधडक, (उधरक), उधेड, उधेर, उना, उपकर, उपज, उपराज, उपाड, उपास, उफरांट, उबा, उबेट, उबेळ, उभार, (उमेळ,) उमेर, उमेळ, उलाळ, उलेच, उल्लेख, उवेख, उशेट, उश्केर, उसरड, उसार, उसेट, उसेड, उसेव

ऊकण, ऊग, ऊगट, ऊघळा, ऊचक, (ऊचड,) ऊचण, (ऊचर,) ऊचव, (ऊचळ,) ऊचीज, ऊछळ, ऊज, ऊजमा, ऊजर, ऊजव (ऊझर,) ऊटवा, ऊठ, ऊड, ऊत, (ऊतड,) उतर, ऊथड, ऊदक, ऊधर, ऊघळ, ऊनवा, (ऊपज,) ऊपण, ऊपस, ऊफण, ऊब, ऊभ, ऊभर, (ऊभरा,) ऊभळ, ऊमग, ऊमट, (ऊमड,) ऊमल, ऊरझ, ऊलट, ऊलस, ऊलळ, ऊसप, ऊसर, ऊंघ, ऊंचक, ऊंज, (ऊंबेळ)

एझ, एरा, एलर, एलळ, एंच. एंट

ओक, ओखण, ओखर, ओखव, ओखांग, ओगदाळ, (ओगधाळ,) ओगळ, ओघ, ओघा, (ओच,) (ओचर,) ओछा, ओछाड, ओज, ओट, ओटव, ओड, ओडा, ओढ, ओथ, ओथर, ओध, ओधर, ओंनाळ, ओप, ओभा, ओर, ओरप, ओरव, ओलपाव, ओलव, ओलांड, ओवराळ, ओवार, ओवाळ, ओस, ओसर, ओशंक, (ओसंगा,) ओळ, ओळख, ओळग, ओळव, ओळंग, ओळंड, ओळांस, ओंता

---

(1) गुजराती कोशों में अनुस्वारयुक्त असरों को अंत्य क्रममें रखा जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ककराव, ककळ, कगॅर, कचकच, कचड, (कचर) कचव, कचवा, कचूंद, कछ, कजळ, कट, कटकटाव, कटाव, कठ, कडकड, कडवाट, कढ, कढण, कण, कणक, कणकण, कणमण, कणस, (कणसड,) कतरा, कथ, कथळ, कद, कदर, (कदरा,) कनड, कन्ना, कबड, कबडा, कबूल, कमकम, कमण, कमा, कमाव, कर, करकरा, करकोल, (करगर,) करचाव, करड, करप, करब, करमण, करमोड, करांज, (कल,) कलव, कलाव, कल्प, कव, कवठ, कवा, कष्ट, (कष्टा,) कसकस, कसण, कहे, कळ, कळकळ, कळळ, कळा, कळैळ, कंटाळ, कंडार, कंप, का, काकर, काछ, (काजळ,) काट, काढ, कातर, काप, कालव, कांगर, कांत, कांस, (किंगला,) कीकला, कुधर, कुंजरा, कूट, कूड, कूद, कूंद, केळव, केाकडा, केाकर, केाच, केाप, केार, केास, केारांख, केाह, केाळ, क्षम

खखड, (खखर,) खच, खचक, (खचका,) खचकाव, खट, खटक, खटा, खड, खडक, खडप, खण, खतव, खद, खदड, (खदेड,) खबकाव, खबुक, खबेड, खम, खमण, खर, खरच, खरड, (खरप,) खरपा, खराद, खरीद, खरेट, खल, खला, खलेळ, खस, खसेार, खळ, खळक, खळखळ, खळभळ, (खळा,) खळेळ,) खंखरेाट, खंखळाव, खंखार, खंखेर, खंखेार, खंगाल, (खंगाळ,) (खंचा,) खंजळाळ, (खंजेाळ,) खंटा, खंड, खा, (खाखरेाट,) खाट, खातर, खाप, खाबक, खालव, खाळ, (खांखरेाट,) खाँच, खांस, खिला, खीज, खील, (खीसक,) खूत, खूप, खूल, खूंखार, खूंच, खूंचव, खूंट, (खूंत,) खूंद, खूंदाळ, खूंप, खेड, खेल, खेंच, खेा, खेाखा, खेाज, खेाटक, (खेाटका,) खेाड, खेाडंग, (खेाडंगा) खेातर, खेाद, खेाभ, (खेाभर,) खेार, खेारवा, खेास, खेाळ, खेाळंब, (खेाळंभ,) खेांखार

गगड, (गडगड,) गच्छ, गटाव, गड, गडथल, गडदार, (गडदाव,) (गडबड,) गज, गद, गदड, (गदर,) गदार, गदाव, गपा, गबड, गभरा, गम, गर, गरगड, गरज, गरड, गरभा, गर्ज, (गर्भा,) गलवा, गवेष, गहेक, गळ, गळगळ, गळच, गंचला, गंज, गा, गाच, गाज; गाठ, गाळ, गांगर, गांठ, (गिन्ना,) गीगला, गीरव, गूड, गूंथ, गूंद, गूंदर, गेाख, (गेाखाट,) गेाटा, गेाट, गेाटव, गेाड, गेात, गेाथाट, गेाद, गेादाव, गेादा, गेाल, गेाव, गेाहा, गेांध, ग्रथ, ग्रस, ग्रह

घघर, घचड, (घचरड,) घट, (घटकाव,) घड, घडूड, घम, घमक, घरक, घरघ, घरड, घवड, घस, घसरड, घात, घाम, घाल, घास, घांघरड, घीस, (घुघराव,) घुमरड, घुर, घूघ, घूघर, (घूघरा,) घूम, घूमड, घूरक, घूरका, घूस, घूंट, घेर, घेाच, घेार, घेारव, (घेांच,) घेांघाट, घेांट

चकचक, चकास, चग, चगद, (चगदेाळ,) चगमग, चगळ, चचर, (चचण,) चट, चटक, चड, चढ, चण, (चणचण,) (चतराव,) चपकाव, चपड, चपस, चपाट, चब, चबकाव, चबेाळ, चभड, चमक, चर, चरक, चरच, (चरचर,) चरण, चरेड, (चरेर,) चर्च, चल, चव, चवळ, चस, चसक, चळ, चळचळ, (चळवळ,) (चंतव,) चंदा, चंदर, चाख, चाट, चातर, चाल, चाव, चास, चाळ, चांचाट, चांप, चिकेार, चिबेाळ, चिला, चिंत, (चिंतव,) चीच, चीचवा, चीड, चीण, चीत, चीतर, चीतव, चीन, चीप, चीम, चीमळ, चीमळा, चीर, चींध, (चींबेाळ,) (चुंब,) चू, चूक, चूग, चूचव, चून, चूप, चूम, चूर, चूस, चूंका, चूंचवा, चूंट, चूंटियाट, चूंथ, चूंप, चेत, चेर, चेब, चेा, चेाक, चेाखाव, चेाट, चेाड, चेाडव, चेाद, चेाप, चेापड, चेाब, चेाष, चेाळ, (चेांट)

छक, छटक, छड, छडक–छण, छपक, छणकार, (छप,) छरक, छरा, छल, छलक, छंछण, छंछेड, छंड, छा, छाक, छाज, (छाण,) छातर, छाप, (छावर,) छांट, छांड, छांद, छिटकेार, छिद, छीछर, छीण, छीत, छीन, छीनव, छीप, छीरक, (छील,) छींक, छुंछकार, छू, छूट, छूत, छूंद, छेक, छेड, छेतर, छेद, छेर, छेलार, छेवा, छेंटा, छेा, छेाड, छेार, छेाल, छेालार, छेाळ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज, जकड, जख, जड, जण, जध, जनम, (जन्म,) जम, जर, जवार, जळ, जळजळ, जंतर, जंप, (जा,) जाग, जाच, जाण, जार, जाळव जीत, जीरव, जीव, जुवार, (जूत,) जूंफ, जूंहल, जो, जोई, जोख, जोखमा, जोगव, जोड, जोतर, जोवा, (जोभा)

झकझोल, झकझोळ, झकला, झकूल, झग, झगझग, झगमग, झघड, झझूम, झट, झटक, झटेर, झडप, झणकार, झणझण, झप, झपट, झपाट, (झपेट,) झबक, झबकोळ, झबोळ, झभा, झम, झमक, झमझम, झर, झरड, झरप, झरमर, झरसाट, झल, झलक, झलका, झलझल, झल्ला, झळमळ, झणहळ, झळूंब, झळेळ, झंख, झंखवा, झंझेड, झंपलाव, झंपा, (झंपाव,) झाटक, झाडक, झाड, झाम, झार, झाल, झाळ, झीक, झीप, झील, (झींक) झींट, झुकार झुक, झड, झम, झूंट, झूंफ, झेर, झोक, (झोकार,) झोल, झोळ, झोंक, (झोंट,) झोंस

टकरा, टकोर, टचकार, (टचकाव,) टटकार, टटळ, टप, टपक, टपार, (टपेर,) टमक, टमटम, टरक, टरपर, टवळ, टसटस, टहक, टहेल, टहुक, टळ, टळक, टळवळ, टांक, टांग, टांच, टीक, टीच, टीप, टूंकाव, टूंप, टेक, टेरव, टेव, टेवाल, टेंकाव, टो, टोक, टोच, टोळव

ठग, ठगटगाव, ठगळा, ठणठण, ठठकार, ठटर, ठटळ, ठठाड, ठठार, ठणक, ठपक, (ठपका,) ठपकार, ठब, ठबक, (ठबका,) (ठबकार,) (ठबटबाव,) ठमठम, ठर, ठरड, ठलव, ठव, ठस, ठसक, (ठसका,) ठंगरा, ठंठेर, ठंठोर, ठाठ, ठाण, (ठालव,) ठांस, ठीज, ठींगरा, ठूठवा, ठूंग, ठेक, ठेप, ठेर, ठेरव, ठेल, (ठेलव,) ठो, ठोक, ठोकार, ठोर, ठोल, (ठोंस)

डगळ, डखोळ, डग, डगळ, डघा, डडळ, डपकाव, डपट, डफडाव, डफलाव, डबकाव, डपट, डफडाव, डफणाव, डबक, डमर, डर, डरप, (डरपा,) डस, डसक, डहेक, डहेंक, डहोळ, डळ, डळक, डंख, डाग, डाट, डाडड, डाढ, डांभ, डीफ, डींट, (डुमा,) डूक, डूच, डूब, डूल, डूंखराव, डूंगळा, डेफराव, डेरा, डेंड, डो, डोक, (डोका,) डोल, डोळव

ढढळ, ढणक, (ढणका,) ढबूक, ढबूड, (ढबूर,) ढरड, ढस, (ढसड,) ढळ, ढळक, ढंढोळ, ढांक, ढीच, (ढींच,) ढूक, (ढूंक,) ढूंग, ढूंढ, ढेफ

तग, तज, तजगार, तड, तडक, तडप, तडफ, (तडफड) (तडसा,) तडूक, (तडूस,) ततड, तनखाव, तप, तपास, तफडाव, तबक, तबडाव, तमतम, तर, तरक, तरछोड, तरड, (तरडा,) तरप, (तरपत,) (तरफड,) तरबड, तरभड, तरवर, तरवा, तरस, (तरसा,) (तरो,) तजे, तलप, (तवफ,) तलस, (तवर,) तसतस, तळ, तळवा, तळांस, तंतर, ताक, ताग, ताड, ताडक, ताण, ताप, ताव, तास, तांतर, तिरस्कार, तुच्छकार, (तुल,) तूट, तेड, तोक, तोड, तोतडा, तोतळा, त्रबक, त्रसत्रस, त्राग, त्राटक, त्राड, त्रास, त्रूंठ, त्रो, त्रोफ, त्रेहेक, त्रेहेका

थ, थक, थडक, (थडका,) थडथड, थथडाव, थथर, थथेर, थर, थरथर, थरप, थरेर, थळ, (थाथड,) थाप, थाबड, थाम, थीज, थेप, थोथवा, थोभ

दड, दडब, दडबड, दडूक, दन, ददड, दपट, (दपेट,) दफणाव, दफनाव, दबडाव, दम, दमक, दरम, दरेड, दर्श, दलाव, दलार, दवराव, दवा, दह; दळ, दंड, दा, दाखव, दागव, दाझ, दाट, दाढ, दाब, दाप, दार, दीप, दीस, दुणा, दुभाग, दुमा, दुराव, दुवा, (दुह,) दूझ, दूभ, दूम, दूल, दूष, दे, देख, देाट, देाढ, (देाढव,) देाड, देान, देार, (देारव,) देाह, द्रमक, द्रव

7

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धक, धकाट, धकार, धकाव, धकेल, धख, (धग,) धडूक, धडूस, धगधग, धत, धप, धब, धबक, धबडा, धबधबाव, धबेड, (धबेाड,) धबेाव, धम, धमक, धमधम, धमार, धर, धरख, धरा, धर्ष, धलवल, धवराव, धस, धधेर, धंधेाळ, धा, धाग, धात, धाबड, धार, धारव, धाव, धिणेा, धींक, धीर, धुडकाव, धुमा, धूज, धूण, धूत, धूप, धूम, धूंखाळ, धूंध, धूमवा, धेणा, धेरवा, धेा, धेाकणाट, धेाकाव, धेाख, धेाप, धेालाट, धेावार, ध्या, ध्रा

पकड, पखाळ, पखेाड, पच, पचपच, पचरक, पचार, पछाड, पजव, पटक, पटपट, पटपटाव, पटाव, पड, पडकार, पडख, पडताळ, पढ, पत, पतळ, पतीज, पदेड, (पदेाड,) पपड, पमर, परख, परजळ, परठ, परण, परणम, परत, परभव, परमेाद, परवड, परवर, परस, परसेव, परहर, पगांत, परिपेाष, परिव्रज, परिहर, परीक्ष, परेाव, पल, पलक, पलट, पलपल, पलळ, पलाण, पसर, पसवाव, पसता, पहाण, पहिार, पहेांच, (पहेांच,) (पहेात,) पळ, पळक, पळेाट, पंका, पंजेट, पंजेल, पंझेट, पंपाळ, पाक, पाच, पछेवा, पाटक, पाटव, पाथर, पाद, पाम, पारख, पारव, पालट, पालव, पाव, पास, पासव, पाळ, पांक, पांगर, पांचमणा, पी, पीख, पीगळ, पीट, पीड, पीरस, पील, पीस, पींख, पींज, पृछ, पूण, पूंख, पूंछल, पूंज, पेख, पेटव, (पेटाव,) पेघ, पेर, पेस, (पेंध,) पेा, (पेाख,) पेाढ, पेाथाळ, पेामा, (पेारव,) पेाव, पेास, (पेाष,) पेाळ, पेांक, (पेांख,) प्रकाश, प्रचार, प्रज, प्रणम, प्रतप, प्रयेाज, प्रलप, प्रलंबा, प्रवद, प्रवर्त, प्रवेश, प्रशंस, प्रसर, प्रस्थाप, प्रहर, प्रार्थ, प्राश, प्रीछ, प्रेक्ष, प्रेर, प्रेा

फग, फगफग, फगव, (फगेाट,) (फगेाळ,) फजेट, फटक, फटकार, (फटकाव,) फडफड, फफड, फर, फरक, फरहर, फल, फसक, फसाव, फळ, फंगेाट, फंगेाळ, फंटा, फंफेास, फाक, फाट, फाड, फाल, फाव, फाळव, फांक, फाटव, फाफरड, फांस, फिटकार, फीटव, फीण, फींद, फुत्कार, फुंगराव, फूट, फूल, फूंक, फेद, फेलाव, फेस, फेंक, फेंकार, (फेंद,) (फेंस,) फेाद, फेाल, फेासलाव

बक, बक्ष, बखर, बगड, बच, बचकाट, बचकार, (बचार,) बजाव, बझड, (बझेाड,) बटक, बटा, बड, बडब, बडुबाव, बढ, बण, बणटण, बणबण, (बताड,) बताव, बथाड, बद, बदल, बन, (बनटन,) बरक, बराड, बल, बलव, बहलाव, बहव, बहार, (बहाव,) बहेक, (बहेार,) बळ, बाखड, बाझ, बाण, बाटक, बाथड, बाथ, बाफ, बाप, बांक, बांट, बांध, बांधड, (बेाधेड,) बिराज, बी, बीज, बीड, (बीन,) बुकाट, बूझव, बूर, बूंग, बेस, बेा, बेाट, बेाड, बेाणा, बेादा, बेाध, बेाल, बेास, बेाळ

भक्ष, भख, भचक, भचड, (भचरड,) भज, भजव, भटक, भटकार, भड, भडक, भडभड, भण, भणभण, भथ, भभड, भभराव भभूक, भर, भरड, भस, भळ, भळाव, भंभेर, भंभेाळ, भाख, भाग, भाज, भाव, भास, भांग, (भांज,) भांभर, भीख, भीज, भीड, भींस, भूडक, (भूरक,) भूल, भूस, भूंक, भूंज, भूंभव, (भूंस,) भेज, भेट, भेद, भेरव, भेाक, भेागव, भेाळव

मघमघ, मट, मटकाव, मटमटाव, मटार, (मटेर,) मढ, मद, ममळाव, मर, मरड, मरद, मलक, (मलका,) मलाव, मसमस, मसळ, महाल, मळ, मंड, मंतर, मा, माग, माण, मात, माप, माळ, मांज, मांड, मिचकार, मिचाव, मीट, मीच, (मींच,) मुकर, मुस्का, मूक, मूतर, मूरझा, मूर्छा, मूलव, मूझा, मूंढा, मूंड, मेंट, मेल, मेा, मेाकल, मेाटव, मेाड, मेार, मेारव, मेाह, मेाळ

येाज

रखड, रखरख, रखेळ, रखेाट, रग, रगड, रगदेाड, रगरग, रच, रजेाटा, रझळ, रट, रड, रडबड, रणक, रणझण, रपेट, रम, रमझव, रमरम, रव, रवड, रवरव, रहे, रहेंस, रंग, रंज, रंद, राख, रागेाट, राच, राज, राळ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रांध, रिसा, रीख, रीझ, (रीस,) रींग, रूच, रूझ, रूत, रूम, (रूस,) रूंम, रेड, रेल, (रेला,) रेव, रेळ, रेंक, (रेस,) रोक, रोध, रोळ, रोंक, (रोंख,)

लक्ष, लख, लखोट, लग, लच, लचक, (लज,) लड, लडथड, लण, लताड, लथड, लपट, लपडाव, लपरड; लपेड, लपा, लपस, लबड, लबदा, लगधार, लरज, ललचा, ललव, लव, लसोट, लाह, लहर, (हलरा,) लाहे, लहेक, लळ, लळक, लंगडा, लंगर, लंघ, लंब (लंबा,) लाख, लाग, लाड, लातर, लाताड, लाद, (लांघ,) लांच, लीप, (लींप,) लीलव, लुठ, लूछ, लूट, (लूट,) लूम, लूल, (लूंट,) ले, लेख, लेप, (लेंक,) लोच, लोट, लोढ, लोथार, लोद, लोध, लोप, लोल, लोह

वकर, (वकार,) वकास, वकोप, वखदख, वखाण, वखोड, वग, वगूत, वगोव, वघळ, वघार, वचक, (वचका,) वचकळ, वचड, वचळ, (वचाळ,) वछूट, वट, वटक, वटल, वटवट, वटाव, वढ, वण, वणस, वतड, (वतरड,) (वताड,) वद, वधाव, वधेर, वनार, वमास, वर, वरख, वरच, वरज, वरड, वरत, वरांस, वर्ज, वर्णव, वर्त, वर्ष, वलख, वलवल, वलार, वलूर, वलूंद, (वलूंद,) वलोव, वल्लाव, ववटा, (ववडा,) वदळ, वस, वसूक, वह, वहे, वहेमा, वहेर, वहेंच, वहोर, वळ, वळग, वळवळ, वळाव, (वळूंद,) (वळूंध,) वळूंभ, वंका, वंच, वंठ, वा, वाग, (वागोल,) वागोळ, वाज, वाट, वाढ, वाध, वापर, वाम, वार, वावर, वास, वाह, वांच, वांछ, विकस, विचर, विचार, विडार, विनर, विताड, विदार, विभा, विमान, विचड, विरम, विराज, विराध, विलग, विलप, विलस, विला, विलाग, विलो, विलोक, विलोच, विलोप, विवर्त, विवास, विवेच, विशम, विश्रम, विसर, विसाद, विस्तर, विस्मर, विसर्ज, विसाम, विस्रज, विहर, विहाण, विहस, वीछळ, वीदार, वीण, वीनव, वीपर, वीसम, वीसर, वींख, वींच, वींझा, वींट, वींदार, वींध, वूट, वूठ, वेक, वेख, वेगर, वेच, वेट, वेड, वेडफ, वेढव, वेतर, वेध, वेर, वेंढ, वोसराव, वोळव, व्रज

शक, शणगा, शम, शमशम, शरमा, शंक, शार, शिकार, शिराव, शेक, शेल, शेवाळ, शोच, शोभ, शोर, शोष, (शोंढ,)

सकार, सज, सट, सटक, सटकाव, सड, सडसड, (सणगा,) सणसण, सणसार, सता, सताव, सत्कार, सद, सदगर, सनकार, सन्मान, (सपटा,) सपडा, सवड, समज, समण, समर, समसम, समाप, समार, समाल, समेट, समोर, सर, सरक, सरकर, सरखाव, सरस, सरा, सराव, सराढ, सरांछ, सरांढ, सरोड, सर्ज, सलव, सलाड, सलूज, सवल, सवळ, सवा, सस, ससड, ससण, सहरा, सहे, सळ, सळक, सळग, सळवळ, संकडा, संकळा, संकेत, संकेल, संकोच, संकोड, संकोर, संक्रोड, संग्रह, संघर, संच, संचक, संचर, संचार, संजवार, संडोव, संता, संतोक, (संतोख,) संतोर, संथा, संपेट, संबोध, संभर, संभव, संभाळ, संमान, संमोह, संवर, संवार, संवर्ध, संशोध, संसर संस्कर, संरकार, संहर, साकर, साज, साट, साटव, साध, सार, सारप, सारव, साल, सालव, साह, सांकळ, सांख, सांच, सांचर, सांड, सांतर, सांतळ, सांथ, सांध, सांपड, सांभर, सांभळ, सिदा, (सिधार,) सिधाव, सिंच, सरड, सीझ, सीध, सीप, सीव, (सींच,) सुका, सुगा, सुधर, सू, सूज, सूझ, सूड, सूण, सूळ, सूसव, सूंघ, सूंछ, सृज, सेरव, सेव, सैड, सो सीखमा, सोड, सोर, सोरडा, सोराट, सोवा, सोस, सोह, सोंट, सोंढ, सोंप, सोंळ, स्थाप, स्पर्ध, स्पर्श, स्फुर, स्मर, स्वीकार

हकार, हकाल, (हग,) हचमच, हठ, हडफ, हडफाट, हडबड, हडसेल, हडहड, हड्ड, हण, हणहण, हत, हतरड, हर, हरख, (हरखा,) हरवड, हर्ष, हल, हलक, (हलफल,) हवा, हस, हळ, हळक, हळफल, हंकार, हंखार, हाकट, हाकल, (हाकेट,) (हाकोट,) हाज, हाटक, हामल, हार, (हाल,) हांक, हांकाट, हांफ, हिमा, हिलोळ, हिंदोळ, हीच, (हींचक,) हीण, हीभक, (हील,) (हीस,) हींच,) (हींचक,) हींड, हुडकार, हुलराव, हुल्लस, हुल्लास, हूक, हूण, हूल, हूंक, हेठास, हेर, हेरव, हेल, हेवा, हेष, हेळक, हेंक, हो, होकाट, होर, (होलव,) होवा, होळ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महत्त्वपूर्ण शब्दकोश

परिशिष्ट–2

A Comparative and Etymological Dictionary of The Nepali Language,
—R. L. Turner, London, 1931

A Comparative Dictionary of The Indo-Aryan Languages
—R. L. Turner, London, 1966.

A Dictionary of Sanskrit Grammer
—K. V. Abhyankar, J. M. Shukla, Baroda, 1961.

Sanskrit-English Dictionary
—M. Monier-Williams, 1899

देशी शब्द-संग्रह
—बेचरदास दोशी, युनि. ग्रन्थ, अहमदाबाद, 1974

पाइयसद्दमहण्णवो
—हरगोविंददास सेठ, बारासणी, (द्वि. सं.) 1963

बृहद् हिन्दी कोश
—कालिकाप्रसाद तथा अन्य, ज्ञानमण्डल, बारासणी, (तृ. सं.) 1964

मानक हिन्दी कोश (1–5)
—रामचन्द्र वर्मा तथा अन्य, संमेलन, प्रयाग, 1962–65

हिन्दी शब्दसागर (1–11)
—श्यामसुन्दरदास तथा अन्य, नागरी, काशी, 1929

मुजराती–हिन्दी कोश
—नानुभाई बारोट, अंबाशंकर नागर तथा अन्य, विद्यापीठ, 1961

बृहत गुजराती कोश–1, 2
—के. का. शास्त्री, युनि. ग्रन्थ, अहमदाबाद, 1977, 81

भगवद्गोमंडल, 1–9
—भगवतसिंहजी, गोंडल, 1944–45

सार्थ गुजराती जोडणी कोश
—मगनभाई देसाई विद्यापीठ, अहमदाबाद, (पं. सं.) 1967

हिन्दी–गुजराती कोश
—मगनभाई देसाई विद्यापीठ, अहमदाबाद. (तृ. सं.) 1956

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ–सूची

परिशिष्ट–3

(विषय से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्बन्धित ग्रंथ तथा लेख)

हिन्दी–1

अवधी की साधित धातुएँ (भाषा–संरचना में साधित धातु का महत्त्व)

—मालतीदेवी दुबे (अप्रकाशित शोधप्रबन्ध)

आजमगढ जिले की बोली में व्यवहृत प्रमुख धातु और क्रियापद (लेख)

—महेन्द्रनाथ दुबे, प्रज्ञा, अंक 12, भाग–1, 1965

आधुनिक व्रजभाषा में संयुक्त क्रियाओं का स्वरूप

—अम्बाप्रसाद 'सुमन', भाषा, अंक ३, 1965

आधुनिक हिन्दी के नामधातु और नामिक संयुक्त क्रियाएँ (लेख)

—वि. ए. चेर्निशोव, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष 62, अंक–1, 1958

शब्दों का अध्ययन

—भोलानाथ तिवारी, शब्दकार, दिल्ली, 1969

शब्दों का जीवन

—भोलानाथ तिवारी, राजकमल, दिल्ली, 1954

['शब्द मोटे होते हैं' जैसे अर्थविस्तार के निरीक्षणों की पुष्टि के लिए क्रियाओं के उदाहरण लिए गऐ हैं।]

हिन्दी और तामिल की समानस्रोतीय भिन्नार्थी शब्दावली,

—वी. रा. जगन्नाथन्, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1969

हिन्दी की तद्भव शब्दावली,: व्युत्पत्तिकोष

—सरनामसिंह शर्मा, कालेज, जयपुर, 1968

[इस कोश में क्रियारूपों का भी समावेश है। शब्दों के संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी रूप देने के साथ अर्थ भी लिए हैं।]

हिन्दी शब्द–रचना

—भाइदयाल जैन, ज्ञानपीठ, वाराणसी, 1966

[नई क्रियाएँ नामक इक्कीसवें परिच्छेद में क्रिया–विषयक शास्त्रीय चर्चा के साथ मनोरंजक अंहा भी हैं।]

हिन्दी की क्रियाएँ

—चतुर्भुज सहाय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1968

हिन्दी की 'बनना' क्रिया

—ज्ञानशंकर पाण्डेय, भाषा अंक 3, 1969

हिन्दी की शब्द–सम्पदा

—विद्यानिवास मिश्र, राजकमल, दिल्ली, 1970

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[शब्दों की बहुआयामी चर्चा। अर्थविज्ञान तथा समाज–संदर्भ की दृष्टि से एक गंभीर तथा रसप्रद पुस्तक। विस्तृत शब्दानुक्रमणिका के अंतर्गत धातुओं का समावेश।]

हिन्दी कोषविज्ञान का उद्भव और विकास

—युगेश्वर, भारतीय विद्या, वाराणसी, 1971

हिन्दी कोशों की परंपरा (लेख, 'भाषा–चिन्तन' पुस्तक में)

—भोलानाथ तिवारी, स्मृति, इलाहाबाद, 1971

हिन्दी कृदन्तज रूपों का विकास

—बालमुकुन्द, आनंद, वाराणसी, 1968

हिन्दी क्रिया: स्वरूप और विश्लेषण

—बालमुकुन्द, आनंद, वाराणसी, 1970

हिन्दी क्रियाओं का अर्थपरक अध्ययन

—कृष्णगोपाल रस्तोगी, रंजना, दिल्ली, 1973

[ग्रंथ के परिशिष्ट 'क' के अंतर्गत 772 क्रियाओं की सूची दी गई है। अन्य आठ परिशिष्टों की सामग्री भी 'धातुपाठ' की दृष्टि से विशिष्ट, मूल्यवान।]

हिन्दी क्रिया की कालरचना

—चतुर्भुज सहाय, गवेषणा, अंक 8, 1964

हिन्दी क्रियापद

—जगदेवसिंह, गवेषणा, अंक 6, 1965

हिन्दी क्रिया–संरचना

—जयकृष्ण विद्यालंकार, गवेषणा, अंक 13, 1969

हिन्दी क्रियापदों की संरचना

—जयकृष्ण विद्यालंकार, समन्वय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1967–68

हिन्दी देशज शब्दकोश

—चन्द्रप्रकाश त्यागी, लिपि, दिल्ली, 1977

[यहाँ समाविष्ट देशज धातुओं में से कुछ नये लेखकों की पुस्तकों से भी ली गई हैं]

हिन्दी धातुकोश

—मुरलीधर श्रीवास्तव, शब्दलोक, वाराणसी, 1969

[लेखक की 'हिन्दी तद्भवशास्त्र' नामक पुस्तक में परिशिष्ट–2 के रूप में तद्भव–कोश दिया गया है इस पुस्तक में 1028 धातुएँ दी हैं।]

हिन्दी धातुसंग्रह

—ए. एफ. रुडोल्फ हार्नली, आगरा विश्वविद्यालय, 1956

[हिन्दी का प्रथम आधुनिक धातुकोश 1]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिन्दी में क्रिया

—डा. ओ. गे. उलत्सिफेरोव, पराग, दिल्ली, 1979

['क्रिया का अविधेय रूप' के अंतर्गत 'क्रिया की धातु' पृ. 55 से 58]

हिन्दी में देशज शब्द

—पूर्णसिंह डबास, नेशनल, दिल्ली, 1959

[देशज शब्दों का यहाँ वैज्ञानिक अध्ययन हुआ है। व्युत्पत्ति की दृष्टिसे भी लेखक ने व्यवस्थित कार्य किया है।]

हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों में अर्थपरिवर्तन

—केशवराम, पाल, प्राची, मेरठ, 1964

हिन्दी में संयुक्त क्रियाएँ

—काशीनाथ सिंह, रचना, इलाहाबाद, 1976

[परिशिष्ट के रूप में हिन्दी संयुक्त क्रियाओं का कोश दिया गया है। समकालीन साहित्य से भी लेखकने क्रियाएँ चुनी हैं।]

हिन्दी-2

अवधी का विकास

—बाबूराम सक्सेना ('एवोल्यूशन आफ अवधी' इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, 1937 का अनुवाद)

हिन्दी में संयुक्त क्रिया-अभिव्यक्ति की वैकल्पिक विधा

—ज्ञानशंकर पाण्डेय, भाषा, अंक 2 1968

हिन्दी में संयुक्त संज्ञार्थक धातुओं का प्रयोग

—वेरस्क्रोवनी, हिन्दी अनुशीलन, धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक, प्रयाग, 1960

आगरा जिले की बोली

—रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, 1961

[पुस्तक के नवम प्रकरण में क्रियापदों का वि. लैषण हैं।]

कबीर की भाषा

—महेन्द्र शब्दबार, दिल्ली, 1969

[पुस्तक के द्वितीय खण्ड के छठे अध्याय में क्रिया तथा धातु मी रूपगत चर्चा है। वर्गीकृत धातुपाठ उल्लेखनीय।]

गुजराती और व्रजभाषा का तुलनात्मक अध्ययन

—जगदीशप्राद गुप्त, हिन्दी साहित्य परिषद, प्रयाग 1967

ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ

—हरदेव बाहरी, 1966

छत्तीसगढ़ी का उद्विकास

—डा. नरेन्द्रदेव वर्मा, रचना, इलाहाबाद, 1979

[अध्याय 23, छत्तीसगढी की क्रिया-धातुएँ, 274-284]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छत्तीसगढ़ी का भाषाशास्त्रीय अध्ययन

—शंकर शेष, मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1973

[अध्याय–३ में 'क्रियापद' के अंतर्गत वर्गीगत धातुपाठ दिया गया है। कुछ तद्भव तथा अर्धतत्सम धातुओं की व्युत्पत्तियाँ दी गई हैं।]

छत्तीसगढीः बोली, व्याकरण और कोश

—कान्तिकुमार, राधाकृष्ण, दिल्ली, 1959

ताजुज्बेकी

—भोलानाथ तिवारी, नेशनल, दिल्ली, 1970

दक्खिनी हिन्दी

—बाबूराम सक्सेना, हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद, 1952

दक्खिनी हिन्दी का उद्भव और विकास

—श्रीराम शर्मा, सम्मेलन, इलाहाबाद, 1964

[पुस्तक के 'परिशिष्ट–1 के रूप में दक्खिनी हिन्दी का धातुपाठ दिया गया है। इसमें 459 धातुओं का समावेश है।]

पुरानी राजस्थानी

—एल. पी. तेस्सितोरी (अनु. नामवरसिंह) नागरी, काशी, 1956

[अध्याय–9 में 'क्रिया' नाम से धातुचर्चा तथा क्रियाओं का व्याकरणिक परिचय है। यह अध्ययन गुजराती और मारवाडी के संदर्भ में तुलनात्मक पद्धति से किया गया है।]

प्रारम्भिक अवधी का अध्ययन

—विश्वनाथ त्रिपाठी, रचना, इलाहाबाद, 1972

['क्रिया' के अंतर्गत संक्षिप्त धातुचर्चा तथा क्रियापदों का वर्गीकरण है।]

बिहारी सतसई का भाषावैज्ञानिक अध्ययन

—रामकुमारी मिश्र, लोकभारती, इलाहाबाद, 1970

[दूसरे अध्याय के पांचवे विभाग के अंतर्गत धातु तथा क्रियापदों की रूपगत–वाक्यगत चर्चा है।]

बीकानेरी बोली भाषाशास्त्रीय अध्ययन

—रामकृष्ण व्यास, गणेशशक्ति, बीकानेर, 1974

[सातवें अध्याय में 'क्रियापद' के अंतर्गत धातुचर्चा तथा वर्गीकृत पाठ दिए गए हैं।]

बुन्देली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन

—रामेश्वर प्रसाद, अग्रवाल, विश्वविद्यालय प्रकाशन, लखनऊ, 1963

['पद–विचार' के अंतर्ग धातु तथा क्रियापदों की शास्त्रीय चर्चा उल्लेखनीय है।]

भारतीय भाषाओं का भाषाशास्त्रीय अध्ययन

—सं. ब्रजेश्वर वर्मा, विनोद, आगरा, 1865

[इसमें मलयालम और हिन्दी की क्रियाएँ—वी. गोपीनाथन्, तथा कन्नड क्रियारूपों की संरचना—कु. रंगमणि के लेख उल्लेखनीय हैं।]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाषा-व्याकरण
—कवि रत्नजित, विद्या, गुज. युनि., अहमदाबाद, 1972

[इस पद्य-व्याकरण में कविशिक्षा के हेतु धातुपाठ दिया गया है। वर्गीकरण के आधार धातुओं के अंत्य अक्षर हैं।]

भीली: भाषा, साहित्य और संस्कृति
—नेमीचंद जैन, हीराभैया, इन्दौर, 1964

भोजपुरी और हिन्दी का तुलनात्मक व्याकरण
—शुकदेव सिंह, नीलाभ, इलाहाबाद, 1968

[धातु तथा क्रियापदों की विस्तृत चर्चा आठवें अध्याय में सुलभ है।]

भोजपुरी भाषा और साहित्य
—उदयनारायण तिवारी, बिहार राष्ट्रभाषा, पटना, 1954

[छठे अध्याय में क्रियापद नाम से भोजपुरी धातुओं-क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन हुआ है। वर्गीकृत धातुपाठ भी उल्लेखनीय है।

ब्रजभाषा
—धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, 1954

[नवम प्रकरण में 'क्रिया' नाम से व्याकरणिक चर्चा सुलभ है।]

ब्रजभाषा और खडीबोली का तुलनात्मक अध्ययन
—कैलाशचन्द्र भाटिया, सरस्वती, आगरा, 1962

[भाग-2 के 'रूपविचार' नामक दूसरे प्रकरण में क्रियाविषयक व्याकरणिक चर्चा की गई है।]

मगही भाषा और साहित्य
—सम्पत्ति आर्याणी, बिहार राष्ट्रभाषा, पटना, 1976

[पुस्तक के प्रथम खण्ड में 'क्रिया' नाम से क्रियारूपों की संक्षिप्त सूची दी गई है। अपभ्रंश तथा मगही रूप देकर उनके हिन्दी अर्थ दिए गए हैं।]

मथुरा जिले की बोली
—चंद्रभाण रावत, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, 1967

मध्य पहाडी का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
—गोविन्द चातक, राधाकृष्ण, दिल्ली, 1966

['क्रियापद' प्रकरण में कुछ गढ़वाली धातुएँ संस्कृत रूपों के साथ दी गई हैं। धातुओं की अन्य सूचियाँ भी द्रष्टव्य]

मालवी - एक भाषाशास्त्रीय अध्ययन
—चिन्तामणि उपाध्याय, 1960

मालवी की उत्पत्ति और विकास
—बंसीधर, बेनीप्रसाद, इलाहाबाद, 1973

[प्रकरण 9 में 'क्रियापद' के अंतर्गत मालवी धातुओं की संक्षिप्त सूची; संस्कृत, मालवी तथा विकरण-रूपों के साथ।]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थानी भाषा और साहित्य

—मोतीराम मेनारिया, 1951

[पुस्तक के प्रथम खण्ड में राजस्थानी क्रिया–रूपों की संक्षिप्त चर्चा है तथा गुजराती क्रियाओं से साम्य का निर्देश है।]

राजस्थानी भाषा और साहित्य

—हीरालाल माहेश्वरी, आधुनिक, कलकत्ता; 1960

हाडौती बोली और साहित्य

—कन्हैयालाल शर्मा, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, 1965

[पुस्तक के 'बोली खण्ड' में 'क्रियापद' नामक प्रकरण में वर्गीकृत धातुपाठ के साथ क्रियाओं की व्याकरणिक चर्चा हैं।]

हिन्दी और उसकी विविध बोलियाँ

—दीपचन्द जैन, कैलाश तिवारी, मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1972

हिन्दी और बंगला भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन

—संतोष जैन, शब्दाकार, दिल्ली, 1974

[चतुर्थ अध्याय में धातुओं का ऐतिहासिक तथा रूपगत वर्गीकरण द्रष्टव्य है।]

हिन्दी भाषा : रूप–विकास

—सरनामसिंह शर्मा, चिन्मय, जयपुर, 1968

[अध्याय 11 के अंतर्गत धातुओं की वर्गीकृत सूचियाँ दी गई हैं। उदाहरण सहित व्युत्पत्तिमूलक चर्चा हुई है।]

हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग

—नामवरसिंह, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1954

[पुस्तक के पृ. 136–147 के बीच क्रिया–धातुकी सोदाहरण चर्चा है।]

हिन्दी भाषा पर फ़ारसी और अंग्रेज़ी का प्रभाव

—मोहनलाल तिवारी, नागरी, वाराणसी, 1969

['ख' विभाग में हिन्दी में प्रयुक्त फ़ारसी क्रियाएँ तथा अंग्रेजी संज्ञा या विशेषण के योग से बननेवाली संयुक्त क्रियाओं के उदाहरण दिए गए हैं।]

हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव

—अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, सम्मेलन, प्रयाग, 1938

हिन्दी: उद्भव, विकास और रूप

—हरदेव बाहरी, किताब महज, इलाहाबाद, 1965

हिन्दी भाषा

—भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद, 1966

हिन्दी भाषा का इतिहास

—धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1949

हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास

—उदयनारायण तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद, 1961

हिन्दी भाषा का स्वरूप–विकास

—अवधेश्वर, अरुण, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1973

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिन्दी-३

हिन्दी व्याकरण
—कामताप्रसाद गुरु, नागरी, काशी, 1911

हिन्दी व्याकरण और रचना
—भोलाशंकर व्यास, भोलानाथ तिवारी, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव; शै. अनुसंधान, दिल्ली, 1972

हिन्दी व्याकरण का इतिहास
—अनन्त चौधरी, बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1972

हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा
ज. म. दीमशित्स, राजकमल, 1966

हिन्दी शब्दानुशासन
—किशोरीदास वाजपेयी, नागरी, काशी, 1958

हिन्दी-4

अपभ्रंश भाषा का अध्ययन
—रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, भारती, दिल्ली, 1965

तुलनात्मकत पालि-प्राकृत-अपभ्रंश व्याकरण
—सुकुमार सेन, लोकभारती, इलाहाबाद, 1961
[सातवें प्रकरण में धातु तथा क्रियापदों की तुलनात्मक पद्धति से सोदाहरण चर्चा है।]

पाणिनी के उत्तराधिकारी
—उदयनारायण तिवारी, लोकभारती, हलाहाबाद, 1971

प्राकृत भाषा
—प्रबोध बेचरदास पंडित, 1954

प्राकृत भाषाओं का व्याकरण
—पिशल (अनु. हेमचन्द्र जोशी) बिहार राष्ट्रभाषा, पटना, 1958

प्राचीन भारतीय वैयाकरणों के ध्वन्यात्मक विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन
—सिद्धेश्वर वर्मा (अनु. देवदत्त शर्मा), हरियाणा ग्रंथ अकादमी, चण्डीगढ, 1973

भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी
—सुनीतिकुमारी चटर्जी, राजकमल, दिल्ली, 1942

भारतीय भाषाविज्ञान की भूमिका
—सं. भोलानाथ तिवारी, तथा अन्य, नेशनल, दिल्ली, 1972

भारतीय भाषाशास्त्रीय चिन्तन
—सं. विद्यानिवास मिश्र तथा अन्य, राजस्थानी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1976

व्याकरण की दार्शनिक भूमिका
—सत्यकाम वर्मा, मुंशीराम, नई दिल्ली, 1969

हिन्दी 5

आधुनिक भाषाविज्ञान
—भोलानाथ तिवारी, लिपि, दिल्ली, 1978

आधुनिक भाषाविज्ञान की भूमिका
—सं. मोतीलाल गुप्त तथा अन्य, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 1974

तुलनात्मक भाषाविज्ञान
—पी. डी. गुणे, (अनु. भोलानाथ तिवारी) मोतीलाल, दिल्ली, 1968

ध्वनि-विज्ञान
—जी. बी. धल, बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना, (सं. सं) 1975

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाषा
—ब्लूमफील्ड (अनु. विश्वनाथ प्रसाद,) मोतीलाल, दिल्ली, 1968

भाषा
—वान्द्रियैज, (अनु. जगवंशकिशोर), हिन्दी समिति, लखनऊ, 1966

भाषा और समाज
—रामविलास शर्मा, राजकमल, दिल्ली, 1961

भाषा, विचार और वास्तविकता
—बैंजमिन ली व्होर्फ (अनु. रामनिवास शर्मा) हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, चण्डीगढ, 1975

भाषा–विज्ञान
—मैक्समूलर (अनु. उदयनारायण तिवारी) मोतीलाल, दिल्ली, 1970

भाषा, सत्य और तर्क
—सं. याकुब मसीह, बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1973

वाक्यविन्यास का सैद्धान्तिक पक्ष
—नोअम चोम्स्की (अनु. रमानाथ सहाय) राजस्थान ग्रन्थ, जयपुर, 1975

शब्द–भूगोल : सिद्धान्त और प्रयोग
—हीरालाल शुक्ला, रचना, इलाहाबाद, 1973

गुजराती

अनुशीलनो
—हरिवल्लभ भायाणी, पोप्युलर सुरत, (द्वि. सं.) 1976

कच्छी शब्दावली
—शान्तिभाई आचार्य, विद्यापीठ, अहमदाबाद, 1966

गुजराती कोश (लेख. 'इतिहास अने साहित्य' पुस्तक में)
—भोगीलाल सांडेसरा, गुर्जर, अहमदाबाद, 1966

गुजराती पर अरबी–फारसीनी असर
—छो. र. नायक, विद्यासभा, अहमदाबाद, 1954

गुजराती भाषा, उद्गम, विकास अने स्वरूप
—कान्तिलाल व्यास, त्रिपाठी, बम्बई, 1965

गुजराती भाषाना अंगसाधक प्रत्ययो
—ऊर्मि देसाई, युनि. ग्रंथ, बोर्ड, अहमदाबाद, 1972

गुजराती भाषाना द्विरुक्त प्रयोगो
—प्र. रा. तेरैया, युनि. ग्रंथ, बोर्ड अहमदाबाद, 1970

गुजराती भाषानुं ध्वनिस्वरूप अने ध्वनिपरिवर्तन
—प्रबोध पंडित, गुज. युनि. अहमदाबाद, 1966

गुजराती भाषानुं बृहद् व्याकरण
—कमळाशंकर प्रा. त्रिवेदी, मेकमिलन, बम्बई, 1919

गुजराती भाषानुं व्याकरण
—जोसेफ वान सामरन टेलर, एरिश मिशन, सूरत, (द्वि. सं.) 1868

गुजराती भाषानुं व्याकरण
योगेन्द्र व्यास, साहित्य मुद्रणालय, अहमदाबाद, 1977

गुजराती भाषानो कुळक्रम, (लेख. गु. सा. इ. I)
—हरिवल्लभ भायाणी, परिषद, अहमदाबाद, 1973

गुजराती भाषाशास्त्र–1, 2, 3
—केशवराम का. शास्त्री, म. स. विश्व. वि., बडौदा, 1960

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुजराती भाषामां शब्दकोशनी प्रवृत्ति (लेख)
—शान्तिभाई आचार्य, संबोधि, 4-4, अहमदाबाद, 1975

गुजराती रूपरचना
—केशवराम का. शास्त्री, फार्बस, बम्बई, 1958

गुर्जर शब्दानुशासन
—स्वामी श्रीभगवदाचार्यजी, श्री चंदनदेवी, अहमदाबाद, 1959

थोडोक व्याकरणविचार
—हरिवल्लभ भायाणी, वोरा, अहमदाबाद, 1969

धातुमंजरी
—हरिदास हीराचंद, 1865

धातुसंग्रह
—जे. वी. एस. टेलर, ग. प्रि. पे. बम्बई, 1870

पाणिनीय संस्कृत व्याकरणशास्त्रनी परंपरानो इतिहास
—जयदेव शुक्ल, युनि. ग्रन्थ, बोर्ड, अहमदाबाद, 1975

बोलीविज्ञान अने गुजराती बोलीओ
—योगेन्द्र व्यास, युनि. ग्रन्थ, अहमदाबाद, 1974

भाषा परिचय अने गुजराती भाषानुं स्वरूप
—जयंत कोठारी, युनि. ग्रंथ बोर्ड, अहमदाबाद, 1973

भाषाविज्ञानना अर्वाचीन अभिगमो
—प्रबोध बेचरदास पंडित, युनि. ग्रंथ, अहमदाबाद, 1973

भीली-गुजराती शब्दावली
—शान्तिभाई आचार्य, विद्यापीठ, अहमदाबाद, 1965

व्युत्पत्तिविचार
—हरिवल्लभ भायाणी, युनि. ग्रंथ बोर्ड, अहमदाबाद, 1975

शब्द अने अर्थ
—भोगीलाल सांडेसरा, गुर्जर, अहमदाबाद, 1954

शब्दकथा
—हरिवल्लभ भायाणी, वोरा, अहमदाबाद, 1963

शब्दपरिशीलन
—हरिवल्लभ भायाणी, गुर्जर, अहमदाबाद, 1973

शब्दार्थ धातुसंग्रह
—रामशंकर देवशंकर भट्ट, वर्तमान प्रेस, बम्बई, 1873

संस्कृत धातुकोष
—अमृतलाल अमरचंद सलोत, लेखक, पालिताणा, 1962

सिद्धहेमगत अपभ्रंश व्याकरण
—हरिवल्लभ भायाणी, फार्बस, बम्बई, 1960

हालारी बोली
—शान्तिभाई आचार्य, लेखक, विद्यापीठ, अहमदाबाद, 1978

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

English

A Comparative Study of English and Gujarati Syntaxes
—J. J. Mody, M. S. Uni. Baroda, 1973

A Concordance of Sanskrit Dhatupathas
—G. B. Palsule, Deccan, Poona, 1955

A Controlled Historical Reconstruction of Oriya,Assamese, Bengali and Hindi,
—D. P. Pattanayak, 1967

A Gujarati Reference Grammar
—G. Cardona, 1965

A Grammar of the Hindi Language
—S. H. Kellog, 1876

A Reader in Historical and Comparative Linguistics
—A. R. Keiler, 1972

A Study of the Gujarati Language in the 16th Cent.
—T. N. Dave V. S., 1935

An Introduction to Historical and Comparative Linguistics
—R. Anttila, 1972

Comparative Grammar of the Gaudian Languages
—R. Hoernle, 1880

Comparative Grammar of the Modern Ariyan Languages of India
—J. Beames, 1872

Comparative Grammar of Middle Indo-Aryan
—S. Sen, Indian Linguistics, 12, 1952-53

Compound and Conjunct verbs in Hindi
—Burton Page J. BSOAS, V. XIX. P. 3 1957

Dictionary of Linguistics
—Mario Pie F. Granter New York, 1954

Etymology
—A. S. C. Ross, 1965

Gujarati Phonology
—R. L. Turner, JRAS, 1921

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Gujarati Language and Literature
—N. B. Divetia, 1921

Hindi Phonology
—Ucida Norikiko, Simant, 1977

Historical Phonology of Gujarati Vowels
—P. B. Pandit, Language 37, 1961

Historical Grammar of Apabhramsha
—G. V. Tagare, 1948

Historical Linguistics
—W. P. Lehmann, Oxford, New Delhi, 1962

Historical Linguistics and Indo-Aryan Languages
—A. M. Ghatage, 1962

Introduction to Theoretical Linguistics
—John Lyons, Cambridge, 1971

Introductory Linguistics
—R. A. Hall, Motilal, Delhi, (1964) 1969

Lexicographical Studies in Jain Sanskrit
—B. J. Sandesara, J. P. Thakar, 1962.

Linguistic Survey of India
—G. A. Grierson, Calcutta, 1908.

Linguistics
—Ed. Archibald A. Hill, Voice of America, 1969

Morphology
—E. A. Nida, Michigan (2nd Ed) 1961

New Horizons in Linguistics
—Ed. John Lyons, Penguin, 1970.

On the Problem of a Method for Treating the Compound and Conjunct verbs in Hindi
—Hacker P. BSOAS, XXIV, P. 3. L. 1961

Prakrit Languages and their Contribution to Indian Culture
—S. M. Katre, 1945

Some Problems of Indo-Aryan Philology
—J. Bloch, B. O. A. S. 5-4, 1930

Some Problems of Historical Linguistics in Indo-Aryan
—1944.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Syntax to the infinite verb forms of Pali
—Hendriksen H., Copenhagen, 1944

Testing Linguistic Hypotheses
—Ed. David Cohen and Jessica R. Wirth, Hemisphere, Washington, 1975

The Diskriptive teckniques of Panini
—Vidya Niwas Mishra, Mouton, 1967

The Four classes of Urdu Verbs
—Bailey BSOS, V. VII, P. L. 1934

The language of Gujarat
—T. N. Dave, G. R. S. 1948

The meaning and usage of casual verbs in urdu
—Bailey T. G. BSOS, V. V. P. 3 1929

The Origin and Development of Bengali Language
—S. K. Chatterji, 1926

The Philosophy of Language
—Ed. J. R. Searle, Oxford, 1971

The Roots, Verb-forms and Primary Derivatives of the Sanskrit Language
—W. D. Whitney, 1885

Verbal Composition in Indo-Aryan
—R. N. Vale, Poona, 1948

The Sanskrit Dhatupathas : A Critical Study
—G. B. Palsule, Uni. Poona, 1961

Wilson Philological Lectures
—R. G. Bhandarkar, (1883-89) 1914

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org